

কাশ্মীর-কুসুম।

অৰ্থাৎ

का गौरतन विवन्।

• —)

" खमगद्रमग किना एमथ एवं नग्न!"

<u> এরাজেন্দ্র মোহন বস্থ-কর্তৃক</u>

প্রণীত ও প্রকাশিত।

কলিকাতা

७ • नः कत्रम् अप्राणिम कि हे — मध्य स-यक्षाल दम

শ্রীঅদ্বৈতচরণ ঘোষ দারা

সুদ্রিত।

मकाकाः ३१२१ ।

উৎসৃষ্ট উপহার।

मर्क्य शानक्षृ उ रातम विदेखियी श्विशिशाधाशा

শ্রীযুক্ত বারু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায়

কাম্মীরের প্রধান বিচারপতি এবং জুডিশিয়েল কমিস্যনর
মহাশার সমীপের ১

সসম্মান নিবেদনমেতৎ

আপনি আম্, কে সোদরের ন্যায় স্নেহ এবং অক্তিম মিত্রোচিত আমার হিতসাধন ও মঙ্গল কামনা করিয়া থাকেন। এমন
মিত্রতা ঋণের পরিশোধ নাই। তথাপি আন্তরিক কৃতজ্ঞতার
চিহ্ন স্বরূপ এই "কাশ্মীর-কৃত্রম" নামা যৎসামান্য উপহার
আপনাকে দিতেছি। এ অপকৃষ্ট হার আপনার মনোহরণ
করিবে, এ ছরাশা করি না। আপনি অনুগ্রহ পূর্বেক সাদরে
একসার স্পর্শ করিলেই সাধারণের হস্তে অর্পণ করিতে সাহসী
হস্ত্বতৈ পারি।

জম্মু। ১লা জৈয়ন্ঠ, সন ১২৮২ সাল।

^{বশ্বন} শ্রীরাজেন্দ্রমোহন বস্থ।

ভূমিকা।

কয়েক বৎসরাবধি ভূ-স্বর্গ কাশ্মীর রাজ্য আমার প্রবাদ-ভূমি হইয়াছে। আদৌ বিস্ফ কর্মোপলকেই আমার আগমন —তংসূত্রেই এতদ্রাজ্যের নানা স্থানে অবস্থান ও পর্য্যটনাদি হয়। স্বাভাবিক প্রবৃত্তির অনুরোধে প্রথমাবধিই মনে মনে সংকল্প ছিল, যে, যথন যেথানে যাইব, স্থযোগমতে তত্ৰত্য কোনো কোনো বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া রাখিবার চেন্টা পাইব। যদিও এই মানস ছিল, কিন্তু এত বাহুল্য যে হইয়া উঠিবে, তথন তাহা স্বগ্নেও ভাবি নাই। ইটী কেবল স্বদেশস্থ আত্মীয় বান্ধবগণের সাগ্রহ কোতৃহল ও উত্তেজনাতেই ঘটি-য়াছে। কিয় কাল কাশ্মীর প্রবাদের পর যথন আমি একবার স্বদেশে গমন করি, তখন আমার মুখে তাঁহারা কাশীেরের রম-ণীয়তা, অনুপম শোভা, অদ্ভুত নৈসর্গিক ব্যাপারচয়, স্বাস্থ্যকর জল বায়ু, বিস্তৃত হ্রদ উৎসাদি জলাশয়, কুত্রিম রম্যোপবনাদি বিলাস-ভবন এবং প্রাচীন কীর্ত্তিস্তম্ভাদির বিষয় কথঞ্চিৎ প্রবণ করেন। সেই হইতেই তাঁহাদের কোতৃহলের রৃদ্ধি, এবং তদ-বধিই তাঁহারা কাশ্মীরের বিবরণ লিখিয়া পাঠাইতে আমাকে পুনঃ পুনঃ উপরোধ করেন। প্রধানতঃ তাহাই এই পুস্তক প্রণয়ন পক্ষে আমার উত্তেজক বা উত্তরসাধক।

 প্রকাশ দারা উৎসাহের বহু গুণ বর্দ্ধন করিলেন। সেই সঙ্গে
অনেক সহৃদয় পাঠক মহাশয়েরা প্রস্তাব পাঠে আনন্দ প্রকাশ
পূর্ববিক উহাকে পুস্তকাকারে মৃদ্রিত করণার্থ অনুরোধ করেন।
আমি স্লন্ধ সেই সাহসে সাহস্রা হইয়াই অদ্য এই "কাশীর
কুস্থম" পুস্তকথানি সাধারণের হঠে অর্পণ করিতেছি। এই
কুস্থমে স্থানীরভ আছে কিনা এবং যদি কিছু থাকে, তাহা
বিবিধ পাঠকের মনোমধুপকে আকর্ষণ করিতে পারিবে কি না—
কিছুই বলিতে — কিছুই বুঝিতে পারি না। যদি অল্প সংখ্যক
পাঠক পাঠিকারাও মনোনিবেশ পূর্বেক ইহার আদ্যোপান্ত এক
একবার পড়িয়া দেখেন এবং দেখিয়া কিঞ্চিমাত্রও প্রীতি লাভ
করেন; অথবা যদি কোনো পাঠক কাশ্মীরের পর্যাটক হইয়া
এই পুস্তক হইতে কিয়ৎ পরিমাণেও উপকৃত হয়েন, তবে
তাহাতেই আমার আয়াস ও যয়ের সাফল্য জ্ঞান করিব।

মধ্যত্ব পত্রে যাহা প্রকাশ পায়, তাহার প্রথম অধ্যায়ে এখানকার ভৌগোলিক বিবরণ, ঋতু পরিবর্ত্তন, অধিবাসীদের চরিত্র, শিয় জৌশল, ভাষা এবং শাসন প্রণালী; দিতীয় অধ্যায়ে প্রথ সমূহের বিবরণ; তৃতীয় অধ্যায়ে জীনগর ও তৎ দলিহিত রম্য স্থান ও ফ্রদাদির বিয়য়; চতুর্থ অধ্যায়ে অছুত নৈস্ফিক ব্যাপার সমূহ বিরত হইয়াছিল। এক্ষণে তত্তাবৎ বহুলাংশে গরিবর্তিত, সংশোধিত ও পরিবর্দ্ধিত এবং অবকাশবিরহৈ য়ে কয়টী পরিচেছদ মধ্যত্বে তথন প্রকাশ করিতে পারি নাই, তাহাও এখন সন্ধিবেশিত করিয়া দিলাম। কাশ্মীরের প্রাচীন ইতিহাস সম্বন্ধে স্বতন্ত্র পুস্তক প্রণয়নের মানস রহিল।

্বলা বাহুল্য, যে, এতদ্বর্ণিত পথ ও রম্য স্থানাদির প্রায়

স্চীপত্র।

প্রথম পরিচ্ছেদ।

| रिषग्र । | | | | | 9 | . 166 j |
|------------------|------------|------------|-------------|----------|-----|----------------|
| ,শ্মীর শব্দের উ | ৎপত্তি | • | • | ••• | ••• | > |
| ্যাতি ও প্রাচীন | | • • • | ••• | ••• | ••• | ર |
| দীমা ও বিস্তার। | | ••• | ••• | ••• | ••• | 8 |
| লাক সংখ্যা। | ••• | ••• | · · · | ••• | ••• | 8 |
| পর্বত। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | 8 |
| জাল ও সংগ। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | ¢ |
| नि । | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | • |
| সেতু। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | ٩ |
| দেকি। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | ۵ |
| ए प । | ••• | ••• | • • • | ••• | ••• | 77 |
| डे ंश । | ••• | ••• | ••• | **, | ••• | 35 |
| ঋতু পরিবর্ত্তন। | ••• | ••• | ••• | ••• | *** | 30 |
| জল বায়ু। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | २२ |
| | ক্ৰি | ও উদ্ব | उन । | | ••• | २७ |
| উৎপত্তি | পত | ও পক্ষী | 1 | ••• | ••• | २¢ |
| | ধাতু | ı | | ••• | ••• | २७ |
| रामगृहं। | | ••• | ••• | . | ••• | ২৭ |
| ſ | ह ि | विद्या | ••• | • | ••• | २४ |
| नेवाजी | গা | क्रेष्ट्म। | ••• | ••• | ••• | ২৯ |
| · · | 41 | গ্ৰ । | ••• | *** | ••• | ७७ |
| শিল্প কোঁশস্ত্র। | | *** | ••• | ••• | ••• | ৩৫ |
| ा या। | ••• | *** | ••• | ••• | *** | 90 |

সমুদয়ই আমি প্রত্যক্ষ করিরাছি। অধিকস্ত ডাক্তার ইন্স সাহে বের " কাশ্মীর হাাও বুক " নামা পুস্তক, কাশ্মীরের স্থবিত্র সচীব প্রধান দেওয়ান ক্বপারাম কর্তৃক পারসীক ভাষায় লিখি " গুল্জানে কাশ্মীর " অভিধেয় গ্রন্থ এবং তৎ গুণাকর পুর্টে অথচ মদীয় প্রিয়তম ছাত্র ও মিত্র দেওয়ান অনন্তরামের নি হইতে বিস্তর সাহায্য ও পাইরাছি। ত্রুত্রত ভালেদিগের ও মুক্তকণ্ঠে কৃত্রুত। স্বীকার না ক্বিয়া গাকিতে পারিলাম ন

পরিশেষে বক্তব্য, আমার পরম একাস্পদ কবিত্র মধ্যা।
সম্পাদক এইক বাবু মনোমোহন বহু মহাশ্য এই প্তুরে,
লিপিগত ও মুদ্রাগত সংশোধনাদি বিবয়ে এবং কিয়দংশু
আর্থিক ভার বহনে যেরূপ বিশেষ নাহার্য করিয়াছেই
তাহাতে ভাঁহার নিকট চিরক্তজ্ঞতা কথে বন্ধ থাকিব। তিনি
নানাবিধ ছ্রেছ কার্য্যে নিয়ত ব্যাপৃত, তথাপি "কাল্যা
ক্ষম" প্রক্ষ্টনার্থ যত্ররূপ জলদেক ও উৎসাহ রূপ আলবাদ
বন্ধনে তিলৈকের জন্মও জাটী করেন নাই। অধিক কি, এবে
আমি গ্রন্থ লেখক পদে নবত্রতী, তাহাতে প্রবাসী, স্থতরাং
ভাঁহার ঐরূপ ঐকান্তিক স্নেহানুক্ল্য ব্যতীত এ পুস্তক কদা
চই ভূলোকের আলোক দর্শনে সমর্থ ঘ্ইত না!

বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজে এরপে গ্রন্থ লেখার উদ্যম অদ্যাধি সাধারণ হয় নাই, স্তরাং সমালোচকের দৃষ্টিতে আমার এই পুস্তকে বিবিধ ক্র'টী থাকা সম্ভব, কিন্তু ভরসা করি, ঐ কার্ণ বিবেচনাতেই ভাঁহারা মার্জ্জনা ও প্রশ্রা দান করিবেন।

জমু। ভাবণ, ১২৮২ সাল। }

শ্রীরাজেন্দ্রমোহন বস্থ

| লিকা। | | ••• | | *** | • | . U |
|---------------------------------------|--------|----------------|----------------|-------|--------|------------|
| वर्षाः | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | .09 |
| শাসন প্রণালী। | • | ••• | ••• | ••• | • | 9 |
| | | _ | | | , | |
| | _ | a | . ~ | | • . | |
| | দি | তীয় গ | পরিচে | छम्। | | |
| ! | • | কাশ্মী | রর পথ | I | | |
| সমুদয় পথের সাধা | রণ প্র | ক্তি। | ••• | ••• | ••• | ৫২ |
| জিমুও বন্হাল প | [थ। | ••• | ••• | ••• | ••• | ৬৯ |
| ভিম্বর ও পীর পঞ্জ | াল পথ | 1 | ••• | ••• | ••• | 300 |
| ভিম্বর ও পুঞ্চ পথ | 1 | ••• | ••• | ••• | ••• | 229 |
| মরি পথ। | | ••• | *** | ••• | ••• | 329 |
| আবোটাবাদ পথ | ŀ | ••• | | ••• | ••• | 300 |
| | • | - | | | | |
| | ত | তীয় গ | পরিচে | इप । | | |
| শীনগ | • | | নিকটব <u>ু</u> | | । चीत | |
| -1 -1-1 | 7 –11 | | | ा श्र | 1114 1 | |
| _ | _ | ज्य श्च | ख्यः भा | | | • |
| 🗐 নগর। |) | | | | | • |
| বিভক্তা নদী। | } | ••• | *** | ••• | • | 208 |
| নগরের অভ্যন্তর। | J | | | | • | |
| শকরাচার্য্যের টিকা | l | ••• | ••• | ••• | ••• | \$ 8¢ |
| রিপর্বত বা হুর্গ। | | ••• | | ••• | | \$8\$ |
| • | • | | | • | | |
| | | ছি তী | য় আহেশ। | | | |
| डन् चर्था ९ नागिति | क इन । | *** | ••• | ••• | • ••• | 365 |

চতুর্থ প্রিচ্ছেদ।

অদূত নৈদর্গিক ব্যাপার ।

১। ক্ষীর ভবানী। ...

२। जिंदे भन्ना। ...

| - | | | | | | | |
|---------------|----------------------------------|--------------|---------|---------------|----------|--------|-----------------|
| ७। | চল ংশ ক্তি | বৈশিষ্ট দ্বী | 1971 | ••• | ••• | ••• | 5 9 O |
| 81 | ত্রিসন্ধ্যা | ••• | ••• | | ٠٠٠٠ | • • • | 39 8 |
| 41 | ৰুদ্ৰে সন্ধ্যা | বা পাবন | मऋग | ٠ | ••• | ••• | ን ዓ৫ |
| ७। | কাঁদ্'রে কুঠ | অৰ্থাৎ | প্রস্তর | ভক্ষণ গৃ | ह । | ••• | 393 |
| 91 | দশ ক্রোশ | मृतवर्डी । | >শমাদ্ব | য়ের পরে | ষ্পর সংয | धान। . | 30 ² |
| ٧١ | প্রস্তুরের জ | न प∤न । | ••• | • • • | ••• | ••• | 2/2/ |
| | | | | | | | |
| | | প্র | ওম্ 🕫 | ারি চে | म । | | |
| | | কাশ্মী | रित्रत | পূৰ্বৰ বি | ভাগ। | | |
| | | | প্ৰথম | ভোংশ। | • | | |
| দেভি | দার কল্কার ৮ুন্সি বাগ। ভন। | উংপত্তি | 1 | ••••• | ••• | ••• | 395 |
| রাম | ছুন্সি বাগ। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | ১৭৯ |
| পাত | তন। | ••• | ••• | • • • • | ••• | **** | ኃ ዓ৯ |
| अर्थ । | ণুর—(কেশ গাগ ও কালী | রের জন্ম | স্থ†ন) | | | • | 220 |
| ফুক • | ন্ নাগ ও কালী | শৈ নাগ | ١ | • ••• | ••• | ••• | 7.p.o |
| অবস্ত | ীপুর। | ••• | ••• | ••• | ••• | ••• | 747 |
| সমা গ | ীপুর। ধং। •• বেহাড়া। | ••••• | ••• | ••• | ••• | ••• | 172 |
| বিজ্ | বেহাড়া। | ••• | | ••• | ••• | ••• | 245 |
| খান্ব | ल। | ••••• | | ••• | ••• | ••• | 320 |
| অনন্ত | লে। নাগ বা ইস্ | লামাবাদ | F 1 | ••• | ••• | ••• | 720 |
| মার্ভও | व गरेन। | | ••• | ••• | ••• | ••• | 720 |
| ব†য় ন | V | • | ••• | ••• | | ••• | 224 |
| ভুমজু | क्षा । | •••• | | ••• | ••• | ••• | 340 |

শুদ্বিপত্র।

. প!ঠকবর্গকে অনুনয় করিতেছি, তাঁহারা এই পুস্তক পার্ট করিবার পূর্বে নিম্নলিখিত অশুদ্ধিগুলি শোধন করিয়া লইবেন।

| প্ৰা | | | প্র ক্রি | | | অশুদ | | शुक्तः । |
|------------|---|---|------------|---|------|-----------------|---------|----------------|
| 8 | - | - | 32, 59 | - | - | - লদাঘ্ | • | ल म्थ् |
| ; 2 | - | - | 7.2 | - | · `- | ব! স্ণী | - | বগ্গী |
| \$8 | - | - | ২ 8 | _ | | - খমুস | • | সম্যুখ |
| 70 | - | - | • 75 | - | - | মওলাকারে | 7 - | हा यथनाकारत |
| ₹8 | - | - | 9 | - | - | গোমা | • | গোসা |
| ৩১ | - | - | 7 • | - | - | শে ৰ্গ্য | - | শোর্ঘ্য |
| 0.0 | | | | | | ইউরোপীয়, | | |
| 88 | - | • | ٤,5 | - | - | হর, ইটালী | दमनीत्र | - শীয় রণকুশল |
| | | | | | | इ हेटब) |) | সেন্বায়ক। |
| 84 | - | - | 33 | - | - | কর্ণ | • | কোণ্ |
| 84 | - | - | 79 | - | - | ওৎকর্য | • ' | উৎকর্ম |
| ¢ 9 | - | - | रं२ | | - | 7700 | · | >>,800 |
| 64 | - | - | २ 8 | - | - | খুসরি | - | খুপরি |
| 49 | × | • | 5 2 | - | - | কিয়দ্দর | ~ | কিয়দ্দূর |
| ۶۰۰ | - | - | ٤٤ | • | - | প্রাণায়ম | • | প্রাণায়াম |
| 7.9 | - | * | ৩ | - | - | রাজপুর | | রা মপুর |
| 334 | | - | 20 | 7 | - | ₩. | ň | 41. |

| পূষা | | | 8,9 | , (4) | | | ত শ্ৰদ | | ইছে ⊭ |
|-------------|----------|----------|-----|------------|---|---|--------------------|------------|-------------------------|
| 229 | - | | 9 |) | - | - | रेक णाथ | • | <u>টিবশা</u> শ |
| 700 | - | ♣. | 20 | • | - | - | ग त्नारगङ्ग | , <u>~</u> | यटनाटम (इन |
| 7.07 | - | - | 5: | ł | - | - | इ ज़ | - | হ য় |
| , 300 | - | - | æ | | - | - | শদৃশ | - | সদৃশ |
| 785 | • | - | 22 | • | - | - | গবৰ্দ্ধন | | ্ গোই ৰ্দ্ধ ন |
| 780 | - | - | ૭ | | | - | বাসমন্দির | · - | দেবম নিদ্র |
| 780 | • | - | ۵ | - | - | - | মুদলম†ন দি | রে | মুদলমান দিগের |
| 383 | - | - | 2 | - | | 1 | নিশ্চর | - | নিশ্চয় |
| 300 | - | - | 2 | | - | • | বাটী | - | কাটী |
| :60 | ~ | - | ; 9 | - | • | | र प र क | ų. | उन्दर्क |
| 248 | • | - | 53 | - | - | ₹ | स्टिक | - | इन्टक |
| 748 | - | - | 20 | - | - | 3 | শং ক ারভাবে | - | সংস্কারাভাবে |
| २• 8 | • | - | 2.5 | - | - | 4 | চাঁহার | • | ত হাঃ |
| २७१ | • | - | 3¢ | ~ ′ | ~ | (| পৰু | • | (b) 4 |

কাশ্মীর-কুসুম।



প্রথম পরিচ্ছেদ।

काश्वीत मरस्त्र उप्शिष्टि। श्वाणि ७ व्यक्तिष्ठ । मीमा । विस्तात । ताक-मःश्वा । भर्क्षण । स्व ७ इत । निने । रम्पू । तोका । दूष । उपम । श्रृष्ट्र वर्षन । स्वत्र । स्वत्र । स्वर्षि – क्षि, भश्च ७ भक्ती । श्रृष्ट्र । वामगृह । निवामी – क्षित्र , भित्रक्षत, श्वाप्त । निन्भरको मन । स्वार्ष । निक्का । श्वा । मामनव्यक्ष नित्र ।

[কাশ্মীর শব্দের উৎপত্তি] কাশ্মীর শব্দের উৎপত্তি ও ক্রংপত্তি বিষয়ে অনেকে অনেক প্রকার কল্পনা করিয়া থাকেন। কিন্তু স্থবিখ্যাত প্রফোসর উইল সন্ সাহেব যাহা ছিরীক্বত করিয়াছেন, তাহাই প্রামাণিক এবং বিচারসক্বত বলিয়া বোধ হয়; অর্থাৎ এন্থলে ভগবান কশ্যপমুনির আঁশ্রম ছিল বৃলিয়া ইহা কাশ্মীর নামে বিখ্যাত হইয়াছে। [খ্যাতি ও প্রাচীনত্ব] যৎকালে দক্ষযজ্ঞে পতিনিন্দা
শ্রবণে সতী দেহত্যাগ করেন এবং ধূর্জ্জটি সেই মৃতদেহ
শিরোদেশে ধারণপূর্বক উদাসীনবেশে ইতস্ততঃ ভ্রমণ করিলে
চক্রপাণি স্থদর্শন চক্র দারা উহা খণ্ড খণ্ড কাটিয়া ফেলেন,
তৎকালে তাঁহার কণ্ঠদেশ কাশ্মীরের এক স্থলে পতিত হয়।
সেই স্থল কোন্টা তাঁহার স্থিরতা নাই। একারণ সমুদায় উপত্যকাকে সারদাপীঠ কহিয়া থাকে। পার্ক্জাত্য বিভাগস্থ সোপুর
নামক স্থানে সারদাদেবীর প্রতিমূর্ত্তি আছে এবং কাশ্মীরী
অক্ষরকে সারদা অক্ষর কহে।

যৎকালে খ্যাত্যাপন্ন পাণ্ডবেরা ভারতবর্ধের উত্তর খণ্ড পরিভ্রমণ করিতে আদিয়াছিলেন, তথন ভাঁহারা এই স্থলে কিয়ংকাল বাস করিয়া যে সমুদায় কীর্ত্তিকলাপ স্থাপন করেন, অদ্যাপি তাহার অনেক ভগ্নাবশেষ আছে এবং কোনো কোনো স্থানে তাঁহাদিগের নির্মিত দেবালয় অবিনৰীর রূপে দণ্ডায়মান রহিয়াছে। কোনো কোনো ভূতত্ত্ব-বেতা প্রতিপন্ন করিয়াছেন, যে, কাশ্মীর মন্থ্যের আদিম স্থান ছিল এবং এই স্থান হইতেই মনুষ্য-জ্রোত প্রবাহিতহইয়া পৃথিবীর অপরাপর অংশে প্লাবিত হয়। প্রত্যুত, অতি প্রাচীন কালাবিধ যে ইহা মনুষ্যের বাস-স্থান হইয়া আসিতেছে, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। পরস্ক ইহা বাসোপযোগী হইবার পূর্বের যে এককালে জলগর্ম্তে নিমগ্ল

কাশ্মীর প্রদেশের চতুঃপার্শ্ব-বেষ্টিত শৈলপ্রাকার; বক্রগতি-বিশিষ্ট অনতিবেগবান নদী; উহার অসংখ্য শাথা প্রশাথা; স্থির হ্রদনিচয়; উহাদিগের তটস্থ নন্দনকাননসদৃশ

ক্রীড়া-উপবন; চিত্তবিমোহন তপোবন; চমৎকার প্রস্রবণ; অনুপম নৈসর্গিক শোভা; নির্মাল ও স্বাস্থ্যকর জলবায়ু; ্প্রবল বাত্যার অদর্শন; উর্বরা ভূমি; স্থরুস ও প্রচুর খাদ্য সামগ্রা প্রভৃতি নানাবিধ সৌন্দর্য্য ও উপাদেয়তা একাধারে সমাবেশ—এই সমস্ত যেমন বিশ্বয়কর; তেমনি কি ভূতত্ত্ব-বিৎ, কি রাসায়ণিক, কি প্রাচীন তত্ত্বানুসন্ধায়ী, কি ইতি-হাদবেত্তা, কি পর্য্যটক, কি কবি, কি রদজ্ঞ ভাবুক, কি স্বভাব-চিত্রকর, কি রোগী, কি স্বস্থ, কি মৃগয়ামুরাগী, কি ट्यांगितिनामी, कि मः मात्रज्यांगी विरवकी, कि धनी, कि निर्धन, কি আমীর, কি ফকীর, সকল প্রকার ব্যবসায়ী ও অবস্থাপন্ন ব্যক্তিদিগের পক্ষেই কাশ্মীর যেমন উপাদেয়, বোধ হয়, পৃথি-বীর আর কোনো স্থল তেমন নহে। অপর, এখানকার সর্বত্তেই পুরাকালিক কীর্ত্তিস্তস্ত বিস্তৃত রহিয়াছে—কোনো কোনোটী অভিনব বলিয়া প্রতীত হইতেছে—কোনো কোনোটা বিনা-শোন্মুথ হইয়াছে— কোনো কোনোটা বা বিনষ্ট হইয়াও কেবল কতিপয় চিহ্ন দ্বারাই আপন প্রাচীন গৌরবের সাক্ষ্য দিতেছে। ইত্যাকার নানা বিচিত্র ব্যাপার নিরীক্ষণ করিয়া মানবজীবনের অনিত্যতা ও মানুষিক বলবীর্য্য ও পর্কের নখ-রত্ব স্পান্টরূপে অসুভব হইতে থাকে এবং " ধূলার শরীর এই ধূলি হবে শেষ !" এই সনাতন সত্য প্রস্তরাঙ্কিত রেখার ন্যায় -**হৃদয়ঙ্গম হয়। এই** সমুদায় কীর্ত্তিকলাপ দেখিয়া বোধ*হ*য়, মন্ত্র্য নটবেশে পৃথিবীরূপ নাট্যশালায় দিনকয়েকের জন্ম নৃত্য করিয়া চলিয়া যাইতেছে—কোথা হইতে আসিতেছে, আবার কোথায় গিয়াই বা লুকায়িত হইতেছে, তাহার নিদ- শনও পাওয়া যায় না! পটোতোলন হইতে পট প্রক্ষেপণ পর্যান্ত তাঁহাকে হয় স্থজনকর্তা ব্রহ্মা, নয় পালনকর্তা বিষ্ণু,, নয় লয়কারী মহেশ্বর বলিয়া প্রতীত হয়!

িনীমা ও বিস্তার বিশারিরাজ্যের উত্তর সীমা হিমালয়
পর্বতের অন্তর্গত কারাকোরম পর্বতশ্রেণী; ইহার পূর্বব সীমা
তিবাং; দক্ষিণ সীমা পঞ্জাবান্তর্গত বিলম, গুজরাং, সিয়ালকোট ইত্যাদি এবং এই বিভাগের হজারা ও রাউলপিণ্ডী
ইহার পশ্চিম সীমা। ইহার বিস্তার ৩২° ১৭ হইতে ৩৬°
ল্যাটিচিউড এবং ৭৩° ২০ হইতে ৭৯° ৪০ লংগিচিউড
পর্যান্ত। ইহা দৈর্ঘ্যে পূর্বব হইতে পশ্চিম সীমা পর্যান্ত ৩৫০
মাইল এবং প্রশ্বে প্রায় ২৭০ মাইল। লোকসংখ্যা অন্তর্না আট লক্ষ। কাশ্মীর উপত্যকা, জন্মু, লদাঘ্, বাল্তী বা
ইস্কার্ল, ভদ্রোয়াড়, কন্টোয়াড় প্রভৃতি কয়েকটা বিভাগ
কাশ্মীর রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত।

ভিপত্যকার সীমা, বিস্তার এবং লোকসংখ্যা] কাশ্মার উপত্যকা অতি বিস্তৃত সমতল ভূমি। ইহার উত্তরে বাল্তী বা ইন্কার্ত্র প্রভৃতি জিলা। পূর্বভাগে দ্রাস্, লদাঘ্ প্রভৃতি বিভাগ। দক্ষিণে পুঞ্চ, জন্ম, সিয়ালকোট প্রভৃতি এবং পশ্চিমে হজারা ও রাউলপিণ্ডী। ইহা দৈঘের প্রায় ১০০ এক শত মাইল এবং প্রস্থে গড়ে ২০ মাইল। ইহার আয়তন ৪,০০০ চত্ত্রস্ মাইল। গত বংসরে বর্তমান শাসনকর্তা গণনা করিয়া দেখিয়াছেন, ইহার লোকসংখ্যা চারিলক্ষ। তন্মধ্যে কেবল ৫২,০০০ হিন্দু এবং অবশিষ্ট অর্থাৎ ৩,৪৮,০০০ মুসলমান।

্ [পর্বত] কাশার সমুদ্রতল হইতে ৫,৫০০ ফিট উচ্চ।

অজভেদী পীর নাম্মী পর্বতেশ্রেণী ইহার চতুঃপার্শ্বে অভেদ্য প্রাকারের ন্যায় দণ্ডায়মান থাকিয়া ইহাকে শক্রহস্ত হইতে রক্ষা করিতেছে। উহার কোনা কোনো শৃঙ্গ আট হাজার হইতে পনর হাজার ফিট পর্যন্ত উচ্চ এবং সম্বংসর তুষার-মণ্ডিত। একজন স্থাসন্ধ কবি লিখিয়াছেন;—

> " দৈল প্রাকার বন্ধাদির ন পরভরং, নাপি সর্পাদি দংশো, ঘর্মো নৈবাভিযোরো, বিরল বিরসভা নৈব পানাশনাম্। নৈব জ্রীণামু কঠোরা রভিঃ " ইত্যাদি।

এই শৈল সমুদায়ের তলদেশ হইতে যত উদ্ধে গমন করা যায়, ততই বিবিধ প্রকার ঋতু এবং ততুপযোগী উদ্ভিজ্জ, শস্ত ও ফল মূলাদি.দেখিতে পাই। স্থাবার কোনো কোনো স্থলে এক স্থানেই সমুদয়ের একত্র সমাবেশ আছে। অধিকাংশ পর্ব্বতের শিখরদেশ স্থবিস্তৃত এবং নানা বর্ণের পুষ্প ও মনোহর তৃণাঙ্গাদিত বলিয়া সাতিশয় রম্য। উহাকে মর্গ অর্থাৎ ক্ষেত্র কছে। উহাদের মধ্যে গুলমর্গ, সোণামর্গ প্রভৃতি কয়েকটী সর্ব্বাপেক্ষা উৎকৃষ্ট। এই শিখরভূমিতে নিরীহ পার্ববত্যক্রাতি নির্ভয়ে ও পরম স্থাখে বাস করে। গো, মেয়, ছাগ ও অর্থ উহাদের ধনসম্পত্তি। সে ধনে কেইই লোভ করে না এবং তাহারাও সমতলবাসীদিগের পৃশ্বর্ষ্যের প্রতি লোভাক্ষ্ট দৃষ্টি নিক্ষেপে রউ নয়।

[জল ও ছল] ইহার হল অপেকা জলভাগ অধিক। কোনো অত্যুক্ত পর্বতিশৃঙ্গ হইতে দেখিলে বোধ হয়, যেন কাশ্মীর প্রদেশটা জলে ভাসিতেছে। বিতন্তা নদী ইহার মধ্য দিয়া প্রবাহিত; চারিদিকে উহার ক্রত্রিম শাখা বিস্তারিত রহিয়াছে; উলর প্রভৃতি হ্রদ সকল স্থবিস্তৃত বিশাল বক্ষঃ উন্নত
ভাবে দেখাইতেছে; সফেদা নাম্মী বৃক্ষপ্রেণী গগনস্পর্শ করিবার নিমিত্ত মস্তকোত্তোলন করিয়া আছে; চেনার বৃক্ষ বট
ব্যক্ষের ন্যায় বাহু বিস্তার পূর্বক নিকটছ তরুগণকে আলিঙ্গন
করিতেছে; মধ্যে মধ্যে হরিদ্বর্ণ ক্ষেত্র, ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র লোকালয়
এবং মনোহর উপবন দ্বীপপুঞ্জের ন্যায় শোভ্যান হইতেছে;
দেখিতে অতি রমণীয়!

[নদী] বিতস্তানদী—যাহাকে গ্রীকেরা হাইডাস্পিস্ নামে খ্যাত করিয়াছে এবং মুসলমানেরা বিহুৎ ও ইংরাজেরা বিলম কহিয়া থাকে—দেই বিতস্তা কাশ্মীরের পূর্ব্বপ্রাস্ত হইতে উৎপন্ন হইয়া নানা শাখা প্রশাখা ও করদ নদী সমন্বিতা হইয়া উপত্যকার এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্য্যন্ত গমন করিয়া প্রবাহিতা হইতেছে। ইহার উৎপত্তি 🗱 অনেকে অনেক প্রকার কল্পনা করিয়া থাকেন। পরস্তু পূর্ব্বভাগস্থ স্থপ্রসিদ্ধ বৈরনাগ নামক উৎসের প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ দূরে তিনটী উৎস আছে। এই তিনটী উৎসের পরস্পর দূরতা অঙ্গুষ্ঠের অগ্র ভাগ হইতে তর্জ্জনীর অগ্রভাগ পর্য্যন্ত পরিমিত স্থান। এ কারণ উহাকে বিৎবিথর অথবা বিত্রস্ এবং নির্গত জলস্যোতকে বিতস্তা বা বিহৎ কহিয়া থাকে। ঐ জলধারা যতই নিম্নভাগে আদিয়াছে, ততই বৈরনাগ, অনন্তনাগ, আচ্ছাবল, কুৰুড়নাগ, কোঁশানাগ প্রভৃতি অতি স্থন্দর স্থন্দর উৎস হইতে জলপ্রবাহ নিৰ্গত হইয়া উহার অবয়ব বৃদ্ধি করিয়াছে এবং অবশেষে বৃহৎ নদীর আকারে পরিণত হইয়াছে।

বিতন্তা নদী ক্রমাগত উত্তরপূর্ববাহিনী হইয়া উলরহ্রদের
মধ্য দিয়া প্রবাহিতা। পরে দক্ষিণবাহিনী হইয়া পশ্চিমপ্রান্তম্ব
বারমূলা নামক জনপদ অতিক্রম করিয়া ভয়ক্টর মূর্ত্তিতে উপত্যকা পরিত্যাগ পূর্বক চলিয়া গিয়াছে। কিন্তু এই নদী যতদূর
পর্যান্ত উপত্যকার মধ্যে আছে, ততদূর সর্বব্রেই ইহার মূর্ত্তি
অতি শান্ত। ইহাতে কোনোপ্রকার হিংদু জলজন্তু নাই।
ক্রাবণ ও ভাদ্র মাদে প্রায় প্রতি বৎসর ইহার ভয়ঙ্কর জলোচহাস হইয়া দেশের অনেক অনিষ্ট ঘটায়। উহা মধ্যে মধ্যে
এমন শোকাবহ ও অনিষ্টকর হয়, যে, যিনি কখনো উহা দেখিয়াছেন, তিনি অনেককাল পর্যান্ত ভুলিতে পারিবেন না। তৃতীয়
পরিচ্ছেদে এইরূপ একটা ভয়াবহ জলোচ্ছ্বাদের বিবরণ বর্ণনা
করা যাইবে। •

বিতস্তা নদী উপত্যকার মধ্যে ব্রিং, লিদ্দর, দিন্দ, পোড়া প্রভৃতি অনেক পার্ব্বত্য নদীর সহিত সংমিলিতা হইয়াছে।

[সেতু] উপত্যকামধ্যক্ত সমগ্র গতিতে ইহার উপর ১৩টা কদল অর্থাৎ সেতু আছে। ইহারা কাষ্ঠনির্ম্মিত। এতমধ্যে ৭ টা শ্রীনগরের দীমান্তর্গত। সেতু নির্মাণ করিবার রীতি.এই রূপ;—প্রথমে নদীগর্ব্ধে স্থুল ও রূহৎ রূহৎ খুঁটা প্রোথিত করিয়া ত্রিকোণ ভূমি বেইটন করে। ইহার শিরঃকোণ সোতের দিকে রাখে। খুঁটা সমুদায় নদীতল হইতে প্রায় ৬ হস্ত উচ্চ করিয়া থাকে। এইরূপে যে ত্রিকোণ গর্ত্ত হয়, উহার তিন পার্ম্ব তক্তা দিয়া আচ্ছাদন করিয়া রূহৎ রূহৎ প্রস্তর দারা গর্ত্ত পূর্ণ করে। ইহাই স্তম্ভের বনিয়াদ অর্থাৎ মূল হইল। পরে দে-দার কাঠের খুঁটা প্রায় অর্দ্ধ অর্দ্ধ হস্ত দূরে সাজ্যাইয়া দেয় এবং তাহার উপরে

এড়োএড়ি ভাবে আবার খুঁটা স্থাপনা করে। খুঁটার ছই অস্ত কার্চের কঠিন কীলক দ্বারা নিম্নভাগস্থ খুটার অস্তের সহিত আবদ্ধ। নিম্নভাগস্থ স্তবক অপেক্ষা উপরিভাগের স্তবক ক্রমশঃ-চৌড়া করা হয়। এইরূপে স্তম্ভ সমুদায় কিছু উচ্চ হইলে বহৎ বৃহৎ লম্বা কাষ্ঠ দ্বারা পরস্পারের শিরোদেশ সংযুক্ত করে এবং ততুপরি তক্তা বা সূক্ষ্ম সূক্ষ্ম কাষ্ঠখণ্ড বিছাইয়া দিলে সেতু প্রস্তুত হইয়া গেল। কোনো কোনো সেতৃর উপরিভাগ মৃত্তিকা বা শুক্ষ তৃণ দ্বারা আবৃত এবং পথিকদিগের বিপদ নিবারণার্থ উভয় পার্থেরকণ (রেলিং) আছে।

ডাক্তার ইন্স আপন "কাশ্মীর হ্যাণ্ডবুক" নামক পুস্তকে এই সমুদায় সেতুর যে তালিকা দিয়া হন, ভাহা এম্বলে উদ্ভূত করিলাম।

কাশ্দীর-কুন্নর

| সংখ্যা | | সংজ্ঞা | मीर्घ | প্রস্থ | ভডের সংখ্যা | গড়ে জলের গভীরভা |
|-----------|--------------|-----------------------|-------|--------|----------------|---------------------|
| | | | গজ | কিট | • | কিট |
| 3 | | थान्यल् | ৬৬ | 52 | \$ | 811. |
| ٤. | | শ্ জ ্বেয়াড়া | 300 | 39 | ૭ | ৬ |
| ૭ | | পামপুর | ५७२ | 28 | 8 | ঙা৷• |
| 8 | | মীরাকদল … | 208 | 2. | ¢ | |
| œ ! | | श्व। कपल | ৯৭ | ২ ৪ | ৩ | 1 |
| ৬ | भेद्र । | करङ काम | ৮৮ | 39 | ૭ | |
| 9 | এ শগর | জ্বানা কদল … | હત | ২৪ | ૭ | 38 |
| ъ | | আশী কদল… | P5 | 39 | ૭ | |
| ۵ | | নয়া কদল … | 9& | 24 | . ৩ | |
| • | | माका कपल | 22. | 79 | 8 |] |
| 72 | | मधन | 225 | 20 | 8 | 30 |
| ડર | | দোপুর | २ऽ8 | 30 | | ২৮ |
| 70 | | वात्रवृता | 28% | 36 | ৬ | ₹8 |

িনৌকা] নৌকাই নাবিকদিগের গৃহ ও বাটী। উহারা ইহাতে দিন যামিনী অতি স্থথে থাকে। অনেকের এ অপর কোনো গৃহ নাই—পুত্র কলত্রাদি লইয়া ইহাতেই চির- কাল বাস করে। বালিকা, তরুণী এবং প্রাচীনারাও ভরণী বাহন করিতে অতিশয় নিপুণা। এখানকার নোকা আমাদের দেশীয় নোকা হইতে সম্পূর্ণ ভিন্ন। আকারামুসারে ইহাদিগের নানাবিধ নাম। তুমধ্যে শিকারী ও ভূঙ্গা প্রাসদ্ধ এবং পর্যাক্তিদিগের ব্যবহারের উপযুক্ত। একারণ, কেবল এই ছুই প্রকারেরই কিছু পরিচয় দিতেছি।

শিকারী সাধারণতঃ দৈর্ঘ্যে ২৫হাত, প্রন্থে ২।• হাত এবং গভীরতায় ১ ফুট। ইহার মধ্যস্থলে অর্থাৎ আরোহীদিগের বসিবার স্থানের উপরিভাগে হোগলা দিয়া ছাওয়া। ইচ্ছা-নুসারে এই ছাদ উঠাইয়া লওয়া যায়। রৃষ্টি ও আতপ হইতে রক্ষা পাইবার জন্ম ইহাতে কয়েকটা হোগলার পর্দা লম্বমান থাকে। যে দাঁড় দ্বারা ইহা চালিত হইয়া থাকে, তাহাকে চাপ্পা কহে। চাপ্পা আমাদের দেশীয় দাঁড় অপেকা অনেক ক্ষুদ্র—মিফীয়াদি পাক করিবার তাক্কু অপেক্ষা কিঞ্চিৎ ব্বহং। ইহা নোকার সহিত কোনো রজ্জু দারা বন্ধনীকৃত না হইয়া বাহকগণ অসংলগ্ন হস্তে চালিত করে। এখানকার কোনো তরণীতে কর্ণ নাই। পশ্চান্তাগে একজন চাপ্পা দারা কর্ণের কাজ করে। আরোহীদিগের অভিলামামুসারে শিকারীতে তিনহইতে দশজন পৰ্য্যন্ত বাহক নিযুক্ত হইয়া থাকে। ইহাতে কোমলাঙ্গী বাহিকা থাকে না। প্রত্যেক নাবিকের মাসিক বেতন তিন টাকা এবং নোকাভাড়া এক টাকা মাত্র। পরস্ক নগরের বাহিরে লইয়া গেলে এতব্যতীত প্রত্যেককে প্রত্যহ এক আনা করিয়া খোরাকী দিতে হয়।

শিকারী-প্রমোদ-তর্ণী। এতদ্বারা সকলেই শ্রীনগর এবং

সন্নিধি স্থান সমুদায়ে প্রত্যহ বিচরণ করিয়া, থাকে। এ কারণ পর্যাটকেরা তথায় উপনীত হইয়াই ইহা নিযুক্ত করেন।

ভূপা দ্রপরিভ্রমণের উপযোগী এবং ইহাই মাঝিদিগের (ইহাদিগকে কাশ্মীরী ভাষায় হাঁঝি কহে) বাসগৃহ। ইহা সাধারণতঃ প্রায় ৪০ হাত দার্ঘ, ৪ হাত প্রণস্ত, এবং দেড় হাত গভীর। ইহার উপরিভাগ হোগলা দিয়া ছাওয়া এবং ইহাতেও হোগলার পর্দা আছে। ইহার শেষার্দ্ধভাগে হাঁঝিরা দপরিবারে বাস করিয়া থাকে এবং অপরার্দ্ধে ভ্রমণকারী আপন দ্রবাসম্ভার ও ভূত্য সমভিব্যাহারে অতি স্থথে থাকিতে পারেন। ইহাও চাপ্পা দারা বাহিত হয় এবং রমণীগণও চালনা করিয়া থাকে। অতি দূরে যাইতে অথবা নোকাবাস পক্ষে এই নোকা বিশেষ উপযোগী এবং নিতান্ত প্রয়োজনীয়। অনেক কাশ্মীরা পণ্ডিত এইরূপ তরণীযোগে কর্মস্থানে আইসে এবং ভোজনকালে গৃহে প্রতিগমন না করিয়া ইহাতেই রন্ধন এবং আহারাদ ক্রিয়া সমাপন করিয়া থাকে।

মহারাজার কতিপয় অতি স্থদৃশ্য তরণী আছে। নির্মাণাসুদারে ইহা পরিন্দা (পক্ষী) চকোয়ারি (চ্ছুকোণ) বাগ্ণী
(গাড়ী) প্রভৃতি নামে খ্যাত। এই সমুদায়ে নাবিকদিগের
বিদিবার স্থান এত দীর্ঘ, যে, এককালে ন্যুনাধিক ৫০ হইতে
৮০ জন নাবিক চাপ্পা মারিতে থাকে এবং তখন তরী তীরবেগে গমন করে।

[হ্রদ] কাশ্মীরে চারিটী প্রাসিদ্ধ হ্রদ. আছে। প্রথম ডল্ । অর্থাৎ নাগরিক হ্রদ। ইহা শ্রীনগ রের উত্তরপূর্বভাগে এবং व्यक्ष ट्रिकांन पृत्रवर्शी । पूँ हे कान (पूँ हे — व्यारितन कन विदः कान — थान) न' न्नी थान बात । हेरा विज्ञा निष्त प्रदिष्ठ मः निष्ठ । विज्ञा वाकात । हेरा जे हत जारा विवः थात्र विक्रा निष्ठ । विज्ञा वाकात । हेरा जे हत जारा विवः मान विवा । हेरा भिन्हमितिक विवः चन भरि । मान विवा भाग विवा । हेरा भिन्हमितिक विवः चन भरि थात्र भाग विवा । विवा मान विवा । हेरा भर्ता । विवा । व

এই ব্রদ চতুষ্টয় উপত্যকার সমতল ভূমিতে স্থিত; এতদ্যাতিরেকে আরো কয়েকটা পর্বতাপরি অধিত্যকায় অধিষ্ঠিত
আছে। উহাদিগকে পার্বত্য ব্রদ নামে বাচ্য করা যাইতে
পারে। যেহেতু অধিষ্ঠানভূত গিরি ব্যতী উহারা পর্বতমালায় পরিবেস্তিত। উহাদিগের মধ্যে কোশানাগ শেষনাগ,
এবং গঙ্গাবল প্রধান। যথাস্থলে উহ্লাদের বর্ণনা করা যাইবে।

্ডিংস] অপর, এছলে তের গাত্র ভেদ করিয়া অথবা পৃথিবীর অন্তর্ভাগ হইতে যে কত উৎস নির্গত হইয়াছে, তাহার সংখ্যা করা যায় না। তন্মধ্যে এই কয়টী পরম স্থানর;—বৈরনাগ, অন্তর্নাল, বায়ন, আছোবল, কুরুড়নাগ এবং রিৎবিথর। শেষোক্রটী বিতন্তা নদীর উৎপত্তি স্থান। ইহারা পূর্ব্ব বিভাগে ছিত্র স্থান্তরাং তদ্বর্ণনামুষ্ট্রিক ইহাদের আকৃতি ও প্রকৃতি বর্ণনা করিতঃ পাঠকমগুলীর কোতৃহলু পরিতৃষ্টি করিতে চেক্টা পাইব।

[ঋতু পরিবর্ত্তন] কি ইতিহাসবেতা, কি ভ্রমণকারী, বিনি কাশ্মীর সম্বন্ধে লেখনী সঞ্চালন করি**রাছেন, তিনিই** ্ইহাকে ভূম্বর্গ বলিয়া বর্ণনা করিয়। গিয়াছেনী প্রত্যুত, এখানে যেরূপ স্ষষ্টির রমণীয় শোভা অলোকিক নৈদর্গিক ব্যাপার, স্বাস্থ্যকর জলবায়ু, কৃত্রিম মনোহর উপবন এবং স্থলভ অথচ স্থাতু আহারীয় দ্রব্য, তাহাতে ইহা স্বর্গ ভিন্ন অপর কোনো শব্দে বাচ্য হইতে পারে দা। বসন্তাগমে যথন বরফ দ্রবীস্থৃত হইতে আরম্ভ হয়, তথন স্প্তির কি বিচিত্র শোভা! তুষার-মণ্ডিত পাদপগণের শাখা যেম। তুষার হইতে মুক্ত হইতেছে, অমনি উহাতে পুষ্প ফুটিয়া উঠিতেছে—যেদিকে নয়ন উন্মীলন কর, সেই নিগেই দেখিতে পাইবে প্রকৃতিদেবী পুষ্পপরিচ্ছদ ধারণ করিয়া রহিয়াছেন। রক্ষগণের আপাদমস্তক কুস্থমাচ্ছাদিত---প তার লেশমাত্রও নাই (ফুল শুক্ষ হইয়া পতিত হইলে পর পত্র উদ্গম হয়); মন্দ মন্দ মলয়সমীরণ বহিতেছে; শীতের নিদারুণ প্রভাবে মধু-কণ্ঠ দ্বিজগণের কণ্ঠরোধ হইয়াছিল, এখন বসন্তাগমে তাহারা বৃক্ষশাখায় বসিয়া মুক্তস্বরে গান করিতেছে; বহুদিনের পর প্রিয়সমাগম লাভ করিয়া মধুকর মতভাবে এক পুষ্প হইতে পুষ্পান্তরে গুণ গুণ রব করিয়া বেড়াইতেছে— দেখিলে বোধ হয়, যেন বসন্তরাজ দোর্দণ্ড ইংরাজদিগের শাসন-ভয়ে হিন্দুস্থান হইতে পলায়ন ঝরিয়া এই স্থানেই বিরাজ করি-তেছেন! প্রত্যুত এখানে বৈশাথ মাস হইতে কার্ত্তিকমাস পর্য্যস্ত সাত মাস বসন্ত।

এদেশে শীতকালে যে পরিমাণে বরফ পড়ে, তদসুসারেই বসন্তের সমাগম হয়। অর্থাং কোনো বৎসর স্বেল্প পরিমাণে ত্যারপাত হইলে, তৎসমুদায় চৈত্রমাসের প্রারম্ভেই দ্রব হইয়া শীত্র শীত্র বসস্তের উদয় হয় এবং অধিক পরিমাণে পড়িলে সে সমুদায় দ্রুব হইতে সম্পূর্ণ চৈত্রমাস লাগে; হুতরাং সে বংসর বৈশাথ মাদ ব্যতীত বদ্রন্থের আবির্ভাব হয় না। কথিত আদে, এক দময়ে দিল্লীশ্বর জেহাঙ্গির বাদ গাহ রাজকার্য্যানুরোধে বসস্ত কালের প্রারম্ভে কাশ্মীরে উপস্থিত হইতে পারেন নাই। তাহাতে তিনি তথাকার প্রধান কর্মচারীকে এই অভিপ্রায়ে এক পত্র লেখেন, যে, যেন বসন্তরাজ খাঁহার আগমন প্রতীক্ষা করে—তাঁহার পদার্পণের পূর্ব্বে যেন কোনো মতে বসস্ত আবি-ভূতি না হয়! স্নচতুর কর্মাচারী এই পত্রের প্রকৃত মর্মা বুঝিয়া চতুষ্পার্ম্ম পর্বত হইতে রাশি রাশি বরফ আনাইয়া সমুদায় ক্রীড়া উপবনের পাদপসমূহ তদ্ধারা "আর্ত করিয়া দিলেন। হৃতরাং পুষ্প উলাত হইতে পারিল না। পরে যখন বাদশাহ কাশ্মীরে উপনীত হইলেন, তখন বৃক্ষাদি হইতে তুষাররাশি উন্মোচন করিয়া দিলে বসস্তরাজ পুষ্পাসেনা সম-ভিব্যাহারে স্বীয় মোহনমূর্ত্তিতে আবিস্থৃতি হইলেন!

সর্বাদৌ বেদমুক্ষ নামক রক্ষের পুষ্প প্রক্ষৃতিত ইইয়া থাকে। ইহা ঈষৎ হরিদ্রা আভাযুক্ত শুক্লবর্ণ। পরে একাদিক্রমে যে সমুদায় পুষ্প বিকসিত হয়, তাহাদের সংখ্যা করা যায় না। যেদিকে নিরীক্ষণ কুরা যায়, নানাবর্ণের স্থপক্ষ পুষ্প দৃষ্টিপথে পতিত ইইয়া অতুল আনন্দ উৎপাদন করে। এখানে পুষ্পগুচ্ছ (ফুলের তোড়া) প্রস্তুত করিতে ইইলে এক বৃক্ষ ইতে বৃক্ষান্তরে ভ্রমণ পূর্বক পুষ্পাচয়নক্রেশ লাইতে হয় না—একবার মাত্র হস্ত প্রসারণ পূর্বক থক্ম শ

বর্ত্তী পুষ্পারাশি উৎপাটন করিলেই অতি হুন্দর পুষ্পগুচ্ছ প্রস্তুত করা যায়।

আবার মনোহর বাদামপুল্প প্রক্ষ্ণটিত ইইলে আর এক নূতন শোভা! তথন কাশ্মীরীদিগের আনন্দের আর সীমা থাকে না। কি সধন, কি নির্ধন, কি যুবা, কি বৃদ্ধ, কাশ্মীরীনাত্রেই আপনাপন ভবন পরিত্যাগ পূর্ব্বক কস্তরা * পক্ষীর পিঞ্জর হস্তে করিয়া হরিপর্বতে নামক স্থানে গমন করে। তথায় বাদামরক্ষ প্রচুর। উহারা কোনো রক্ষণাথায় পিঞ্জর স্থাপন করতঃ মন্তক হইতে উফীষ অবতরণ পূর্ব্বক তাহার নিম্নদেশে উপবিষ্ট হয়। এবং যৎকালে কস্তরা মনোহর নৃত্য ও স্থালিত স্বরে গান করিতে থাকে, তথন উহারা প্রীতিপ্রফুল্লমনে কৃত্তেতা-সূচক বিভূগুণ গান এবং মণ্ডলাকারে পরিজ্রমণ করে। প্রভূত, তথন প্রকৃতির যেরূপ রমণীয় শোভা, তাহাতে নরাধ্মনান্তিকের পাষাণান্তঃকরণেও সহসা ক্রেব্রম প্রতিভাত না ইয়া যায় না!

জৈষ্ঠেমাস সমাগত হইলে 'জেস্মিন' পুষ্প বিকসিত হয়।
ইহার বর্ণ আকাশের সদৃশ বলিয়া এখানকার লোকে ইহাকে
'হি আস্মান' কহিয়া থাকে। ইহা প্রস্ফাটিত হইয়া গেলে
পুষ্প শোভার একশেষ হইল। ঋতুরাজের পুষ্পাসেনানী মধ্যে
ইহা সর্মশেষ এবং সক্র শ্রেষ্ঠ ক্রিয় ই বোধ হয়, ইহা এত
মনোহর। স্থময় বৈশাথ মাস অবসান হইল দেখিয়াই যেন
মনোহুঃধে পুষ্পাগণ একাদিক্রেমে বৃক্ষ হইতে পতিত হইতে

কাশ্দীরীরা ইহাকে '' হাজার দন্তান" কহিয়া থাকে। ইহা দেখিতে ঠিক গাংশালিকের ন্যায়। ইহার স্বর অভিশয় মধুর ও চিত্ত-প্রকুল্লকর।

থাকে। এমন স্থন্দর কুস্থমরাশির ভূমি-শ্যা ভাল দেখায় না বলিয়াই প্রকৃতি দেনী হরিদর্গ দুর্ব্বাদলের গালিচা বিছাইয়া দেন। পাদপর্শমূহ একে তো শ্রীপ্রকী হইল, তাহাতে আবার পাছে অন্য কোনো অনিষ্ট ঘটে, এই আশহায় পল্লব রূপ সহস্র সহস্র অঙ্গুলি নির্গমন পূর্বক কৃতাঞ্জলিপুটে ঈশ্বরের স্তুতিবাদ করিতে আরম্ভ করে।

আষাত মাস সম'গত। ফলপ্রদ রক্ষ সমুদয়ও মুকুলিত হইতে লাগিল। শস্তক্ষেত্র হরিদ্বর্ণ শস্তে পরিপূরিত —ততুপরি স্থমধুর প্রবন-হিল্লোল ক্রীড়া করিয়া বেড়াইতেছে, দেখিতে অতি রমণীয়।

এখানে গ্রীম্মের লেশমাত্রও নাই বলিলেই হয়। যৎকালে আমাদিগের বঙ্গদেশে প্রচণ্ড মার্জণ্ড-তাপে কলেবর দগ্ধ হইতে থাকে—ঘরের বাহিরে পাদবিক্ষেপ করা এক প্রকার ছঃদাধ্য হইয়া উঠে—ঘর্মবারি, এক দণ্ডের জন্মন্ত নিবারিত নয়—স্থাতল শীতলপাটী, স্থান্ধ খদ্খদেরটাটী ও অবিশ্রান্ত ব্যজন কিছুই প্রান্তি দান করিতে পারে না—তৎকালে এখানে দিবানিশি মলয়ানিল মন্দ মন্দ হিল্লোলে গাত্র স্নিগ্ধ করিতে থাকে। দিবাভাগে সাধারণ ও লঘু বস্ত্রাদি ব্যবহার করিলে শরীর প্রফুল্ল হর। কিন্তু রাত্রিকালে লেপ প্রভৃতি শীতবন্ত্র ব্যবহার না করিলে চলে না।

আষাঢ় মাসের শেষভাগে এবং প্রাবণ মাসের প্রারম্ভে কোনো কোনো দিন ছই প্রহরের সময় সূর্য্যের তেজ কথঞ্চিৎ প্রথর বোধ হয় মাত্র। তথন কচিং উত্তাপ উর্দ্ধ সংখ্যা ৮৫ ডিগ্রী পর্যান্ত হইয়া থাকে। কিন্তু তৎকালে কোনো চেনার বৃক্ষতলে উপবেশন করিলে বা নদীর উপরে নৌকারোহণে বেড়াইলে অমনি শরীর শীতল হয়—বোধ হয়, যেন তুষারে অবগাহন করিতেছি। এমন সময়ে প্রায়ই আকাশ মেঘাচ্ছন্ন ছইয়া বারিধারা পতিত হওতঃ গ্রীত্মকে দূরীভূতৃ করিয়া দেয়। **

এখানে " শ্রোবণের ধারা " নাই। শীতকালে যখন বরফ পড়িতে থাকে, তখন তংসমভিব্যাহারে অবিশ্রান্ত বারিধারা, প্রবল ঝটিকা এবং শিলার্স্তি হয়। পরস্তু সম্বৎসরে র্স্তিপতন ১৮ অথবা ২০ ইঞ্চি হইতে অধিক নহে।

আশ্বিন মাস আগত হইলে বৃক্ষের পত্র সমুদায় বিবর্ণ এবং স্থমধুর ফল সমস্ত পরিপক্ষ হয়।

কার্ত্তিক মাস হইতে শীতের আরম্ভ । তথন বায়ু অতিশায় শীতল বৃহিতে থাকে। শীতকাল আসিতেছে দেখিয়াই যেন বৃক্ষগণ ভয়ে কম্পিত হওয়াতে পত্র সমুদায় একাদিক্রমে পতিত হইয়া যায়। এই সময়ে জাফরান উৎপন্ন হয়। শ্রীনগর ইইতে ছয় ক্রোশ দূরে পাম্পুর নামে এক স্থান আছে। কেবল তথায় মাত্রই এই স্থবর্ণ ও স্থগদ্ধ পদার্থ জিনিয়া থাকে। ইহার পুল্প বিকসিত হইলে ক্ষেত্র সমুদ্দয় পরম রমণীয় শোভা ধায়ণ করে। ইহাই কাশ্মীর প্রদেশেয় শেষ সৌন্দর্য্য এবং ইহার বর্ণ হরিদ্রা। এখানকার সমুদায় সৌন্দর্য্য একাদিক্রমে অস্তমিত হইয়া গেল, এই ছৢঃখে যেন

[&]quot; बीनगत रहेए कियम तु " अन् मर्ग" (भूलात्कत) नात्म वरु शांत आहि। किश अं जिस मीजन अ मतात्म। वह नमय बीनगत किसि प्राणित तोब रहेए त लोग-विनानी व्यक्तिंग के शांत भमम भूर्कि कियमिन किया किया करत । वर्ग-स्तान के स्तान क्षा करते ।

বস্থমতী পীতবর্ণা ছইলেন, এমনি বোধ হয়! এক জন পারষ্ঠা-কবি লিখিয়াছেন " জাফরা রা দিদা রায়েদ, রাহে হিন্দুস্থানে গেরেফং।" অর্থাৎ জাফরান (প্রস্ফুটিত হইয়া) সকলকে কহিতিছে, তোমরা (এস্থান পরিত্যাগ করিয়া) হিন্দুস্থানের পথ ধারণ কর।

শীতকাল আসিতেছে দেখিয়া কাশ্মীরীরা আহারীয় দ্রকাদি
সংগ্রহ এবং সমুদায় তরকারি (লাউ পর্য্যন্ত) শুকাইয়া রাথে।
লঙ্কার বৃহৎ বৃহৎ মালা কাহারো বারাগুায়, কাহারো জানালায়,
কাহারো নৌকায় শুকাইতেছে দেখিলে স্মরণ হয় " যেমন
উন্মনুগো দেবতা, তেল্লি ঘুঁটের পাঁইশ নৈবেদ্য !" অথবা
" যেমন বুনো ওল, তেমনি বাঘা তেঁতুল! " ফলতঃ শীতথাতু
এখানে যেমন ছর্দান্ত, লঙ্কা তহুপযুক্তই পাদ্ধ-অর্ঘ! আমাদের দৃষ্টিতে কাশ্মীর যেন লঙ্কার মালা ধারণ পূর্বক ছরন্ত
শীতকে বরণ ও আলিঙ্কন করিবার জিন্ত প্রস্তত হইয়া
রহিয়াছে!

কার্ত্তিক মাদের শেষভাগ ইইতে চতুষ্পার্ম্ব পর্বতোপরি
বরফ পড়িতে আরম্ভ হয়। কিন্তু উহা অতি সামান্ত এবং
সূর্য্যোত্তাপে দ্রবাভূত হইয়া যায়। পৌষ মাদ হইতেই প্রকৃত
প্রস্তাবে দারুণ বরফ পড়িতে থাকে এবং সমুদায় একেবারে
তুষারমণ্ডিত হইয়া উঠে। তখন প্রকৃতি বিমল ধবলবেশ ধারণ
করেন; দেখিতে অতি রমণীয় বটে, কিন্তু এম্বলে বাদ করা
অতিশয় কন্ট্যাধ্য হইয়া পড়ে। এখানকার প্রধান মন্ত্রী স্থবিজ্ঞ দেওয়ান কুপারাম কাশ্মীর ইতিহাদে তুষারপাত সম্বন্ধে বর্ণনা
করিয়াছেন, যে;— "নাবরক অস্ত ঈ, কে মেবারদ্সরে পীর। কলকু তোক্মে জন্দ্বর্করে কাশ্মীর।"

্ অর্থাৎ পীর পর্ববতের উপর হইতে হয় শ্বেতবর্ণ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র কণিকা পতিত হইতেছে, উহা বরফ নছে; আকাশ কাশ্মীরের মুথে মুথামূত প্রদান করিতেছে মাত্র। প্রত্যুত, এখানে শীতকাল যেরূপ ভয়ঙ্কর ও কষ্টপ্রদ এবং যে আকারে তুষারপাত হইয়া থাকে, তাহাতে পূর্ব্বোক্ত কবিতা কোনো মতে অসঙ্গত নহে। একেতো, এক দণ্ডের জন্যও তুষারপাতের বিশ্রাম নাই বলিলেই হয়, তাহাতে আবার মধ্যে মধ্যে প্রবল ঝটিকা, অবিশ্রান্ত বারিধারা এবং ভয়ঙ্কর শিলার্ম্নি হইয়। প্রলয় কালের ন্যায় প্রতীয়মান হয় ! কখনো কখনো সূর্য্যদেব এক মাদের মধ্যে একবারও নয়নগোচর হন না। হ্রদ প্রভৃতি জলাশয় সমুদায় একেবারে তুষারে আচ্ছন্ন হইয়া যায় এবং কোনো কোনো বৎসর এত পরিমাণে বরফ পড়ে, যে, বিতস্তা নদী সম্পূর্ণ রূপে জমিয়া যায়। কোনো কোনো দিন এরূপ শীতাধিক্য হয়, যে, গৃহের মধ্যে কোনো পাত্রে জল থাকিলে উহা অমনি জমাট বাঁধে। এখানকার লোকে উহাকে "কটাকচু" কহে এবং উহার পূর্ব্বলক্ষণ জানিতে পারিয়া সাবধান হয়। সৈ কালে ঘরের বাহির হওয়া কাহার সাধ্য ? স্থতরাং কি ধনী, কি নির্ধন, সকলেই শীতকালের জন্য আহারীয় দ্রব্যাদি সংগ্রহ করিয়া রাথে। ' কিন্তু যার কর্ম তারে সাজে, অন্য লৈকে লাঠি বাজে " অর্থাৎ আমাদের পক্ষে অসহনীয় হই-লেও সে সময়ে কাশ্মীরী লোকেরা স্থপচ্ছন্দে বাস করিয়া খাকে। তাহাদের কাহারো গৃহমধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখ,স্থানে স্থানে অগ্নি জ্বলিতেছে, সকলের বক্ষে এক এক কাঁকড়ি বাহি-য়াছে, প্রক্রমণ গুলী শাল বুনিতেছে এবং কামিনীগণ সূচিকা ছারা ধীরে ধীরে শালের টুপি, হাঁসিয়া, কুঞ্জ, গলাবন্ধ প্রভৃতি শিল্প কর্ম্ম করিতেছে।

এই সময়ে স্মষ্টির শোভা অতি বিচিত্র। বরফ পড়িবার কিছু দিবদ পূর্ব্বে যে শিশিরপাত হইয়া থাকে, অতি প্রভূুুুুুুুুু উহা দেখিলে সহসা বোধ হয়, যেন কেহ চুৰ্ণ বিছাইয়া রাখি-য়াছে। উহা সংগ্রহ কর, বরফকণার ন্যায় প্রতীয়মান হইবে। এই রূপে কিছু দিবদ অতীত হইয়া পরে নারিকেল চূর্ণ আকারে বরফ পড়িতে থাকে। নীহারপাত হইবার পূর্বে শীত অত্যন্ত প্রবল হয়। কিন্তু পতন হইয়া গেলে আর সেরপ নয়। তথন অতি আনন্দজনক মধুর শৈত্য অনু-ভুত হইতে থাকে। এমন সময়ে নিদ্রা হইতে গাত্রোপান করিয়া দেখ, প্রকৃতি রজতবেশে শোভা পাইতেছেন। চারি দিগন্থ গিরিশ্রেণী আপাদমস্তক রজতমণ্ডিত—মহীরুহ সমুদায় ইতিপূর্বে বিগলিত-পত্র হুইয়া শুদ্ধ ও শীর্ণভাবে দণ্ডায়মান ছিল, এক্ষণে বোধ হইতেছে, যেন রোপ্যের রক্ষনিচয় দাঁড়া-ইয়া রহিয়াছে —গৃহের ছাদ, বাটীর প্রাঙ্গণ, বন্ধুর ও অবন্ধুব্র ভূমি, নদীর ঘাট, নৌকার ছাত, যেদিকে নিরীক্ষণ কর, সক-লেই যেন রোপ্যময় মনোহর শুভাবেশ ধারণ করিয়াছে-এমনি

^{*}কাঁকড়ি আমাদিনের দেশীয় অগ্নি-সেবন করিবার মালসা মাত্র। কিন্ত ইহা অপেক্ষাকৃত কিঞ্ছিৎ ক্ষুম্ন এবং ইহার চারিপাশ্বাখারি দিয়া বোনা এবং মুখ অঞ্চলন্ত। আবালবৃদ্ধ বনিতা সকলেই ইহাসম্বংসরকাল ব্যবহার করে এমং প্রীবাহইতে বক্ষঃস্থল প্যাপ্ত বালাইয়া দেয়। এ কারণ, কাশ্মীরী মাজেরই বক্ষঃস্থলে পোড়া দাগ আছে।

মনোহর, যে, বোধ হয় তেমন উল্লাসক্ষনক দৃশ্য আর কুঁজেন नारे अवः अमनि उख, ता, शृविवीमध्य राज्यन उख यात्र कि इरे ংইতে পারে না। আবার কার্চের নলের ন্যায় বরফের নল ছাদ ঁহইতে যে ঝুলিতে থাকে, তাহার রমণীয়তা প্রকাশ করিবার ৃশব্দিনাই। বিগত বংসরে কোনো গুণবতী বিদৃষী বঙ্গমহিলা পোর মাদের শেষভাগে আপন জনৈকা প্রিয়তমা বয়স্যাকে काम्पीत रहेरा एय धकथानि क्षनग्र-शर्ड পত्रिका निथिग्नाছित्सन, তাহাতে নীহারপাত সম্বন্ধে যে কয়েক স্থললিত পংক্তি লিখিত ছিল, পাঠকর্দ্দের গোচরার্থে তাহা এম্থলে উদ্ধৃত না করিয়া নিরস্ত হইতে পারিলাম না । ডিনি লিখিয়াছেন ;— '' পীর পাহাড়ের বরক দেখিয়াছ, এক্ষণে যদি একবার কাশ্মী-রের বরফ দেখ, তাহা হইলে আশ্চর্য্য হইবে। এক্ষণে কাশ্মীর দেখিতে অতি স্থন্দর হইরাছে। চারিদিক কেবলই ধবলা-কার। ছাদের উপর হইতে কাচের নলের ন্যায় বরক খুলি-তেছে। ভাঙ্গিয়া দেখ, ঠিক যেন কাচের নল। তাহাও দেখিতে পুব স্থন্দর। রাত্রিকালে কোনে। ঘরে ঘটা কিম্বা বাটা করিয়া জল রাখিলে তাহা জমিয়া বরফ হইয়া থাকে। এই দকল বরফের কারখানা দেখিয়া তোমাদের জন্য অতিশয় মন কেমন করে। তোমরা কাশ্মীরে আসিয়া বরফ দেখিতে পাইলে না, ইহা বড় ছঃখের বিষয়। আমার ইচ্ছা হয়, যে, তোমাদের এক বার কাশ্মীরের বরফ দেখাই।" প্রভ্যুত নীহারপাতের সমুদায় কারখানা এমনি রমণীয়ই বটে।

শীতকানে চা এবং মাংসই প্রধান খাদ্য ৷ সর্বজ্ঞীব-পালক শীবরের আশ্চর্য্য পাতৃত্ব গুণে একেতো এই শীতপ্রধান দেশে মেষ (কাশ্মীরী হৃষা) প্রভৃতি নানাবিধ পশুর প্রাচূর্য্য,
তাহাতে আবার কেবলমাত্র শীতকালেই কতিপয় জলচর পশ্চী
প্রচুর পরিমাণে পাওয়া যায়। কোনো কোনো দিন কিঞ্ছিৎ
পরিষ্কার হইলে লোকে জলাশয়ে গমন পূর্বক তৎসমুদ্য
ীকার করিয়া লইয়া আইসে। এ সময়ে মৃণাল ভিন্ন কোঞ্জা
কিন্তিশ্ব তরকারী পাওয়া যায় না। কাশ্মীরারা ইহাকে "নক্ষ"
এবং রশ্ধন পূর্বক আহার করে।

[জলবায়ু] এখানকার জলবায়ু যেরূপ স্বাস্থ্যকর, বোধ হয়, পৃথিবীর অপর কোনো স্থানে এরূপ নাই। বিতন্তা নদার জল অতিশয় নির্মাল ও স্বাছ। ব্রদ সমৃহের জল এরূপ স্বচ্ছ, যে, দশ হাত জলের নীচে মংস্থাণ ক্রীড়া করিয়া বেড়াই-তেছে, স্পাই লক্ষ্য হয়। এতয়্যতীত যে সমৃদায় অগণ্য উৎস ও নির্মার আছে, তাহাদিগের জল সাতিশয় পৃষ্টিকর এবং এমন শীতল, যে, জ্যৈষ্ঠ বা আষাঢ়মাসে শান করিলেও বোধহয় যেন দাঁত খসিয়া পড়িল। এখানে গ্রীম্ম ও ধূলা আকাশকৃত্যু-মের ন্যায় অলীক। স্থতরাং পাঠকগণ বিবেচনা করিয়া দেখুন, এখানকার বায়ু কিরূপ নির্মাল, শীতল এবং স্বাস্থ্যকর। এখানকার জল ও বায়ু এতক্রপ বলিয়া এখানে যেরূপ শাল প্রস্তুত হয়, এমন আর কোনো স্থলে হইবার নহে। (যথাস্থতে ছায়, এমন আর কোনো স্থলে হইবার নহে। (যথাস্থকে লিখিয়াছিলেন;—

" হর সোক্তা যানে কে ব কাশ্মীর দরাশ্লন্। শর্মুরগে কাবাব অন্ত কে বা বলোপর আমেদ্।। " অর্থাৎ " যদি কোনো দগ্ধীভূত জীব কাশ্মীবে আইসে, তাহা **ছইলে সে জীবন প্রাপ্ত হয়।** অধিক কি, কাবাক করা মাংসথগু এখানে আসিলে তাহার পক্ষ উলাত হইয়া অতি শীত্র পক্ষীর আকারে পরিণত ও সজীব হইয়া উঠে!" প্রত্যুত, এখানকার জলবায়ু এতাদৃশই বটে।

, [কৃষি ও উদ্ভিজ] এখানকার ভূমি অতিশয় উর্বরা। পর্বতেরগাত্রে যে সমুদায় শস্তকেত্র আছে, তাহা দেখিলে আশ্চর্য্য
হইতে হয়। যে যে স্থানে তুরারোহ বলিয়া কৃষকগণ
হল চালনা করিতে পারে না, তথায় নিসর্গোৎপন্ধ বাদাম,
তুঁত, আক্রোট প্রভৃতি স্থাতু ফলের রক্ষ অসংখ্য পরিমাণে
দৃষ্টিগোচর হইয়া থা ক এবং মনোহর নিবিড় শ্যামবর্ণ দ্র্বাদল
এত প্রচুর পরিমাণে ও এমন স্থানরভাবে জন্মিয়া থাকে, যে,
দেরপ আর কুত্রাপি নাই। পাইন, * দেদার (দেবদারু
জাতীয়) প্রভৃতি বহুমূল্য বন্যজাত বৃক্ষ অতিশয় প্রচুর। কিন্তু
ছুংথের বিষয়, তৎসমুদায় স্থানান্তর করিবার উপায় নাই।

আমাদিগের দেশের ন্যায় এখানে চাউল প্রধান খাদ্য। স্থতরাং গোধৃম, যব এবং অন্যান্য শস্যাপেক্ষা ধান্য অধিক পরিমাণে উৎপন্ন হইয়া গাকে। এখানে আহার্য্য দ্রব্য আমাদিগের দেশের ন্যায় স্থয়াত্ব প্রচুর। তুয়, ছানা, মৎস্য এবং মাংসের তো কথাই নাই। বেগুন, (রক্তিমা ও গোলাপী বর্ণ, কিন্তু নবনীতের ন্যায় অত্যন্ত কোমল) কড়াইওঁটা, আলু,

[•] ইহাকে এখানে চীড় কহে। ইহা আমেরিক। দেশীয় বা অপর স্থানীয় পাই— নের ন্যায় স্থানর ও দৃদ মহে। এতদ্বারা কাম্মীরীরাবাসগৃহ ও নৌকাদি প্রস্তুত ক্র-রিয়া থাকে এবং ইহা তৈলাক্ত বশত: ভাকবাহক ও পথিকের। ইহার স্থান্ধ্যু কাঠথও দারা মাশাল প্রস্তুত ক্রিয়া অন্ধনার বুজনীতে পার্ক্ত্যুগ্রেশ গমন করে।

ক্ষপি প্রভৃতি নানাবিধ তরকারী অপর্যাপ্ত জন্মিয়া থাকে। এত-দ্তিম সেউ১ নাক নাসপাতি ২, বিহি ৩, গেলাস ৪, কোতরনল্, গোমা বগ্ঞ, জুঁড, আঙ্গুর, আক্রোট, বাদাম, আঁড়ু ৫ প্রভৃতি যে কত প্রকার স্থসাত্র ফল জনিয়া থাকে, তাঁহার সংখ্যা করা যায় না। একে তৌ এই সমুদীয়ের মনোহর উদ্যান আছে, তাহাতে আবার বিজন কাননে বিশেষতঃ পর্বতের নিম্নদেশে অপর্যাপ্ত উৎপন্ন হইয়া থানে। বাদাম ঢারি প্রকার; তন্মধ্যে এক প্রকারের আচ্ছাদন কাগজের ন্যায় সূক্ষ বঁলিয়া 'কাগজী' নামে বিখাত। আঙ্গুর অফাদণ প্রকার; তন্মধ্যে 'সাহেবী' এবং 'মুকা ' স্থপ্রসিদ্ধ। তেকাটাশির প্রভৃতি কণ্টক রক্ষের দ্যায় আঙ্গুরলতা যেখানে সেখানে জন্মিয়া থাকে; লাউয়ের মাচার ম্যায় সকলের প্রাঙ্গণে আঙ্গুর-মঞ্চ দেখিতে পাওয়া যায়। আঙ্গুর এত এচুর ও হস্তাতু বলিক্সা কাশ্মীরীরা গর্বব শহকারে কহিয়া থাকে, যে, "যদি ঈশ্বরেক্সমূথ থাকিত, তাহা হইলে আমরা ভাঁহাকে এথানকার আঙ্গুর ও রুটি * থাওয়া-ইয়া সম্বন্ধ করিতে পারিতাম।" কিন্তু চুঃথের বিষয়, অস্মদার্থ দির দেশের আমু, নারিকেল, কাঁচাল, পেঁপে প্রভৃতি হুস্বার্ ফলের চিহ্নমাত্রও নাই। কৃষিজাত দ্রবের মধ্যে কেশর অর্থাৎ জাফরান অতি উৎকৃষ্ট এবং রমণীয়। স্বতন্ত্র অধ্যায়ে इंहात वर्गना कता याहेरव।

⁵ Apple. 2 Kuince. 9 Pears. 8 Cherry. & Peach.

^{*} কান্দ্রীরা রুটির যেরপ গৌরব করিয়া থাকে, ফলত: উহা ভত্তপ ঞাশংগ-নীয় নহে। পরত ইহারা মাংল রক্ষল করিতে স ঞালিক।

[পশু ও পক্ষী] ভারতবর্ষের অপরাপর অংশের নানাবিধ প্রশুপক্ষী এখানে দেখিতে পাওয়া যায়। এতদ্যতীত হিমালয় প্রদেশের অনেক জীব জন্তুও আছে। গাভী সকল থব্বাকৃতি ্রত্তবং অধিকাংশ কুষ্ণবর্ণ। লোকে সাধারণ কথায় কহিয়া থাকে " কাল গরুর তুগ্ধ অভিশীয় পুষ্ঠিকর।" এই জন্য বোধ হয়, স্জনকর্ত্তা এই স্বর্গতুল্য স্থানে অন্যান্য সকল প্রাণীকে শ্বেত-কায় করিয়া কেবল গাভীকেই কৃষ্ণবর্ণ করিয়া দিয়াছেন। মহিয এখানে নাই। অহো! কি আশ্চর্যা! যে বায়দের তিমিরসদৃশ রূপ জগিৰখ্যাত, উহা এখানে অপেক্ষাকৃত শ্বেতবর্ণ এবং উহার স্বর অপরাপর স্থানীয় বায়দের ন্যায় কর্কশ নহে। হিমপ্রাধান্য ইহার মূলীভূত কারণ, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। এখানে সর্প, রুশ্চিকাদি হিংস্র জীব অতি বিরল এবং উহাদিকের দংশনেরও কোনে। ভয় নাই। কিন্তু পিস্ত্ নামক এক প্রকার ক্ষুদ্র জীব আছে, উহা অভিশয় ভয়ানক ও কষ্টপ্রদ। বোধ করি, যিনি কখনো কোনো পার্ববত্যদেশে কাল্যাপন করেন নাই, ভাঁহার নিকট হয় তো ইহার নামও শ্রুত হয় না ই—ইহার দৌরাত্ম্য সহ্য করা তো দূরের কথা! ইহা অতি ক্ষুদ্রকায়---অন্কির ন্যায় ক্ষুদ্র, মশকের ন্যায় রক্তশোষণ করে। ধরিতে গেলে লম্ফ দিয়া অন্তর্দ্ধান। এবং মারিতে গেলে নথ বা ছুরিকা ছারা বিদীর্গ না করিলে প্রাণত্যাগ করে না—বোধ হয় স্বর্গে বাস করে বলিয়া অমরতুল্য হইয়াছে! কি নিবা, কি রাত্রি সকল সময়েই ইহা আবিভূতি হইয়া দংশন-জালায় অস্থির করিয়া তুলে—রাত্রিকালে মুশারিতেও ইংগুর হস্ত হইতে পরিতাণ নাই।

[ধাতু] কাশ্মীর প্রদেশের অনেক স্থানে লোহ, সীসা, গন্ধক এবং তামের আকর আছে। যৎকালে কাশ্মীর গমন করি, তথন পথিমধ্যে চন্দ্রভাগ। নদী হইতে স্বর্ণ ও রোপ্য সম্বলিত অনেক উপলথও সংগ্রহ করিয়াছিলাম। প্রত্যুত, এখানে স্বর্ণ ও রজতাদি বহুমূল্য ধাতুর আকর বিদ্যমান আছে; কিন্তু তুঃখের বিষয়, একটা মাত্রও অদ্যাপি আবিষ্কৃত হয় নাই এবং আধুনিক শাসনকর্ত্তা এ বিষয়ে সম্পূর্ণ উপেক্ষা করি-তেছেন। অপর, কোনো কোনো স্থানে পূর্বতন নরপতিরা তাৎকালিক প্রথানুসারে বহুমূল্য ধনসম্পত্তি ভূগর্ভে নিহিত করিয়া রাখিয়া গিয়াছেন, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। জন-প্রবাদ আছে, প্রায় পঞ্দশ শত বংসর হইল, যংকালে চীন স্মাটেরা পরাজিত হইয়া এদেশ হইতে দূরীভূত হয়, তখন তাহারা কোনো কোনো স্থলে তুর্ল্য রক্নাদি নিহিত করিয়া গমন করে। বিগত ইং ১৮৫৯ খৃষ্টাব্দে এখন কাশ্মীর নগরে যাই, তখন শুনিলাম, যে, ডাক্তার বেলু নামক একজন সাহেব অনেক অনুসন্ধানের পর এক স্থান নির্দেশ করিয়াছেন। উহা পশ্চিমপ্রান্তভাগস্থ বারমুলা নামক স্থানের সন্নিকট। উহা যেরূপ নিভূতস্থান ওস্থানটী যেরূপ পর্ব্বতাকারে পরিণত হইয়া গিয়াছে, তাহাতে এরূপ সন্দেহ কোনো মতে অসঙ্গত হইতে পারে না। ভগ্নাংশ দেখিয়া বোধ হয়, উহার চতুঃপার্শ্ব এককালে প্রস্তরপ্রাকার দ্বারা স্থরক্ষিত ছিল। ইংরাজ গবর্ণমেণ্ট এবং এখানকার মহারাজার সম্মতিক্রমে উহা থাত হয়। খননকালে উহার নির্মাণ-কৌশল দেথিয়া নিশ্চয় প্রতীতি হইয়াছিল, যে, ইহার অভ্যন্তরে অবশ্যই কিছু না কিছু অমূল্য রত্ন প্রোথিত

আছে। কিন্তু পরিশেষে আকাশ-কুন্তমের ন্যায় সমুদায় অলীক হইয়া গেল!

[বাসগৃহ] এখানকার বাটী সকল কাষ্ঠনির্দ্মিত। কাশ্মীরী ভাষায় ইহাকে " লড়ী " কহে। এখানে প্রায় সর্বদাই ভয়া-ূনক ভূমিকম্প * হইয়া থাকে বলিয়া সকলে কার্চ্চের ঘর প্রস্তুত করে। কোনো কোনো বাটীর ভিত্তি প্রস্তর বা ইষ্টকনির্শ্মিত। কিন্তু অধিকাংশই কাষ্ঠ-বনিয়াদের উপর স্থিত। হিমানীর দোরাক্সভেয়ে ছাদ সমতল না করিয়া মধ্যদেশ উচ্চ এবং তুই পার্য ঢালু করিয়া থাকে। ইত্যাকার ছাদে কার্স ও তক্তা সংলগ্ন করিয়া তত্ত্বপরি ভূর্জ্জপত্র বিছাইয়া দেয়; পরে তাহার উপরে মৃত্তিকা স্থাপন করিলেই ছাদ প্রস্তুত হইয়া গেল। বসন্ত ঋতুর আগমনে যখন ইহা হইতে তৃণ উলাত হইতে থাকে, তথন বোধ হয়, যেন সৌধ সমূহ হরিদর্ণ গালিচায় আচ্ছাদিত রহিয়াছে। লড়ী সমুদর দিতল হইতে পাঁচ তল পর্য্যন্ত উচ্চ এবং দৃশ্রে ইংরাজী বাটীর সদৃশ। জানালার কবাট বিভাগে বিভক্ত। বহির্দেশন্ত কবাটে বিচিত্র কারু-কার্য্য আছে। ইহা ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ছিদ্র বিশিষ্ট। শীতাগমে কাশ্মীরীরা ইহা কাগজ দিয়া বন্ধ করে। স্থতরাং তুর্দান্ত হিম

[•] প্রায় দাদশ বৎসর অভীত হইল, একঁদা এখানে এমন ভূমিকম্প হইয়াছিল।
যে, প্রতি ঘন্টায় নাুনাধিক চারিবার করিয়াকম্পিত হইত এবং এই ভূমিকম্প
কর্মাগত এক সপ্তাহকাল ব্যাপিয়াছিল। স্মৃত্রাং কি ধনী কি নি ন সকলেই
এ যাবংকাল অ অ বাস গৃহ পরিত্যাগ পূর্বক তরুশুন্য সকলেশে কিয়া নৌকায়
দিন যামিনী যাপন করিত। পরক্ত ঈশ্বানুগ্রহে কোনো বিশেষ অনিটোং—
পত্তি হয় নাই ।

গৃহমধ্যে প্রবেশ করিতে পারে না, অথচ আলোকেরও গতি-রোধ হয় না। প্রত্যেক প্রকোষ্ঠে এক একটা "বোখারি" (যাহাকে ইংরজিতি ' চিম্নী ' কহে)। এই বোখারি ব্যতীত শতিকালে বাস করা সম্পূর্ণ অসম্ভব। কোনো কোনো বাটীর –বিশেষতঃ ধনীলোকদিগের মটালিকার প্রথম তলে হামাম্ অর্থাৎ উষ্ণ স্নানাগার আছে। ইহা এরপভাবে নির্দ্মিত, ষে, ইহাতে শীতল বায়ু প্রবেশ করিতে পারেনা এবং স্নানো-পযোগী তারতম্য বিশিষ্ট উষ্ণজল রাথিবার স্থান আছে। এ কারণ শীতকালে ইহাতে স্নান অতি প্রীতিকর এবং হামান জ্বালিলে তৎপার্শস্থ ও তন্ত্রপরিস্থ সমুদায় প্রকোষ্ঠ উষ্ণ থাকে। শ্রীনগরে প্রত্যেক লড়ীর দার নদীতটে স্থিত এবং উহাতে অবতরণ করিবার দোপানশ্রেণী আছে। এই ঘটেকে ইয়ারবল কছে। লোকে আপনপেন ইয়ারবলে নোকা রাখিয়া থাকে। এই সমুদয় কারণ বশতঃ বাটী সকল কেখিতে যেমন ফুলর, তেমনি উপাদেয়। কিন্তু পাঠকগণ অনায়াদে বুঝিতে পারেন, দৈবাং কোনো লড়ীতে অগ্নি লাগিলে উহা নিমেষ মধ্যে দগ্ধ হইরা যায়। মধ্যে মধ্যে এইরূপ শোচনীয় ব্যাপার ঘটিয়া ক্ষাকালের মধ্যে বহু সংখ্যক ভবন একবারে ভশ্মীভূত হইয়া গিয়া থাকে।

[অধিবাদী] কাশ্মীর প্রদেশে মুদলমানের সংখ্যাই অধিক; এমন কি, প্রতি শতে দশজন হিন্দু গণ্য হওয়াও স্থক-ঠিন। বহুকালাবধি ইহা মুদলমান শাসনকর্ত্তাদিগের অধীন থাকাতে এইরূপ হইয়া উঠিয়াছে। প্রত্যুত, এখানে যে সমুদ্য় হিন্দু আছে (যাহারা প্তিত নামে খ্যাত) তাহাদিগেরও লোকিক আচার ব্যবহার অনেক পরিবর্ত্তিত হইয়া মুসলমান-দিগের ন্যায় দাঁড়াইয়াছে। কিন্তু আধ্নিক হিন্দু শাসনকর্ত্তা উহাদিগকে প্রকৃত হিন্দুধর্মাবলম্বীতে পরিণত করিতেছেন।

পুরুষমগুলী গৌরবর্ণ দৃঢ়কায় এবং অঙ্গ-গোষ্ঠব বিশিষ্ট।
ইহারা চতুর, প্রথর বুদ্ধিশালী এবং আমোদ-প্রিয়। কিন্তু
ইহারা অতিশয় ভীরু। মহিলাগণ পরমা স্থানরী। বিশেষতঃ
পণ্ডিতানীরা অনুপমরূপদাবণবেতী। কবিবর ভারতচন্দ্রের
বিদ্যার রূপ বর্ণনা এখানক র রমণা মাত্রেই প্রযুদ্য।
প্রভুতে, ইহাদিগকে পক্ষবিহীনা রী অথবা অপ্সরা বলিলেও
অত্যুক্তি নহে—অপ্সরা ভিন্ন অপর কোন্ জাতীয় রমণীর
স্বর্গে বাস সম্ভব হইতে পারে । কিন্তু ত্যুংখের বিষয়, ইহারা
সাধারণতঃ লক্ষাহীনা এবং স্থান্টরিত্রা। কামরূপ কামাক্ষ্যাবাসী
লোকদিগের চরিত্র সম্বন্ধে কথিত আছে;—

" সধবা বিধবা নাস্তি নাস্তি নারী পতিব্রতা। হংস পারাবতো ভক্ষ্য কামরূপ নিবাসিনঃ॥"

কিন্তু আমার মতে এই বাক্যের শেষ চরণের "কাশরূপ্" পরিবর্ত্তে " কাশ্মীর " শব্দ ব্যবহৃত হইলে সর্বাঙ্গস্থানর হয়! স্ত্রীলোকেরা ছুশ্চরিত্রা হইলে রাজহারে কঠিন দণ্ড পাইরা থাকে। কিন্তু বহুকালের অভ্যাসজাত দোষ সহসা দূর হইবার নহে।

় [পরিচ্ছদ] পুরুষনিগের পরিচ্ছদ কৌপিন, আলথাল্লা, (ইহাকে এথানে "পিরান" কছে) এবং উষ্ণাষ। কি হিন্দু, কি মুসলমান, প্রায় সকলেই সর্বদা মস্তক মুণ্ডিত করিয়া রাখে অর্থাৎ নেড়া হইয়া থাকে এবং .হিন্দুরা স্বধর্মের চিহ্ন স্বরূপ শিক্ষামাত্র ধারণ করে। জ্রীলোকেরা কেবলমাত্র আলখাল্লা পরিধান করে। স্থতরাং ইহাদিগকে একরূপ উলঙ্গিনী বলি-লেই হয়। কেছ কেহ মস্তকে লালচুপি ব্যবহার করে এবং কেশ বিনাইয়া ত্বই বেণী পৃষ্ঠদেশে লম্বিত করিয়া দেয়। তখন দেখিতে অতি রমণীয়। পণ্ডিতানীদের মধ্যে কেহ কেহ কট-দেশে চাদর জড়াইয়া থাকে। ইহারা কিয়ৎ পরিমাণে অল্ঞার দ্বারা গাত্র ভূষণ করে, কিন্তু তাহা বাহুল্যমাত্র। কাষ্ঠপাত্রকা এবং অগ্লিদেবনার্থ কাঁকড়ি ইহাদের অঙ্গভূষণ বা পরিচ্ছদের মধ্যে গণনীয় হইতে পারে। কেননা, কি স্ত্রী. কি পুরুষ, কি হিন্দু, কি মুদলমান কাশ্মারী মাত্রেই ইহা ব্যবহার না করিয়া থাকিতে পারে না।

কোনো দেশীয় লোকদিগের পরিধেয় বদন দারা উহাদিগের সভ্যতা এবং শারারিক ও মানসিক বলবীর্য্যের অনেক
পরিচয় পাওয়া যায়। উলঙ্গ বা কোপীনঞ্চরা ভীষণ পার্বত্যজাতি, অর্দ্ধারত মল যোদ্ধা হিন্দু খানা, ধৃতি চাদরধারী
নিরীহ বাঙ্গালী এবং রমণীবেশা আলখাল্লামণ্ডিত কাশ্মীরী
প্রভৃতি সকল জাতিই এই বাক্যের সাক্ষ্য দিতেছে। ইতিরত্ত
পাঠে অবগত হওয়া যায়, য়ে, অতি পূর্বকালে কাশ্মীরীরা
অতি সাহসী, বলিষ্ঠ এবং রণদক্ষ ছিল। দিল্লীর সমাটেরা
ইহাদিগকে অনেক যুদ্ধে পরাভ্ব ভিন্ন কাশ্মীর অধিকার করিতে
পারেন নাই। তথাপি মধ্যে মধ্যে ইহারা ষড্যন্ত্র করিয়া রাজবিপ্লব উপস্থিত এবং যাহারা তুর্গম পার্বত্যপ্রদেশে আপ্রয় লইয়াছিল, তাহারা কখনো বা উপত্যকায় আগমন পূর্বক নানা
উহপাত করিয়া রাজ্যের শান্তি নক্ট করিত। অবশেষে জেহা-

শ্বির বাদশাহ দেখিলেন, যে, কোনো উপায়ে ইহাদের অদম্য বারত্ব সমূলে উন্মূলিত না করিলে নিক টকে রাজ্যভোগ সম্ভব নহে। এ বিধায়ে তিনি এই স্ত্রীবেশ ধারণ করিবার নিমিত্ত ইহাদিগকে পীড়ন করিতে লাগিলেন। পাঠকগণ সহজেই অনু ভব করিতে পারেন, যে ইহারা বিনা যুদ্ধে এবং বিনীতভাবে গাঁহার আজ্ঞা পালন করে নাই। কিন্তু পরাজিত ও অপেক্ষাক্ত ক্ষণিবল জাতি তাংকালিক দোর্দ্ধিও প্রতাপশালী সমাটদিগের সহিত কি সমকক্ষ হইতে পারে ? কাশ্মীরীরা অগত্যা বস্ত্রপরিধান পরিত্যাগ করিয়া রমণাবেশ ধারণ করিল এবং আলথাল্লা তাহাদের সৌর্য ও বার্য্য অপহরণ করিতে লাগিল। এক্ষণে উহাদের পূর্বকালিক সাহস ও রণপাণ্ডিত্যের চিহ্ননাত্রও দেখা যায় না।

কাশ্মীর স্বর্গ বটে, কিন্তু কাশ্মীরীদিগের মলিন বাস এবং কৃংসিত আচার ব্যবহার দেখিলেই ইহাদিগের থাকিবার স্থানকে নরক বলিয়া প্রতীয়মান হয়। শীতকালে জ্ঞালের ত্রি-গীমায় যাওয়া কাহার সাধ্য ? স্থতরাং সে সময়ের কথা দূরে থাকুক, ভাপরাপর ঋতুতেও ইহাদিগের পরিধেয় বসনের সহিত্ত জ্ঞালের দেখা সাক্ষাং হয় না। কি স্ত্রী কি পুরুষ সকলেই প্রকাশ্যন্থলে উলঙ্গ হইয়া স্নান করে। স্থতরাং তৎকালেও পিরান ধৌত হয় না। এ কারণ উহা এত মলিন য়ে চিষ্টী কাটিলে মলা উঠে এবং ঝাড়িলে উকুন ও পিস্ত্র পড়ে। অধিক কি, ইহারা যেরূপ অপরিক্ষার থাকে, তাহাতে নিশ্চয়ই প্রতীত হইবে, য়ে, য়্যদি এথানকার জলবায়ু স্বাস্থ্যকর না হইত, তাহা হইলে ইহাদিগের গাত্রে পোকা জন্মাইত এবং এখান

কোনো মনুষ্যের নিদর্শনত থ কিত না। ইহারা আবার পথি
মধ্যে, বাটীর প্রাঙ্গণে এবং গৃহাভ্যন্তরে ও মল মূত্র পরিত্যাগ
করিয়া থাকে। ইতরাং লোকালয় শনরক ভিন্ন আন্য কোনো
শব্দে বাচ্য হইতে পারে না। শীতকালে যথন চারিদিক তুষার
মণ্ডিত হইবা গার এবং ঘরের বাহির হওয়া সম্পূর্ণ ছঃসাধ্য
হইয়া উঠি, তথন ইহারা বাসগৃহ মধ্যে মল মূত্রাদি ক্যাগ
করিতে অগত্যা বাধিত হয়। কিন্তু একে স্বাস্থ্য রক্ষা সম্বন্ধীয়
নিয়মে সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ, তাহাতে আবার অভ্যাসের গুণ এরূপ,
যে, অপরাপর ধাতুতেও তদ্রপ জবন্য অবস্থায় কাল যাপন
করিতে মূণা বোধ করে না।

অত্যন্ত আহ্লাদের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে আমাদিগের প্রিয়তম বন্ধু বাবু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায় এম এ এবং বি
এল এখানকার জুডিসিয়েল কমিসনর এবং প্রধান বিচারপতি
পদে অভিষক্ত হইয়া শ্রীনগর প্রভৃতি অশ্বরাপর স্থানে স্বাস্থ্য
রক্ষা সম্বন্ধীয় নিয়মাদির প্রচার করিতেছেন। স্থতরাং কাশ্মীরীদিগের পথে ও উঠানে মল ত্যাগ প্রভৃতি অস্বাস্থ্যকর ব্যবহারাদি অচিরাৎ সংশোধিত হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

কাশ্মারীদিগের চরিত্র সম্বন্ধে একটা বিষয়ের উল্লেখ না করিয়া নিরস্ত থাকিতে পারিলাম না।"ধামা ঢাকা ঝগড়া"—

^{*} জ্ঞানগরও এতজুপ অপকৃট বলিয়া মহারাজা ইংরাজ ও অপেরাপর জাতীয় জ্ঞানকারীদিগের নিমিত্তে সহরের অনতিদূরে নদীতটে রমনীয় বাস গৃহাদি নি-স্মান করিয়া দিয়াছেন। রাজবাদী এবং সন্ধুত্তি কর্মাচারীদিগের বাদী সন্ধুদ্ম ননীতটে স্থিত। বিদেশীয় জনগণ মাত্রেই অর্থাৎ কাম্মীরী বৃতীত অপর সকলেই সহরাস্তান্ত্র পরিত্যাগ পূর্বক নদীপুলিনে বাস করে।

এই কথাটা শৈশবকালাবধি শুনিয়া আদিতেছি। কিন্তু এখানে কার্য্যে পরিণত দেখিলাম। কোনো গৃহস্থের দহিত অপর পৃহস্থের বিবাদ উপ বিত হইলে উহারা অবিশান্তরূপে কলহ করে। পরে সন্ধ্যা আগত হইলে উভয়পক্ষ আপনাপন প্রাঙ্গণ মধ্যে ধামা ঢাকিয়া রাখে। পরদিন প্রভূষেে শন্যা হইতে গাত্রোত্থান পূর্বক ঐ ধানা উল্লেলন করতঃ পূর্ববিৎ কলহ আরম্ভ করে। এক দিন নয়, এইরূপ কিছুদিন চলিতে থাকে। বিতন্তা নদী জ্রীনগরের মধ্যদেশ দিয়া প্রবাহিত হইতেছে। উহা এম্বলে অপ্রশস্ত। যংকালে নদীর উভয় তটে এইরূপ ধামা ঢাকা ঝগড়া হইতে থাকে, তথন দেখিতে অতিশয় কোতুকাবহ। এরূপ বিসন্ধাদ উপলক্ষে আবার কোনো কোনো সময়ে উভয় পক্ষে নানাবিধ কুৎসিং 'সং' প্রস্তুত হইয়াও থাকে; দে সমুদ্য ভদ্রলোকের দ্রেউব্য নহে।

খোন্য] পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, চাউল, মংস্থ এবং চা কাশ্মীরীদিগের প্রধান খাদ্য। ইহারা ছুই বেলা

^{*} এই কদ্দলের নায় হাজারিবাতে এক জানার ভয়স্কর করেছ। দেখিলাছি। কান্দীরের করেছ। ধানা চাপা থাকে, হাজারিবারে পেশাদার করুটিয়া আছে। আর্থাং দুই গৃহত্থে বিবাদ বাঁধিলে যদি আপনাদের মধ্যে ক্লেড বেশী মুখরা না থাকে, তবে বেডন অথবা ভাড়া দিয়া প্রানিক প্রসিদ্ধ পেশাদার কন্দলিয়া ছালোককে নিযুক্ত করা হয়। যুক্ষের নায়ে প্রকাশাস্থলে করেছার হান ও সন্ম নিক্রিত হইয়া দশ্কিমগুলীর মধ্যে উভরদিকে উভর পঞ্চের প্রপাদার কর্মগুটিয়া মাগীরা দাঁছায়। পরে ভয়ানক ও কুৎসিত অক্ষভন্ধীর সহিত একপ বাক্ যুদ্ধ হইতে থাকে, যে, তাহা ভদ্রলোকের দ্রুটিরাও গোডবা নহে। মনুষ্য যে এতদুর নীচ হইতে পারে এবং সেই নীচ্ছ দশ্বি কোনো মানব-সমাজ যে কৌতুক পার, এই আন্টেট্ ভাব ভদ্র দশ্কের মনে উদ্যানা হটয়া যায় না!

অর্থাং দিবা ও রাত্রিকালে আমাদের দেশের ন্যায় অর আহার করে। কিন্তু উত্তও অপেকা শীতল ভাত ইহাদের অধিক প্রের। কড়া কড়া শুক্ষ ভাত, লবণ ও লঙ্কায় জর্জারিত কড়স নামক এক প্রকার শাক, কিছু মংস্থা এবং এক পেরালা চা হইলেই কাশ্মারীর অতি উপানেয় ভোজন হইল। এ কারণ, ছঃখীলোকেরা মাদে মাদে ছই টাকা করিয়া উপার্জন করিতে পারিলে ভতি সুগ্রছেলে জীবন্যাত্রা নির্দাহ করিতে পারে।

চা ইহাদের যেমন নিত্যপের, তেমনি ভোগবিলাসের চিচ্চ।
কোনো মিত্র বা আগস্তুক বাটীতে আসিলে ইহারা নস্ত *
এবং চা দ্বারা তাহার অভ্যর্থনা, সন্মানরক্ষা এবং অতিথিসৎকার করিয়া থাকে।

চা প্রস্তুত করিবার পাত্র অতি স্থানর ও অতি উপাদের।
ইহাকে কাশ্মীরী ভাষার সমাবার "সমার" কহে। ইহা
সাধারণতঃ ১২ বা ১৪ইঞ্চ উচ্চ এবং ইহার শীস আড়াই ইঞ্চ।
ইহাতে ঢাকুনি (আবরণ) মৃষ্টি ও মুখ সংলগ্ন আছে এবং
ইহার ভিতর (মধ্যস্থলে) অগ্নি নিক্ষেপ করিবার জন্ম একটা
নল আছে। এই নলে কয়েক খণ্ড প্রজ্জ্জ্জিত অঙ্গার দিলেই
অনতিবিলম্বে চা প্রস্তুত হইয়া যায়। কাশ্মীরীরা যখন স্থানাস্তুরে ভ্রমণ করিতে যায়, তখন সমাবার এবং ইহার আকুষক্ষিক উপকরণ পদার্থ সঙ্গে না লইয়া গমন করে না।

ইহারা ছুই প্রকার্শের চা প্রস্তুত করে। প্রথম মিই চা,

^{*} ইহারা নার্নী অত্যন্ত বাবহার করে। অতি পূর্মকাল ইইতে ইরা চলিয়া আলিতেছে—তথন কেই ধুমপান করিত না। বিজ্ঞাক্ষণে অনেকে ইহাও সেবন করিয়া থাকে।

ৰতীয় লবণ-চা। সাধারণ রীত্যসুসারে মিষ্ট চা প্রস্তুত করিয়া াকে অর্থাৎ জল ফুটিয়া উঠিলে চা দেয় এবং ইহাতে চিনি. এলাচি, দারুচিনি প্রভৃতি কয়েকটী মদলা মিশ্রিত করে। শরস্ত ইহাতে ছগ্ধ দেয় না। ইহারা আহারকালে বা আহা-াত্তে এ প্রকার চা পান করে না। সে সময় কেবল লবণ-চা জবহৃত হইয়া থাকে। লবণ-চা প্রস্তুত করিতে হইলে শীতল জলের সহিত চা ফুটাইতে থাকে। পরে ইহাতে এক প্রকার ক্ষার দেয়। এই ক্ষারকে "ফুল" কহে এবং ইহা তিব্বৎ হইতে আসিয়া থাকে। ফুল দারা চার সারাংশ শীঘ্র আকর্ষিত হয় এবং ইহার উত্তম বর্ণ হইয়া থাকে। এইরূপে চা সিদ্ধ হইলে ইহাতে কেবল মাত্র লবণ ও কথনো কথনো চুগ্ধ মিশ্রিত করে এবং ইহা হইলেই লবণ-চা প্রস্তুত হইন। এই চা মিষ্ট চা সদৃশ স্বান্থ নহে, কিন্তু ইহারা ইহাকে অধিকতর পুষ্টিকর এবং পাচক কহে। ইহার। আমাদের দেশের ব্যবহার্য্য চা পচন্দ করে না। তিব্বৎ ও লদাখ প্রভৃতি উত্তরখণ্ড হইতে যেমর্দিত এবং একত্র সংলগ্নীকৃত চা আইদে, তাহাই ইহাদের প্রিয়।

[শিল্পকোশল] কাশ্মীরারা শিল্পবিদ্যায় অতিশয় নিপুণ।
এখানকার শাল জগদিখ্যাত। শ্রীনগরের নিকটবর্ত্তী নাওসেরা
নামক স্থানে কাগজ প্রস্তুত হয়। উহা স্তুচিক্কণ, এবং পার্চমেন্টের স্থায় দৃঢ়। বিশেষতঃ রাজকীয় পত্রাদি লিথিবার জন্য
যে কাগজ প্রস্তুত হইয়া থাকে, তাহা স্থবর্ণপুষ্পে স্থশোভিত
এবং দেখিতে অতি রমণীয়। এখানকার কলমদানির কর্ম্ম
(ইংরাজীতে পেপিয়ার-মেদি কহে) অর্থাৎ কাগজের কলমদান, বাল্ল, থালা, রেকাবি প্রভৃতি যে সমুদয় প্রস্তুত হয়,
তাহা অতি প্রশংসনীয়। স্বর্ণ রোপ্যের অলঙ্কারাদির নির্মাণ-

কৌশলও নিন্দনীয় নহে। পরস্ত ইহাদিগকে যে প্রকার নমুনা দেখান যায়, তাহা অবিকল প্রস্তুত করিতে পারে।

িভাষা] এখানকার প্রকৃত ভাষার নাম "কাশুর"। ইহা সংস্কৃতের অপত্রংশ, কিন্তু এ ভাষায়কোনো পুস্তক লেখা দেখা যায় না এবং লিখিবারও উপায় দেখি না। কারণ, শব্দগুলি উচ্চারণান্তরূপ লিপিবদ্ধ করিবার কোনো অক্ষর নাই। দেব-নাগরের অপভংশ সারদা অক্ষর, যাহা সংস্কৃত ভাষার পুস্তক লিখিতে ব্যবহৃত হয়, তাহার বর্ণমালায় অনেক গুলি কাশুর উচ্চারণ লিপিবদ্ধ করা যাইতে পারে। কিন্তু অনেক গুলি বিলক্ষণ বর্ণ আছে, যাহার অনুরূপ অক্ষর দেবনাগর বর্ণমালায় নাই। আমাদের বাঙ্গালা ভাষার সহিত ইহার অনেক সাদৃশ্য আছে। কাশ্মীরীরা যে ভাষায় কথাবার্তা কহিয়া থাকে. উহা নানাবিধ ভাষা হইতে সংগৃহীত হইয়াছে। জ্মণকারী ভিগ্নি সাহেব লিথিয়াছেন, ইহাদের ভাষার একশত শব্দের মধ্যে ২৫ সংস্কৃত; ৪০ পারসীক; ১৫ হিন্দুস্থানী; ১০ আরবীয় এবং কতি-পয় সংখ্যক তিব্বতীয় বা পাহাড়ী। কিন্তু বোধ হয়, ইহারা সংস্কৃত শব্দ সর্ব্বাপেক্ষা অধিক ব্যবহার করে। একারণ,ইহাদের কথোপকথন কালে বাঙ্গালা শব্দের ধ্বনি শুনা গিয়া থাকে। প্রভাত, "বুঝ চ" (বুঝিয়াছ) 'বুঝ কিনা' (বুঝ লে কিনা) 'তুলো' (উত্তোলন কর) প্রভৃতি শত শত বাঙ্গালা কথা প্রায় অবিকল ব্যবহৃত হয়। ইহাদের কথোপকথনের বিশেষ প্রকৃতি এই, যে. ইহারা অনেক বাক্য ও পদের প্রথমে "দপাঞ্চ" অর্থাৎ "বলিতেছি" বা"বলিতেছেন" এবং অনেক ক্রিয়া পদের অন্তে " চ " ব্যবহার করে। লোকের প্রকৃতি নত্র, কথাও মিষ্ট। · [শিকা] রাজকীয় ও বৈষয়িক সমুদয় কার্য্য পারদীক

ভাষায় সম্পন্ন হয় বলিয়়া এখানকার লোকে পারদীক ভাষা
শিক্ষা করিয়া থাকে। এতদ্বির পণ্ডিত (হিন্দু কাশ্মীরী) দিগের
য়ধ্যে অনেকে সংস্কৃত অধ্যয়ন করে। ইহাদেয় অনেকে সদক্ষ
পণ্ডিত ৷ বিশেষতঃ কৈহ কেহ জ্যোতিষ শাস্ত্রে এবং গ্রহাদির
ফুলাফল নিরূপণ করিতে অতি নিপুণ। পরস্তু অতি প্রাচীন
কালে কাশ্মীর যে সংস্কৃত বিদ্যাসুশীলনের জন্য অতি প্রাচীন
কালে কাশ্মীর যে সংস্কৃত বিদ্যাসুশীলনের জন্য অতি প্রাচীর
ছিল, মুসলমান শাসনকর্ত্তাদিগের অত্যাচারে তাহা লোপ
হইয়া আসিতেছিল। এক্ষণে হিন্দু নরেশর তাহাকে পুনর্জীবিত
করিতে চেক্টা করিতেছেন। এখানে মহারাজার স্থাপিত সংস্কৃত
ও পারসিক পাঠশালা আছে এবং বোধ হয়, অনতিবিলমে
ইংরাজা বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠিত হইবে।

ধর্ম । এথানকার প্রায় সম্দয় হিন্দু শাক্ত এবং প্রায় সকলেই রীতিমত পূজা পাঠাদি করিয়া থাকে। স্নান ও পূজাদি করুক বা নাই করুক, হিন্দু মাত্রেই (বালক ও স্ত্রীলোক পর্যান্ত) প্রাতঃকালে শয্যা হইতে গাত্রোখান পূর্বক হিন্দুতার চিহ্নু স্বরূপ ললাটদেশে জাফ্রাণের দীর্ঘ ও স্থুল তিলক অঙ্কিত করে। এই তিলক এক সূর্য্যোদয়ে সেবিত হয় এবং অপর সূর্য্যোদয়ে অপনীত হইয়া তৎস্থানে আর একটা সমিবেশিত হইয়া থাকে। একারণ, ইহাদের ললাটে স্থদীর্ঘ দাগ স্পষ্ট দেখিতে পাওয়া যায়।

্ মুসলমানেরা স্থল্লি ও সিয়া তুই অংশে বিভক্ত। তন্মধ্যে স্থানিদিগের সংখ্যা বহু পরিমাণে অধিক। এই তুই ভিন্ন ভিন্ন মতাবলম্বী লোকদিগের ধর্মবিদ্বেষ অতি গুরুতর ও ভয়ানক। ইং সন ১৮৭২ খৃষ্টাব্দের শেষার্দ্ধে কোনো মস্- জিদের প্রাচীর লইয়া এই ছুই দলে বিবাদ হয়। এই সূত্রে সহস্র সহস্র হার একত্র হইয়া অপর পক্ষের ঘরদ্বারে অয়ি প্রয়োগ, দ্রব্যাদি লুগুন, কুমারী ও যুবতীদিগের সভীত্ব নাশ, রাজ্যের শান্তিলোপ প্রভৃতি যে সমুদয় ভয়াবহ ও হৃদয়বিদারক অত্যাচার করিয়াছিল, তাহা স্মরণ হইলেও হৃংকম্প উপ্রতিত হয়। মহারাজার বুদ্ধিচাভূর্য্যে এবং শাসনকৌশলে সে বিপ্রব অনতিবিলম্বে শান্ত হইয়া য়ায় এবং অপরাধীরা মথোচিত শান্তি পায় এবং কেবল ইইয়ই শাসনভয়ে ছ্র্দ্দান্ত মহম্মদারের ধ্র্মবিদ্বেষ-জনিত ছয়ভীক্ত সাধন করিতে পায়ে না। নচেৎ, স্থযোগপাইলে ইহাদের নৃশংস ব্যবহারের ইয়ভা থাকিত না।

শাসন-প্রণালা] অতি প্রাচীনকালাবধি কাশ্ম র বিদেশীয় হিন্দু এবং মুসলমান নরপতিদিগের শাসনাধীন ছিল। পরে ইং ১৮১৯ খৃষ্টাব্দে পঞ্জাব নরেশ্বর একাক্ষ সিংহ মহারাজা রণজিং সিংহ কাবুলাধিপতি আশ্বীর দোস্ত মহম্মদের লাতা নবাব জুবরখাঁকে পরাজিত করিয়া ইহা আপন রাজ্যান্তর্গত করেন। তাঁহার পরলোক প্রাপ্তির পর ইং ১৮৪৬খৃষ্টাব্দে, যৎকালে ইংরাজ রাজপুরুষেরা পঞ্জাব অধিকার করেন, তথন মহারাজা রণজিং সিংহের অন্যতর মন্ত্রী মহারাজা গোলাব সিংহ তাঁহাদিগকে অশেষ প্রকারে সাহায্য করিয়াছিলেন এমন কি, ইনি উহাঁদিগের প্রক অবলম্বন না করিলে তাঁহাদিগের জয়লাভ করা ত্ররহ হইয়া উঠিত। একেতো, সমুদ্র পঞ্জাব ও ইহার অধীনম্ব কাশ্মীর প্রভৃতি স্থবিস্তৃত ভূভাগ এক কালে শাসনাধীন করা কঠিন ব্যাপার, তাহাতে আবার মহারাজা গোলাব সিংহকে কৃতজ্ঞতাব নিদর্শন দেখানো উচিত। এই

বিধায়ে স্বচতুর রাজনীতিকুশল শেতকায় পুরুষেয়া মহারাজা গোলাব সিংহের সহিত উক্ত খৃফীব্দের ১৬ই মার্চ্চ তারিখে এক সন্ধি স্থাপন করেন। এবং তাঁহার নিকট হইতে ৭৫ লক্ষ্ণ টাকা (মূল্য স্বরূপ) লইয়া তাঁহাকে কাশ্মীর ও জন্ম দান করি-লেন। এই সন্ধিপত্রে ইহাও ধার্য্য হইল, যে, কাশ্মীর ও জন্ম অধিপ্রতি ইংরাজদিগকে প্রতি বংসর কেবল এক গুট্ অর্থাৎ পার্ব্বতীয় অশ্ব; ১২টা শাল ছাগল (৬ পুং এবং ৬ স্ত্রী) এবং তিনযোড়া উৎকৃষ্ট শাল কর স্বরূপ প্রদান করিয়া সম্পূর্ণ স্বাধীনতা সহকারে রাজন্ব করিতে পাইবেন।

মহা প্রতাপশালী রাজা গোলাব সিংহ নিজ ভুজবলে ও স্থবিজ্ঞ দেওয়ান জোয়ালা সাহার বিচক্ষণতা ও রাজনীতিকুশ-লতার সাহায্যে কাশ্মীর ও জন্ম স্থপ্রণালীক্রমে শাসন করেন। ইহার শাসনকালে রাজ্যে দস্ত্য ও চৌর-ভয়ের লেশমাত্রও ছিল না এবং অদ্যাপি তদ্রপই হইয়া আসিতেছে। পূর্ব্ব পূর্ব্ব নরপতিদিগের দৌরাজ্যে ও পীড়নে প্রজারা মৃতপ্রায় হইয়াছিল। স্থভরাং মহারাজা গোলাব সিংহের কোমল ও ন্যায়পরায়ণ শাসনে মৃতদেহে জীবন প্রাপ্ত হইল। প্রভুত্ত, গোলাব সিংহ গোলাপ।পুল্পের ন্যায় বিকসিত হইয়া সৌরভ বিস্তার করত রাজত্ব করিয়া গিয়াছেন। ইং ১৮৫৭ খৃষ্টাব্দের আগষ্ট মাসে তিনি পরলোক গমন করেন। মৃত্যুর কিছুকাল পূর্ব্বে তিনি স্বীয় মন্ত্রীকে কহিয়াছিলেন, যে, "ঈশ্বর এমন সময়ে আমাকে কাশ্মীর দিলেন, যখন জরা আক্রমণ করিয়াছে। ১৭০৮ আমি ইহার এক এক খণ্ড প্রস্তর এবং এক একটা দ্র্বাদলের উপর পাদবিক্ষেপ করিতাম।"

মহারাজা গোলাব সিংহ জীবদ্শায় অর্থাৎ ১৮৫৫ খৃষ্টা-

ব্যের মার্চ্চ মাসে আপন পুত্র মহারাজা রণবীর সিংহকে যৌবরাজ্যে অভিষিক্ত করেন। একণে ইহাঁর বয়ঃক্রম ৪৮ বৎসর।
দিপাহী বিদ্রোহকালে ইনি বহুসংখ্যক সেনা দিল্লীতে প্রেরপ
করেন এবং তদনন্তর ইংরাজদিগকে অশেষ প্রকারে সাহায্য
করিয়া আসিতেছেন। একারণ মহারাণী ভিক্টোরিয়া প্রীতি সহ্
কারে ইহাঁকে নাইট উপাধি প্রদান করিয়াছেন। ইহাঁর চারি
পুত্র। জ্যেষ্ঠের নাম মিয়া প্রতাপ সিংহ, মধ্যম মিয়া রামসিংহ, তৃতীয় মিয়া অমর সিংহ এবং কনিষ্ঠ মিয়া লক্ষ্মণ সিংহ।
জ্যেষ্ঠ রাজপুত্র খৃ ১৮৫০, দ্বিতীয় ১৮৬৩, তৃতীয় ১৮৬৫
খৃষ্টাব্বে জন্ম গ্রহণ করেন। কনিষ্ঠ এক্ষণে তিন বৎসর মাত্র।

ইহারা সূর্য্যবংশীয়। মহারাজা রণবীর সিংহ পিতৃ-মন্ত্রী দেওয়ান জোয়ালা সাহা এবং তৎপুত্র দেওয়ান ক্যপারামের অসীম বুদ্ধি, কার্য্যদক্ষতা এবং বিচক্ষণতা বলে স্বরাজ্য গোরব-সহকারে শাসন করিতেছেন। জন্ম নার্কার ইহাঁর রাজধানী। তথায় মহারাজা রাস করেন এবং প্রায় প্রতি বৎসর গ্রীম্ম কালে কাশ্যীরে গমন করিয়া থাকেন।

কাশ্মীরে হিন্দুধর্ম মূর্ত্তিমতী। জন্মতে রঘুনাথজীর এবং কাশ্মীরে গদাধর দেবের স্বর্ণমণ্ডিত মন্দিরে চারি বেদ অহর্নিশি পাঠ হইরা থাকে। হিন্দুমাত্র সকলকেই অতি প্রভ্যুষে শয্যা হইতে গাত্রোত্থান পূর্বক যথারীতি স্নানপূজাদি করিতে হয়—কাহারো লোকিক আচার ব্যবহার অথবা আহারাদি ধর্মবিরুদ্ধ হইলে রাজদ্বারে যৎপরোনাস্তি দণ্ড হইরা থাকে। গোহত্যা, স্থরাপান ও জুয়াথেলা এই তিন মহাপাতকের নাম মাত্রগুনাই। কাশ্মীরীরা পুরাকালাবধি স্ব স্ব ভবনে আসুর এবং

আপেলের স্থরা প্রস্তুত করিয়া পান করিত। কিন্তু মহারাজা এক্ষণে উহা রহিত করিয়াছেন এবং যদি কেহ কথনো পান করে, তাহা হইলে তাহাকে সপরিবারে অশৈষ অপমানিত করিয়া রাজ্য হইতে বহিষ্কৃত করিয়া দেন। জ্বীনগরে ইংরাজ-দিগের আহারোপযোগী দেব্যাদি বিক্রয়ার্থ চুই তিন খান দোকান আছে; তাহারা মদ বিক্রয় করিয়া থাকে। কিন্তু ইংরাজ ভিন্ন কোনো প্রজাকে অথবা ভারতবর্ষীর কোনো লোককে তাহারা মদ বিক্রয় করিতে পারে না।

এখানে বিচারকার্য্য হিন্দুশাস্ত্র সম্মতিক্রমে সম্পাদিত হইয়া থাকে। অধুনা মহারাজার আদেশ মতে বাবু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায় হিন্দুদিগের ব্যবস্থাশাস্ত্র, মুসলমানদিগের কোরাণ এবং ইংরাজদিগের পিনাল্কোড ঐক্য করিয়া এক নূতন নিয়মাবলী প্রস্তুত করিয়াছেন। কিছু দিন তদ্বারাই দণ্ডবিধি হইয়া আসিতেছে। কোনো অপরাধী প্রাণবধ (ফাঁসি) দণ্ডার্হ্ হইলে মহারাজা ব্রিটিস গ্রণমেন্টের অবিদিতে ও অনুমুমোদনে স্বায় স্বাধীনতা বলে বধ-কার্য্য করিতে পারেন।

যাহাতে রাজ্য মধ্যে অজ্ঞানান্ধকার দূরীভূত হইয়া জ্ঞানালোক সম্যক্রপে প্রদীপ্ত হয়, মহারাজা তৎপ্রতি বিশেষ
মনোযোগী আছেন। দূরদেশ হইতে কোনো স্থপণ্ডিত আদিলে তাঁহার যথেষ্ট সমাদর করেন, আপন সভাসদ পণ্ডিতদিগের সহিত তর্কবিতর্ক করাইয়া তাঁহার বিদ্যার পরিচয়
লয়েন এবং গুণের পুরস্কার স্বরূপ যথোচিত রত্নাদি প্রদান
পূর্বক বিদায় করেন। কাশ্মারে সংস্কৃত ও পারস্থ বিদ্যালয়ের
জন্য এবং জস্কুতে সংস্কৃত, পারস্য ওইংরাজী বিদ্যালয়ের জন্য

বার্ষিক ত্রিশ সহস্র মুদ্রা ব্যয় (কেবলমাত্র—শিক্ষকদিগের বেতন,ও ছাত্রবৃত্তি) স্বাক্ষর করিয়াছেন। বিদ্যার্থী বালকেরা অবস্থামুসারে তেহ কেহ মাসিক দশ মুদ্রা করিয়া ছাত্ররতি পাইয়া থাকে এবং অধিকাংশ প্রাত্যহিক প্রস্তুত অন্ন ব্যঞ্জন, আবশ্যকীয় পরিচ্ছদ, পাঠ্য পুস্তক এবং বাসগৃহ পাইয়া থাকে। विम्हालरम्ब शिक्षका कार्या ७ ताककीम श्राम श्राम , कार्या সম্পাদনার্থ কলিকাতা প্রভৃতি দূরদেশ হইতে উপযুক্ত সন্ধি-দ্বানগণ আনীত হইতেছেন। এবং যাহাতে ইংরাজ রাজ্যের স্থায় স্থালীক্রমে সমুদায় রাজকার্য্য সম্পাদিত হয়, তিৰিষয়ে মহারাজ। ঐকান্তিক চেন্টা করিতেছেন। অপর, স্বরাজ্যে বিশ্ববিদ্যালয় ও পুস্তকালয় প্রতিষ্ঠিত করিবার জন্য সর্বাপ্রকার বিদ্যার পুস্তক সংগ্রহ করিতেছেন এবং তৎসমূদায় সরল সংস্কৃত, হিন্দী এবং উর্দ্ধায়ায় অনুবাদ করাইতেছেন। এই অনুবাদ বিভাগ একটা স্বতন্ত্র সমাজরূপে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে এবং এতৎসম্বন্ধে প্রতি বংসর বিপ্ল মর্থ ব্যয় হইতেছে।

মহারাজার দানও অতি প্রশংসনীয়। প্রাত্যহিক স্বস্তায়ন ও গ্রহপূজা; প্রতি শনিবারে শনৈশ্চর দেবের পূজা; মধ্যে মধ্যে কালপুরুষ প্রভৃতি কুগ্রহের পূজা। অমাবস্যা, পৌর্গমানী, সংক্রান্তি, গ্রহণ প্রভৃতি উপলক্ষে বিপুল অর্থ দীন হীন অনাধ-দিগকে দান জন্য মহারাজাব বার্ষিক তিন লক্ষ এবং রাজপুত্র-দিগের প্রত্যেকের লক্ষ মুদ্রা স্থিরীকৃত আছে। অপর, স্বরা-জাস্থ হউক, বা বিদেশস্থ হউক, কোনো বিপদ্গ্রস্ত আগস্তুক ব্যক্তি বীয় প্রকৃত বিপদ জানাইলে মহারাজা মুক্ত হস্তে অর্থে সামর্থ্যে- তাহার বিপদোদ্ধার করেন। এতদ্যতীত, সময়ে

সময়ে ভারতবর্ষীয় অথবা ইংলণ্ডীয় কোনো উৎদব উপলক্ষে অথবা কোনো কল্যাণত্রতে বিপুল বিত্ত ব্যয় করিয়া থাকেন। ় রাজ'ষ ও পণ্যজাত দ্রব্যাদির কর প্রভৃতি সমুদায়ে মহা-্রাজার বার্ষিক আয় অনুমান এক কোটি মুদ্রা এবং প্রায় তৎ-সমুদয়ই ব্যয় হইয়া থাকে। অধুনা শাল হইতে দশ লক্ষ টাকা উংপ্নন্ন হইতেছে। পূর্ণেব শালের কর অধিক ছিল বলিয়া তদপেক্ষা অধিক টাকা সংগৃহীত হইত। কিন্তু উহা প্রজা-পীড়ক ছিল—তন্তুবায়ের। অতি কষ্টে প্রদান করিত। একারণ, মহারাজা নিজ কোমের হ্রাসতা করিয়াও অনেক পরিমাণে উহার লাঘব করিয়াছেন। পূর্বের ভূমি মাত্রই রাজসম্পত্তি ছিল; কোনো ভূমির নির্দ্দিষ্ট রাজস্ব ছিল না। কৃষিকার্য্যের সময়ে কৃষকদিগকে উহা বিভাগ করিয়া দেওয়া হইত এবং শদ্যোৎ-পাদন হইলে কেবলমাত্র তাহাদিগের ভরণপোষণোপদোগী শস্য প্রদান পূর্ব্বক অবশিষ্ট সমূদয় রাজকোষে সঞ্চিত হইত এবং প্রজাদিগের আবশ্যক মত নরপতি স্বয়ং শস্য বিক্রয় করিতেন। স্থতরাং, পাঠকগণ বিবেচনা করিয়া দেখুন, এই রীতি কতদূর পর্যান্ত প্রজাশোণিতশোষক, নৃশংস এবং দৌরাত্মলক ছিল। কিন্তু করুণহৃত্য বর্তমান নরেখর উহা সমূলে উচ্ছেদ করিয়া তৎপরিবর্ত্তে অতি লঘু পরিমাণে ভূমির কর নির্দেশ পূর্বক ক্বকদিগকে বণ্টন করিয়া দিয়াছেন। কয়েক বৎসর অতীত হইল, কাশ্মীরে প্রজাদিগের নিকটে রাজস্ব হিসাবে ন্যুনাধিক দ্বাবিংশতি লক্ষ মুদ্রা অনাদায়ী ছিল। বিশেষ পীড়ন না করিলে সে সমুদয় আদায় হইবার সম্ভাবনা ছিল না। কিন্তু মহারাজা উহার স্বন্ধ ত্যাগ করিয়া-

ছেন এবং যাহাতে বর্ষে বর্ষে রাজস্ব আদায় হয়, তাহার বন্দোবস্ত করিয়া দিয়াছেন। এইরপে প্রজাগণের স্থাংগাদেশে ইনি অনেক অনেক বিবয়ের করের লাঘব করিয়াছেন এবং যাহাতে কোনো কোনো বিষয় হইতে অধিক রাজস্ব উৎপন্ন হয়,তাহার উপায় অবলম্বন করিতেছেন। এতাবৎকাল রেসম হইতে দশু সহস্র টাকা আয় হইত; কিন্তু বিজ্ঞবর নীলাম্বর বাবু এখানকার অসংখ্য ভূঁতরক্ষ এবং স্থলভ গুটিপোকা দেখিয়া মহারাজার নিকটে আবেদন করেন, যে, স্থচারুরূপে কর্বিত হইলে রেসম হইতে দশ সহস্রের পরিবর্তে ছয় লক্ষ্ক মুদ্রা উৎপন্ন হইবার সম্ভাবনা। মহারাজা এই বাক্যে অনুমোদন করাতে তিনি বাসালা দেশ হইতে কতিপয় স্থশিক্ষিত তন্তবায় আনাইয়া রেসমের কার্য্য বিস্তৃত করিয়াছেন। বোধ হয়, তাঁহার আশা ফলবতী হইবে।

মহারাজার চল্লিশ সহস্র স্থানিক্ষত ক্ষ্যৈ আছে। রঘুনাথজী প্রভৃতি দেবতাদিগের নামানুসারে সম্প্রদায়ের সম্প্রদায়ের নামকরণ হইয়াছে এবং ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়ের ভিন্ন ভিন্ন পরিচ্ছদ—সে সমুদয় অতি উৎকৃষ্ট। সৈন্যদিগের অধিকাংশ ডোগ্রা অর্থাৎ জম্বু ও তৎসন্নিধি স্থানবাসী। এতদ্যতীত, অনেক হিন্দুসিপাহী এবং কাশ্মীর প্রদেশের উত্তরভাগস্থ গিলাগিৎ প্রভৃতি স্থানবাসী আছে। প্রায়্ম সকল সেনানায়ক ডোগ্রা। কাশ্মীরে কর্ণেল গার্ডনার নামক এক জন ইউরোপীয় (বোধ হয়, ইটালী দেশীয় হইবেক) মহারাজা গোলাপ সিংহ কর্তৃক সৈন্যাধ্যক্ষ পদে অভিষিক্ত আছেন এবং সম্প্রতি ইউরোপীয় ত্রক্ষ দেশীয় এক জন দৃঢ়কায়, বলিষ্ঠ ও কর্মাদক্ষ কর্মাচারী

এক সম্প্রদায়ের অধ্যক্ষ পদে নিযুক্ত হইয়াছেন। অধুনা মহারাজা ডোগ্রা সন্ত্রান্ত ব্যক্তিদিগের সন্তানের এক নৃত্নু সম্প্রদায় প্রস্তুত করিতেছেন। উহারা শিক্ষিত হইলে মহারাজার
শরীর রক্ষক হইবে। সৈন্যগণ ইতিপূর্বের ইংরাজী শব্দে শিক্ষিত হইত। কিন্তু অধুনা তংসমুদ্য সংস্কৃত ভাষায় অমুবাদিত হইয়াছে যথা, "ক্ষেন্ত্রম্ " "দক্ষিণে চক্রম্"
ইত্যাদি।

মহারাজা স্থবিখ্যাত আলফেুড নরপতির ভায় দিন-রাত্রিকে নানাভাগে বিভক্ত করিয়া স্বীয় নিত্য নৈমিত্তিক কর্ম্মের নিয়-মাবলী প্রস্তুত করিয়াছেন। নিতাস্ত শরীর অস্তুস্থ অথবা কোনো দৈব হুর্ঘটনা উপস্থিত না হইলে উহা উল্লজ্ঞ্মন করেন না---নচেৎ প্রত্যহ .তংসমুদয় স্পষ্টাক্ষরে প্রতিপালন করিয়া থাকেন। প্রভূয়ে শয্যা হইতে গাত্রোত্থান করিয়া প্রাভঃক্রি-য়াদি সমাপন পূর্বক ঈশ্বরোপাসনায় মনোনিবেশ করেন। যৎকালে মুগ বা ব্যাত্র চর্মাদনে উপবিষ্ট হইয়া ভক্তি দহ-কারে পুজা করিতে থাকেন, তখন ইহাঁকে দর্শন করিলে ভক্তিরসের উদয় হয়। পূজাকালে শ্রীমন্তাগবৎ অথবা পুরাণাদি পাঠ শ্রবণ করেন এবং কৃতবিদ্য পণ্ডিত মণ্ডলীতে মণ্ডিত হইয়া ধর্মালোচনা ও শান্ত্রাসুশীলন করিতে থাকেন। পণ্ডিত-দিগকে যেরূপ জটিল প্রশ্ন করেন; প্রাপ্ত উত্তরের যোক্তিকতা ও অযোক্তিকতা যেরূপ প্রতিপন্ন করেন,তাঁহাদিগের পরস্পরের মতভেদ হইলে যেরূপ ভায়পরায়ণ মধ্যস্থ হইয়া মীমাংসা করিয়া দেন, তাহাতে ভাঁহার স্থাকা, অসীম বহুদর্শিতা এবং অসাধারণ ধীশক্তির ভূয়সী প্রশংসা করিতে হয়। অধিক- তর প্রতিষ্ঠার বিষয় এই, যে, পাছে প্রত্যক্ষ দেবতাম্বরূপ রাজ্যেশ্বরের মতের বিরুদ্ধে কেহ কোনো কথা কহিতে সাহসী না হয়, এ কারণ মহারাজা ভূয়োভূয়ঃ সকলকেই আপনাপন অভিপ্রায় অকুতোভয়ে প্রকাশ করিতে উত্তেজনা করেন এবং স্বপক্ষ, যত কেন প্রিয় ও বিশ্বাসন্থল হউক না, ভ্রান্তিমূলক প্রমাণীকৃত হইলে প্রীতি-প্রফুল্লমনে তাহা পরিত্যাগ পূর্বক প্রকৃতপক্ষ অবলম্বন করেন।

যৎকালে মহারাজা পূজা করিতে থাকেন, তথন ধীমান জ্যেষ্ঠ রাজপুত্র স্নান, দান, পূজা প্রভৃতি প্রাতঃক্রিয়া সমাপন পূর্বক সচিবপ্রধান দেওয়ান জোয়ালা সাহার সহিত বহুসং-খ্যক সভাসদ্বর্গে পরিবেষ্টিত হইয়া "দেওয়ান থানায়" উপ-বিষ্ঠ হয়েন এবং রাজ্যসংক্রান্ত ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র কার্য্য সমাধা করেন।

পরে নবম ঘটিকাকালে মহারাজা পূজা ও প্রাত্যহিক দান
সমাপন করিয়া দরবারে আইসেন। চোপনারেরা অগ্রবর্তী
হইয়া মহারাজের আগমন ঘোষণা করিতে থাকে। এই দরবারকে "খাস্দরবার" অর্থাৎ অপ্রকাশ্য রাজসভা কহে।
ইহাতে কেবলমাত্র জ্যেষ্ঠ রাজপুত্র, মন্ত্রীদ্বয় এবং তদ্বংশজাত
স্থদক কর্ম্মচারীরা উপস্থিত থাকেন। ইহাতে রাজ্য-সংক্রান্ত
শুজু বিষয়াদির পরামর্শ হয়; কি লঘু, কি গুরু মমুদয় রাজকার্য্যের তত্ত্বাবধারণ হয়; প্রচলিত নিরমাদি সংশোধন আবশুক হইলে পরিবর্ত্তন হয়; রাজ্যের জীর্দ্ধি সাধন ও প্রজাগণের স্থথোমতি উদ্দেশে কল্যাণময় ব্রতসকল স্থিরীকৃত হয়;
এবং প্রয়োজনমতে প্রধান প্রধান কর্ম্মচারীরা আহুত হইয়া
তাহাদিগের ভারার্পিত কর্ম্মের পর্য্যালোচনা হইয়া থাকে।

এত রাতীত, নির্দিষ্ট দিবসে মহারাজ। স্বয়ং সৈন্য-সংক্রান্ত ও গুরুতর দেওয়ানী ও ফোজদারী সম্বন্ধীয় অভিযোগ প্রভৃতি বিশেষ বিশেষ বিভাগের কার্য্য পর্যবেক্ষণ করেন।

পাঠকবর্গের গোচরার্থ এফলে উল্লেখ ক্রা উচিত, যে, জন্মান্টমী, বিজরাদশমী, রামনবমী প্রভৃতি কয়েক মহোৎসবে মহারাজা বহুমূল্য রত্নালস্কারে শোভিত হইয়া সভাসীন হয়েন। নচেৎ প্রাত্যহিক দরবারে ঝাহু উপযোগী সাধারণ পরিচ্ছদ এবং ক্ষত্রিয় জীবনসর্বাধ্ব তরবারি ভিন্ন কোনো প্রকার অলজার ধারণ করেন না। মহারাজা সভাসীন হইলে রাজকর্মানরে মাত্রেই দ্বারদেশে উপস্থিত হইয়া "জয় দেব মহারাজ"শব্দে বন্দনা করতঃ রাজসাক্ষাৎকার লাভ করিতে পারে। বিদেশীয় সম্ভান্ত আগস্তুকেরা এই প্রাতঃকালীন দরবারে মন্ত্রী-দিগের সাহায্যে রাজসদনে উপনীত হইয়া থাকেন। পরে বেলা একাদশ ঘাটকাকালে সভা ভঙ্গ হয় এবং চোপদারেরা সভাভ-সমূচক ধ্বনি প্রকাশ করিতে থাকে। **

বেলা অপরাহ্ন চতুর্থ ঘটিকাকালে জ্যেষ্ঠ রাজপুত্র প্রাড়্বি-বাকদিগের সহিত "মগুল " অর্থাৎ রাজবাটীর বহিদ্দেশস্থ মধ্যস্থলবর্ত্তী প্রকাশ্য সভামগুপে অধিবেশন পূর্ব্বক নিরাশ্রয় অনাথদিগের মর্ম্মবেদনার আবেদন শ্রবণ এবং তংপ্রতীকারের দিশেশ প্রচার করেন।

সূর্য্যান্তের প্রাকালে মহারাজা অশ্বারোহণ পূর্বক নগর

^{*} ইহা এবং পরবর্তী বর্ণনা জমুরাজধানী আদর্শ করিয়া লিখিত ছইল।
নহারাজা কাম্মীরে প্রায় মৌকাযানে সন্ধ্যাসমীরণ সেবন এবং নগর পর্যাবেক্ষণ
করিয়া থাকেন। সেধানে কোনো হন্তী নাই।

2.5

পর্যবেক্ষণ করিতে গমন করেন। সন্মুথে অস্ত্রধারী শরীর-রক্ষকেরা ধাবিত হইতেছে, উচ্চেঃ প্রবা সদৃশ ঘোটক-পৃষ্ঠে মহারাজা উপবিষ্ট হইয়া একতান নয়নে চারিদিক্ নিরীক্ষণ করিতেছেন, রাজপুত্রেরা ও পারিষদ্বর্গ স্থদীর্ঘ শ্রেণীবদ্ধ হইয়া পশ্চাদ্গমন করিতেছে, পশ্চাতে তুই বা চারি মাতক স্থাজিত হইয়া গর্কসহকারে মৃত্র মৃত্র পাদবিক্ষেপ করিতেছে, অথের হেযারবে ও পদশব্দে দিঙ্মগুল প্রতিধ্বনিত ইইতেছে, নগরী সহস্র মুথ ধারণ করতঃ "মহারাজ জয় দেব" শব্দে বন্দনা করিতেছে—দেখিলে নরেশ্বরের প্রতাপে বিমোহিত হইতে হয়! প্রতিরবিবারের সায়ংকালে সেনা-প্রদর্শন হইয়া থাকে। মহারাজা স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া সৈত্যদিগের শিক্ষার পরীক্ষা লয়েন।

বিভাবরী সমাগতা ইইলে মহারাজা প্রত্যাগমন পূর্বক দরবারে আদীন হয়েন। কোনো গুহ্য পরাধার্শের আবশ্যকতা থাকিলে মন্ত্রীবর্গের সহিত নিভূত স্থানে উপবেশন করেন। ইহাকে "কিনারা" বা "গোসা" (কর্ণ) কহে। পরে "আম-দরবার" অর্থাৎ প্রকাশ্য রাজসভা আরম্ভ হয়। ইহাতে প্রধান প্রধান রাজ কর্মাচারী মাত্রেই উপস্থিত হয়েন। ইহাতে প্রাতঃকালীন দরবারের ন্যায় রাজ্যের হিতৈষিণী ও ওৎকর্ষসাধিনী মন্ত্রণা অবলম্বিত, সমুদয় বিভাগের কার্য্য পুঝান্তুর ইয়া থাকে। মহারাজা সাধারণ বিষয়াদি সম্বন্ধে যেরূপ নীতিগর্ভ কথোপকথন, রাজ্যশাসন সম্পর্কে যেরূপ সম্বাত্র প্রকাশ এবং রাজা ও প্রজার পরস্পর পিতাপুত্র সম্বাত্রীয় প্রকাশ এবং রাজা ও প্রজার পরস্পর পিতাপুত্র সম্বাত্র

দ্ধীয় কর্ত্তব্য বিষয়ে যেরূপ বক্তৃতা করেন, তাহাতে ইহার অসাধারণ অভিজ্ঞতা, অনুপম প্রজাবাৎসল্য, স্বকীয় গরিষ্ঠ পদের যোগ্যতা, অসীম দয়া, দাক্ষিণ্য, উদারতা ও মহান্চিত্তের সহস্র সহস্র নিদর্শন দর্শনে বিমোহিত ও ভুক্তিমান হইতে হ্য়। রাত্রি নবম ঘটিকাকালে রাজসভা ভঙ্গ হইরা থাকে।

্রপ্রভুতে, মহারা গা রণবার সিংহ, কে, জি, দি, এদ, আই, নেরপ শান্তমূর্ত্তি, ধীরপ্রকৃতি, সংকর্মশীল, সাধুচরিত্র, উদার-চিত্ত, ধর্মভীত, বদাত্য, নিরহস্কার, প্রজাবৎসল, গুণগ্রাহক, অহুল-বুদ্ধিসম্পন্ন এবং সর্ব্বগুণান্বিত, তাহাতে ইহাঁকে দেব-তুল্য বলিয়া প্রতীয়মান হয়। যিনি ইহাঁর দর্শন লাভ করিয়ছেন, িনিই মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিবেন, যে, ইহাঁর দোম্যমূর্ত্তিতে রাজচক্রবর্তী-লক্ষণ-সংযুক্ত রমণীয় প্রভা স্পষ্ট লক্ষিত হইয়া থাকে। ইনি বেরূপ অতুল বিভবশালী, সম্যক্ প্রকারে স্বাধীন এবং দোর্দণ্ড প্রতাপান্থিত নরেশ্বর, তাহাতে যে ইহার চরিত্র দোষশূন্য হইয়া সর্বগুণের আকর হই-য়াছে, ইহা অতি প্রশংসনীয়। অপিচ, স্বর্গ ঘাঁহার রাজ্য, অমরাপুরী ঘাঁহার বাসস্থান, এবং নন্দনকানন ঘাঁহার জীড়ার উপবন, তিনি যে কোনো প্রকার ইন্দ্রিয় দোষে দূষিত নহেন, ইহা বেমন অনুমোননীয়, তেমনি আশ্চর্য্যের বিষয়। ইনি রাজনীতি জ বিচক্ষণ সচিবদ্বরের সন্তুপদেশে যেরূপ স্থ-ণালীক্রমে রাজ্য শাসন করিতেছেন—প্রজাদিগের হিত-সাধন উদ্দেশে যে সা স্থানিয়ম প্রচার ও মহদর্তান করি.তছেন-তাহাদিগের স্থসমূদ্ধি রুদ্ধি , করিবার স্নেহ্ময় পিতার ন্যায় যেরূপ সকরুণহত্তে পালন করিতে-

ছেন—স্বরাজ্যের জীবৃদ্ধি করিবার জন্য যেরপে একাগ্রচিন্ত ও তৎপর আছেন এবং বিদেশীয় বা বিজাতীয় জন সমূহের পক্ষে যেরপ সহলয় ও কুপালু, তাহাতে ইহাঁর রাজ্য "রামরাজ্য" বলিয়া স্বীকার করিতে হইবে। ভারতবর্ষীয় কোনো আধুনিক নরপতি ইহাঁর সমকক্ষ যে হইতে পারেন না, এ কথা সাহ্য করিয়া বলা যাইতে পারে। তবে যে সময়ে সময়ে কোনো কোনো ইংরাজা সংবাদপত্র-সম্পাদক বা তক্রপ কেই ইহাঁর শাসন প্রণালীর নিন্দা দ্বারা জঘন্য কুৎসা করিয়া থাকেন, সে সমুদায় অলীক ও বিদ্বেষমূলক। এমন স্বর্গস কাশ্মীর "নেটিভ" রাজার অধীনে রহিয়াছে, ইহা অনেক ইংরাজ মহোদয়ের প্রাণে সহু হয় না, তাহাতে তাঁদের ঘোর চক্ষুঃ-পীড়া উৎপাদন করে। অপর, এস্থলে ইহাঁরা বারমাস* বাস করিয়া ইংরাজাধীন স্থান সমূহের স্থায় যথেচ্ছাচারী হইয়া

[•] ইংরাজদিগের সহিত মহারাজা গোলাপ সিংহ এই অভিপ্রায়ে এক সিদ্ধি স্থাপন করেন, যে, কাম্মীর দশ নার্থী ইংরাজেরা নিয়মিত সংখ্যায় প্রতিবংসর ১৫ ই এপ্রেল হইতে ১৫ ই অক্টোবর পর্যন্ত কাম্মীরে থাকিতে পারিবেন। এই নির্দ্ধিট সময় অতিবাহিত হইলে তাঁহাদিগকে কাম্মীর পরিত্যাগ করিতে হয়। পঞ্জাব গবর্থমেন্ট সংখ্যা নির্দ্ধেশ পূর্বক (তিন শতের অধিক নহে) আদেশণ পত্র অর্থাৎ টিকিট প্রচার করিরা থাকেন। এবং গমনার্থীদিগের চরিত্র লাম্পট্য প্রভৃতি দোবে দূষিত না হয়, যথেক্জাচারী হইয়া রাজ্যের শান্তি নই না করে, প্রজাদিগের সহিত কোনোবিষয়ে অসামঞ্জন্য ন, ঘটায়, এই সমুদায়ের প্রতি দৃষ্টি রাখিবার জন্য প্রতি বৎসর এক জন 'ভোকিসর অনু স্পোন্যায়েল ডিউটা" নিযুক্ত করেন এবং তৎসনভিব্যাহারে এক জন চিকিৎসক এবং এক জন পাত্রী প্রেরণ করেন। এইরূপ আবহ্মান চলিয়া আসিতেছিল, কিন্তু গত বৎসর ইয়ক ক্ষের সহিত সন্ধি স্থাতে উক্ত আফিসর ছয় মানের পরিবর্ত্তে আট মাস থাকিবার ক্ষমতা পাইয়াছেন। কিন্তু তিনি রাজ্য সংক্রান্ত কোনো বিষয়ে হল্পিণ করিতে পারেন না।

আপনাপন নিক্ষীর্ত্তি চরিতার্থ ও পশুবং ব্যবহার করিতে
সমর্থ হয়েন না, কথায় কথায় "ড্যাম্ নিগার" বলিয়া স্ব স্থ প্রভুত্ব দেখাইতে এবং বিবিধরণে প্রজাদিগকে পদতলে
দলিত করিতে পারেন না; ইত্যাকার নানাবিধ মনস্তাপে
অক্রিণে মহারাজার বিপক্ষ পক্ষ অবলম্বন করত লেখনী
দ্বারা ঝাল ঝাড়েন!

আবার কেহ কেহ হয় তো নিজ তুদ্ধর্মের প্রতিফল স্বরূপ অপমানিত হইয়া রাজ্য হইতে নিক্রান্ত হইয়াছেন। স্বতরাং মহারাজার কুংসা ও নিন্দা চারিদিকে প্রচার করিয়া বেড়ান। কিন্তু মহারাজা এই সমুদয় "কুতা ভোঁক্তা হায়" (কুরুর ঘেউ ঘেউ করিতেছে) বলিয়া সম্পূর্ণ উপেক্ষা করেন।

দ্বিতীয় পরিচ্ছেদ

কাশ্মীরের পথ।

কাশীরে যাইবার নিম্নলিথিত কয়েকটা প্রধান রাজপথ আছে।

১ম। জন্ম এবং বন্হাল পথ, অর্থাৎ আধুনিক কাশ্মীরা-ধিপতির রাজকীয় পথ।

২য়। ভিম্বর এবং পীর পঞ্জাল পথ, অর্থাৎ পুরাতন বাদশাহী পথ।

৩য়। ভিম্বর এবং পুঞ্চ পথ।

8र्थ। मति পথ।

৫ম। আবোটাবাদ পথ, অর্থাৎ পূর্বতন আফগান শাসন-কর্ত্তাদিগের পথ।

ডাক্তার ইন্স এভৃতি মহোদয়গণ কাশ্মীরভ্রমণ-সম্বন্ধীয়
পুস্তকে এই সমুদ্য় পথের কিয়দংশ বর্ণনা করিয়াছেন এবং
মন্ত্রামারি সাহেবের "কাশ্মীর রুট ম্যাপ " এবং "জন্মু
ও কাশ্মীর ম্যাপ " মানচিত্রে প্রত্যেক পথের প্রত্যেক স্থান
অন্ধিত আছে। কাশ্মীর দর্শনাভিলাধী ব্যক্তিগণ তৎসমুদায়
সংগ্রহ করিলে যথেষ্ট উপকৃত হইতে পারেন। তথাপি তাঁহাদের স্থবিধা জন্ম সর্বাগ্রে স্বীয় প্রত্যক্ষলন্ধ অভিজ্ঞতানুযায়ী

সমুদায় পথের সাধারণ প্রকৃতি ও জ্ঞাতব্য বিষয় সকল বর্ণনা করিয়া পরে একাদিক্রমে সকলের স্বিশেষ বিবরণ প্রকটন করিব।

উপরে যে কয়েকটা রাজপথের নামোল্লেখ করা গেল, উহার মধ্যে কেবল প্রথমটা অর্থাৎ জন্ম ও বন্হাল পথ দিয়া যাইতে হইলে কাশ্মীরাধিপতির বিশেষ আজ্ঞা আবশ্যক। এ পথে ইংরাজেরা প্রায় কেহই যাইতে পান না—মহারাজা যাহাদিগকে অনুমতি করেন,কেবলমাত্র তাহারাই এবং তাহার প্রজা ও কর্মাচারীরা গতায়াত করিয়া থাকে। নচেৎ, অপর চারিটা পথ অনবক্ষর।

কাশ্মীরে প্রবেশ করিতে হইলে কাশ্মীরাধিপতি অথবা ইংরাজ গবর্ণমেট হইতে কোনো বিশেষ আজ্ঞাপত্র লইবার আবশ্যক করে না। তবে যাহাতে পথিমধ্যে কোনো কফ না হয়—অনায়াদে যান, বাহক ও আহারীয় এবং অপরাপর েয়োজনীয় দ্রব্যাদি নিয়মিত মূল্যে পাওয়া যায়, তজ্জন্য পূর্ব্বোক্ত গবর্ণমেন্ট দ্বয়ের মধ্যে একটীর পরোয়ানা অর্থাৎ ক্ষমতাপত্র সংগ্রহ করা পরামর্শসিদ্ধ।

কিন্তু কাশ্মীর হইতে বহির্গমন কালে তথাকার শাসনকর্তার স্বাক্ষরিত বা মুদ্রাঙ্কিত " রাহাধারী " অর্থাৎ বহির্গমন
আদেশপত্র গ্রহণ না করিলে কি ইউরোপীয়, কি কাশ্মীরী,
কি বাঙ্গালী, কি হিন্দুস্থানী কোনো জাতীয় কেহই আসিতে
পারে না। এ কারণ, একটী প্রবাদ বাক্য আছে, যে "কাশ্মীর
কয়েদ বে জিঞ্জির" অর্থাৎ কাশ্মীর বিনা শৃখ্খলে কারাগার।
অথবা অভিমন্তার স্থায় বলা যাইতে পারে, " আগম শক্তি

আছে, নির্গম শক্তি নাই!" কিন্তু সচ্চরিত্র পর্য্যটকেরা ইচ্ছা করিলেই অনায়াসে রাহাধারী পাইয়া থাকেন।

সকল পথের প্রতি আড্ডাতে বাদোপযোগী গৃহ আছে এবং অশ্ব, অশ্বতর পালকী ও বাহক প্রভৃতি অতি হলভ। লোকালয় ভেদে কোনো স্থানে হুই তিনটী দোকান এবং কোনো কোনো স্থানে বা আপণ-শ্রেণী আছে। উহাতে চাউল, আটা, য়ুত, চিনি, হুগ্ধ, দিধ প্রভৃতি আহারীয় দ্রব্য পাওয়া যায়। এই সমুদয় সামগ্রী আয়োজন করিবার জন্য মহারাজার কর্মচারীরা নিযুক্ত আছে; তাহারা কোতোয়াল অথবা সার্জ্জন নামে খ্যাত। এতদ্যতীত, স্থবেদার, তহিদলদার, খানাদার, পেকার, নম্বরদার এবং ঠিকাদার সংজ্ঞাধারী কর্মচারীরাও পথিকদিগের তত্ত্বাবধারণ করিয়া থাকে। কোনো আড্ডাতে পৌছিয়াই উহাদিগকে সংবাদ কবিবামাত্র উহারা প্রকৃত আজ্ঞাবহ রূপে সমুদয় অভাব পূর্বণ করিয়া দেয়। স্থতরাং পথিমধ্যে যাত্রীগণের কোনো প্রকার ক্লো হইবার সম্ভাবনা নাই।

এম্বলে উল্লেখ করা আবশ্যক, যে, আহার্য্য ও ব্যবহার্য্য দ্রব্যাদির মূল্য নিরূপিত আছে এবং এক আড্ডা হইতে অপর আড্ডা যাইবার জন্ম যান ও বাহকের মূল্য এইরূপ ;—

> (আরোহণোপযোগী) অশ্ব বা অশ্বতর—

| | | প্ৰতি আড্ডা | ॥০ আনা |
|------------|----------------|--------------|------------|
| د . | ভারবাহী অশ্বতর | ঐ | 1 • |
| > | शानकी · . | ্র | 1• |
| > | পালকী-বাহক | . ক্ৰ | ا م |

১ ভারবাহক ঐ ।০ ১ কসাব-বাহক (পিষ্ঠু) পিঠ্ছ ১ কসাব-বাহক (পিষ্ঠু) পিঠ্ছ ১ ক্যাব-বাহক প্রতি

অশ্ব ও বাহকেরা তাহাদিগের নির্দিষ্ট "এক আড্ডার
অধ্বিক গমন করে না। অগ্রবর্ত্তী আড্ডায় ভার পৌছিয়াই
আপনাপন প্রাপ্য মজুরি লইয়া প্রত্যাগমন করে। স্কতরাং
প্রতি স্থানে নৃতন নৃতন যান ও বাহকের অনুসন্ধান করিতে
হয়। পথের অবস্থানুসারে ছয় বা আট জন বেহারা নিতান্ত
প্রয়োজনীয়। কাশ্মীরের সাহাবাদ এবং বন্হাল নামক স্থানদ্বয়ের পালকী-বাহকেরা অতিশয় দৃঢ় এবং পার্ববিত্য পথের
সম্যক উপযোগী। কিন্তু কাশ্মীরে প্রবেশ কালে বন্হাল
পথ ছিন্ন উহাদিগকে পাওয়া স্কর্কাচন। তবে বহির্গমনকালে
তথাকার শাসনকর্ত্তা দ্বারা চেন্টা করিলে উহাদিগকে পাওয়া
যাইতে পারে।

যে সমুদয় রাজপথের নামোল্লেখ করা গিয়াছে, উহার
মধ্যে প্রথম ও তৃতীয় পথ সর্বাপেক্ষা তুর্গম। স্থামতা পক্ষে
চতুর্থ ও পঞ্চম সর্বব শ্রেষ্ঠ এবং দ্বিতীয়টী ঐ উভয় অপেক্ষা
কিঞ্ছিৎ ন্যন! ইহাদিগের দূরতার তালিকা নিম্নে প্রকাশ করা
যাইতেছে।

১। জম্বু ও বন্হাল পথ।

| | | · | | |
|----------|-----------------|------------|--|--|
| আডভার | আড্ডা | আনুমা- | মস্তব্য । | |
| সংখ্যা | | নক ম †ইল | | |
| | জম্বু | | লাহোর হইতে সেয়ালকোট ৭৪ মাইল | |
| | | | এবং সেয়ালকোট ছইতে জম্বু ন্যুনাং বিক | |
| | | | २८ गाइन। | |
| 3 | দ ংশ†ল | 2¢ | পথ অভিহুৰ্গম,স্থানে ২ প্ৰক্লভ পথ নাই। | |
| 2 | কিরিমচী | ડ ૨ | } অপেক∹কৃত সুগম। | |
| ુ | মীর | 3 2 |) अदि । साक्ष्ण द्वापा | |
| 8 | লা ন্দ র | ે ર | পথ স্থাম ও হুর্গম—উভধর্মাক্রাস্ত । | |
| ¢ | বিলাওৎ | 30 | লান্দর পরিভ্যাগ করিয়া লাডোলাড়ীর | |
| | | | পাহাড়ে চড়িতে হয়, পথ অতি দুর্গম। | |
| 89 | রামবন - | 6 | রামবনে যাইতে চন্দ্রভাগানদী পার ছ- | |
| | | | ই.ভ হয় । অবভরণ অভিভয়ানক। | |
| 9 | ৰামস্থ | २० | উভধৰ্মাক্ৰাস্ত । 🕈 | |
| b | বন্হাল | ٥٤ | ٩ | |
| a | বৈরন বা | 20 | বন্হাল হইতে বৈরনাগ পীর পর্বত | |
| İ | | | (সমুদ্রের সমতল হইতে ৯২০০ ফীট | |
| | | | উচ্চ) অভিক্রম পূর্বক অবভরণ করিতে | |
| , | ,] | | হয় এবং এখানে সমতল ভূমির আরম্ভ। | |
| | | | বৈরনাগ মনোরম্য স্থান এবং কাশ্মীতেরর | |
| 1 | | | क्षरेया स्वात्तर मरशा अकिंग स्वन्तर स्वन । | |
| 2. 4 | মনন্ত্রাগ | 3.50 | সমতল ভূমি এবং স্থান রমণীয়। | |
| 33 8 | ছ্রীন গর | ٠. | অনস্ত্রনাগ ইইতে প্রায় সকলেই নেকা- | |
| | | | পথে গমন করে। স্থলপথে দুই আড্ডা। | |
| 7 | ক্ষ্ম | 393 | • | |
| | | | | |

এই পথ দিয়া লাহোর হইতে শ্রীনগর ২৭০ মাইল। জন্মু ইইতে শ্রীনগর ১১ আড্ডা। স্থতরাং পথিমধ্যে বিলম্ব না হইলে একাদশ দিবসে শ্রীনগরে উত্তীর্ণ হওয়া যায়। কিন্তু পূর্ব হইতে বাহকাদির বন্দোবস্ত থাকিলে অথবা প্রকৃত কাশ্মীরী বাহক প্রথমাবধি নিযুক্ত থাকিলে অপেকাকৃত অনেক অল্প দিবসে পৌছান যায়।

২। ভিম্বর ও পীর পঞ্জাল পথ।

| • | | 11044 | 3 113 131 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
|------------------|--------------------|--------------------|--|
| আড্ডার সংখ্যা | অ1551 | আনুযা- নিক মাইল | মস্তুব্য । |
| | ভিম্বর । | | লাহোর হইতে গুজরাৎ ৭০ মাইল এবংগুজরাৎ হইতে ভিম্বর ২৮ মাইল। |
| 2 | टेममावाम | 3 ¢ | আদি চক চড়াই অতিক্রম করিতে হয়। |
| ર | না ওকোরা | \$5110 | পথ সুগম। |
| ৩ | চংগদ_ | . ১৩॥• | পথ স্থাম এবং তাবী নদীর গর্ভ দিয়া। গিয়াছে। |
| 8 | রাজোড়ী | 38 | के की। |
| ά | পন্নামণ্ডী | 38 | পথ অভিশয় সুগম। |
| ৬ | বরম- গোলা | 30110 | রতন পীর (সমুদ্রে তল হইতে ৮২ ০০ কিট উচ্চ) অতিক্রম করিতে হয়। |
| ৭ পেশি- য়ানা | | } b | পথ সুগম এবং চিত্রপাণীনদী ক্যুনাধিক পঞ্চবিংশতিবার পার হইতেহ্য়। এইপ েথ অতি স্থন্দর স্থন্দর জলপ্রপাত আছে। |
| ৮. | আলিয়া- বাদসরাই | | পীরপঞ্জাল (সমুদ্রতল হইতে ১১০০ ফিট উচ্চ।). |
| ۵ | হীরপুর | ر ع | পথ স্থগম। |
| ۶۰. | শোপি- | | অতিশয় সুগাম। |
| et - | য়ান | PIIO | |
| 22 | রামু | ้วว | ঐ ঐ এবং সমতল ভূমি। |
| ١ ٤ | এ নগর | 74 | ঞ্ এবং সমতল ভূমি। |
| | সর্বস্ত্ | 28h | |

काम्पीत-कृश्वव।

এই পথ দিয়া লাহোর হইতে শ্রীনগর ২৪৬ মাইল। ভিম্বর হইতে শ্রীনগর ১২ আড্ডা, স্থতরাং ১২ দিনের পথ। কিন্তু এক দিবসে অনায়াসে অল্প দূরবর্তী হুই আডডা করিয়া যাইতে পারা যায়।

৩। ভিম্বর ও পুঞ্চ পথ।

| ব্যাড্ডা সংখ্যা | ন্ত্ৰাড্ডা | আনুমা- নিক মাইল | मखुरु । |
|--------------------|--------------|--------------------|-------------------------------------|
| | ভিম্বন। | | |
| | इ हरख | | |
| Œ | থনামতী | ৬৯ | |
| હ | স্থ্রন | 36 | রতনপীর পাছাড়। পথ স্থাম। |
| 9 | পুঞ | 78 | পথ সুগম। |
| b | কেহুটা | ۵ | <u>ه</u> . |
| ৯ | অগলিয়া- | 5 | |
| •• | বাদ | 5 6 | পৰ ছেৰ্গম। |
| ۶• | হাইন্তা- |) • | ছাজী পীর পাহাড়। পথ হুর্গম। |
| | · বাদ | } ' | No. |
| 22 | ड ड़ी | 3. | পথ অভিশয় হুর্গম। |
| | নাউ=েরা | 7.8 | পথ ছুর্গম। |
| 20 | ব্যৱস্থলা | 3. | পথ অভি চুৰ্গম। |
| 38 | ্র নগর | 9. | বোরমুলা হঃতে প্রায় সকলেই নৌকা |
| | | 369 | । পুরে গমন করিয়া থাকে। স্থল পথে |
| <u> </u> | 4 | | ् इरे जाड्डा जाटहा |
| *** | | | A change was |

ভিম্বর হইতে শ্রীনগর ১৪ আড্ডা, স্তরাং ১৪ দিবনে র পথ। পথ অতি তুর্গম। একারণ, এক দিনে তুই আড্ডা যাওয়া অতি ক্লশদায়ক ও অপরামর্শসিদ্ধ।

৪। মরি পথ।

| আড্ডার সংখ্যা | .আড্ডা | আনুমা- নিক মাইল | मखुवा । | |
|---|--|---|-------------------------------|--|
| 3 | মরি ৷ দেউল | 3. | পথ অভি স্থাম। | |
| * 2 0 8 0 0 9 P 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 | * কোছালা দল্লা মরর দল্লা মরর ডিকড় ছত্তি চকোডী উড়ী নাওশেরা বারমূলা জ্ঞীনগর সর্বস্থা | >0 >0 >10 >0 >0 >0 >0 | বিলম (বিভন্তা)নদী।পথ অভিস্থাম | |

লাহোর হইতে যাইতে হইলে এই পথ দিয়া যাওয়া বড় স্থবিধা নহে। রাউলপিণ্ডী প্রভৃতি স্থানবাদীদিণের পক্ষে ইহা উত্তম।

| ٠ | - • | কোহালা চত্ৰকলাশ | इद्देख | চত্ৰক্স†শ° | ১১ मारेन। |
|------|-----|--------------------|--------|------------------|-----------|
| 1 | 8 | চত্ৰকলাশ | " | রাড | 32 |
| /월] | e | রাড | ,, | ত্রি নালী | 22 17 |
| 의 | | <u> </u> | ,, | ঘরী | 50 ,, |
| - | • | ঘরী | " | হজি | 'se ,, j` |

৫। আবোটাবাদ পথ

| আডার | | আহুমা- | |
|----------------|------------------|----------|--|
| मश्थ ्र | আজ্ঞা | নিক মাইল | मखुदा । |
| , | আবো- | | |
| | विश्वाम । | | , |
| > | মানসেরা | 3011• | পথ অতি স্থগম। |
| ₹. | ঘরী | 35 | <u>ه</u> ۱ |
| ৩ | যোজা- ফেরাবাদ | } > | পথ ছুর্গম। |
| 8 | হভীয়ান | 39 | পথ চুৰ্গম। |
| Ċ | কণ্ডা | 22 | পথ সুগম। |
| ৬ | কথাই | 25 | পথ हुर्गम । |
| ٩ | শাহদেরা | 3€ | <u>ه</u> ۱ |
| ъ | গিংগল | 38 | পথ সুগম। , |
| ì | বারমূলা | 7. | र्जे । |
| 1 | <u>শ্রী</u> নপর | 90 | ∫ বারমুলা হই েভ প্রায় সকলেই নৌকা |
| Ī | দৰ্ক হন্ত্ৰ | >७४।० | ि পर्थ भगन करत। |

এই পথও লাহোর বা তন্নিকটবাসীদিগের পক্ষে স্থগম নহে। পেশোয়ার ও রাউলপিণ্ডী প্রস্তৃতি স্থানবাসীদিগের পক্ষে ইহা অতি উপাদেয়।

এই সমুদায় তালিক। পাঠে প্রতীতি হইবে, কলিকাতা বা লাহাের হইতে আসিতে হইলে বন্হাল, পীর পঞ্জাল অথবা পুঞ্চ পথ অবলম্বন করা পরামর্শসিদ্ধ । বন্হাল এবং পুঞ্চ পথ অতি হুর্গম ও সমূহ আপজ্জনক। স্থতরাং কোনাে বিশেষ প্রয়োজন না প্রাক্তিলে এই তুই পথ পরিত্যাগ করিয়া পীর পঞ্জাল পুর্বেশ্বমন করাই সর্বতােভাবে বিধেয়। জমু হইতে আর এক পথ নির্গত হইয়া ভিম্বর পথের সহিত মিলিত হইয়াছে। পর্য্যটক স্বেচ্ছামতে উহাও অবলম্বন করিতে পারেন।
মরি পথ সর্ব্বাপেক্ষা স্থগম ও হ্রস্ব। কিস্তু উহা এবং আবোটাবাদ পথ তত্রত্য অথবা তৎসনিহিত স্থানবাস্থীদিগের পক্ষেই
স্থ্রিধাজনক।

পূর্ব্বোক্ত কয়েকটী পথ ব্যক্তীত কাশ্মীরে যাইবার আরো কতিপয় পথ আছে। কিন্তু তংসমুদয় স্থানীয়পথ এবং উল্লিখিত কোনো না কোনোটার সহিত মিলিত হইয়াছে। স্থতরাং তাহাদের নামোল্লেখ ও বর্ণনা দ্বারা পাঠকদিগের চিত্ত ভারা-ক্রান্ত করিতে ইচ্ছা করি না। সিমলা পর্বত হইতে পর্বত-মালা ও শৈল শিখর দিয়া ছুই পথ আছে। কিন্তু পঞ্জাব গ্রবর্ণমেন্টের বিশেষ অনুমতি না হইলে উহা দ্বারা কেহই গ্রায়াত করিতে পারে না।

যে কয়েকটা পথ স্থগম বলিয়া উল্লেখ করা গেল তাহাতে পাঠকবর্গের মনে স্থগম শব্দের কিরূপ অর্থ প্রতিভাত হইন্য়াছে বলিতে পারি না। যিনি কখনো পার্ক্বত্যদেশে পদ্চালনা করিয়াছেন, তিনিই বুঝিবেন, যে, উহা "মন্দের ভাল" এই মাত্র। নচেৎ যাঁহারা অদ্যাপি বঙ্গু দেশের সমতল ভূমিতে স্থথে ভ্রমণ করিতেছেন, এখানকার পথের কাঠিন্য ও অসরলতা তাহাদিগের হৃদয়ঙ্গম হওয়া স্থক্তিন। তবে সকলেই শৈশবকালে " স্বর্গের সিঁড়ীর" উপকথা শুনিয়া থাকিবেন। স্থতরাং কাশ্মীরকে স্থগ বিবেচনা করিয়া ইহার পথের ত্র্গমতা অনুভ্রব

ইংরাজরাজ্য যত দূর বিস্তৃত হইরাছে ভক্ত দূর পর্য্যস্ত

স্থশস্ত রাজপথে স্থথে বিচরণ করা যায়। কিন্তু উহা অতি-ক্রম পূর্বক পর্বতমালা সমন্বিত কাশ্মীরাধিপতির রাজ্যে গমন করিলেই আর সে ত্রথ থাকে না। কাশ্মীরের পথে সম-তল ভূমি নাই বলিলেই হয়—কেবল মাত্র "চড়াই" ও " উত্তরাই " অর্থাৎ আরোহণ এবং অবরোহণ অথবা উত্থান ও পতন! কোনো কোনো চড়াই ছুই ক্রোশ হইতে তিন ক্রোশ পর্য্যস্ত উচ্চ এবং অতিক্রম করিতে ন্যুনাধিক তিন ঘটা লাগে। কোনো কোনোটা এমন সরল উচ্চ, যে, উত্থান-কালে ঝাঁপানে * রক্ষ্ বাঁধিয়া টানিতে এবং বিপরীত ভাগে অবতরণ সময়ে রঙ্জু দারা ঝ্লাইয়া দিতে হয়। স্থানে স্থানে এমন বক্ত, যে, কি ঝাঁপান, কি আরোহী, কি বাহক, সকল-কেই কুগুলাকারে পরিভ্রমণ করিতে হয়। এমৃত সমুদয় চড়াই আরোহণ কালে আরোহীর কথা দূরে থাকুক, দর্শক মাজ্ঞ-রই হুংকম্প হইতে থাকে। এ দলে বলী বাহুল্য মাত্রী, যে, আরোহণ ও অবরোহণ উভয় ব্যাপারই বহু কটেে দাধনীয়।

কোনো কোনো স্থলে প্রকৃত পথ নাই। মাইক্রের গতা-য়াতে যৎকিঞ্জিৎ কৃচ্ছু সাধ্য পথ হইয়া গিয়াছে। আবার

^{*} काँ भान भार्क्क (प्रत्मेर मितिका। अधारन देशक भठनान्मारत 'शांतकी' अ र बामाना' अकृषि नारम धांछ। देश स्वामानिश्यत प्रत्मेत विश्वद्यानि न देश यादेवात होकि बाज। किस्त वादरक्त वादरम स्वस्त प्रम् न। वश्मेषरम् म हे पिरात्र म हे आरस्य त्र क्रू भश्मे करत अवश् अवश् स्वप्न वश्मे अर्थाः भ्रम् कर्याः अर्थत अवश् भ्रम् वश्मे अर्थाः भ्रम् कर्याः अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत व्यव्याः भ्रम् करात अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थाः अर्थत अर्य अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्य अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्थत अर्य अर्य अर्थत अर्य अर्थत अर्य अर्य अर्य अर्य अर्थत अर्थत अर्य अर्य अर्य अर्य अर्थत अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्थ अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्य अर्

কোনো কোনো স্থানে এন্তর এমন চিক্লা, যে, তছপরি পদ স্থির রাখা স্থকটিন; অথবা এরপ বন্ধুর, যে, যাত্রীদিগের পদতল কাত বিক্ষত হইয়া শোণিত প্রবাহ প্রবাহিত হইবেই ইইবে। যে যে স্থলে পথ আছে, উহা হয়ত্বো ন্যুনাধিক ছুই হন্ত পরিমিত প্রশস্ত এবং এত উচ্চ, যে, নিম্ন তলে দৃষ্টি নিক্ষেপ করিলে শিরোদেশ ঘূর্ণিত হইতে থাকে। এন্থলে দৈবাং কাহারো পদস্থলন হইলে আর নিস্তার নাই, একবারে সহস্র সহস্র হস্ত নিম্নে পতিত হইয়া চুর্ণ বিচুর্ণ হইতে হয়, নিদর্শন মাত্রও থাকে না।

প্রায় প্রাগুক্ত পথ সমুদয় শীতকালে তুষারমণ্ডিত হইয়া
যায় এবং সম্পূর্ণ অগম্য হইয়া উঠে। বৈশাখ মাসের প্রারম্ভ
কালাবিধ বরফ দ্রব হইতে থাকে এবং মনুষ্যের গতায়াতের
যোগ্য হয়। পরস্ক দ্বিতীয় অর্থাৎ ভিম্বর ও পীরপঞ্জালপথ
কোনো বৎসর আযাঢ় মাসে পরিক্ষৃত হইয়া থাকে। মাঙ্

এখানকার পথ যৎপরোনাস্তি তুর্গম ও ভয়ানক বটে,
কিন্তু বাহ্য জগতের যেরপরমণীয় শোভা, তাহাতে পথ-কন্টের
জন্ম লোকে প্রচুর পরিমাণে পুরস্কৃত হইতে পারে। প্রথম ও
তৃতীয় পথ যেমন সর্ব্বাপেক্ষা তুর্গম, নৈসর্গিক সেন্দর্য্য পক্ষে
উহা তেমনি সর্ব্বোৎকৃষ্ট। স্থানে স্থানে শ্বেত, রক্তিমা, হরিৎ
বা হুপর কোনো বর্ণের পুষ্পবার্টিকা। যত দূর নয়নপাত
করা যায়, কেবলই এক এক বর্ণের পুষ্প বিক্ষিত হইয়া
সৌরভ দান করিতেছে দেখিতে পাওয়া যায়—স্থাতল সমীরণ চামেলি ও গোলাপ প্রভৃতি স্থান্ধ পুষ্পের গন্ধ হরণ করতঃ
চারি দিক আমোদিত করিতেছে—অলিকুল গুণ গুণ রব

করতঃ এক পুষ্প হইতে পুষ্পাস্তরে মধুপান করিয়া বেড়া-ইতেছে—কোনো স্থানে শেরীলকাটার স্থায় কণ্টকী-রক্ষ কদম্বপুষ্প সদৃশ কোমল কেশর সম্বলিত গোলাকার পুষ্প ধারণ নরিয়া রহিয়াছে—বিবিধ প্রকারের রক্ষ যেন স্থনিপুণ উপবনরক্ষকের হস্ত দারা গুস্তরূপে শ্রেণীবদ্ধ হইয়া দণ্ডায়মান রহিয়াছে—ক্ষুধার্ত্ত পথিকদিগের ক্ষুৎপিপাসা ও আর্ষ্ডিদূর করিবার নিমিত্তে আঙ্গুর, দাড়িম্ব, আক্রোট, ভুঁত প্রভৃতি হৃষাতু ফলের অযত্নসম্ভূত বৃক্ষ উৎপন্ন হইয়া রহিয়াছে— স্থশীতল ছায়াপ্রদ লতামগুপ অথব। বিজন নিভৃত রমণীয় কানন স্থললিত ৰিজকুলের মধুর কণ্ঠস্বরে প্রতিধ্বনিত হই-তেছে – পর্বতের গাত্র ভেদ করিয়া নিঝর ঝর ঝর শব্দে পতিত হইতেছে—একাদিক্রমে বহুসংখ্যক নিঝর সংমি-লিত হইয়া এবাহ স্বৰূপে প্ৰবাহিত হইতেছে—উহার ছুই 🧳 প্ হৃ করবী প্রভৃতি পুষ্প দারা শোভিত দেখিয়া বোধ হয়, যেন প্রবাহ পুষ্পহার গলদেশে সংলগ্ন পূর্বক পরিণয়ে জ্রুত-গামা হইরাছে —বিশ্বাকারে শীতল স্থাপুজল সহস্র সহস্র উৎস হইতে নির্গত হইতেছে—পর্ব্বতের শিথর দেশ হইতে (কোনো কোনো স্থলে অনুমান চারি বা পাঁচ সহত্র ফিট উচ্চ) অসংখ্য অসংখ্য জল্প্রপাত বৈচিত্ত্যাকারে পতিত হই-তেছে—কোনো স্থানে বা 'একা নদা বিশ * ক্রোশ '—

^{*} ভিছর এবং পীরপঞ্জাল পথে বরনগোলা এবং পোলিয়ানা নামক দুই আড়-ভার মধ্যবর্তী চিত্রপাণি নালী এক নদী আছে। উহ: ন্যুনাধিক এক শত ইও প্রশাল এবং এরপ বক্রগতিতে প্রবাহিত ইইতেছে যে, উহা অফীবিংশতি বার অতিক্রম করিতে হয়।

কোনো ছানে বরক জনিয়া এরপ দৃঢ় ও রমণীয় সেতুর আকারে পরিণত হইরাছে, যে, দূর হইতে যমুনা বা শোণ নদীর সেতু আপেক্ষা মনোহর ও উপাদের বোধ হয়! তত্পরি মনুষ্যাদি জীব জস্তু অকুতোভয়ে গমনাগমন করিতেছে—পর্বতের গাত্রে অপূর্ব্ব অপূর্ব্ব শস্তক্ষেত্র বিরাজ করিতেছে—ছরারোহ শিথর-দেশৈ পার্বত্য জাতীয়দিগের কুটীর দৃষ্ট হইতেছে—ইত্যাকার রমণীয় পদার্থ সকল সন্দর্শন করিলে মনে যে অনুপম প্রীতির উদয় হয়, তাহা প্রকাশ করিবার শক্ষানাই! তথন ঘোর বিষয়ী লোকের মনও আকৃষ্ট না হইয়া থাকিতে পারে না এবং পথের যে এত কন্ট, তাহা আর মনে থাকে না!

আবার শৈলশিখরে আরোহণ করিলে সৃষ্টির কি বিচিত্র
শোভা নয়নপথে পতিত হয়। পদতলে নবীন জলধরকুল
ক্রীড়া করিয়া বেড়াইতেছে—কোনো কোনো পর্বত-পার্শে
নিবিড় মেঘ সকল, ক্রীড়া-ক্লান্ত শিশু যেমন মাতৃক্রোড় আশ্রয়
করিয়া নিদ্রিত হয়, সেই ভাবে নিশ্চল রহিয়াছে। এই সকল
দর্শন করিলে শৈশব-শ্রুত মেঘের শালপাতা খাওয়ার উপন্যাস মনে পড়ে! চারিদিকে পর্বতমালা যেন একটা আর
একটার গাত্রে ঠেস দিয়া রহিয়াছে। অদুরে অকুমত পাহাড়
সকল ক্রেত্রের আইলের আয় এবং অধিত্যকা সমুদয় হরিষর্ণ
দর্ব্রাদল-পার্মপুরিত ক্রেত্রের আয় প্রতীয়মান হইতেছে।
কোনো দিগে বা স্রোত্র্যতা হেলিয়া সর্পের আয় বক্রভাবে
পার্ডিয়া রহিয়াছে। চীড় প্রভৃতি দেবদারু জাতীয় পাদপসমূহ
সরলভাবে দণ্ডায়মান হইয়া শিরোদেশ উমত করিয়া মৃদ্ধ মৃদ্ধ

নৌৰুষ্য ও মাধ্যা-ভাব বিলোকনে সহসা আশু হইতে এই
কথাটা নিৰ্গত হয়, " ভ্ৰমণ রমণ কিনা দেখরে নয়ন!" এবং
ঈশবের অচিন্তা শক্তি, অনম্ভ জ্ঞান ও অনুপম স্প্তি-কৌশল :
অনুধাবন করিয়া অন্তঃকরণ একবারে ভক্তিরসে দ্রব হইয়া
যায় এবং তাঁহাকে শত শত ধন্যবাদ ও প্রণিপাত করিতে
নাস্তিকেরও প্রবৃত্তি হয়!

বিধি চক্ষু দিল ধারে, থাকে যদি অন্ধকারে, অনুপম সৃষ্টি-শোভা না করি দর্শন। রুধায় জীবন তার রুধায় জীবন!

পাঠকবর্গ সহজেই মনে করিতে পারেন, যে, এতাদৃশ নিস্ত ও তুর্গম পথে অবগ্যই দহ্যা ও চৌরভয়ে অথবা হিংস্র জস্তুদিগের দৌরাত্ম্যে পথিকদিগের সমূহ বিপত্তির সম্ভাবনা। পথের কথা দূরে থাকুক, অধিকাংশ আড্ডা পর্বত-শিথরের এরপ বিজন প্রদেশে স্থিত, যে, দিবাভাক্তে তথায় পাদবিক্ষেপ করিতে হুৎকম্প উপস্থিত হয়। কিন্তু দোর্দণ্ড প্রতাপশালী মহারাজা গোলাপ দিংহ ছুশ্চরিত্র পার্বত্যজাতিদিগকে এরূপ শাসিত করিয়া গিয়াছেন, যে, উহাদিগের ক্রুর স্বভাবও শিক্টা-চার ও মিত্রবৃৎ ব্যবহারে পরিণত হইয়াছে। এথন কেহ আর পরদ্রব্যের উপর লোভাকৃষ্ট দৃষ্টি নিক্ষেপ করে না। বাহকেরা বহুমূল্য দ্রব্যাদি. লইয়া বিনা রক্ষকে স্পাদিইট-স্থলে পৌছিয়া দেয় -একটা দামক্তি দ্ব্যও স্থানভ্ৰন্ত হয় না। অমূল্য রত্বাদি পথিমধ্যে বা কোনে। আড্ডায় পতিত হইয়া থাকিলে কৈহ স্পর্ণও করে না। অধিক কি, যদি কোনো নিরা<u>শ্র</u>য়ী অবলা নানা স্বর্ণালঙ্কারে ভূষিতা হইয়া একাকিনী এই পথে

গমন করে, তথাপি তাহার কোনো শঙ্কা নাই। বোধ হয়,
শার্দ্দিল প্রভৃতি নরমাং দলোভী জন্তুগণও যেন মহারাজার
ভুজবলভয়ে ত্রাসান্বিত হইয়া অতি দূরদেশে পলায়ন করিয়াছে। কেননা, ইহাদিগের দ্বারা যে কোনো পৃথিকের প্রাণ
নাশ হইয়াছে, তাহা অদ্যাপি শ্রুত হয় নাই। এই বর্ণনা
সহসঃ অতি-বর্ণনা রূপে অনুভূত, হইতে পারে, কিন্তু ইহার
এক বর্ণও অধিক করিয়া বলা নহে—যাহারা এদেশে কিছুকাল
আছেন বা ছিলেন, আমি তাঁহাদিগকেই সাক্ষী মানিতেছি।

পূর্বেবে কাঁপান যানের বিষয় উল্লেখ করা গিয়াছে, উহা সম্যক্রপে নিরাপদ নহে। একেতো, তুর্গম স্থান বিশেষে উহা হইতে অবতরণ পূর্বেক পদব্রজে গমন করিতে হয়, তাহাতে লাবার পথের কাঠিলে বা বাহকদিগের অসাবধানতায় উহাদিগের পদস্থালিত হইলে ঝাঁপান ভূমিতলে পতিত হাতে আরোহীর প্রাণ নাশ পর্যন্তে সম্ভাবনা। কয়েক বৎসর হাতাপম্বিপথে জনৈক ইংরাজ ঝাঁপান হইতে পতিত হইয়া মেরুদণ্ডে এরূপ আঘাত-প্রাপ্ত হইয়াছিলেন, যে, তাহাতে তাঁহার পঞ্চ প্রাপ্তি হয়।

অনেকে অশ্বারোহণ পূর্বক গমন করে বটে, কিন্তু উহা
সমূহ বিপজ্জনক। এ অবস্থায় অধিকাংশ পথ পদত্রজে গমন
করিতে হয়।

বন্হাল পথ ব্যতীত অপরাপর পথে উষ্ট্র, অশ্ব প্রভৃতি ভারবাহী জন্ত অতি কন্টে গমন করিয়া থাকে। মোগল সমা-টেরা ভিন্তুর ও পীর পঞ্জাল পথ দিয়া শত শত হস্তীও লইয়া যাইতেন। কিন্তু মধ্যে মধ্যে সমূহ বিপাদ ঘটিত। বারনিয়ার

गारहर (यिनि मन ১৬৬৪ औकोरक मिल्लीश्वत आंत्रश्राक्षत वाम-শাহের সহিত কাশ্মীর গমন করিয়াছিলেন) লিখিয়াছেন, যে, যংকালে সমাটের হস্তীমালা পীর পঞ্চাল পর্বতের উপর আরোহণ করিতেছিল, তথন সর্বাপ্রবর্তী হস্তী সম্মুখন্থ দীর্ঘ ও সরল চড়াই দেখিয়া চমকিত ও ভীত হইয়া যেমন পশ্চা-দগমন করিল, অমনি পশ্চান্তাগম্থ হস্তীর উপরে আসিয়া পড়িল। সেও তৃতীয় হস্তীর উপরে পতিত ছইল। এইরূপে ক্রমান্বয়ে পঞ্চদশ মত্ত বারণ ভূপতিত হইয়। একবারে নিম্ন-দেশে গড়াইয়া আদিয়া পড়িল। এই সমুদায় করী-পৃষ্ঠে সমা-टिं अञ्चर्भत्रवामिनी विलामिनीशंग ছिल्न । উश्वामिरंशत मरधा চারি জন তদ্দণ্ডেই পঞ্ষ প্রাপ্ত হইল এবং হতভাগা মাতঙ্গ-গণ এমনি আঘাত প্রাপ্ত হইয়াছিল, যে, ধরাশায়ী হইয়া আর পব্দেক্ষত্থান করিতে পারিল ন।। এক এক করিয়া কিছুদিনের এরপ্য সকলেই মরিয়া গেল। ঐ স্থান ●সমতলভূমি হইতে ব্কিছু উচ্চ। তাহাতেই অনেক আরোহিণীর প্রাণ বাঁচিয়া যায়। নচেৎ পর্বতের আর কিয়দ্যুর ঊর্দ্ধে উঠিয়া এই বিশ্ব ঘটিলে উহার পরিণাম যে কি হৃদয়-বিদারক হইত, তাহা পাঠকগণ मत्न कतिशा (पश्चन।

এতব্যতীত আর এক প্রকার যান আছে তাহাকে পিঠ্চু বা পিন্ঠু " • অর্থাং পৃষ্ঠারেহণকহে। কাশ্মীরীভাষায় ইহাকে কদাব কহিয়া থাকে। বাহকের পশ্চান্তাগে পৃষ্ঠ সম্বলিত মোড়া অথবা রক্ষশাখা-নির্দ্মিত তাদৃশ আসন সংলগ্ন থাকে এবং আরোহী তত্ত্পরি অধিষ্ঠিত হয়। এরূপ মোড়ায় উপ-

आगाम अल्लम नांगो बनः ट्रेंबाल गर्बाल देशांद्र '' थावा " रुद्र ।

বেশন প্রকৃত "মধুমোড়া" বলিতে হইবে ! কারণ, আরোহীর পদম্বর বন্ধনীকৃত, হস্তবয় আকৃষ্ণিত ও কৃতাঞ্চলিপুট হইরা
কৈটদেশের নিম্নে স্থিত এবং বাহকের বিপরীত ভাগে বদনমণ্ডল সংস্থাপিত দেখিলৈ ঠিক কপিধ্বজ বলিয়া বোধ হয়।
আবার, বাহক আমুমানিক ২০৷২৫ পদ অগ্রসর হইরাই আরোহীর পদতলে ঠেক্নো (আগ্রয়) প্রদানপূর্বক দণ্ডায়মানাবহায় কিয়দণ্ড প্রান্তিদূর করিয়া লয়। পরস্ত নির্ধন ব্যক্তিরা
কোনো পীড়াক্রান্ত অথবা চলৎশক্তি-রহিত হইলে এই যানারোহণ করিয়া থাকে।

পদব্রজে ভ্রমণ ক্ষীণজীবী বাঙ্গালীদিগের পক্ষে সম্পূর্ণ অস-স্তব। কিন্তু কাশ্মীরী বা পার্ববিত্য বলিষ্ঠ লোকে এই তুর্গম পথে তুই মণ পর্যান্ত ভার বহন পূর্ববিক যেরূপ অবলীলাক্রমে গতায়াত করে, তাহা দেখিলে আশ্চর্য্য হইতে হয়। ফলতঃ সর্ববিশুভবিধাতা ভগবান মানবজাতিকে বিশেষ বিশেষ স্থানোপ-যোগী ক্রিয়াই স্জন ক্রিয়াছেন।

১। জম্বু এবং বন্হাল পথ।

জন্ম ইইতে কাশ্মীরে যাইবার তুই পথ আছে। প্রথম বন্হাল এবং দিতীয় আখ্মুর। আখ্মুর পথ চন্দ্রভাগা নদী ও কতিপয় আড্ডা অতিক্রম করিয়া ভিম্বর পথের সহিত মিলিত হইয়াছে, যে পথ থয়ামন্তী নামক স্থান হইতে প্রায় আর্ম ক্রোশ গমন করতঃ দিভাগে বিভক্ত হইয়া এক ভাগ বাম দিকে "ভিম্বর ও পুরু " এবং অপর ভাগ সন্মুখে "ভিম্বর ও প্রায় প্রাত হইয়াছে। এতদ্যতীত, শৈলভোগীর

শিথরদেশ দিয়া বন্হাল পথের সমাস্তরাল আর একটী পথ আছে, উহাকে "ধার" অর্থাৎ শিথর-বর্ত্ম কহে। কিন্তু উহাতে যান, বাহক ও আহারীয়, পানীয় দ্রব্য প্রভৃতির ক্রেশ বলিয়া কাশ্মীরের নরপতি উহা বন্ধ করিয়া দিয়াছেন।

জন্ম ও কাশ্মীরের অধিপতি বন্হাল পথ দিয়া যাতায়াত করিয়া থাকেন। তাঁহার অনুমতি না হইলে তাঁহার প্রজা ও কর্মচারীরা ব্যতাত কোনো বিদেশীয় এই পথ দিয়া যাইতে পারেন না। কিন্তু ভারতবর্ষীয় কেহ যাইবার অভিলাষ প্রকাশ করিলে মহারাজা তাহাকে সাদরে গ্রহণ করেন এবং সহৃদয়-চিত্তে সমুদয় পাথেয় বন্দোবস্ত করিয়া দেন।

বিখ্যাত ভূপরিমাপক মণ্টপোমারি সাহেব পরিমাণ করিয়া দেখিয়াফেন, যে, পাক্ষিক গতিতে এই পথ দিয়া জম্মু হইতে শ্রীনগর ৯০ মাইল। কিন্তু পথ গিরিসঙ্কুল বলিয়া উহাদিগের দূরতা ১৭১ মাইল অর্থাৎ প্রায় দ্বিগুণ।

পূর্বে উল্লেখ করা গিয়াছে, এই পথের আড্ডার সমষ্টি একাদশ। স্থতরাং ইহা দিয়া যাইতে হইলে একাদশ দিবস লাগে। কিন্তু এক আড্ডায় পোঁছিবার পূর্বে অগ্রে লোক পাঠাইয়া বাহকাদি সংগ্রহ করিয়া রাখিলে অথবা দৃঢ় কাশ্মীরী বাহক প্রথমাবধি নিযুক্ত থাকিলে অপেকাকৃত অনেক অল্প দিবসে শ্রীনগরে উত্তীর্ণ হওরা যায়। মহারাজা সতত পঞ্চম বা ষষ্ঠ দিবসে গমন এবং কোনো কোনো প্রধান কর্মচারী শাবশুক মতে তুই দিবসেও গিয়া থাকেন।

এই পথ সর্বাপেক্ষা তুর্গম। ইহাতে তিলমাত্র সম্তলভূমি
াই বলিলে অভ্যক্তি হয়না। পূর্বের সমগ্র পথের সাধারণ প্রকৃতি

বর্ণনা কালে যে সকল হুর্গমতা, অসারল্য ও কাঠিন্ডের পরিচয় দেওয়া গিয়াছে, তৎসমুদয় এই পথে প্রযুজ্য। বিশেষতঃ প্রথম আড্ডা দংশালের পাহাড় এরপ ভয়ানক, যে, তত্তল্য আর কুত্রাপি দৃষ্ট হয় না। অপরাপর পথ অপেক্ষা ইহার চড়াই ও উতরাই যেমন অধিক সংখ্যক, তেমনি দীর্ঘ ও সমূহ আশেজ্জনক। কিন্তু ইহাতে গমন করিলে স্প্তির রমণীয়তা দর্শনে মনে যে অনির্বাচনীয় আনন্দের উদয় হয়, এমন আর কোনোটীতে হয় না। অপর, মহারাজা ইহার ছারা গমনাগমন করেন বলিয়া ইহার আড্ডা গুলিও স্থন্দয়। প্রতি স্থানে অতি পরিপাটী বাসগৃহ ও আপন শ্রেণী আছে এবং পথের বহুভাগ বহু সংখ্যক লোকালয়ে পূর্ণ। ইহাতে যান এবং বাহুকাদিও অতি স্থলভ।

এই পথ দারা প্রত্যহ মহারাজার ডাক ১৮ ঘণ্টায় প্রীনগরে
যাতায়াত ক্রিয়া থাকে। যে যে স্থান অতিশয় তুর্গম, তথায়
পৌনে এক মাইল এবং স্থাম পথে দেড় মাইল অন্তরে
ডাক বাহকেরা বিশ্রাম লাভ করে। এই অগম্য পথে ইহারা
যেরূপ নক্ষত্র-বেগে দ্রুত গমন করিয়া থাকে—রাত্রিকালে
চীড় কাঠের মশালহন্তে এক শিলা হইতে অপন শিলা খণ্ডে
লক্ষপ্রদানপূর্বক গমন করে, তাহা দেখিলে অবাক্ ইইতে
হয়।

হিন্দুখান ও পঞ্চাবের ন্যায় জম্বু নগরীতে গ্রীম্ম অতি ভয়ানক। ইহা অতিক্রম করিয়া দংশাল ও কিরিমটা নামক ছই আডুডাতে মার্ত্ত অতি প্রচণ্ড, বরং শেষোক্ত স্থানে অপেকাহিত প্রথর বোধ হয়। কিন্তু তৎপরে যতই গমন করা

याय, उउँ नीउन मभोत्रात राहर ७ मन श्रमूल रहेर्ड शारक। বিশেষতঃ লান্দর ও বিলাওতের মধাবর্তী লাড়োলাড়ী এবং বন্হাল অতিক্রম পূর্বক পীরপর্বত অথবা পথিমধ্যে অপর কোনো উচ্চ শৈল-শিখরে আরোহণ করিনে দৃষ্টির মনোমো-হন শোভা বিলোকনে নানে অভূতপূর্ব আনন্দের উদয় হয় ও নির্দয় নিদাঘের কঠোর যন্ত্রণা হইতে পরিত্রাণ পাইয়া হুমিষ্ট মলয়মারুতের মৃতু মৃতু হিল্লোলে শরীর একবারে দ্রব হইয়া যায়। আবার, মধ্যে মধ্যে মেঘ আসিয়া চারিদিক আরত করিয়া ফেলে—মেঘের মধ্য দিয়া গমন করিতে হয়—বামে মেঘ, দক্ষিণে মেঘ, সম্মুখে মেঘ, পশ্চাতে মেঘ, উদ্ধে মেঘ, অধোভাগে মেঘ—ংযন নিবিড় কুজ্ঝটিকার মধ্যে প্রবেশ করিয়াছি—জলদের জল সংস্পর্শে বস্ত্র আর্দ্র ইইয়া যায়, কেশা গ্রভাগে বিন্দু বিন্দু বারিকণা সংলগ্ন হইতে থাকে, জলধরকে ধরিবার জন্ম হস্ত প্রসারণীকর, কিন্তু চঞ্চল পবন উহাকে লইয়া ক্রীড়া করিতে করিতে বিমান-ভাগে চলিয়া যায়! স্থবিখ্যাত কবি বাবু মনোমোহন বস্তু-ক্তু রাধিকার বিরহ সম্বন্ধীয় নিম্নলিখিত গীত সহসা মনোমধ্যে উদয় হয়;—

জলধরে ধরিব কেমনে ।
দেখ সথি বিমানে, চঞ্চল পবনে,
ধরিব ধরিব করি, ধরিবারে পারিনে!
সাধের এ নবখন, চিকণ কালিরে,
সখনে ছেলিয়ে আসিছে এখানে! ১।
ধরা নাছি দেয় সথি, উপায় কি করি,
এমন চাহুরী করিবে কে জানে! ২।

এই পথে কার্ত্তিক মাদের শেষে অথবা অগ্রহায়ণের প্রথ-মেই লাড়োলাড়ীর পর্বতে নীহার পাত হইয়া থাকে ও 'ছানে ছানে জমিয়া প্রস্তরবং দৃঢ় হইয়া যায় এবং পীর শৈল একবারে তুষার মণ্ডিত হইয়া ধবল বেশে শোভা পায়। পৌষ মাদের প্রথমে সমুদায় বত্মে ভূনার পাত হয়, কিন্তু দীর্ঘকাল স্থায়ী নহে। রৃষ্টিপাতে বা রৌদ্রের ভেজে ছুই বা তিন দিবসের মধ্যেই সমস্ত বরফ গলিয়া গিয়া পথ পরিষ্কৃত হইয়া উঠে। পরস্ক উক্ত মাসের শেষভাগে এত পরিমাণে বরফ পড়িয়া থাকে, যে, কোনো কোনো স্থানে ৮ বা ১০ হস্ত উচ্চ জমিয়া যায় এবং প্রায় সমুদায় পথ অগম্য প্রায় হয়। কিন্তু নির্ভীক ডাক-বাহকেরা প্রত্যুহ গ্রমনাগ্রমন করিয়া থাকে এবং কোনো কোনো সাহ্দী পথিকও গমনে বিরত হয় না। কিন্তু এরূপ অবস্থায় পর্য্যটন সম্পূর্ণ অবিধেয় এবং অতিশয় " আপজ্জনক। কারণ, অজস্র নীহার পাতে প্রাণনাশ হইবার সম্ভাবনা। কোনো কোনো সময়ে পথ এমন কঠিন হইয়া খাকে. যে চারি বা পাঁচ দিবদের জন্ম ডাক বন্ধ হইয়া যায়। চৈত্র মাদের প্রারম্ভে পাযাণীভূত হইয়া তুষার গলিয়া যায় ও পথ পরিষ্কৃত হইতে থাকে। জন্ম নগরীতে বরফ পড়ে না এবং প্রথম তুই আড্ডাতে অর্থাৎ দংশাল ও কিরিমচীতে অত্যল্প পরিমাণে পতিত হয়।

১ जमू रहेट पश्मान-१६ गाहेल।

জন্ম বর্ত্তমান কাশ্মীরাধিপতির একটা প্রধান রাজধানী। মহারাজী বৎসরের অধিকাংশ কাল এই স্থলে ক্ষেপণ করেন। স্তরাং এতংশদ্বন্ধে কতক গুলি কাজের কথা বলা অসঙ্গত ও অসাময়িক নহে।

প্রায় চারি সহস্র বংসর অতীত হইল, বর্ত্তমান অধীশবের জানক পূর্ব্ব পুরুষ জান্ধলোচন নামক সূর্য্বংশীয় এক নর-পতি এই নগর স্থাপিত করেন। একারণ স্থাপয়িতার নামামুসারে ইহার নাম জন্মু হইয়াছে।

সেয়ালকোট হইতে ৯ মাইল গমন করিলে ইংরাজ রাজ্য শেষ হইয়া মহারাজার রাজ্য আরম্ভ হয়। উভয় রাজ্যের সংযোগ স্থলে কতিপয় সীমা-নিরুপক ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র স্তম্ভ এবং মহারাজার স্থাপিত একটা দেবালয় আছে। এ স্থানকে স্থাচেৎগড় কহে। ইহা হইতে আনুমানিক ৪ মাইল গমন করিলে (অর্থাৎ সেয়ালকোট এবং জন্মুর ময়্য পথে) টাউ নামক একটা ক্ষুদ্র পল্লী আছে। মহারাজা এন্থলে একটা নৃতন নগর নির্মাণ করিতেছেন এবং আপন নামানুসারে উহার নাম "রণবীরপুর" রাথিয়াছেন।

সেয়ালকেটে হইতে জন্মু ন্যুনাধিক ২৫মাইল। ইহার পথ সমতল ভূমির উপর দিয়া গমন করিয়াছে—স্থানে স্থানে বন্ধুর; কিন্তু অতি কদর্য্য নহে। তবে ১৮ মাইল যাইয়া একটা নদীর গর্ভ মধ্য দিয়া গমন করতঃ পথিমধ্যে যে সমুদ্য উপল ও শিলাথগু পাওয়া যায়, তাহাতে একা নামক যানারোহী-দিগকে যৎপরোনান্তি উত্যক্ত ও তাপিত হইতে হয়। যাঁহারা কখনো এই যানারোহণ করিয়াছেন, তাঁহারা বিশেষ অবগ্ত আছেন, যে, ইহাকে "গ্যাল্ভানিক ব্যাটারী" অর্থাং তাড়িৎযন্ত্র সংজ্ঞাতে আখ্যাত করিলে স্ক্রাক্তক্তর হয়! তাহাতে আবার

এই পথে উহার চক্র শিলাথণ্ড সংযোগে একাদি ক্রমে উত্থিত ও পতিত হয় বলিয়া আরোহীর দেহ একবারে চূর্ণ হইয়া যায়। একা ব্যতীত শিবিকা ও ঘোটক যানও অতি স্থলভ এবং অধিক ব্যয়সাধ্য নহে।

তাবী নদা জম্মু নগরের পার্যদিয়া প্রবাহিত ইইতেছে।
নগরের মধ্যে প্রবেশ করিতে ইইলে এই নদী পার ইইতে
হয়। ইহার উপরিভাগে সেতুনাই। গ্রীমাও শীতকালে
জলের ব্রাসতা হৈইলে পথিক ও যান-বাহকেরা ইহার গর্ভ দিয়া গমনাগমন করে। কিন্তু বর্ধাকালে জলোচ্ছ্যাস ইইলে
স্থামতা ও আপদ নিবারণ জ্বা একখানি তরী নিযুক্ত ইইয়া
থাকে। তাবী পার ইইয়া প্রায় এক মাইল গমন করতঃ
কতিপয় অসরল, সোপাণ-জোণী আরোহণ করিলে জ্মুর

জন্ব একটা ক্ষুদ্র ও অসংশ্লিষ্ট পাহাড়ের উপরস্থিত।
ইহার উচ্চতা সমতল ভূমি হইতে ন্যুনাধিক ৫০০ ফিট হইবে।
ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় গ্রুই মাইল এবং প্রস্থে এক মাইল মাত্র।
বর্তুমান বংসরে ইহার লোক সংখ্যা ৪,১০০। এখানে মুসলমান
অপেক্ষা হিন্দু অধিক। এখানকার লোকদিগকে ডোঁগ্রা কহে।
এখানকার জল বায়ু স্বাস্থ্যকর।

অনেকে মনে করিতে পারেন, জম্ হয় তো কাশীরের ন্যায়ই অতি মনোহর স্থান। কিন্তু উহার সহিত তুলনায় ইহা অতি অপকৃষ্ট। এখানে কোনো প্রকার নৈসর্গিক শোভা বা প্রকৃতির অদ্ভুত ঘটনা নাই এবং বাসসম্বন্ধে ইহা বড় উপাদেয় নহে। কারণ, নিদাঘ কালে প্রচণ্ড তুপন তাপে পদতলম্থ

ও চতুষ্পার্শ্বস্থ পাষাণ উত্তপ্ত হইয়া এত গ্রীশ্বাধিক্য হয়, যে তাহা অসহ্য হইয়া উঠে। এখানে প্রাণসংহারক " লু " চলে ना वर्षे, किञ्च তाপ-পরিমাপক যন্ত্রের পারদস্তন্ত্রকে গৃহমধ্যে ১০৮° ডিগ্রি এবং কথনো কথনো বা ততোধিক উর্দ্ধেও উত্থিত হইতে দেখা গিয়াছে। আমাদের বঙ্গ দেশ অপেকা এথানে শীতের প্রাতুর্ভাব অনেকাংশে অধিক। কিন্তু নগর মধ্যে বরফ পড়ে না—কেবল মাত্র চতুম্পার্থবত্তী উচ্চ উচ্চ গিরিশৃঙ্ক তুষারে আর্ত হইয়া থাকে। বর্ধার ন্যায় শীতকালেও ভাস্কর তক্ষর সদৃশ প্রায় সারাদিন কাদম্বিনীর অন্তরালে ল্কাইয়া থাকেন এরং করণ দেশ কোক কলোকেংখে অঞ্চধারা নপ অন-গল বারিধারা বিসর্জ্জন করেন। এখানকার পাহাড় এমনি শুক্ষ, যে, এম্বলে একটীও প্রস্রবণ, উৎস বা জলপ্রপাত নাই। তাবী নদী ব্যতীত কয়েকটী ক্ষ্দ্র পুক্ষরিণী আছে। তাহার 🙎 জল পানোপযোগী নহে এবং গ্রীষ্ম ঋ**ূ**তে শুক্ক হইরা যায়। অপর, নদীতে অবতরণ করিবার স্থাম ও সরল পথ বিরহে উহার জল আহরণ করা অতি কফীসাধ্য। নগরের প্রাস্তভাগে তুই তিনটী গভীর কৃপ আছে—তন্মধ্যে পীরখে। নামা কৃপের জল অতি শীতল। লোকে গ্রীশ্বকালে ইহার জল পান করিয়া থাকে। জীবন স্বরূপ জীবনের স্থায় আহারীয় দ্রব্যেরও অতি কফী। সময়ে সময়ে কেবল মাত্র অতি কদর্য্য তরকারি পাওয়া যায়। মৎস্যও সর্বাদা পাওয়া স্তক্ঠিন।

এথানকার বাসগৃহও * সাধারণতঃ অতি সামান্য। অব-স্থামুসারে লোকে ইফক বা নিকৃষ্ট শিলাখণ্ড (মুড়ী) অথবা

^{*} পরিক্ত এবং দীঘণিয়তন +ভাছাটিয়া বাড়ী পাওয়া **অতি** দ রুই।

মুহিকার ডিত্তি নির্মাণ করে। কিন্তু গৃহাদি অতি অনুচ্চ এবং শৃখলা পূর্বক নির্শ্মিত নহে এবং প্রায় বাহির মহল থাকে না। ইহারা ছাদ প্রস্তুত করিবার সময় আদে লম্বা লম্বা রলা কাষ্ঠ ্সাজাইয়া তন্তুপরি বাঁশের চেটাই দিয়া পরে বাকশ্গুল্ম বিছাইয়া দেয়। গৃহ ইউকনিশ্মিত হইলে রলা কার্চের পরি-বর্ত্তে কডিকাষ্ঠ এবং চেটাইয়ের পরিবর্তে তক্তা দিয়া থাকে। বাকশ্ গুলোর উপর প্রায় এক হস্ত উচ্চ মৃত্তিকা জমাইয়া দেয়। স্বতরাং রৃষ্টিপাত হইলে ঘরের ভিতরে সহস্র ধারা পতিত হইতে থাকে। এক পদলা ভারি রুষ্টি হইয়া গেলে দেখিতে পাওয়া যায়, অনেক অনাথের কুটীর ভূমিসাৎ হই-য়াছে এবং সকলেই আপনাপন প্রাসাদোপরি উঠিয়া জীর্ণসং-স্কার করিতেছে,। ধনাচ্যদিগের অট্টালিকা ইফীকনির্দ্মিত এবং _নিন্দনীয় নহে। রাজবাটী অতি রুহ্ং আয়তন বিশিষ্ঠ, উচ্চ এবং পরম স্থন্দর। ইহার মহল এবং গৃহের ইয়তা নাই। অনেক প্রকোষ্ঠ নানাবিধ কারুকর্ম্মে এবং মনোহর দ্রুব্যে স্কুস-জ্জিত। বিশেষতঃ বারশিঙ্গা নামক (দ্বাদশ শৃঙ্গ বিশিষ্ট) হরিণের দ্বাদশ শাখা সমন্বিত শঙ্গের দেওয়ালগিরি অতি বিচিত্ত শোভার পদার্থ। রাজপ্রাসাদ নদীতটে স্থিত বলিয়া আরো त्रमगीत इरेग्नारह । हेरारक " मखी " करह । त्रांध रय, मखी শব্দ মন্দির বা মণ্ডপের অপভ্রংশ হইবে।

ইহার বন্ধ সমুদয় এরপ জঘন্য ও বন্ধুর, যে, ইহাতে গাড়ী * চলা দূরে থাকুক, দিবাভাগেও কিঞিৎ অনবধানতা

^{*} নগরের বহির্দেশস্থ সমতল ভূমিতে মহারাজার এবং প্রধান কর্মচারী-দিগের গাঞ্চী থাকে।

সহকারে পদসঞ্চালন করিলে ভগ্নপদ হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।
এম্বলে ঘোটকই একমাত্র উপাদের যান। মহারাজা ইদানীস্তন
পথ সমুদর সম্ভবপর সরল করিতেছেন এবং ছুইপার্শ্বে আপনশ্রেণী স্থাপন এবং নানা প্রকারে নগরের বাহ্নিক ও আন্তরিক
উমতি সম্পাদন করিতেছেন।

জম্বু পাহাড়ের উপর স্থিত বলিয়া তিন বাচারি ক্রোশ দূর হইতে অতি স্থন্দর দেখায়। উত্ত্রুস মন্দির সমূহ স্থ্যাধিপতি বিভূর চরণে উপাসকরন্দের অকপট প্রেম ও ভক্তি অর্পণ করিবার জন্মই যেন মস্তক উন্নত করিয়া রহিয়াছে—গুম্বটের মন্দিরের স্থান্স নূর্য্য-কিরণে প্রতিভাত হইয়া বিচিত্র শোভা ধারণ করিয়াছে—রাজপ্রাসাদ গগনস্পর্শ করিবার জন্ম গর্বিতভাবে যেন দণ্ডায়মান আছে—মধ্যে মধ্যে চূর্ণমন্ন সৌধশিথর দৃষ্টিপথে পতিত হওয়াতে বোধ হইতেছে, যেন পাহাড়ের উপরে শ্বেত পাষাণ ছিন্ন ভাবে শায়্রতীরহিয়াছে—নগরের অনুরে ও নদীর অপর পারস্থ ছুর্গ যেন উহাকে শত্রুহস্ত হইতে রক্ষা করিতেছে—ইত্যাকার নিরীক্ষণ করিলে মনে বড় আনন্দের উদয় হয়়।

এই তুর্গ পাহাড়ের উপর স্থিত এবং ইহার সন্মুখ দিয়া
নদী প্রবাহিত হইতেছে, এ কারণ ইহার অধ্যাসন অতি দৃঢ়।
কিন্তু ইহা অসংরক্ষিত এবং ইহাতে উত্তম গৃহাদিও নাই।
এখানে এক খানি কৃষ্ণবর্গ প্রস্তার দেবী অধিষ্ঠিতা আছেন।
লোকে ই হাকে অনাদি এবং স্বয়স্ত্র বলিয়া নানা উপচারে
যথাবিধি পূজা করিয়া থাকে। মহারাজা যদিও রামাৎ, তথাপি
প্রকৃত দেব্যুপাসক শাক্ত সদৃশ ইহাকে পূজা করেন।

প্রতি মঙ্গলবারে এবং শারদীয়া শুক্ল অফমী প্রস্তৃতি কয়েশ উৎসবে এই দেবীর স্থৃহৎ মেলা ইইয়া থাকে।

· নগরের প্রবেশবারে শাসনকর্তার নিয়োজিত জনৈক কর্ম্ম-চারী আগস্তুকদিগের নাম, ধাম এবং আগমনের অভিপ্রায় লিখিয়া লয় এবং দিবাবসানে সারাদিনের বিজ্ঞাপন রাজ্-সদনে প্রেরণ করে। দারে প্রবেশ করিয়া বাসভাগে অতি দীর্ঘ একটী কবর দেখিতে পাওয়া যায়। উহা রোসন আলী নামক অতি দীর্ঘকায় জনৈক ফকীর মহান্সার গোর। ইতিহাদে লিখিত আছে, যৎকালে সমুদয় ভারতবর্ষ হিন্দু-রাজাদিগের শাসনাধীন ছিল, তথন এই ফকীর এথানকার হিন্দু অধিপতির নিকটে আসিয়া কহেন, যে, অল্পকাল মধ্যে ই ভারতবর্ষ মুসলমানদিগের অধিকারভুক্ত হইবে; কিন্তু তাঁহার আশীর্কাদে জন্ম ভাষীন থাকিবে। ইহার পরে মোগলের। দিল্লীর সিংহাসন অধিকার করিয়। সর্বত্ত আপনাদের জয়-পতাকা উড্ডীন করিল, কিন্তু জম্বু নগরের উপর কোনো আক্রমণ হয় নাই। এই মহাত্মা এই খানেই বাস করেন এবং তাঁহার মৃত্যু হইলে নগরধারের এই স্থানেই গোর দেওয়া হয়। গোরটী যত দীর্ঘ, তাঁহার শরীরও নাকি তত দীর্ঘ ছিল।

দারের দক্ষিণ ভাগে ছই রহৎ ব্যাস্থ পিঞ্জরবদ্ধ থাকিয়া মন্থু-বেয়র অসীম বৃদ্ধিকোশলের পরিচয় দিতেছে। কিয়দ্র গমন করিলে বামভাগে একটা স্বর্ণমণ্ডিত এবং আর একটা রহৎ মন্দির দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাকে গুম্বট কহে। প্রথমোক্ত দেবালয়ে মহাদেবের লিঙ্গ, তদ্বাহন স্ফটিকময় র্য এবং মহা-রাজা গোলাপদিংহের ভস্ম রক্ষিত আছে। দিতীয়টীতে মহা- রাজার ইউদেবতা প্রীঃ নিচন্দ্রের মূর্ত্তি স্থাপিত আছে। এখানে বেদপাঠ ইইয়া থাকে এবং অনেক বিদ্যার্থী সাহিত্য, ব্যাকরণ, ধর্মাশাস্ত্র এবং বেদ অভ্যাস করে। প্রাঙ্গণোর উতুপ্পার্মস্থানাতে পণ্ডিতগণ, পাঠার্থীরা এবং সমাগত পথিক ও ভিক্ষাজীবারা বাস করে। নবাগত ব্যক্তি তিন দিবস নহারাজার নিকট হইতে অতিথি সংকার প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ইহার পার্মদেশে একটা উত্তম জলাশয় আছে।

গুষ্ট মতি রমণীয় স্থান। কোনো স্থলে অহর্নিশি চিত্তবিমোহিতকর স্থলিত কণ্ঠ-স্বরে এবং প্রুতিমধুর সমস্বরে বেদপাঠ
হইতেছে—কোনো স্থানে বিদ্যার্থীরা উট্চঃস্বরে আপনাপন
পাঠ কণ্ঠস্থ করিতেছে—কোনো স্থানে বা পণ্ডিতে পণ্ডিতে
কোনো শাস্ত্রার্থ লইয়া মহা বাধিতণ্ডা হইতেছে—সন্ধ্যাগমে
স্থানিপুণ গায়করন্দের তানলয়বিশুদ্ধ স্থ্রাব্য কণ্ঠস্বর এবং
বাদ্যযন্ত্রের মনোমোহন ধ্বনিতে দেবালার নিনাদিত ও প্রতিধ্বনিত হইতেছে, দেখিলে মন ভক্তিরসে দ্রব হইয়া যায়।
মহারাজা প্রত্যহ দিবাশেষে এই স্থলে আগমন পূর্বক
পণ্ডিতদিগের সহিত শাস্ত্রানুশীলনে কয়েক দণ্ড অতিবাহন
করেন।

কিম্বদন্তী আছে, মহাত্মা গোলাপ সিংহ প্রত্যহ নিশা-যোগে ছদ্মবেশে নগর পরিভ্রমণ পূর্বক আপন প্রজাদিগের মানসিক গৃহ অবস্থা অবগত হইতেন এবং কাহারো কোনো বিষম মনঃশীড়া দেখিলে অথবা আপন শাসনদোবে রাজ্যের কোনো অনিষ্ঠ বা অত্যাচার হইতেছে জানিত্বে পারিলে, তাহার প্রতীকার করিতেন। একদা তিনি এইরূপ প্রচ্ছমবেশে

এই স্থলে উপনীত হয়েন। ইতিপূর্ব্বে উহা শাশানভূমি ছিল— কতিপয় তপ্ৰী মাত্ৰ অনাচ্ছাদিত সামান্য কুটীরে অথবা ্রুক্ষুত্রলে বাস করিতেন। তিনি তাঁহাদিগের সদনে উপস্থিত হইলেন এবং নিজেও একজন ভিক্ষাজীবী বুলিয়া পরিচয় দিলেন। অনেক প্রকার কথোপকথনের পর মহারাজা জিজ্ঞাসা করিলেন, মহারাজা গোলাপ সিংহ কিরূপ রাজ্য শাসন করিতেছেন! তাঁহারা তাঁহাকে চিনিতেন না, স্বতরাং মহারাজার উপলক্ষে অনেক নিন্দাবাদ করিয়া বলিলেন. " গোলাপ দিংহ এমনি পাষত, যে, আপন রাজ্যে কোনো অতিথিশালা প্রতিষ্ঠা করে নাই। তাঁহার উচিত, যে, এই স্থলে একটা দেবালয় করিয়া পথিক ও ভিক্ষুকদিগের আশ্রয় স্থান করিয়া দেয়। " গোলাপ সিংহ এই উপদেশ পাইয়া পর দিন উহার মূলপ্রস্তর স্থাপনা করিলেন এবং যে গুম্বট শূর্বের হিংস্র জন্তুদিগের আবাস ছিল এবং যে স্থানে মনুষ্য দিবাভাগেও যাইতে ভীত হইত, তাহা এক্ষণে অতি রমণীয় ও নগরের সর্কোৎকৃষ্ট স্থান হইয়াছে।

গুম্বটের সম্মুথ দিয়া প্রকাশ্য পথের দক্ষিণ ভাগে একটা বর্ম বাহির হইয়া গিয়াছে। উহা দিয়া কিয়দ্দূর যাইলে ইংরাজদিগের বাসের নিমিত্ত মহারাজা যে কতিপয় স্থরম্য মট্টালিকা নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন, তাহা দেখিতে পাওয়া যায়। এস্থানে মহারাজার ছাউনি আছে।

গুম্বট অতিক্রম করিয়া প্রকাশ্য পথ দিয়া কিয়দ্র গেলে বামভাগে মহারাজার সংস্থাপিত নব প্রাণী-শালা দৃষ্ট হয়। তাহাতে শ্বত শ্বর প্রভৃতি অনেক পশু ও পক্ষী সংক- লিত আছে এবং অদ্যাপিও দিন দিন আশ্চর্য্য আলুশ্চর্য্য প্রাণী সকল সংগৃহীত হইতেছে।

আরো কিয়দ্র গমন করিলে চতুষ্পথ। বামভাগের পথে:

মুদ্রাঙ্কণ যন্ত্রালয়। এস্থানে সংস্কৃত, হিন্দি, পারদীক, উর্দ্বু
এবং ভোগ্রা ভাষার পুস্তকাদি মুদ্রিত হয় এবং "বিদ্যা-বিলাদ"
নালী সাপ্তাহিক সমাচার পত্রিকা উর্দ্বু ও ভোগ্রা অক্ষরে
প্রকাশিতা হইয়া থাকে। কিঞ্চিৎ দূরে নব প্রতিষ্ঠিত উপবন। ইহা অতিক্রম পূর্বক কিছু উর্দ্ধে উঠিলে সৈন্য-প্রদর্শনক্ষেত্র পাওয়া যায়। কেবল মাত্র ইহাই জম্বু নগয়ের সমতল
ভূমি বলিলে অভ্যুক্তি হয় না। ইহা অতি প্রশস্ত। প্রত্যহ
সৈন্যগণ এম্বলে রণবিদ্যা শিক্ষা করে এবং প্রতি রবিবারের
সায়ংকালে মহারাজা স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া সৈন্য-প্রদর্শন
দর্শন করেন।

চতুষ্পথের সন্মুখন্থ পথ দিয়া গেলে সর্বাদো বামভার্গে দাতব্য ঔষধালয়। তথায় হুঃখী লোকেরা প্রত্যহ রীতিমত ঔষধ পাইয়া থাকে। পরে কিঞ্চিৎ উদ্ধে উঠিলে বামভাগে অতি হুন্দর বিদ্যালয়-বাটী। পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, যে, প্রায় জিন শত বালক এখানে ইংরাজী, সংস্কৃত, আরবী ও পারদীক এবং ডোগ্রা ভাষায় বিদ্যাশিক্ষা করিয়া থাকে। বিদ্যালয় অতিক্রম করিয়া আরো উদ্ধে উঠিলে অনতিদূরেই "পুরাণ মণ্ডী" অর্থাৎ পুরাতন রাজ-প্রাদাদ। একণে উহার ভগ্নাবশেষ মাত্র রহিয়াছে। ইহার বামভাগন্ধ পথ দিয়া গমন করিলে দৈন্য প্রদর্শন ভূমির পার্থবর্তী মাতল-প্রাদাম বৃহদ্কায় বারণগণ শৃঞ্জলবন্ধ রহিয়াছে, দেখিতে

পাওয়া যায়। উহার সমিকটে রাণী-তলাও অর্থাৎ রাজা ধ্যানসিংহের রাণী কর্তৃক প্রতিষ্ঠিতা পুক্রিণী এবং দেওয়ান জোয়ালা সাহের অত্যুচ্চ মন্দির আছে।

ে উক্র চৌমাথার দক্ষিণ-দিগ্র পথের প্রবেশ দারে জগাতি অর্থাং যে সমুদর দ্রব্য বাণিজ্য-সূত্রে নগর মধ্যে আনীত হয়, তাহাদের শুল্ক আদায় স্থান। এই পথটী অতি প্রশস্ত এবং পাষাণ নির্মিত; স্থতরাং সর্বাপেক্ষা উৎকৃষ্ট। ইহার চুই পার্শে আপ্রণ-প্রেণী আছে।

এখানে গুন্দট, উর্দ্, মস্তগড়, জোলা-কে-মহল্লা, পাকা ডাঙ্গা, ধোন্শ্লী প্রভৃতি অনেক পল্লী আছে। নগরের পূক্ষ-উত্তর প্রান্তভাগের নাম ধোন্শ্লী। তদতিক্রম করিয়া যে অব-তরণ পথ পাওয়া য'য়, তাহাকে 'বোবা নারায়ণ দাস্কি ঢাকী" কুহে। কারণ, উহার নিম্নদেশে নদীতটে নারায়ণ দাস্য নামক কিক তপস্থীর আশ্রম আছে। ইহাই কাশ্মীর গমনের পথ।

বাবা নারায়ণ দাসের ঢাকী দিয়া অবতরণ করতঃ সমতলভূমি পাওয়া যায় এবং কিয়দূর পর্যান্ত তাবীনদীর দক্ষিণ তট দিয়া গমন করিতে হয়। এই পথ অতি সরল এবং ইহাতে পর্যাটক দিগের কোনো প্রকার ক্লেশ হয় না। বিমল চন্দ্রালোকে এবং শীতল মারুতহিল্লোলে এই পথে গমন করিতে অতি প্রীতিকর। চারি মাইল গমন করিলে একটা কুদ্র পল্লী প্রাপ্রধ্য। উহাকে নাগরোটা কহে। এন্থলে স্বর্গত রাজা ধ্যান সিংহের কনিষ্ঠ পুত্র পুকাধিপতি রাজা মতি সিংহের একটা মন্দির আছে। কিন্তু থাকিবার কোনো উত্তম স্থান নাই। এ স্থান হইতে ছুই মাইল, দূরে সার একটা পল্লী

আছে, ভাহার নাম কণ্ডোলী। এন্থলে কতিপয় দোকান দৃষ্ট হয়। আর এক মাইল গেলে সমতল ভূমির শেষ এবং পাষাণ-বিশিষ্ট এবং অতি মস্ত্র। সর্কোদো আরোহণ অতি সরল উচ্চ। সম্ম থে অনস্ত গিরিমালা দৃষ্টি-রোধ করিতেছে; ততুপরি পথ সূত্রাকারে পড়িয়া রহিয়াছে; আরোহাঁগণ মন্থর গতিতে অতি কটে আরোহণকরিতে করিতে এক এক ঝেঁকে কয়েক পাদমাত্র গিয়া কোনো পাষাণোপরি বিশ্রাম করিতে তথন অতি ক্ষুদ্রকায় দেখাইতেছে, ই লাদি নিরীক্ষণ করিলে যথার্থই হৃৎকম্প হইতে থাকে। কিন্তু শৃস্পোপরি আরো-হণ করিলে স্প্তীর শোভা বিলোকনে মনে অতি অভূতপূর্ব আনন্দের উদয় হয়—মনে লাগে, যেন নৃতন জগতে উপনীত্ হইলাম ! ইহা অতিক্রম করিয়া এক অধিত্যকা। উহা প্রার্থী ছুই মাইল বিস্তৃত এবং উহার শেষ ভাগে একটা রহং পুরুরিণী ও চুই একথানি দোকানও আছে। তদনন্তর পথ অতি সরল এবং তিন চারি স্থানে চুই পার্মে অতি উচ্চ ও আট দশ স্থাত করিয়া দীর্ঘ পাষাণ্যয়ের বিহস্তমাত্র প্রশস্ত স্থ্যস্থ আছে, তন্মধ্য দিয়া পালকী গমন করে চক্ষলে কোনো কোনো স্থান এমন সংকীৰ্ণ, যে, তন্মধ্যে পালকী আটকাইয়া যায় এবং বাহকগণ মস্তকে করিয়া পালকী পার করিতে বাধিত হয়। এইরূপে এক মাইলের অধিক পথও যাওয়া আবশ্যক পরে একটা ক্ষুদ্র জলাশয়। উহাতে পদ্মপুষ্প ্ৰ ফু 🎼 হইয়া থাকে এবং উহার সন্নিকটে ছুইথানি দোকান

আছে। অনম্ভর তিন মাইল দূরে দেড়ে নামক তান পর্যান্ত এমন তুর্গম ও আপজ্জনক, বে, কাশ্মীরের সমস্ত পথের মধ্যে ্ৰ্ত্ত্ৰাপিও তেমন নহে। ইহাতে পদে পদে কেবল উত্থান ও পতন। স্থানে স্থানে প্রকৃত পথ নাই। মনুয়োর গতায়াতে যৎসামান্য পথ হইয়া গিয়াছে। আবার অানক স্থানে অহ্যুক সরল পাষাণ গাত্রে এমন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র দোপান শ্রেণী (যাহাকে খুপরী কহে) আছে, যে. কেবল মাত্র পদাঙ্গুলির ভর দিয়াই হামাগুড়ি ভাবে তাহাতে উঠিতে হয়। কোনো কোনো স্থান এমন মহণ, যে, পদ ছির থাকে না। এই পথে দকলকেই পদব্রজে গমন করিতে হয়। তবে ভদ্র মহিলাগণের পাল্কী অধিক সংখ্যক বাহক সাহায্যে পার হইয়া গকে। গ্রহ-বৈগুণ্যে এম্বলে পদ য়লন্জনিত কোনো ত্র্টনা ঘটিলে তাহার অন্তিম ু**ফুল ে**য কত দূর শোকাবহ হয়, তাহা এখন গৃহে বসিয়া সারণ করিলেও শরীর কাঁপিয়া উঠি! এই ভয়ানক স্থান অতিক্রম পূর্বক এক সংকীর্ণ উপত্যকায় অবতরণ করিতে হয়। উহার মধ্য দিয়া একটানিঝ রিণী উভয় তটে করবী রুক্ষ দারা শোভি-তাবস্থায় প্রবাহিতা হইতেছে। কিয়স্তর সেল্ডে নাম্ স্থান। এথানে একগানি দাকান এবং একটা ম্পতি স্থার বাউলি (কৃপ বিশেষ) আছে। ইহার পরে এক অতি দীর্ঘ ও জুরারোহ চড়াই। উহা অতিশয় বক্র এবং বন্ধুর। উহাতে প্রশস্ত সোপান শ্রেণী আছে বটে, কিন্তু উহার প্রত্যেকটী অতি উচ্চ এবং বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর রয়ে নির্দ্মিত বলিয়া বড় স্থাম নহে। গিরি শিখরে উঠিয়া একটা অপেকাকৃত স্থাম উতরাই, দারা নামিতে হয়। পরে কয়েকটা অসরল ও কঠিন

চড়াই ও উতরাই অতিক্রম পূর্বক দংশার্লের উপত্যকায় পৌছিতে হয়।

দংশাল বহু লোকালয় এবং আপণবিশিষ্ট বিশিষ্ট পল্লী। ইহাতে অনেক্ণুলি অতি স্থলর উৎস আছে। উহাদিগের জল অতিশয় স্বচ্ছ ও স্বাতৃ এবং গ্রীষ্মকালে শীতল ও শীত-কালে উন্ধ থাকে। পল্লী হইতে কিয়দ্ধরে সরকারী বাংলা অর্থাৎ মহারাজা ও প্রযুটকদিগের বিশ্রাম স্থান। ইহা অতি বিস্তৃত ও প্রিষ্কৃত।

२ । मरनान रहेए कितिमही-->२ मारेन ।

দংশাল পরিত্যাগ করিয়া এক নিম্ন উত্তরাই দিয়া অবত-রণ পূর্বকে একটা নদী পার হইতে হয়। ইহার জল গভীর নহে। স্থতরাং ইহার উপরে কোনো সেতু না থাকাতেও গতায়াতের কফ হয় না। অনস্তর একটা অতি দীর্ঘ ও ভয়াবহু চড়াই অতিক্রম করিতে হয়। ইহাকে⁴বড়্টী ক**হে। ই**হাঁ কড়াইধার নামক গিরিমালার একটা অত্যুক্ত অস্ত। দংশাল হইতে এই পথকে ঠিক যেন একটী অজগর দর্প বক্র-গতিতে শয়ান রহিয়াছে, এমনি দেখায়। দর্শন মাত্রেই মনে যেমন ভ'য়ের সঞ্চার হয়, অতিক্রম করিতেও পদে পদে তেমনি বা -ততোধিক হৃৎকম্প উপস্থিত হইতে থাকে। ইহাকে তিন অং**শে** বিভাগ করা যাইতে পারে। প্রথমাংশ অদ্ধ মাইল। ইহা স্থগম এবং এক ক্ষুদ্র অধিত্যকায় গিয়া শেষ হুইয়াছে। তথায় একটা শীতল ছায়াপ্রদ বট বৃক্ষ আছে। এই ভাগের মধ্য পথে पिक्ति शाद्य अक् अकि-तृश् अ मतल-छेक्र भागान , यक्ष त्रहि-ুর্বাছে। উহার গাত্রে ক্তিপয় কুদ্র কুদ্র গোপান (খুসরি)

দৃষ্ট হয়। অনেক ছুঃসাহদী পুরুষ ও পালকী-বাহকেরা সময় বাঁচাইবার জন্ম প্রাণের দিকে দৃষ্টি না রাখিয়া এই জুর্ম পথ দিয়া গমন করিয়া থাকে। কিন্তু এমন অসমসাহদিক কর্মা করিয়া ইচ্ছা পূর্বক মৃত্যুর হস্তে পতিত হওয়া কাহারো উচিত নহে। বিতীয় স্থংশ এক মাইল দীর্ঘ ও অতি ছুর্গম। ইহার শেষ ভাগে একটা ক্ষুদ্র জলাশয় আছে। তৃতীয় অংশও প্রায় এক মাইল দীর্ঘ। কিন্তু সর্বাপেক্ষা ছুর্গম, সরল-উচ্চ এবং আপজ্জনক। এই শৈল শথর হইতে স্প্রির শোভা অতি রমণীয় দেখায় এবং তত্জ্জনিত অনির্বাচনীয় প্রীতির গুণে উত্থানক্ষ ভূলিয়া যাইতে হয়। অপর পার্শ্ব উত্রাই অপেক্ষাকৃত স্থাম। ইহাতে সমদ্রবর্তী তিনটা উত্তম উৎস আছে। তন্মধ্যে প্রথমটা সর্বোৎকৃষ্ট। এবং তিনটাই অতি স্থলর পাষাণ দ্বারা বাঁধানো।

তদনন্তর এক সংকীর্ণ, বন্ধুর ও নিম্ন উপত্যকায় অবতরণ করিতে হয়। তথাধ্য দিয়া অনেক নিঝারিণী প্রবাহিতা হই-তেছে। কিয়দ্রে উপ্রবাণী নামক স্থান। এখানে একটী জলাশার ও দোকান আছে। ইহা হইতে কিঞিৎ দূরে একটী স্রোত্যরতী পার হইয়া অল্ল উর্দ্ধে উঠিয়া অপেক্ষাকৃত সমতল ভূমি এবং একটী পল্লী পাওয়া যায়। উহার নাম গড়ী। উহার প্রবেশ পথে একটী প্রস্তুর নির্দ্ধিত ও আর একটী ইউক নির্দ্ধিত অউকোণ বিশিষ্ট ভবনহয়ের ভগ্নাবশেষ পড়িয়া রহিয়াছে। এই পল্লীতে কতিপয় দোকানও আছে। অনন্তর করেক মাইল পর্যান্ত উক্ত সমভূমি দিয়া গমন করিয়া এবং তথাণ-প্রবাহিত কয়েকটী নির্ধারণী পার হইয়া একটী অনতি

দীর্ঘ হ্রগম চড়াই অতিক্রম পূর্বক কিরিষ্টাতে উপনীত হইতে হয়। পথের এই অন্তিম ভাগে অনেক মনোহর প্রস্রবণ আছে। বিশেষতঃ কিরিম্টার সন্নিকটে একটা অতি স্থান্দর প্রস্রবণ দেখিতে পাওয়া যায়। জনৈক ধনাচ্য তাহার সম্মুথে একটা মন্দির নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন এবং উহার স্রোভন্মুথ এমন ভাবে স্থাপিত করিয়া দিয়াছেন, যে, ইহা মন্দিরের মধ্যদেশ দিয়া প্রবাহিত হইয়া নীচে পতিত হইতেছে। উহার জল অতি নির্মাণ ও স্বাস্থ্যকর।

দংশালের ন্যায় কিরিমচীও উত্তম পল্লী। এথানে অনেক লোকালয় এবং বিপণি আছে। পল্লাতে প্রবেশ করিয়া দক্ষিণ ভাগে অভুন্নত ভূমির উপরে সরকারী বাংলা। কিন্তু এখানে জল কন্ট বলিয়া ইহা পরিত্যাগ পূর্বক ২পর প্রান্তভাগ স "ঠাকুর দোয়ারা" অর্থা দেবালয়ে বিশ্র ম স্থান করা পর্যানুদ্ মর্শসিদ্ধ। এই স্থান অতি পবিত্র ও রশ্বীয়। ইহার বহিং দিশে এবং অন্তঃপুরে তুইটা অতি উত্তম উৎস আছে এবং ইহার সমুখ দিয়া স্লোত্স্বতী প্রবাহিতা হইতেছে।

৩। কিরিমচা হইতে মীর-১২ মাইল।

সরকারী বাংলা পরিন্যাগ পূর্বক অ পণ শ্রেণীর মধ্য দিয়া আদিয়া এক নির্কারিণী পার হইতে এবং পূর্ব্বাক্ত ঠাকুর-দোয়ারা বামভাগে রাথির। সমতল ভূমির উপরে উঠিতে হয়। প্রায় অর্দ্ধ মাইল এই সমতল ভূমির উপর দিয়া গমন করিয়া সম্মুখে আর একটা নির্কারিণী পাওয়া যায়। ইহা পার হইয়াই একটা আরোহণ। উহা দৈর্ঘ্যে ন্যুনাধিক অর্দ্ধ

मिया हिना शियारह। कियम त्र याहेया अक कूम नियं तिनी পার হইতে হয়। তুষার দ্রব হইলে বা রৃষ্টি হইয়া গেলে -ই্র্ডে প্রবাহ বাহিত হইয়া থাকে। পরে একটা অতি কঠিন আবোহণ দিয়া পাহাড়ের গাতে উঠিতে হয় ৷. অনন্তর পথ পূর্ব্বোক্তের ন্যায় গিরিমালার গাত্র দিয়া কোনো স্থানে ঋজু, কোনো স্থানে বা বক্র, কোথাও স্থগম এবং কোথাও বা তুর্গম ভাবে ঢলিয়া গিয়াছে। ইহার শেষ ভাগ অতি তুর্গম এবং দরল উচ্চ চড়াই রূপে পরিণত হইয়াছে। এতদ্বারা এক অত্যুক্ত শিখরদেশে উচিতে হয়, তথা হইতে স্ষ্টির শোভা অতি বিচিত্র দেখায়। উহা হইতে অবতরণ অতি ভয়ানক। উহা সরল ঢাঙ্গু, সোপান বিহীন, স্থতরাং অতি আপজ্জনক। এই অবতরণ দিয়া কিয়দার যাইয়া এক ক্ষুদ্র পাহাড়ে নামিতে হয়; তাহার পার্যদেশে কতিপয় কুটীর আছে। এই ্রিকে মীর কহে। এথানকার সরকারী বাংলাও অতি উত্তম। কিন্তু এখানে কেবল একখানি মাত্র সামান্ত দোকান আছে।

8। भीत इंदे लान्नत-- ३२ भादेल।

মীর পরিত্যাগ করিয়া একটা ক্ষুদ্র ও স্থগম চড়াই অতিক্রম করিতে হয়। পরে পথ আট মাইল পর্যান্ত কেবলই খবতরণ। ইহা স্থানে স্থানে অসরল, সোপানহীন, রহৎ রহৎ
পাষাণসমন্নিত ও ঢালু। কিন্তু সাধারণতঃ তুর্গম ও কন্ট্রসাধ্য
নহে। অনন্তর একটা ক্ষুদ্র স্রোত্স্বতী পার হইয়া অতি ছ্রুহ
চড়াই পাওয়া যায়। উহার নাম কয়া। উহা দৈর্ঘ্যে প্রায় তিন
নাইল এবং এমন বক্রা, যে, কুগুলাকারে আরোহণ করিতে
হয়। উহার সোপান-শ্রেণী অতি উচ্চ, রহৎ রহৎ প্রস্তুর-

নির্মিত, স্তরাং আঁত বন্ধুর এবং তুরারোহ। কিন্তু গিরিশৃকে উঠিয়া চারিদিগন্থ নৈদানি শোভা দর্শনে প্রতিকর্তার অচিন্তা শক্তি চিন্তা করিতে করিতে মন প্রেম্যানন্দে পূর্ণ ইইয়া যায়। ইহার বিপরীত ভাগন্থ উতরাইকে চুলনা কহে। ইহা যদিও অতি দীর্ঘ ও অতি ঢালু নহে, তথাপি গমন করিতে হুৎকম্প উপন্থিত হয়। কারণ ইহা পর্কতের শিরোদেশ ও গাত্র দিয়া গমন করিয়াছে; পথ অতি সংকীর্ণ এবং দক্ষিণপার্থ এমন নিম্ম ও গভীর, যে, দৃষ্টি করিলে মন্তক ঘুরিতে থাঁকৈ। পরবর্তী পথ উপত্যকার মধ্য দিয়া চালিয়া গিয়াছে। কিয়েদ্রু যাইয়াই লান্দর দেখিতে পাওয়া যায়।

লান্দর একটা ক্ষুদ্র পল্লা। ইহাতে কতিপয় বিপণি আছে। প্রবেশ পথে এক নিক রিণা ও একটা অভ্যাত্তম উৎস অতি-ক্রম করিয়া দক্ষিণ পার্মস্থ অভ্যুক্ত ভূমির তিপরে সরকারী, বাংলা। ইহাকে তুর্গ কহে। ইহা প্রস্তর-নিশ্মিক এবং উর্তম বাদোপযোগী।

৫। लाम्पत व्हेट विलाउ९-- ३६ माहेल।

প্রায় অর্দ্ধ মাইল উন্নতানত ক্ষেত্রের উপর দিয়া যাইতে হয়। পরে বিখ্যাত লাড়োলাড়ী বা লাড়ালাড়ার পাহাড় দৃশ্যমান। ইহা দৈর্ঘ্যে ৭৮০ মাইল। সর্কাদো চড়াই অতিশয় বক্র ও রহৎ রহৎ প্রস্তরপূর্ণ বলিয়া অতি হুর্গম। ইহা প্রায় অর্দ্ধ মাইল দীর্ঘ। পরে মাইলম্বয় পর্যান্ত পথ পাহাড়ের গাত্র দিয়া গিয়াছে। তদনন্তর এক ক্ষুদ্র নির্মারিণী পার হইয়া অনুষ্ঠ আরোহণ দিয়া উচিয়া সমতল ক্ষেত্রের উপরে পতিত হই-ব্যাহে। তৎপরে আর একটা আরোহণ। ইহা দ্বিতীয় অপেকা

অসরল এবং ছুর্গম। অনন্তর চতুর্থ আরোহণ। ইহা অতি হুগম। পরে অতি ছুরারোহ পঞ্চম আরোহণ। ইহাই ্প্রকৃত লাড়োলাড়ী। ইহা যেমন উচ্চ, তেমনি ছুর্গম। এন্থলে প্রায় সতত মেঘ সঞ্রণ করিয়া থাকে, স্নতরাং অতিশয় শীতল। পর্বতের শিখরে প্রস্তর-খোদিত লাড়ীলাড়ার (বর-কন্থার) ও চন্দ্র্যোর প্রতিমূর্ত্তি আছে। এরপ কিম্বদন্তী, যে, অতি পূর্ববিকালে একদা কোনো বর ও কন্যা এবং বহুসংখ্যক বর্ষাত্রী এই শৈলপথ দিয়া গমন করিতেছিল। পূর্ব্বে এস্থলে কোনো প্রণালী বা জলপ্রবাহ ছিল না। পূর্ব্বোক্ত হতভাগ্য ব্যক্তিগণ পিপাদায় এমনি কাতর হইয়াছিল, যে, জলাভাবে সকলকেই প্রাণত্যাগ করিতে হইল। এই শোকাবহ ঘটনায় নায়ক নায়িকার নামালুদারে ইহার নাম লাডোলাডা বা লাডী-লাড়া হইয়াছে: কার্নি শব্দের অর্থ কল্যা এবং লাড়ো বা লাড়া ै स्कित অর্থ বর । এক্লত 🥎 চড়াই যেরূপ ছুর্গম, তাহাতে জুলাভাবে এরূপ শোচনীয় ঘটনা কোনো মতে কাল্পনিক নহে। অধুনা প্রবাহ প্রত্যারত হইয়া জলক্ষী দূর হইয়াছে। কার্ত্তিক মাদের শেষে এখানে তুষারপাত হইয়া থাকে। বিপ-রীত ভাগস্থ অবতরণ আদৌ অতি ঢালু ও আপজ্জনক। স্তুর কয়েক মাইল দূর পর্য্যন্ত পথ পর্ববতের গাত্র দিয়া স্থগম হইয়া গিয়াছে। পরে মার একটা, সরল ঢালু অবতরণ দিয়া ামিয়া কিয়দ্বর গমন করতঃ বিলাওৎ আড্ডায় পৌছিতে **EM**

বিলাওতে কেবল মাত্র সরকারী বাংলা এবং এক থানি দোকান আছে। বন্হাল পথের সমুদয় আভ্ভার মধ্যে এইটা

বিজন প্রদেশে স্থিত। কিন্তু এস্থান হইতে স্প্রতির অভি রমণীয় শোভা নয়নগোচর হয়।

७। विलाखर इहेट तामवन-- भारेन।

বিলাওৎ হইতে রামবন দৃষ্টিগোচর হয় এবং অতি নিকট-স্থিত বলিয়া বোধ হইতে থাকে। কিন্তু পার্ববত্য দেশের পথ স্বাভাবিক বক্রগতিতে গমন করিয়াছে বলিয়া উহার দূরতা ৯ মাইল। এই পথে চন্দ্রভাগা নদী পার হইতে হয়। বিলাওৎ হইতে উহাকে যেন নিশ্চল ফেণপুঞ্জ পড়িয়া রহিয়াছে এবং উহার উদ্ধস্থ পথ এক গাছি সূতা বক্রভাবে পতিত থাকিয়া স্থানে স্থানে উহার গর্ব্তে লীন হইয়াছে, এমনি ভ্রম জন্মায়। প্রত্যুত, দূর হইতে পথের এইরূপ অবহা দেখিয়া যেমন হৃৎকম্প হইয়া থাকে, কার্য্যতঃ তাহাই বটে। বিলাওং পরি-ত্যাগ করিয়া অবধি চন্দ্রভাগার সেতু পর্যন্ত সার্দ্ধ চারি মাইল কেবল অবরোহণ বা পতন। প্রথমতঃ পীহাড়ের মধ্য ও পরি দিয়া কিয়দ্ধর আসিয়া কতিপর বিপণি দেখিতে পাওয়া যায়। উহা অতি উদ্ধে স্থিত। তথা হইতে সেতু পৰ্য্যন্ত পথ এমন ঢালু ও চিৰুণ, যে, পদ স্থির থাকে না। তাহাতে আবার রৃষ্টি হইয়া গেলে ইহা যে কতনূর ভয়াবহ হয়, তাহা পাঠকণ্ণ অমুভব করিয়া লউন। পথ সংকার্ণ ও সরল ঢালু--ঠিক বাম ভাগে দহস্র মহস্র হস্ত নীচে চন্দ্রভাগা ভীষণাকারে বক্ষঃ ভুলিয়া শত শত বজ্রনিনাদিত স্বরে কর্ণ বিধর করিয়া প্রবাহিত হইতেছে—বাম ভাগে কিছুমাত্র ব্যবধান নাই। স্কুতরাং এমন স্থলে পদস্থলন-জনিত বা অন্ত কোনো প্রকার আপদ ঘটিলে 'ভাঁহার পরিণাম যে কতন্র শোকাবহ, তাহা নিজীঁর লেখনী

লিখিতেও কাঁপিয়া উঠে। গত বংসরে মদগ্রজ এবং আমি সপরিবারে এই পথ দিয়া কাশ্মীর যাইতেছিলাম। কালে আমরা এই স্থানে অবরোহণ করি, তথন ন্যুনাধিক ∵পৃঞ্চাশং রুষ কূট-ভার* লইয়া শ্রেণীবদ্ধ ভাবে বিপরীত দিক হইতে আদিতেছিল। আমাদিগের সম্ভিব্যাহারে চারি থানি পালকা ছিল। তন্মধ্যে এক খানির লাল মাচ্ছাদন দেখিয়া একটী বুষ এমন ভীত হইয়। নদার দিকে ধাবিত হইল, যে, ব্নক্ষের ব্যবধান না পাইলে দে তদ্দণ্ডেই নদীগর্ৱে পতিত হইয়া পঞ্চর পাইত। এই ভয়াবহ ব্যাপার দৃষ্টে আরোহীগণ বাহকদিগকে সংযত করিলেন। কিন্তু আমার পালকী কয়েক পাদ অগ্রসর হইয়াছিল এবং বাহকেরা তুঃসাহসী ছিল। উহা-দিগকে পুনঃ পুনঃ নির্ত্ত করিলেও তাহারা মদাক্যে উপেকা কুরিয়া যেমন অগ্রগামী হইবে, অমনি একটা রুষের ধাকা লীগিয়া পালকী বিপর্যান্ত হইয়া গেল। আমি এবং আমার ক্রোড়স্থ পঞ্চম ব্যায় বালক সোভাগ্যক্রমে দক্ষিণ পার্শস্থ পর্ব্বতে পড়িয়া রক্ষা পাইলাম—বাহকদিগের কেহ কেহ আহত হইল—রুষ বাম দিকে শত শত হস্ত নিম্নে পড়াইয়া পড়িল; একটা বৃহৎ বৃক্ষে আটকাইয়া উহার প্রাণরক্ষা হইল। কৃষ্টের ছালা গড়াইতে গড়াইতে নদীগর্ভে পতিত হইয়া যে কোথায় চলিয়া গেল, তাহার নিদর্শনও পাওয়া গেল না--রুষ রক্ষক মাথার হাত দিয়া কাঁদিতে লাগিল। ঈশ্বর-কুপায় এই

শক্ট এক একার কাশ্মীরজ বৃক্ষের সূল। ইহা ঘারা রভের কর্ম হইরা থাকে। ইহা অভিস্নাবান: এক বৃষ্যের ভার অর্থাৎ এক ছালা কুটের স্থায় দ্বিদা টাকা।

ভয়ানক ঘটনায় যে কোনো জীবের প্রাণনস্ট হয় নাই; ইহাই স্থের বিষয়। পর্য্যটকদিগকে পরামর্শ দিতেছি, যে, যখন তাঁহারা এই পথ দিয়া গমন করিবেন, তখন যেন উক্ত ঘটনার প্রতি দৃষ্টি রাথিয়া সতর্ক হয়েন।

পূর্বে চন্দ্রভাগার উপরে রজ্জুর সেডু ছিল; উহা যে কতদূর আপ্রজনক, তাহা বলিবার শব্দ নাই। মহারাজা এক্ষণে
অতি উপাদের কাষ্ঠের সেডু নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন এবং
লোহমর করিবার জন্ম প্রস্তুত হইতেছেন। নদী পার হইয়া
দুই মাইল পর্যান্ত পথ সমতল ভূমির উপর দিয়া গিয়াছে।
উহাতে অসুন্নত চড়াই ও স্থাম উত্তরাই আছে। পরে মাইল
দ্বর অতি চুর্গম। ইহা অতি উন্নত চড়াই এবং শ্লেট বিশিষ্ট
পাহাড়ের অসরল পার্ম দিয়া উঠিয়াছে। এই স্থান অতি
সংকীর্ণ, স্থানে স্থানে নির্মারণীর জল দারা সিক্ত এবং ইহার
ঠিক বাম ভাগে শত শত হস্ত নীচে চন্দ্রভীগা ভীমনাদে প্রবীহিত হইতেছে। স্থতরাং এই পথের প্রথমার্দ্ধের শেব ভাগের
ন্থায় ইহাও সমূহ আপজ্জনক। অনন্তর অর্দ্ধ মাইল সমভূমির
উপর দিয়া গিয়া রামবনে পৌছিতে হয়।

রামবন অতি উত্তম স্থান। ইহা উপত্যকায় স্থিত এবং অনেক লোকালয় ও আপণবিশিষ্ট। সরকারী বাটা দ্বিতল এবং উত্তম। স্ত্রীলোকদিগের থাকিবার নিমিত্ত ইহার পশ্চা-দ্রাগে একটা স্বতন্ত্র অট্টালিকা আছে। আড্ডাতে প্রবেশ করি-বার পথে বাম ভাগে মহারাজার একটা মনোহর উপবন। ইহাতে নানাজাতীয় পুষ্পা, লেবু, ফল, তরকারি এবং বিবিধ তরু ও লতা প্রাপ্য। এই স্থানে চন্দ্রভাগা নদী পাহাড়ের মধ্য দিয়া গখন করিতেছে বলিয়া ইহার আকার এমন ভীবণ ও শব্দ এমন বধিরকর, যে, যাঁহারা পঞ্জাবের সমতল ভূমিতে ইহার দ্বির প্রকৃতি দেখিয়াছেন, তাঁহারা ইহাকে সেই চল্র-ভাগা বলিয়া সহসা বিশ্বাস করেন না। চন্দ্রভাগার গর্ভন্থ অনেক উপলথণ্ড সংগ্রহ করিয়া দেখা পিয়াছে, যে, তাহাতে স্বর্ণ ও রৌপ্য প্রভৃতি ধাতুর স্পান্ট নিদর্শন আছে। স্থতরাং সপ্রমাণ হইতেছে, যে, ইহাতে অনেক বহুমূল্য ধাতুর আকর গুপ্ত ভাবে থাকিতে পারে।

৭। রামবন হইতে রামস্থ—২০ মাইল।

এই পথ দ্ব্বাপেক্ষা দীর্ঘ, কিন্তু অতি তুর্গম নহে। ইহা হুগম ও তুর্গম উভধর্মাক্রান্ত। রামবনু পরিত্যাগ করিয়া অগভীর উতরাই দিয়া অবতরণ আবশ্যক। পরে সমভূমির উপুর উঠিয়া অর্দ্ধ মাইল गাইতে হয়। অনন্তর ছয় মাইল পর্যাস্ত পথটা চন্দ্রভাগার দক্ষিণ কূল ও অত্যুক্ত শ্লেটময় পাহাড়ের তল দিয়া গমন করিয়াছে। ইহা অতি স্থগম এবং অনুন্নত, এজন্য আপঙ্গানক নহে। পরে চারি মাইল পর্য্যস্ত উক্ত তটিনীর তট দিয়া যাইতে হয় বটে, কিন্তু পথটা স্থানে স্থানে তীর হইতে অদূরবর্তী এবং সামাত্য আরোহণ ও অবরোহণ বিশিষ্ট। তদনন্তর পথ উত্তুঙ্গ গিরিমালার গাত্র দিয়া গিয়াছে। ইহার চড়াই ও উতরাই অতি হুগম। ইহার मह्य मह्य इन्छ निष्म विभनं हो निष्न छोष् निर्नाट वक-গতিতে গমন করিতেছে। যতদূর গমন করা যায়, পদতলে বিশলড়ীকে প্রবাহিত দৃষ্ট হয়। রামস্থ হইতে ছয় মাইল দ্রে যাইয়া এই দদীগর্ভে নামিবার প্রয়োজন। ইহাতে বৃহৎ

রহৎ পাষাণ আছে এবং প্রকৃত পথ না থাকাতে ইহা অতি কটে অতি করে অতি করে হয়। কিয়দ্র যাইয়া তুইটা অতি হাদর ও রহৎ কালর—এক এক রহৎ পাষাণথণ্ড যে প্রকারে ইহাদের ছাদরূপে পরিণত হইয়াছে, তাহা দেখিলে অবাক্ হইতে হয়। মনুষ্য ও পাষাদি অতি হথে উহাদের অভ্যন্তরে বিশ্রাম করিয়া থাকে। অনন্তর তিন মাইল পর্যান্ত চড়াই ও উত্রাই অতি তুর্গম এবং ভ্রাবহ। পূর্ব্বে চড়াই সরল উচ্চ এবং তুরারোহ ছিল বলিয়া মহারাজা শৈলতল দিয়া নৃত্ন পথ প্রস্তুত করিয়া দিয়াছেন। এতদ্বারা চড়াই হুগম হইয়াছে বটে, কিন্তু উত্রাই বিশল্ডীর ঠিক কিনারা দিয়া গিয়াছে এবং কুটিল বলিয়া অতি আপজ্জনক। কিয়দ্র যাইয়া এক কাষ্ঠ-নির্মিত সেতু ঘারা উক্ত বিশল্ডী পার হইয়া অপর ভাগন্থ পাহাড়ের তলদেশে রামন্ত্র নামক আড্ডাতে উপনীত হইতে হয়।

রামস্থ কতিপয় আপা-সমন্বিত ক্ষুদ্র পল্লী। এখানকার সরকারী বাংলা নিন্দনীয় নহে।

৮। রামস্ इहेटल वन्हाल-१६ माहेल।

রামহ্ন প্রত্যাগ করিয়া এক অনুমত চড়াই। পরবর্তী পথ সামান্য আরোহণ ও অবরোহণ বিশিষ্ট এবং বিশলড়ী নদীর উপত্যকা দিয়া গিয়াছে। এই রূপে তিন মাইল পর্যান্ত যাইয়া এক কাষ্ঠ-সেতু দারা উক্ত নদী পার হওতঃ দক্ষিণ তটে যাইতে হয়। এক মাইল গমন করিলেই একটা চড়াই। ইহা প্রায় এক মাইল উচ্চ এবং হুগম। বিপরীত ভাগন্ধ উত্তরাই প্রায় এক দীঘ এবং হুগমা। অনন্তর বিশলড়ী পুনরায় অভি-

জ্রম করিয়া একটা কুটিল ও তুর্গম চড়াই আরোহণ করিতে হয়। উহা প্রায় দেড় মাইল দীর্ঘ এবং পাহাড়ের মধ্যদেশ দিয়া গিয়াছে বলিয়া নিতান্ত আপজ্জনক নহে। ইহার শিখর-দেশে এক অনতিবিস্তৃত অধিত্যকা আছে। এই অধিত্যকার উপরে উঠিয়া সম্মুথে আর একটা ভয়াবহ চড়াই দেখিতে পাওয়া যার। উহা অত্যুক্ত পর্বতমালার শৃঙ্গ দিয়া গিয়াছে এবং স্থানে স্থানে অতিশয় হুর্গম । অনন্তর পথ প্রশস্ত এবং স্থানে স্থানে অল্ল উচ্চ ও স্থানে স্থানে অল্ল নিম্ন হেতু স্থগম বটে, কিন্তু উত্তুস শৈলশিখরা গ্র দিয়া গমন করিয়াছে বলিয়া এবং দক্ষিণ ভাগে অতলম্পর্শ গভীরতা দেখিয়া হৃদয় কাঁপিয়া এইরূপে তিন মাইল পর্য্যন্ত গিয়া একটা অতি হুন্দর উৎস দেখিতে পাওয়া যায়। অনন্তর উতরাই আরম্ভ হয়। এই স্থানে বাইতে বাইতে বিপরীত গিরি-শ্রেণীতে যে জ্ঞী অতি রমণীয় রামধনু দেখিয়াছিলাম, এমন আর কুত্রাপি দেখি নাই। উহা সম্পূর্ণ অবয়ব বিশিষ্ট ও অতি দীর্দ এবং বোধ হইল, যেন শৈলেশ্বর নানাবর্ণে খচিত রত্নমুকুট শিরে ধারণ করিয়া শোভা পাইতেছেন। উক্ত উতরাই অতি স্থগম এবং তিন মাইল দীর্ঘ। পরে পুনরায় বিশল্ডী পার হইতে হয় এবং এক অনুন্নত চড়াই অতিক্রম করিয়া অতি স্থগম উতরাই দিয়া অবরোহণ করতঃ বন্হালে পৌছিতে হয়। এই উতরাই আদে িগ্রিতল দিয়া গমন পূর্বক উপত্যকার অভ্যন্তর ভেদ করিয়া গিয়াছে এবং তাহার মধ্য দেশ দিয়া বিশ্লড়ী শাম্য মূর্ত্তিতে প্রবাহিত হইতেছে।

বন্হাল একটা ক্ষুদ্র পল্লী। ইহার স্থাসিদ্ধ বাহকেরা

কাশ্মীরের হুর্গম পথের সম্যক্ উপযোগী। এক খণ্ড অত্যুক্ত ভূমিতে মহারাজার হুইটা উত্তম অট্টালিকা আছে।

»। वन्हान इरेटक टेवत्रनार्ग-: ध माहेल।

এইবার বিখ্যাত পীর পর্বত অতিক্রম পূর্বক কাশ্মীরের সমতল ভূমিতে পাদবিক্ষেপ করিতে হয়। বন্হাল হইতে ইহার তল পর্যান্ত প্রায় ৫ মাইল। এবং পথটা পূর্ব্বোক্ত পথের শেষভাগের তায় উপত্যকার মধ্য দিয়া গিয়াছে, এস্থলে বৃহৎ বৃহৎ পাষাণ আছে এবং বিশল্ডী নদী প্রবাহিত হই-তেছে। গিরিতলে কতিপয় লোকালয় এবং দোকান আছে। এই স্থলে পীরপর্বত সমুদ্রতল হইতে ৯,২০০ ফিট উচ্চ। ভ্রমণ-কারীদিগের স্মরণ রাখা উচিত, যে, যখন প্রবল বাত্যা বহিতে থাকে অথবা রৃষ্টি বা ভূষারপাত হয়, তথন পীর,পর্বত অতি-ক্রম করা অতি আপজ্জনক। কারণ. ইহার গাত্রে বা শি্থরে কোনো আশ্রয় স্থান নাই। ইহাতে উঠিবার যে পথে তকি-বাহকদিগের কুটীর চতুষ্টয় আছে, তাহা অতি তুর্গম এবং পালকী প্রভৃতি যান যাইবার উপযোগী নহে। ইহার শিথর-দেশ অতি উচ্চ বলিয়া সাধারণতঃ প্রবল বায়, বহিয়া থাকে। হুতরাং কটিকা বা রৃষ্টি ও নীহারপাত কালে অনেকে ইহাতে আরোহণ করিয়া অনেক কন্ট পাইরাছে; এমন কি, কেহ কেহ প্রাণও হারাইয়াছে। প্রভূাষে যখন আকাশমণ্ডল নির্মাল ও প্রকৃতি স্থিরা থাকে, ভখনই ইহাতে আরোহণ করা পরামর্শ-সিদ্ধ। ইহার চড়াই ৪॥০ মাইল দীর্ঘ। ইহাতে উঠিবার হুই পথ আছে। একটা ছুর্গম—তদ্বারা ভারবাহক ও মুমুষ্য এবং পশাদি গতায়াত করিয়া থাকে। অপরটা অপেকারত

.

অধিক হুগম—তাহাতে পালকী প্রভৃতি অনায়াসে গমন করিতে ় পারে। এই ছুই পথ ব্যতীত মহারাজা আর এক স্থাম্ পথ প্রস্তুত করিয়া দিতেছেন। এই পর্বতে একটীও মহীরুহ নাই, কেবলই ঘন শ্রামল দূর্বাদল এবং নানাবর্ণের ও নানা আকারের মনোহর পুষ্পরক্ষপুঞ্জ। কার্ত্তিক মাদের শেষে এখানে ভুষার পড়িতে আরম্ভ হয় এবং ক্রমে এত অধিক পরিমাণে পড়ে, যে, তৎসমুদয় নিঃশেষে দ্রব হইতে আবাঢ়ের প্রচণ্ড মার্ত্তিতাপ ও অবিরত বারিধারা আবশ্যক করে। ইহার শিথরদেশে স্ত্ত মেঘ বিচরণ করিয়া থাকে। শৃঙ্গোপরি আরোহণ করিলে মনে যেরূপ ভাবের উদয়হয়, তাহা প্রকৃতরূপে বর্ণনা করিবার শব্দ নাই। জম্পরিত্যাগ করিয়া অবধি কেবলই উত্থান ও পতন ভাবে আসিতে হইয়াছে; এতদিন কেবলই সঙ্কটময় গিরিমালা অতিক্রম করিতেছিলাম, অদ্য তাহার শেষ হইল। পূর্বের এইটী শৃঙ্গে আরোহণ করিলে অপরটী সম্মুখে উদিত হইয়া দৃষ্টিরোধ করিত এবং বোধ হইত সম্মুখস্থ গিরি উল্লঙ্খন क्रिलिहे चात এই ছুः मह পথ कर्छे मछ क्रिट हहेरव ना ; কিন্তু তত্নপরি গমন করিলে আবার আর একটা উপস্থিত হইয়া হৃদয় কাঁপাইয়া তুলিত —অদ্য সম্মুখে অপার সমতলভূমি ধৃ ধৃ করিতেছে—অএবর্ত্তী উতরাই দিয়া অবরোহণ করিলেই পাহাড়ভাক্সা শেষ হইল—সমতলভূমিতে পদচালনা করিয়া মস্তিফ স্থির হইবে—যে কাশ্মীর দর্শন করিবার জন্য এত কর্ষ্ট শহু করিয়া আদিলাম, অদ্য সেই কাশ্মীর সম্মুখে বিরা**জ** 'করিতেছে—ইত্যাকার নানাবিধ ভাব মানসপথে **উদয় হইয়া** অভ্তপূর্বৰ আনন্দে শরীর ও মন নাচিতে থাকে !

আবার, স্থান্টির কি রমণীয় শোভা! য়হু য়হু পবন-হিল্লোলে নবজলধর ক্রীড়াচ্ছলে আসিয়া আলিঙ্গন করিয়া চলিয়া গেল— যেন সেই প্রেমালিঙ্গনে সান্ত্বিকভাবের আবির্ভাব হইয়া শরীর কাঁপিতে লাগিল—পশ্চাতে, দক্ষিণে ও বামে শৈল-শ্রেণী যেন একটী আর একটীর গায়ে ঠেস দিয়া বিশ্রাম করিতেছে—সম্মুখে কাশ্মীর উপত্যকা যেন জলের উপরে ভাসিতেছে—জনপদ সমূহ উদ্যানের মত দেখাইতেছে—বিতন্তা নদী খেত উরগের মত পড়িয়া রহিয়াছে—উহার চারি দিকন্থ হিমালয়ের উত্তুঙ্গ শিথরনিচয় তুযারারত দেখিয়া বোধ হয়, যেন শুল্রকেশ তাপস-প্রবরেরা মলিন ও অজিনবেশে তরুরূপ লোমরাজি ও নিঝররূপ যজ্যোপবীত গলদেশে ধারণ পূর্বেক প্রশান্তিচিত্তেও একতানমনে প্রাণায়ম যোগাদি সাধন করিতেছেন—দেখিলে উল্লাসের সীমা থাকে না!

পীরের উতরাই প্রায় চারি মাইল দীর্ঘ। ইহা কির্ফিৎ
কুটিল ও ঢালু বটে, কিন্তু হুগম। গিরিতলে নামিয়া কিঞ্চিদ্
র
যাইয়া মহারাজার জগাৎ। অর্থাৎ এন্থলে মহারাজার বেতনভোগী কর্মচারীরা কাশ্মীরের প্রবেশার্থী ও বহির্গমনার্থীদিগের
রাহাধারী অর্থাৎ অনুমতিপত্র * পরীক্ষা করিয়া দেখে এবং
বাণিজ্যক্রব্যের শুল্ক সংগ্রহ করিয়া থাকে। এন্থান ইইতে
ন্যুনাধিক এক মাইল গেলেই বৈরনাগে উপস্থিত হওয়া যায়।
বৈরনাগ অতি মনোহর ওউৎকৃষ্ট ক্রেইব্য স্থান। কাশ্মীরের পূর্ব্ব

[&]quot; রাহাধারী সম্বন্ধে পুর্বে যাহা লিখিত হইয়াছে, তাহা স্কুদ্রিত হওকের পর মহার জা উহা উঠাইয়া দিয়াছেন। অতএব আমক মাত্রেরই পকে বিশেষ ব্রিষা হইয়াছে।

বিভাগ অধ্যায়ে ইহার বিশেষ বর্ণনা করিয়া পাঠকদিগের কোতৃ হল পরিতৃপ্ত করা যাইবে। এখানে অত্যুত্তম বাদগৃহ আছে।

্ ১ । বৈরনাগ হইতে অনস্ত্র-নাগ---১৬ মাইল।

এই পথ সমতল ভূমি ও ক্ষেত্রের উপর দিয়া গিয়াছে, স্থানাং অতি সরল ও স্থামা। কিন্তু রৃষ্টি হইয়া গেলে এরূপ কর্দমময় এবং চিক্রণ হইয়া উঠে, যে, পদ স্থির রাখা স্থক ঠিন। কিয়দ্র যাইয়া সাহাবাদ নামক জনপদ। এখানকার বাহ-কেরা বন্হালের আয় স্থবিখ্যাত, দৃঢ় এবং পার্বত্য পথের সম্যক্ উপযোগী। ইহার মধ্যদেশ ওচারি দিক দিয়া জলপ্রবাহ প্রবাহিত এবং গৃহাদি এরূপে নির্মিত, যে, সকলের নিম্নভাগ দিয়া জলধারা নিঃস্ত হইতেছে। স্থতরাং ইহা দেখিতে অতি স্থান । এম্বলেও মহারাজার উত্তম বাসগৃহ আছে।

শ বৈরনাগ হইতে ছয় মাইল দূরে কতিপয় অসংশ্লিষ্ট ক্ষুদ্র পাহাড় আছে। তদ্দনি মনোমধ্যে আশক্ষা হয়, যে, আবার বুঝি উত্থান ওপতন আসিল। কিন্তু পথ উহাদের তল-দেশ দিয়া গিয়াছে। এস্থান অতিক্রম করিয়া এক পল্লীর মধ্য দিয়া যাইতে হয়। এইরপে সম্তল ভূমির উপর দিয়া যাইয়া অনস্তনাগে উপনীত হওয়া যায়।

আনন্তনাগ উত্তম জনপদ। এখানে অত্যুংকৃষ্ট বাসস্থান আছে। বৈরনাগের ভায়ে ইহাও কাশ্মারের দ্রুষ্টব্য স্থানের মধ্যে গণনীয়। স্তরাং পূর্ববিভাগ পরিচ্ছেদে ইহারও সবি-শেষ বর্ণনা করা যাইবে। অনন্তনাগকে ইস্লামাবাদ বা খান্-বদও কহিয়া থাকে। কিন্তু প্রকৃত অর্থে, যেম্ছানে (ন্যুনাধিক এক মাইল দূরে) বিতস্তানদীতটে নৌকাদি অবস্থিতি করে, তাহাকেই খান্বল কহে।

১১। व्यनस्थान इरेट भागत-७ माहेल।

অনন্তনাগ ইইতে জীনগরে যাইবার ছুইটী পথ আছে। প্রথম স্থলপথ, দ্বিতীয় জলপথ। স্থলপথে ছুই আড্ডা। অনন্ত-নাগ ইইতে ন্যুনাধিক এক মাইল দূরে বিতস্তানদী প্রবাহিত ইইতেছে। পূর্বো উল্লেখ করা গিয়াছে, যে, যেস্থানে নৌকা থাকে, তাহাকে খান্বল কহে।

প্রায় সকলেই জলপথ দিয়া গমন করে। প্রভাত, এতদিন পাহাড় ভাঙ্গিয়া আসিয়া এবং কারাগাররূপ ঝাপান আরোহণ করিয়া যেরূপ দারুণ শারীরিক ও মানসিক কন্টে ব্যতিব্যস্ত হইতে হয়, তাহাতে কোন্ ব্যক্তি প্রতিপ্রস্ত্রচিত্তে পরম স্থাদায়ক নোকাযান অবলম্বন না করিহুব ? জলের ক্রান্ত বিদ্ধি অনুসারে অধিক রা অল্প সময়ের মধ্যে শ্রীনগরে উতীর্ণ হওয়া খায়। অর্থাৎ যদি নদী-জলের উচ্ছ্বাস থাকে, তাহা হইলে সন্ধ্যাকালে নোকারোহণ করিলে পর দিবস প্রভাবেই নির্দ্ধি স্থানে উপনীত হওয়া সম্ভব। নচেৎ জলের ব্রাসতা নিবন্ধন প্রতদপেক্ষা দীর্ঘকাল লাগে।

স্থল ও জলপথে যে সমৃদয় স্থান দৃষ্ট হইয়া থাকে, কাশ্মী-রের পূর্ব্ব বিভাগ বর্ণনা কালে তাহাদিগের উল্লেখ করা অভি-প্রেড, এজন্য এস্থলে আর লিপি-বাহুল্য করিলাম না।

২য়। ভিম্বর ও পীর পঞ্চাল পথ

এই পথ স্থগম্য। পূর্ব্বে মোগল সত্রাটেরা এই পথ দিয়া কাশীরে গতায়াত করিতেন।. একারণ ইহাকে বাদশাহী পথ কহে। ইহার সর্বাত্ত কতিপয় মাইল অন্তরে তাঁহাদিগের নিশ্মিত অত্যুৎকৃষ্ট সরাই অর্থাৎ পান্থশালার ভগ্নাবশেষ অন্যাপি দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে। বর্তুমান কাশ্মীরাধিপতি ইহার প্রতি আড়াতে উত্তম উত্তম বাদগৃহ নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন, এবং পর্য্যটকদিগের আহারীয় দ্রব্য ও যানবাহকাদির অভাব নিরাকরণার্থ কর্মচারী নিযুক্ত করিয়া রাখিয়াছেন এবং ग्रासु ग्रासु व्यक्षिक वारा देशत कीर्नभः कात्र कतिया थारकन। হিহার সমুদয় আড্ডাকোনো স্থানে অল্প এবং কোনো স্থানে বা অধিক লোকালয়ে পূর্ণ—কেবলমাত্র আলিয়াবাদসরাই নামক আড্ডা বন্হাল পথের বিলাওৎ স্থানের ন্যায় অতি নিস্কৃত ও জনশূন্য পর্ব্বতপ্রান্তে স্থিত। এই পথেও স্ঞ্রির শোভা অতি বিচিত্ৰ ও মনোমোহন।

এই পথে পর্বত অপেকা নদীই অধিক অতিক্রম করিতে হয় এবং প্রতি আড়াতে এক নদী অনেকবার—এমন কি, আট হইতে আটাইশবার পর্যান্তও পার হইতে হয়! পাক্ষিকগতিতে ভিন্নর হইতে শ্রীনগর ৮৬ মাইল। কিন্তু পার্বত্যপথের কৃটিলতানিবন্ধন ইহাদিগের পরস্পার দূরতা ১৪৮ মাইল জ্থাৎ প্রায় দিগুণ হইয়াছে।

পীর পঞ্চাল সমুদ্রতল হইতে ১১,৪০০ ফিট উচ্চ। কার্ত্তিক মাসের শেষে ইহাতে নীহারপাত আরম্ভ হইয়া ক্রমে এত অধিক পড়ে. যে, তৎসমুদয় বৈশাখমাসের শেষ ভিন্ন দ্রবীভূত, পরিদ্ধৃত এবং গতায়াতের উপযুক্ত হয় না।

লাহোর বা ভিন্নকটবর্ত্তী স্থান হইতে আসিতে হইলে এই
পথ অবলম্বন করা সর্বতোভাবে যুক্তিযুক্ত। লাহোর হইতে
শুজরাৎ ৭০ মাইল এবং ডাকগাড়ী দ্বারা প্রায় ১২ ঘন্টার পথ।
শুজরাৎ হইতে ভিম্বর ন্যুনাধিক ২৮ মাইল দূরবর্ত্তী এবং
পালকীডাক দ্বারা ৮ বা ১০ ঘন্টায় উপনীত হওয়া যায়।

ভিশ্বর পর্যান্ত পথ সমভূমির উপর দিয়া গিয়াছে। পরে উহা অতিক্রম পূর্বক অপরাপর পার্বত্য পথের ন্যায় হুর্গম ও কুটিল। ভিশ্বর উত্তম জ্বনপদ এবং কাশ্মীরাধিপতির রাজ্যের অন্তর্গত। ইহা ভিশ্বর নাল্লী নদীর দক্ষিণতটে স্থিত এবং উত্তর পূর্ববি ও পশ্চিম ভাগে অনুষত এবং নিবিড় তেরুরাজি সমষ্ট্রিত গিরিমালা দ্বারা পরিবেষ্টিত। ইহার মধ্যক্রলে মোগল সম্রাটিদিগের নির্মিত পান্থশালা এবং মহারাজা গোলাপ সিংহের ভ্রাতা মহারাজা ধ্যান সিংহ কর্তৃক নির্মিত হুর্গের ভ্রাবশেষ আছে। প্র্যাটকদিগের আবাসগৃহ হুইটী এবং ভাহা উত্তম প্রস্তরে রচিত।

১। ভिষর ছইতে टेममानाम-১৫ মাইল।

ভিম্বর অতিক্রম করিয়া নদী পার হইতে হয়। ইহা গভীর নহে এবং বালুকাপূর্ণ। স্থতরাং ইহার উপরে কোনো নেতু না থাকিলেও গতারাতের কফ নাই। অনস্তর কতিপয় ক্ষেত্রের উপর দিয়া গিয়া পুনরায় উক্ত্রুনদীগর্ভে পড়িতে

হয়। কিন্তু উহা এন্থলে বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তরময় বলিয়া অতি বিরক্তিজনক। উহাকে অফবার পার হইয়া বাম দিকে ্গমন করতঃ এক সংকীর্ণ ও উত্তম উপত্যকায় প্রবেশ করিতে হয়। সেম্বলে এক ক্ষুদ্র নিঝ বিণী প্রবাহিত হইতেছে। তাহাকেও ন্যুনাধিক দশবার অতিক্রম না করিলে আদিচক পর্বতের উচ্চদেশে উপস্থিত হৃওয়া যায় না। এই পথে এই পর্বতই হিমাচলের আদ্য সোপান বলিয়া ইহার নাম আদিচক অর্থাৎ প্রথম চড়াই হইয়াছে। ইহা প্রায় २॥॰ মাইল দীর্ঘ। প্রথম আরোহণ স্থগম, পরস্তু যত উর্দ্ধে উঠা যায়, ততই সরল উচ্চ, কুটিল এবং ছুর্গম। স্থানে স্থানে বালুকাময় এবং কোনো কোনো স্থানে এমন চিক্কণ ও বালুপাষাণ বিশিষ্ট, যে. পদ স্থির থাকে না। ইহার গাত্রে কতিপয় পাইন[#] এবং অপ-রাপর মহীরুহ আছে। ইহার শিখরে জগাং অর্থাৎ বাণিজ্য দ্রব্যের শুল্ক আদায় গৃহ এবং কয়েকটী কুটীর আছে। এস্থান হইতে স্ষ্ট্রির শোভা অতি রমণীয় দেখায়। ইহার উতরাই প্রায় এক মাইল দীর্ঘ, অতি কুটিল এবং স্থানে স্থানে অতি সংকীর্ণ ও তুর্গম। গিরিতল হইতে সৈদাবাদ প্রায় চারি মাইল। পথ আদৌ উচ্চ ও কর্ষিত ভূমির উপর দিয়া- এক বৃহৎ নিঝ রিণীর দক্ষিণ তটে গিয়া পড়িয়াছে। এম্বলে নদীগর্ভে কতিপয় গভীর ও প্রচুর মংস্থাবিশিষ্ট জলাশয় আছে। ইহাকে ছইবার অতিক্রম পূর্ব্বক কিয়দ্দুরে যাইয়া বাম ভাগে এক

^{*} ইহাকে এখানে চীড় কহে। কান্মীরের সমুদ্য পথের সর্পত্র পর্বতিগাতে ইহা অপর্যাপ্ত পরিমাণে ক্ষিয়া থাকে।

কুদ্র নিঝ রিণী পার হইতে হয়। অনস্তর কিছু দূর কেত্রের উপর দিয়া গিয়া সৈদাবাদে উপনীত হওয়া যায়।

দৈদাবাদ একটা ক্ষুদ্রপল্লী এবং অতি উর্বরা উপত্যকার মধ্যভাগে ও পার্বত্য নিঝ রিণীর দক্ষিণতটে স্থিত। এখান কার সরকারী বাংলা ছুইটা অতি উত্তম ও প্রস্তর নির্দ্মিত। ইহার নিকটে এক অতি প্রাচীন পাস্থশালার ভগাবশেষ আছে এবং ইহার উত্তর পূর্বিদিকে অল্লদূরে মোগল স্ফ্রাটদিগের নির্দ্মিত এক অত্যুংকৃষ্ট হর্ম্য আছে। ইহাকে দামানি সরাই কহে।

२। टेममावाम इरेट नाउटमात:-->२॥ • मारेल।

দৈদাবাদ পরিত্যাগ করিয়া পূর্ব্বোক্ত নদীতীর দিয়া অল্প দূর যাইতে হয়। পরে ঐ নদী অনেকবার পার হইয়া পথটা বক্রগতিতে ক্ষেত্রের উপর দিয়া গিয়াছে এবং কতিপয় নিম্ন পাহাড় অতিক্রম পূর্বক কামানগোশী নাইক পাহাড়ের তলাদেশ স্পর্শ করিয়াছে। এই পাহাড় দৈদাবাদ হইতে প্রায় ৫ মাইল দূরবর্তী। ইহা পূর্ব্বোক্ত আদিঢকের আয় উচ্চ ও দুর্গম নহে। ইহার চড়াই প্রায় এক মাইল। ইহারও শিথর হইতে নৈদর্গিক শোভা দর্শনে অনির্বাচনীয় প্রীতির উদয় হয়। এন্থলে গুজুর অর্থাৎ গোপদিগের কতিপয় কূটীর আছে। চড়াই অপেক্ষা উত্রাই অতি দীর্ঘ। কিন্তু ইহা অতি স্থগম—কেবল স্থানে স্থানে অসারল্য ও কাঠিত সহ্থ করিতে হয়। এই পাহাড়ের মূলদেশ হইতে প্রায় তিন মাইল সমতল ভূমির উপর দিয়া গিয়া নাওশেরা আড্ডাতে উপস্থিত হওয়া যায়।

নাওশেরা প্রস্তর নির্দ্মিত বৃহৎ জনপদ। যে তাবী নদী

জন্ম নগরীর পার্যদেশ দিয়া প্রবাহিত হইতেছে, ইহা দেই
নদীর তটে প্রায় ৩০০ ফিট দূরে স্থিত। এই নগরের মধ্যভাগে

ামোগলদিলের নির্মিত এক অত্যুত্তম সরাই আছে। কিন্তু জীর্ণসংস্কারাভাবে উহা ধ্বংস প্রাপ্ত হইতেছে। মহারাজার
প্রধান কর্মচারী ইহাতে বাস করেন। এখানেও প্র্যুটকদিগের
ছুইটী উত্তম বিশ্রামগৃহ আছে। উহা নগর হইতে কিয়ন্দুরে
বাউলীবাগ নামক বৃহং উপবনে স্থিত।

৩। নাওশেরা হইতে চংগস — ১ আ। মাইল।

নাওশেরা হইতে আরম্ভ হইয়া চংগদ পর্য্যন্ত তাবী নদীর গৰ্ম্ভ দিয়া যাইতে হয়। এন্থলে চুই পথ আছে। প্ৰথম পথ 'নদীগর্ভ দিয়া গিয়াছে, স্লতরাং বৃহৎ বৃহৎ পাষাণ বিশি**ষ্ট** বলিয়া অতি ক্লেশকর। কিন্তু ইহা দ্বিতীয়াপেক্ষা অনেক হ্রস্ব; একারণ ভারবাহক ও পদবাজকগণ ইহা দারা গমনাগমন করিয়া থাকে। দ্বিতীয় পথ (ইহাকে উপরিভাগস্থ পথ বা তীর-বর্ম বলাই সঙ্গত) উক্ত নদীর দক্ষিণ তট দিয়া গিয়াছে— কেবল কোনো কোনো অংশ নদী হইতে কিঞ্চিৎ দূর। ইহা ঝাঁপান ও অশ্ব পক্ষে সম্যক উপযোগী। প্রথমাপেকা ইহা অতি দীর্ঘ। নাওশেরা পরিত্যাগ করিয়া এই পথ দিয়া কিয়দ,র আদিয়া এক ক্ষুদ গিরিশৃঙ্গ অতিক্রম করিতে হয়। উহার আনুমানিক উচ্চতা ১০০ ফিট। অনন্তর একাদিক্রমে **এই** রূপ প্রায় দশটী শৃঙ্গু পার হইয়া আদিতে হয়। এখানকার পর্থ স্থানে স্থানে অতি চুর্গন। কিন্তু বাহ্য জগতের শোভা অতি বিচিত্র। চংগদের সমীপবর্তী স্থানে ছুইটা প্রাচীন

উৎকৃষ্ট হর্ম্যের অবশিষ্টাংশ আছে। উহা মোগল সাট্রাট-দিগের কৃত হইবে।

চংগদ প্রশস্ত অধিত্যকায় স্থিত এবং কতিপয় কুটীর বিশিষ্ট ক্ষুদ্র পল্লী। ইহার তুই শত ফিট দূরে তাবী নদী প্রবা-হিত হইতেছে। ভ্রমণকারীদিগের তুইটী উত্তম আবাসগৃহ আছে এবং তৎপশ্চাতে মোগলদিগের নির্ম্মিত একটী প্রাচীন পাছশাল। ভগ্লাবস্থায় রহিয়াছে। নিম্নদেশে তাবী নদী ভীষণ-নিনাদে ধাবিত, চারি দিকে অভেদ্য পর্বতমালা স্থদৃঢ় প্রাকারের আয় দণ্ডায়মান, এবং ন্যুনাধিক ৬০ মাইল দূরবর্তী পীর-শৈল শুভ্রবেশে নয়নপথে পতিত হইতেছে—ইত্যাকার মনোহর নৈস্গিক শোভা দর্শনে মন উল্লাসিত হয়।

ধ। চংগদ হইতে রাজ্যেড়ী--১३ মাইল।

পূর্ব্বাক্ত পথের ন্যায় ইহাও তারীনদার গর্ভবাহী এবং ছুই ভাগে বিভক্ত। নিম্ন অর্থাৎ নদীগর্ভক্ক পথ পূর্ব্বের ন্যায় কেবল পদব্রজে ভ্রমণের উপযোগী। দ্বিতীয় অর্থাৎ পুলিনবর্মা (যাহা ঝাঁপান ও অশ্বদিগের পক্ষে হুগম) উক্ত নদীর দক্ষিণ তট দিয়া গিয়া ন্যুনাধিক আটটী অনুমত গিরিশৃঙ্গ অতিক্রম ক্রিয়াছে। ইহার স্থানে স্থানে পথ অসরল এবং ক্লেটপ্রস্তর্বিশিষ্ট চিক্কণ। চংগদ হইতে ৬ মাইল দূরে কল্লর নামে এক ক্ষুদ্র পল্লী আছে। উহার প্রায় তিন মাইল দূরে আর একটী ক্ষুদ্র জনপদ। তাহার নাম মোরদপুর। এম্বলে ছই পুরাতন পান্থশালা আছে। রাজোড়ী হইতে ন্যুনাধিক আর্দ্ধ মাইল দূরে তারীনদা পার হইতে হয়। এম্বলে কোনো দেতু দাই। স্নতরাং নদার জল ও জল-বেগ রৃদ্ধি

হইলে উহার দক্ষিণ তট পরিত্যাগ না করিয়া ক্রমশঃ গমন
পূর্ববিক নগরে প্রবেশ করা পরামর্শসিদ্ধ।

নির্মিত, বর্দ্ধিষ্ণু ও বিশিষ্ট জনপদ। ইহা তাবী নদীর দক্ষিণতটে এবং কতিপয় অনুষত পাহাড়ের পার্যদেশে স্থিত। স্তত্রাং ইহা দূর হইতে দেখিতে অতি স্তন্দর। এসলে আলম্নোট অর্থাং পূর্বতন মুদলমান অধিপতিদিগের গোরস্থান, আমথাদ মোদাফেরখানা অর্থাং পার্শালা, রাজবাটী, মন্দির, বাজার প্রস্তৃতি কয়েকটী দুইবা স্থান আছে। রাজ্যোড়ীর পূর্বভাগে এক দিবদের পথে তুইটী গন্ধকমিশ্রিত উষ্ণ প্রস্তৃবন দৃষ্ট হয়।

নগরের বিপরীত ভাগে ও তাবীর বাম তটে পর্য্য কিদিগের

তিত্য বিশ্রামভবন আছে। ইহা উপবন মধ্যে স্থিত। মোগল

সমাটদিগের অধিকার কালে ইহা অতি রমণীয় ছিল, কিন্তু

এক্ষণে জীর্ণ-সংস্কারাভাবে ধ্বংস প্রাপ্ত হইতেছে। ইহার

সম্মুখস্থ সমতলভূমি স্তবিস্তৃত, ক্ষিজাত পূর্ণ এবং নৈস
তিকি শোভায় অতি রমণীয়। এস্থলে এক গিরিশৃঙ্গে মহারাজা

রণবীর সিংহ প্রস্তরের তুর্গ নির্মাণ করিয়াছেন।

৫। রাজোড়ী হইতে থবামওী--> ৪ মা**ইল**।

এই পথ সর্বাপেকা স্থাম ও জলময়। ইহাও তাবী নদীর
গর্জ দিয়া গমন করিয়াছে। অনন্ত্র যত অগ্রসর হওয়া যায়,
ততই দৃষ্ট হয়, যে, নদী ও উপত্যকা সংকীর্ণ হইয়া
আদিয়াছে এবং তুই পার্শ্ব গিরিমালা ক্রমশঃ উমত
হির্যাছে। অবশেষে রতনপীর নামক অত্যন্ত গিরিশৃঙ্গ সমা থে
দৃষ্টিগোচর হয়। রামপুর পরিত্যাগ করিয়া প্রায় অর্দ্ধ মাইল

দ্রে এক অতি প্রশস্ত নদী পার হইতে হয়। উহা অধিক গভীর নহে, কিন্তু উহার গর্ভন্থ পাষা। অতি ক্লেশদায়ক। অনন্তর পায় অর্দ্ধ মাইল আদিয়া ফতীপুর নামক ক্ষুদ্র পল্লী অতিক্রেম করতঃ নানাধিক তুই মাইল গমন করিলে হারসিংহের বাউলী (কুপ) নামক স্থানে যাওয়া যায়। এস্থলে কতিপয় দোকান আছে এবং স্থানটী রমণীয়। পরে চারি মাইল দ্রে লীড়া বাউলী। এখানে পথ নদী পরিত্যাগ করিয়া দূরে গমন করিয়াছে। কিন্তু থলামণ্ডী নামক স্থানের প্রবেশবারে ইহা পুনশ্মিলিত হইয়াছে এবং ইহা পার হইয়া উক্ত স্থানে প্রবেশ করিতে হয়।

থয়ামণ্ডী প্রস্তর নির্পাত ক্ষদ্র পল্লী। ইহা তাবীনদীর বাম তটে স্থিত এবং পঞ্জাব হইতে যে সমুদয় দ্রব্য গতায়াত করে, ইহা তংসমুদয়ের সংগ্রহ স্থান (ডিপো)। ন্দীর দক্ষিণ তটে দ্বিতল বিশ্রাম গৃহ আছে। ক্ষিন্ত তল্লিম্বতল ক্ষ্ম-যোগ্য নহে।

७। थन्नामखी इहेट वृत्रमर्गाला--> ।। महिल।

এই পথে রতনপীর শঙ্গ অতিক্রম করিতে হয়। থক্না
মণ্ডী হইন্ডে প্রায় অর্দ্ধ মাইল দূরে ব'ম ভাগে পুঞ্পথ গমন
কলিগতে। এ শন হইতে অজানাবাদ পল্লী পর্যন্তে তাবী
নদীকে অনেক বার, পার হইতে হয়। অনন্তর রতনপীর
পর্বতে আরোহণ করা আবশ্যক। ইহাতে আরোহণ অতি
স্থাম। ইহার শৃঙ্গ ৮,২০০ ফাট উচ্চ এবং থনামণ্ডী হইতে ৫
মাইল দূরবর্ত্তী। শিখরদেশে ক্তিপয় কুটীর আছে এবং
এক্থান হইতে প্রকৃতির শোভা কি পর্য রমণীয়। অব-

রোহণ অপেক্ষাকৃত তুর্গম। বিশেষতঃ তলদেশের সমীপবর্তী যে স্থলে কাষ্ঠ-নির্মিত সেতু দারা এক প্রণালী অতিক্রম ক্রিতে হয়, তথায় পথ অতান্ত চুরুহ।

় বরমগোলা ক্ষুদ্র পল্লী এবং পুঞাধিপতি রাজা মতি দিংহের রাজ্যের অন্তর্গত। ইহা ক্ষুদ্র ও উচ্চ অধিত্যকায় স্থিত এবং অত্যুক্ত পর্ববতমালায় বেস্টিত। ইহার পার্শ্ব দিয়া হুরন নদী (ইহাকে চিত্রপাণীও কহিয়া থাকে) প্রবাহিত হইতেছে। নদীর অপর তটে একটা অত্যুত্তম প্রস্তর নির্মিত প্রাচীন তুর্গ আছে। এখানকার বিশ্রাম গৃহ কর্দম নির্মিত, কিন্তু নিন্দনীয় নহে। জেহাঙ্গির বাদশাহ কাশ্মীর গমনকালে পক্ষাঘাত রে:গে এই স্থানে নশ্বর মানবদেহ পরিত্যাগ করেন। ^{*}কাথীর তাঁহার প্রিয়বাস ছিল। তিনি তথায় ত্রয়োদশ গ্রীষ্ম অনির্বাচনীয় ইন্দ্রিস্তুথে অতিবাহিত করেন। মৃত্যু-কাল্ল উপস্থিত হইলে তিনি এই অভিপ্রায় প্রকাশ করিয়া-ছিলেন, যে, যেন জীবদ্দশায় তাঁহার প্রিয়তম ক্রীড়া উপবন বৈরনাগে উপনীত হইতে পারেন। অথবা, যদি কৃতান্ত াহা একান্তই হইতে না দেয়, তবে অন্ততঃ তাঁহার দেহ যেন তথায় সমাধিস্থ করা হয়। কিন্তু তাঁহার মৃত্যু হইলে তাঁহার প্রাণী-ধিকা প্রিয়তমা বেগম নূরমহল তাঁহার কলেবর লাহেশ:রর বিপ্রীত ভাগস্থ ও রাবা নদীর তট্স্থ সাদেরা নামক স্থানে লইয়া যান এবং তথায় তাঁহার 'সারণার্থিক অতি মনোরম কবর-নির্মাণ পূর্বকে তংরক্ষক রূপে আপনিও অবিচ্ছেদে . তথায় বিংশতি বৎসর বাস করতঃ সেই স্থানেই প্রাণত্যাগ করেন। উক্ত সাদেরা অতি রমণীয় দেউবা স্থান।

কাশ্বীর-কুসুস

१ । वत्रमत्भाना इटेट (भानियाना-- मार्नेन ।

ব্রমগোলা পরিত্যাগ পূর্বক এক স্থগম চড়াই অতিক্রম করা আবশ্যক। উহা প্রায় এক শত হস্ত উচ্চ। অনন্তর চিত্রপাণী নদীর গর্ভে অবতরণ করিতে হয়। এম্বলে এক কুদ্র গ্রাম আছে, তাহার নাম চুন্নীমার। প্রায় পাঁচ মাইল পর্যান্ত ঐ নদীগর্ভ দিয়া গমন করিতে হয়। এই নদী অতি গভীর ও প্রশস্ত নহে। কিন্তু ইহার গর্ভ বৃহৎ বৃহৎ পাষাণে পরিপূর্ণ এবং বর্ধাকালে ইহার বেগ অতিশয় ভয়ানক হইয়া খাকে। ইহার উভয় পার্শ্বে গগনস্পশী গিরিমালা দণ্ডায়মান আছে। তাহাদিগের শিথরদেশে পার্বত্যলোকদিগের যে সমুদয় কুটীর ও কৃষিকর্মোপ্যোগী ক্ষেত্র আছে, তাহা দেখিলে অবাক্ হইতে হয়। নদ -গর্ভে যাইতে যাইতে পর্বতমালা এরপ দৃষ্টিরোধ করে, যে, বোধ হয়, আর বুঝি পুরে বুরী হইতে পারিলাম না। এই নদী এরপ বিক্র গতিতে প্রমন করিয়াছে, যে, একাদিক্রমে বার বার বহু সেতু দ্বার। পার **হই**য়া কথনো ইহার বাম তটে, কথনো বা দক্ষিণ তট দিয়া কুণ্ডলাকারে পরিভ্রমণ করিতে হয়! সন ১৮৬৯ খৃন্টাব্দের শেপ্টেম্বর মাদে আমরা উহাকে এই রূপে দ্বাবিংশতি বার অতিক্রম করি এবং অনেক সেতু প্রবল স্রোতে ভাসিয়া গিয়াছে; তাহার নিদর্শনও দেখিতে পাই। ডাক্তার ইন্স সাহেব সন্ ১৮৬৪ এবং ৬৫ খৃষ্টারেক এরপ অফবিংশতি বার পরিত্রীমণ করিয়াছিলেন। এ সমুদয় সেতু এ্রূপ নিকৃষ্ট, যে, পদভরে ছলিতে থাকে। স্থতরাং অন্যগতি অবস্থায় উহাদের উপর দিয়া যাইতে প্রাণ কাঁপিয়া উঠে।

পোশিয়ানা হইতে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ নিকটে নদী পরিত্যাগ করিয়া এক চড়াই চড়িতে হয়। ইহার প্রথমার্দ্ধ অতি বন্ধুর, ্কিস্তু শেয়ার্দ্ধ অপেক্ষাকৃত স্থগম।

করিবার জলযন্ত্র আছে। ঋতুর অবস্থানুসারে জলপ্রপাতের সংখ্যা ও সোন্দর্য্যের হ্রাস বৃদ্ধি হইয়া থাকে। ন্যুনাধিক পঞ্চাশ হস্ত উর্দ্ধ হইতে হ্রন্ধকেণনিত জল বিচিত্রাকারে পতিত হইয়া যেরূপ রমণীয় দৃশ্য দেখায়, তাহা প্রকাশ করিবার শব্দ নাই। সর্বাপেক্ষা তিনটা অতি মনোহর। প্রথমটা বরম্বালা পরিত্যাগ করিয়া নদা-গর্ভে প্রবেশস্থলে। ইহাকে নূরী-চশম অর্থাৎ আলোকময় জলপ্রপাত কহে। দ্বিতীয়টা নদা
ত্র্বাত্তের মধ্য পথে এবং নদীর বাম তটে। তৃতীয়টা নদাগর্ভের পথপ্রান্তে এবং নদীর দক্ষিণ তটে।

্কু পোশিয়ানা অতি ক্ষুদ্র পল্লী এবং পর্ব্বতের গাত্তে স্থিত। এখানকার বিশ্রাম-ভবন উপাদেয় নহে।

৮। (পाणियाना इरेटक व्यालियानाम मतारे-->> गारेल।

এই বারে বিখ্যাত পীর পঞ্জাল শৃঙ্গ অতিক্রম করিতে
হইবে। পোশিয়ানা ত্যাগ করিয়া কিয়দ্র পর্ব্রতের গাত্র
দিয়া অসরল উতরাই দ্বারা অবতরণ করিতে হয়। অনন্তর
চিত্রপাণী নদাকে আর একবার পার হইয়া এক সংকীণ্উপত্যকায় উপনীত হওয়া যায়। ইহা অতিক্রম করিলেই পীর পঞ্জালের তলদেশে পাদবিক্ষেপ করিতে হয়। পীন্ন, সমুদ্র তল
হইতে ১১,৪০০ ফাট উচ্চ। ইহার গাত্রে স্পাকৃতি প্রথ
পড়িয়া আছে, দূর হইতে দেখিলে যেরূপ তুরারোহ বলিয়া

হুৎকম্প উপস্থিত হয়, প্রত্যুত উহা সেরূপ তুর্গম নহে। ইহার স্থানে হানে প্রস্তর নির্মিত গৃহাদির ভগ্নাবশেষ আছে। প্রবল ঝটিকা ও রৃষ্টিপতন কালে নিরাশ্রয় পথিকদিগের আশ্রয় জন্ম মোগল সমাটেরা উহা নিশ্মাণ করিয়া দিয়াছিলেন। গিরিশিখরে উঠিতে প্রায় তিন ঘণ্টা লাগে। বন্হাল পথের পীর পাহাড় আরোহ। কালে পর্যাটকদিগকে যে উপদেশ দেওয়া গিয়াছে এবং নীহার পথের বর্ণনা করা হইয়াছে, তৎসমুদয় এফলে প্রয়োগণীল। * এ স্থান হইতেও স্প্তির শোভা অতি বিচিত্র দেখায়। আকাশ নির্মাল থাকিলে প্রায় ১৩০ মাইল দূরবত্তী লাহোর নগরের অত্যুক্ত মীনার অর্থাৎ তুর্য প্রভৃতির সৌধশিথর দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু বন্হালের পীর শৃঙ্গের উপর উঠিলে সম্মুখে সমতল ভূমি দেখিয়া পাহাড় ভাঙ্গা শেষ হইল বলিয়া এবং কাশ্মীর প্রদেশের সৌন্দর্য্যসমূষ্টি এককালে নয়ন পথে পতিত ভাবিয়া মনে যৈরূপ অভূতপুর্যব আনন্দের উদয় হইয়া থাকে, এম্বলে সেরপে হয় না। এথানে অনন্ত পর্বাত-মালা দৃষ্টিরোধ পূর্ববক অধিকতর ভয় প্রদর্শনই করিয়া থাকে। শিথরদেশ হইতে প্রায় পাঁচ মাইল যাইলে আলিয়াবাদ সরাইতে উপনীত হওয়া যায়। এখানকার পথ অতি স্থগম।

আলিয়াবাদ সরাই বাদশাহদিগের দ্বারা নির্শ্বিত। এক্ষণে ইহার ভগ্নাবশেষমাত্র আছে। ইহা পর্ববিত পরিবেষ্টিত অতি নিভ্ত প্রদেশে স্থিত। শীতকালে ইহা তুষারে প্রোথিত হুইয়া যায়। এছলে ছুই একথানি সামান্য দোকান ব্যতীত আর কিছুই নাই।

৯। আলিয়াবাদ সরাই ছইতে ছীরপুর-->২ মাইল।

. এই পথ হলম। ইহার প্রথমার্দ্ধ হুগম আরোহণ ও অব-রোহণ বিশিষ্ট এবং পথটা পর্বতের গাত্র (তল ও শিরো-দেশের মধ্য ভাগ) দিয়া গমন করিয়াছে। ইহার দক্ষিণ পার্ম্ব দিয়া সহত্র সহত্র হস্ত নীচে রেমবিয়ারা নাম্মী নদী ভীষণ বেগে প্রবাহিত। ইইতেছে। এই অংশের কোনো কোনো হল অসরল। কিন্তু উহার একটাও অভ্যুক্ত এবং ভুগম নহে। এই পথের অপরার্দ্ধ উক্ত নদী তট দিয়া গমন করিয়াছে এবং অতি হুগম।

যে পথ আলিয়াবাদ সরাই হইতে প্রায় ছই মাইল পর্যান্ত পর্বাতের ভীষণ পার্ম দিয়া গমন করিয়াছে, সেই পথ হাইতে নিম্নদিকে দৃষ্টিপাত করিলে মস্তক ঘুরিতে থাকে এবং পর্যান্টকদিগের পদশ্বলিত হইলে ঘোর হৃদয়-বিদারক বিপদ ঘটিবার সম্ভাবনা; তরিরাকরণ জন্ম তথায় প্রাচীর নির্মিত হইন্য়াছে। তাহাকে "লাল গোলাম" কহে। পূর্ব্বে যংকালে এই স্থানেএই প্রাচীর নির্মিত হয় নাই, তথন যে সমুদয় বিপদপাৎ হয়া গিয়াছে, তাহা শুনিলে অদ্যাপি হৃৎকম্প হয়। অজ্ঞ লোকে সেই সকল ছর্বটনার একটী অপদেব কারণ নির্দেশ পূর্বক কহিয়া থাকে, য়ে পূর্বের্ব এই স্থানে লাল গোলাম নামে এক নরমাংসলোলুপ দৈত্য বাস করিত। সে প্থিক দিগকে নীচে ফেলিয়া দিত এবং প্রাণসংহার পূর্বক এবং তাহাদিগের মৃতদেহে আপন উদর পূর্ত্তি করিত। এ স্থান হইতে প্রায় এক

220

মাইল দুরে এক মানমন্দির অর্থাৎ বৈজ্ঞানিক বা জ্যোতিষিক উচ্চন্তম্ভ কর্ছে। কিয়দ বে গমন করিয়া দক্ষিণপার্থে ও নদীর অপর তটে সাহকোট নামে এক প্রাচীন ছুর্গ দেখিতে পাওয়া যাই। অনন্তর এক অসরল পথ দিয়া স্থক সরাই নামক এক ভগ্রহর্ণ্যে উত্তীর্ণ হইতে হয়। এন্থান হইতে হীরপুর নানাধিক পাঁচ মাইল এবং তদ্বর্জু রেম্বিয়ারা নদী গর্ভ দিয়া গমন করিয়াছে। তিনটী অতি সামান্য কার্চ-নির্দ্ধিত সেতু দারা এই নদী তিন বার অতিক্রম করিতে হয়। এখানকার পথ অতি স্থাম।

হীরপুর রেম্বিয়ারা নদীর দক্ষিণ তটে স্থিত এবং একটী ক্ষুদ্র পল্লী মাত্র। এখানকার বিশ্রাম ভবন মোগলসম্রাটদিগের নির্ম্মিত মনোহর হর্ম্ম্যের ভগ্নাবশেষ মাত্র।

১০। হীরপুর হইতে শোপিয়ান-৮ মাইল।

এই পথ যেমন অনতিদীর্ঘ, তেমনি ষ্ট্রগম। ইহা প্রায় পূর্বোক্ত রেমবিয়ারা নদীর দক্ষিণ তট দিয়াই গিয়াছে। হীরপুর হইতে কিয়দ,র গমন করিলেই কাশ্মীর এবং উহার উত্তর প্রান্তস্থ তুসার মণ্ডিত অত্যুক্ত পর্বতি-মালা নয়ন পথে পতিত হইয়া অতুল আনন্দ উৎপাদন করে।

শোপিয়ান একটা বিশিষ্ট জনপদ। এস্থানে ছুইটা উত্তম বিশ্রাম ভবন আছে। পরস্ত এম্বলে বিশ্রাম না করিয়া এক দিবসে হীরপুর হইতে রামু স্থানায়াসে যাইতে পারা যায়।

১১। শোপিয়ান হইতে রামু---১১ মাইল।

এই পথও অতি স্থগম। শোপিয়ান পরিত্যাগ করিয়া । প্রায় তিন মাইল আসিলে উক্ত রেমবিয়ারা নদী পুনর্বার পার হওয়া সাবশ্যক। অনন্তর কিয়দ্র আদিয়া ঘন তরুরাজী সমন্বিত কতিপয় গিরিমালার তলদেশে নামিয়া এক প্রাতন ভিয়ারৎ অর্থাৎ গোরস্থান পাওয়া য়ায় এব' এক প্রাতন পাছ-শালা অতিক্রম করিয়া এক জন্মলের মধ্য দিয়া গমন করিতে হয়। এসান হইতে প্রায় এই মাইল পরে রাম্চ নামে এক ক্ষুদ্র নদী পার হইয়া কিয়দ্র আদিয়া এক প্রাচীন ধর্মালা অর্থাৎ পাছ-শালা দেখিতে পাওয়া য়ায়। এয়ানে পর্যাটক-দিগের উপযোগী এক গৃহ আছে। তথা হইতে রামস্থ প্রায় অর্জ মাইল।

রামস্ত ক্ষুদ্র জনপদ। এখানকার বিশ্রাম গৃহ দ্বিতল, কাষ্ঠ-নির্মিত এবং উত্তম।

১> । तामू इदेए जीनगढ़—५৮ माहेल ।

ূএই পথ সর্বাপেক্ষা স্থান্য এবং ইহা সমতল ভূমির উপরে দিয়া গিয়া ছ। রাম্ হইতে ন্যুনাধিক ৬ মাইল আসিয়া খানপুর নামে এক পল্লী। এস্থানে এক প্রাচীন পান্থশালা আছে। ইহা হইতে প্রায় ৫ মাইল দূরে ওয়াতর নামে অপর এক পল্লী। তথায় পদমের অভ্যতম মোজা ও দস্তানা প্রভৃতি প্রস্তুত হইয়া থাকে। সেন্থান হইতে শ্রীনগত্তন্য পার্শে প্রাইল। পথ প্রায় ৮ হস্ত প্রশস্ত এবং ইহার উভয় পার্শে সরলোচ্চ সফেলাগ্রেণী থাকাতে অতি রুমণীয়।

শ্রীনগরের প্রবেশ দ্বারে এবং পথের বাম ভাগে রামবাগ নামে এক উপবন। এখানে প্রাচীর পরিবেষ্টিত মন্দিরে মহারাজা গোলাপ সিংহের ভম্ম রক্ষিত আছে। তাঁহার পরলোক প্রাপ্তি হইলে এই স্থানে তাঁহার দাহ হইয়াছিল V.

এবং সেই অবধি রাজবাটীর কাহারো মৃত্যু হুইলে এই স্থানেই দাহকার্য্য সমাধা করা হয়। ১৮৭৩ খৃষ্টাব্দে বর্ত্তমান জ্যেষ্ঠ রাজপুত্রের প্রধানা মহিষী বসন্তরোগে প্রাণত্যাগ করিলে তাঁহার অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়া এই স্থানেই হইয়াছিল। ইহার পার্শ্ব দিয়া বিতন্তা নদীর এক শাখা (তুধ গঙ্গা) প্রবাহিতা হই-তেছে। কিয়দ্ধরে আসিয়া দক্ষিণ ভাগে মহারাজার বোটা-নিকেল গার্ডেন্ অর্থাং কৃষি উদ্ভিক্ত সম্বন্ধীয় উপবন। বাবু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায় মহ শয়ের প্রয়ত্ত্বে ইহা স্থাপিত হইয়াছে এবং দিন দিন ইহার উন্নতি হইতেছে। যে রেসমের উন্ন-তির জন্য উক্ত বাবুজীর নাম জগদিখাতে হইয়াছে এবং যাহার ক্রমশঃ শ্রীবৃদ্ধিতে কাশ্মীরীদিগের অবস্থা পরিবর্ত্তিত হওনের সম্ভাবনা, সেই রেসমের কারগানা (এই কারগানাে হপ্ত-চেনার কহে) উক্ত উপবনের বিপরীত ভাগে অর্থাৎ পথের বামভাগে স্থিত। ইহা অতিক্রম পুরুবিক সম্মুখফ যুৌু মন দূর্ব্বাদল প্রিত ক্ষেত্রের উপর দিয়া গমন করিতে হয়, উহাকে " ছোটা প্যারেড্" অর্থাৎ ক্ষুদ্র-দৈন্য-প্রদর্শন ক্ষেত্র কহে। ইহার বাম ভাগ দিয়া যে পথ গিয়াছে, তদ্বারা গমন করিলে সেরগড়ী অর্থাৎ রাজবাটীতে উপনীত হওয়া যায়। ইহার দকিণ পাখে যে উপবন আছে, তাহার নাম ভ্জুরিবাগ। ইহার সন্নিকটন্থ নদীতটে সূরকারী ঔষধালয় স্থাপিত আছে। এই ক্ষেত্র পার হইয়া কিয়দ,র গমন করিলে মারাকদল **দেখিতে পাওয়া** যায়। পর্য্যটক কাশ্মীরে প্রবেশ ক্রিয়া স্বেচ্ছামতে ইহা অবলম্বন করিতে পারেন।

তৃতীয়। ভিষর ও পুঞ্চপথ

লাহোর এবং তন্নিকটবর্ত্তী স্থান হইতে আসিতে হইলে এই পথও প্রশস্ত। কিন্তু বন্হাল পথের ভায় ইহা অতি তুর্গা,। বিশেষতঃ কেইটা হইতে উড়ী আজ্ঞা পর্যান্ত অতি-শয় তুর্গম। ইহা কোনো কালে বরফে বন্ধ হইয়া যায় না। স্তুরাং কার্ত্তিক মাদের প্রারম্ভ হইতে কৈশাগের শেষ পর্য্যন্ত যথন পীরপঞ্জাল পথ তুষারজন্য অগমনীয় হইয়া উঠে, তথন এই পথ দিয়া গতায়াত করা পরামর্শসিদ্ধ। ভিম্বর হইতে থিয়ামণ্ডী নামক আড্ডা অতিক্ৰম পূৰ্ব্বক প্ৰায় **অৰ্দ্ধ ক্ৰোশ** আদিয়া বামদিণে এই পথ প্রাপ্তব্য। রতনপীর ও হাজীপীর নাম্কু ছুই পর্নতের মধ্য ভাগস্থ রাজ্য পুঞাধিপতি রাজা মতিদিংহের শাসনাধীন। ইনি মহারাজা গোলাব সিংহের জ্যেষ্ঠ ভ্রাত। রাজা ধ্যান সিংহের কনিষ্ঠ পুত্র। ধ্যান সিংহের মৃত্যুর পর গোলাপ দিংহ আপনার এই রাজ্যাংশের স্বন্থ ত্যাগ পূর্ব্বক তাঁহাকে ইহার শাসনকর্ত্তা করিয়া দেন এই কিও পর্যটকদিগের স্বিশেষ তত্ত্বাবধারণ করিয়া থাকেন এবং আপন রাজ্যের সমুদায় আডোতে উত্তম বিশ্রামগৃহ ও উপাদেয় দ্রব্যাদি আয়োজন করিয়া রখেন।

৬ । * থনামণ্ডী হইতে হ্রন্—১৬ মাইল।
 থনামণ্ডী হইতে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ আদিয়া এই পথ
 ইহার পূর্মবর্জী পাচ আড্ডার ব্রাস্ত (ভিষর হলতে গ্রামণা বিত্তীয়

ইহার পূর্মবর্তী পাচ আবাড্ডার ব্রাস্ত (ভিষর স্বন্ত থঘানকা বিত্তীয় পথ বর্নায় লিখিত ইইয়াছে ;

বাম দিগে গমন করিয়াছে এবং পীরপঞ্জান পথ দক্ষিণ দিকে গিয়াছে। কিয়দ্র যাইয়া রতনপীরে উঠিতে হয়। ইহার চড়াই ও উতরাই [`] হুর্গম নহে। পরবর্তী পথ অতি গভীর ও সংকীর্ণ ফান দিয়া গিয়াছে। ইহার উভয় পাথে অতি বিজন অরণ্যময়। ইহার প্রান্ত ভাগে এক ক্ষুদ্র নিঝ রিণীকে অনেকবার অতিক্রম করিতে হয়। পরে স্বরন্নদীর গর্ভে প্রবেশ করা আবশ্যক। এইনদা এই স্থানে ন্যুনাধিক তিন শত হস্ত প্রশস্ত এবং ইহার উভয় পার্শ্বে সরল ও অত্যুক্ত পর্বতমালা দণ্ডায়মান। উত্তর ভাগস্থ গিরিশ্রেণী অবিরল তরুরাজিপূর্ণ এবং দক্ষিণ ভাগের শৈলমাল৷ পরম শোভায়মান দূর্ব্বাদলাচ্ছন্ন। নদীগর্ভে প্রবেশ করিয়া প্রথমেই নদী পার হইতে হয়। ইহাতে একটাও সেতৃ নাই। কিন্তু জলোচ্ছু বুল না হইলে পার হওয়া ভয়ের বিষয় নহে। কিয়দূরে বিফ্রিয়াজ নামক পল্লা। ইহা পর্কাতের গাত্রে স্ক্রিচ বলিয়া দূর হুইতে অতি স্থন্দর দেখায়। অনন্তর অবশিষ্ট পথ উক্ত নদী-গর্ভ দিয়। গমন করিয়াছে। ইহা সাধারণতঃ অতি সরল ও সমতল, একারণ অতি হুগম। কেবল নদীর জল রৃদ্ধি হইলেই কিঞ্ছিৎ উদ্ধিদেশ দিয়া গমন করিতে হয়। পথ প্রথমে চারি মাইল পর্য্যন্ত নদীর দক্ষিণ তট দিয়া গিয়াছে। পরে স্থরণের প্রায় সাৰ্দ্ধ তুই মাইল থাকিতে ইহাকে পদব্ৰজে পার হইয়া ইহার বাম তট দিয়া যাইতে হয় '।

স্থরন্ একটা ক্ষুদ্র পল্লী এবং স্থরন্নদীর বাম তটে স্থিত। এখানে পথিকদিগের বিশ্রামের জন্ম মৃত্তিকা ও প্রস্তারের। গৃহ আছে।

काम्बीत-कृत्रम।

१। खुतन स्टेट्ड शूक-58 माहेल।

তাই পথও অতি হুগম এবং হ্রন নদীর গর্ভবাহী।
হ্রন পল্লী পরিত্যাগ করিয়া প্রথমে এই নদী পার হইতে
হয়। এছলেও কোনো দেতু নাই। পরে উক্তনদীর দক্ষিণ
তট দিয়াই পথ। এ পথ দর্বত্রই দরল ও দমতল, হানে
হানে সামান্য অরণ্যময়, শেষ. ভাগের অধিকাংশই শহ্যক্ষেত্রের মধ্য দিয়া গমনশীল এবং মধ্যে মধ্যে উত্তম উৎস
দ্বারা সজ্জিত ও প্রান্তিহর। মধ্য পথে এক রহং নিবারিণী
উল্লজ্মন করিতে হয়। ইহার অঙ্গ হইতে যে এক উপপথ
গিয়াছে, তদ্বারা চারি আড্ডা যাইয়া হ্পপ্রসিদ্ধ ও অতি মনোহর গুলমর্গ নামক স্থানে উপনীত হওয়া যায়। ষষ্ঠ পরিচেছদের দ্বিতীয় অংশে ইহার বর্ণনা করা যাইবে। পুঞ্ নগরটী
রাজা,মতি সিংহের রাজধানী এবং উত্তম জনপদ। ইহা অতি
বিজ্বত অধিত্যকায় হিত এবং হ্রন বা লেয়ার নদী ইহার
পার্ম দিয়া প্রবাহিত হইতেছে। ইহার চতুঃপার্ম ই গিরি-সঙ্কুল্ব
বলিয়া স্থানটী অতি রমণীয়। এখানকার বিশ্রামভ্বন উৎকৃষ্ট।

৮। পুक रेंदेए (कच्छी-- अ मादेल।

এই পথও অতি স্থাম। প্রথমে নদীগর্ভ দিয়া গমন করিতে হয়। পরে শনৈঃ শনৈঃ উচ্চ ভূমি আরোহণ করিয়া প্রায় দেড় মাইল শস্তক্ষেত্রমধ্য দিয়া গিয়া পুনরায় নদীগর্ভ্তেই অবতরণীয়। ন্যাধিক এক মাইল বালুময় নদীগর্ভ্ত দিয়া যাইয়া নদী অতিক্রমা পূর্বক ইহার বামতটে আরোহণ করিতে হয়। এই চড়াই অতি দীর্ঘ নহে, কিন্তু কিয়ং পরিমাণে তুর্গম্য বটে। অনস্তর দেইগোয়ার নামক এক ক্ষুদ্রে পল্লী। তথা হইতে

কিয়দ,র যাইয়া পুনরায় নদীগর্ভে অবতরণ আবশ্যক। পরে প্রায় চারি মাইল পর্যান্ত সমতল ভূমির উপর দিয়া গিয়া চারি বা পাঁচ বার নদী পার হইতে হয়। অনন্তর নদী পরিত্যাগ করিয়া ইহার দক্ষিণতটে অবরোহণ পূর্বক কিয়দ,র যাইয়া কেহুটা পল্লীতে উপস্থিত হওয়া যায়।

কেহুটা অতি ক্ষুদ্র পল্লী। এথানকার বিশ্রামভ্বন কেবল মাত্র একটা গৃহ। কিন্তু তাহার চারিদিকে বারাণ্ডা আছে এবং তাহার অধিষ্ঠান স্থানটা অতি মনোহর।

৯। (क्छ्री इट्टंड व्यानियायाम-- प्राहेन।

এই পথ তুর্গম। প্রথমে সরল চড়াই দারা এক গিরিশৃদ্ধে আরোহণ করিতে হয়। পরে বামদিকে প্রভাবেত্ত হইয়া পর্বি-তের পাশ্ব দিয়া গমনীয়। ইহার কোনো কোনো স্থানে উভয় পাশ্বে অত্যুক্ত গিরিমালা থাকাতে পথ অতি সংকাণ। ক্লানন্ত অনতিদীর্ঘ উতরাই দিয়া এক নিঝারিণীতে নামিতে হয়। ইহার গর্ভ রহৎ রহৎ প্রস্তর্যন্তে পরিপূর্ণ। ইহা পার হইয়া বামতটে পথ। অনন্তর যদিও অবশিষ্ট পথের অধিকাংশ শীস্তক্ষেত্রমধ্য দিয়া গমন করিয়াছে, তথাপি উহা স্থানে শানি অতি অসরল ও তুর্গম। পরে আলিয়াবাদের যতই নিকটবর্তী হওয়া যায়, ততই উপত্যকা ও নিঝারিণী সংকীণ এবং পাশ্ব গিরিমালা উত্রোভর উচ্চ ও ভীষণ-মূর্ত্তি। অগ্র-বর্তী পথ হাজীপীর ভূধরের উপর স্পাকারে পড়িয়া আছে।

আলিয়াবাদ অতি ক্ষুদ্র পল্লী। কিন্তু বিশ্রামগৃহ নিতান্ত নিন্দনীয় নহে।

· ১ • । व्यालियायाम इटें एक हो देखायाम-- श सहल ।

পই পথে হাজীপীর শৃঙ্গ অতিক্রম করিতে হয়। ইহা
সমুদ্রতল হইতে ৮,৫০০ ফিট উচ্চ। এই পথের প্রথমার্দ্ধে
আরোহণ এবং অপরার্দ্ধে অবরোহণ। আরোহণ সাধারণতঃ
অতি স্থগম, কেবল স্থানে স্থানে কিঞ্চিৎ অসরল ও তুরারোহ।
আরোহণ পথে কোনো রক্ষ নাই। শৃঙ্গদেশে জনৈক ফকিরের
প্রস্তরনির্দ্ধিত আশ্রম আছে। এই শেখর তৃণাচ্ছাদিত এবং
কিয়দ্দ্র পর্যান্ত সমভূমি। অনন্তর যতই নিম্নে অবতরণ করা
যায়, ততই পথ কঠিন ও তুর্গম এবং স্থানে স্থানে এমন
অসরল, যে, প্রকৃত পথই নাই—অতি কক্টে অবরোহণ
করিতে হয়। শিখরদেশ হইতে কিয়দ্রে আসিয়া এক উত্তম
উৎস ও প্রাচীন স্থানিরের কয়েকটী ভগ্ন স্তম্ভ দেখিতে পাওয়া
যায়। এই গিরির তল্পেশে একটী নির্মারিণী প্রবাহিতা হইতেছে। ইহা পার হইয়া হাইদ্রোদ্যে উপনীত হইতে হয়।

হাইদ্রাবাদ অতি ক্ষুদ্র পল্লী এবং কাশ্মীর রাজ্যে **স্থিত।** এখানে চুইটী উত্তম বিশ্রামভবন আছে।

১১। हारेखावाम रस्ट छेड़ी-->० मारेन।

এই পথ সর্বাপেক্ষা তুর্গম। ইহাতে কেবলমাক্র অপরিমিত চড়াই উত্তরাই। তাহাদের মধ্যে কতকগুলি যেমন দীর্ঘ,
তেমনি তুর্গম। হাইদ্রাবাদ পরিত্যাগ করিয়া প্রায় আর্দ্ধ
ক্রোশ পরিমিত এক চড়াই। অনন্তর এক হুগম উত্তরাই।
পরে এক নির্মারিণী পার হইয়া অপর এক চড়াই চড়িতে
হয়। ইহার প্রথমাংশ হুগম, কিন্তু শেষভাগ অপেকারুত
অসরল। পরে এক অতি দীর্ঘ ও তুর্গম উত্তরাই। ইংার অধি-

কাংশই অতিশয় বন্ধুর ও সংকীর্ণ। কিন্তু তলদেশে একটা অতি উৎকৃষ্ট জলপ্রপাত আছে। উহা যেমনি অত্যুক্ত স্থান হইতে পতনশীল, তেমনি আয়তনে রুহ্ছ। স্নতরাং দেখিতে বিস্ময়কর ও মনোহর। অনন্তর আবার কিছু উদ্ধে উঠিয়া পথটী কতিপয় ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ছুর্গম আরোহণ বিশিষ্ট হইয়া তলা-বারী নান্নী ক্ষুদ্র পল্লীতে গিয়াছে। এই পল্লী হাইদ্রাবাদ হইতে ন্যুনাধিক ছয় মাইল হইবে। এস্থান হইতে কিয়দুর সম-তল ভূমির উপর দিয়া গিয়া একটা চড়াই পাওয়া যায়। ইহা যেমনি সরলোচ্চ ও বন্ধুর, তেমনি সংকীর্ণ এবং দৈর্ঘ্যে প্রায় অর্দ্ধ মাইল । ইহারি সদৃশ এক তুর্গম উত্রাই দিয়া ইহা হইতে নামিতে হয়। পরে কিয়দ্র সরল পথ দিয়া যাইয়া এক ক্ষুদ্র নদী পার হওয়া আবশ্যক। অনন্তর কতিপয় মাইল শস্ত-ক্ষেত্রোপরি গমন করতঃ পথটা উড়ী জনপুদের নিকটবর্তী হইয়া কাশ্মীরের চতুর্থ অর্থাৎ সরী পথের সহিত সংযুক্ত হইয়াছে।

উড়ী একটী বিশিষ্ট পল্লী। ইহার চারিদিক অত্যুক্ত ভূধর বৈষ্টিত। ইহার উত্তর ভাগে ঝিলম অর্থাৎ বিতন্তা নদী এমনি ভীষণ ব্রেগে প্রবাহিত হইতেছে, যে, যাঁহারা কেবল মাত্র কাশ্মীর বা পঞ্জাবের সমতল ভূমিতে উহার সাম্য মূর্ত্তি দেখিয়া-ছেন, তাঁহাদের মনে উহা সেই বিতন্তা বলিয়া সহসা প্রকীতি হয় না। অতি দূর হইতে ইহার বজ্ঞ-নিনাদ সদৃশ গভীর শব্দ প্রকৃত হইতে থাকে। ইহার বাম তটে একটী প্রস্তর নির্দ্ধিত প্রাচীন তুর্গ এবং ইহার সমীপে এক অত্যাশ্চর্ষ্য রক্ষ্মর সেতু আছে। এখানকার বিশ্রামন্তবন হতে উপাদেয়।

১২। উড़ी इरेट ना उटमहः-- १८ माहेल।

উড়ী পরিত্যাগ করিয়া এক দীর্ব, বন্ধুর ও ক্লেশকর পথ িশ্যা সা কাকুটা নামা নদীর তট পর্য্যন্ত যাইতে হয়। এই নদী র্বিভাগে বিভক্ত হইয়াছে। উভয় শাখার উপরেই কাষ্ঠ নির্দ্মিত দেহু আছে। এই প্রকার দেহু কাশ্মীরের সর্বত্রই দেখিতে পাওয়া যায়। নদী পার হইয়া যে চড়াই পাওযা যায়, তাহাও প্রথমে:ক্ত অংশের ग্যায় অতি ছুর্গম। অনন্তর কিয়দ,র যাইয়া এইরূপ আর একটা কঠিন চড়াই অতিক্রম পূর্বক এক ক্ষুদ্র নিঝ রিণী পার হইতে হয়। পরে তুই মাইল মধ্যে আরো ছুইটী হুর্গম চড়াই ও উতরাই ছাড়াইলে যে পথ পাওয়া যায়, তাহা অতিশয় স্থগন। এই পথ তুর্গন বটে, কিন্তু চতুর্দিগের শোভা অতি বিচ্তিত। উভয় পার্শ্বে অভ্যন্নত পর্বতশ্রেণী জলধর ভেদ্ধ করিয়া গগনস্পর্শ করিবার জন্য মস্তক উন্নত করিয়া রহি-য়াছে; উহার গাত্রে কৃষিজাত শস্ত ও নৈসর্গিক মহীরুহ অপূর্ব শোভায় সজ্জিত আছে; সহস্ৰ সহস্ৰ হস্ত নীচে বিতন্ত। নদী বন্হাল পথের চন্দ্রভাগার ন্যায় ভীষণ মূর্ত্তিতে প্রবাহিত হই-তছে। উহার তুর্মফেণনিভ বক্ষের ক্রমান্বয়ে উত্থান ও পতন দেখিয়া বোধ হয়, পার্শস্থ পর্বত-শৃঙ্গের সমান হইবার জন্ম দে যেন প্রয়াস করিতেছে; স্থানে স্থানে উহার শব্দে কর্ণ বধির হইয়া যাইতেছে ; ইত্যাকার রমণীয় শোভা দর্শনে পথ-ক্লেশ অনেক পরিমাণে দূর হয়।

নাওশেরা অতি ক্ষুদ্র পল্লী। এখানে ছুইটা উত্তম রিশ্রাম-ভবন আছে।

১৩। ना उट्यांता इटेट बात्रमूला-- १० माहेल।

এই অংশ সর্বাপেক্ষা স্থাম। ইহাতে চড়াই ও উত্তরাই
নাই বলিলেই হয়। ক্রমাগত ৮ মাইল পর্যান্ত সমতলভূমি ও
ক্ষেত্রের উপর দিরা আদিয়া বারমুলা পাহাড় অতিক্রম করিতে
হয়। ইহা সমতল ভূমি হইতে প্রায় পাঁচ শত ফিট উচ্চ।
ইহার আরোহণ অতি স্থাম। বন্হাল পথে পীর পাহাড়ের
শিখরদেশ হইতে কাশ্রীর উপত্যকা দর্শনে মনে যেরপে আনক্লের উদর হইয়া থাকে, এই গিরিশৃক্র ইইতেও তদ্ধপ দৃশ্যজনিত অনির্বাচনীয় প্রীতি অনুভব করা যায়। এছান হইতে
বারমুলা ছই মাইল মাত্র। আরোহণের ন্যায় অবরোহণও অতি
স্থাম।

বারমূলা কাশ্মীর উপত্যকার পশ্চিম প্রান্তে স্থিত এবং বৃহৎ জনপদ। বিতস্তা নদী ইহার নিকট দিয়া প্রবাহিত হইতেছে। এখানকার বিশ্রামভবন অত্যুত্তম। এস্থান হইতেও গুলমর্গে যাইবার পথ আছে।

্র ১৪। বারমূলা হইতে জ্রীনগর—৩ - মাইল।

বারমূলা হইতে শীনগরে যাইবার ছই পথ আছে।
প্রথম স্থল পথ। বিতীয় জল পথ। স্থল পথে ছই আডডা—
বারমূলা হইতে পত্তন ১৪মাইল এবং পূত্তন হইতে শ্রীনগর ১৬
মাইল। এই পথ সমতল ভূমি এবং ইহাতে অশ্বারোহণ পূর্বকি
চারিদিগস্থ নৈদর্গিক শোভা বিলোকন করিতে করিতে গমন
করা অতি প্রীতিদায়ক। পুরস্ত এতদিন অদীম পাহাড় উল্লেজ্ঞন

, জানিত ঠুর্বিসহ কফ সহা করিয়া কোন্ ব্যক্তি সোৎফুল্ল চিত্তে অধিকতর প্রীতিদায়ক নোকাযান অবলম্বন না করিবে ? নদী জলের ব্রাদ বৃদ্ধি অনুসারে জল পথে ন্যুনাধিক ২০ ঘটা লাগে।

এই পথে যে সমুদয় জনপদ, হ্রদ ও অপরাপর দ্রফীব্য পদার্থ আছে, কাশীরের পাশ্চান্ত্য বিভাগের বর্ণনাকালে তং-সমুদ্রের বিশেষ বিবরণ বর্ণিত হইবে।

চতুর্থ—মরিপথ 4

পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, এইপথ সর্বাপেক্ষা স্থগম
ত ব্রম্ব এবং রাউলপিণ্ডি ও পেশোয়ার প্রভৃতি স্থানবাসীদিগের পক্ষে অতি উপাদের। এই পথ কোনো কালে নীহার
পার্ত জন্ম অগমা হইয়া উঠে না। এই পথেও উত্তম উত্তম
বিশ্রামন্তবন আছে এবং অনায়াসে যান ও বাহকাদি পাওয়া
যায়।

১। মরি হইতে দেউল-১০ মাইল।

এই পথ অতিশয় স্থগম। ইহা সরল ও প্রশস্ত এবং মনোহর উপত্যকা ও অরণ্য মধ্য দিয়া গমন করিয়াছে। ইহাতে স্প্রীর শোভা অতি বিচিত্র।

দেউল ক্ষুদ্র পল্লী এবং ইংরাজ রাজ্যের অন্তর্গত। এখান-কার বিশ্রামভবন উত্তম। কিন্তু এখানে বিশ্রাম্ না করিয়া এক দিবসে অনায়াসে দ্বিতীয় আড্ডায় যাওয়া যাইতে পারে।

२। प्रिंडन इरेटड को होना--> भारेन।

এই অংশও পূর্বের ভাষ় স্থগম। প্রথম ৪ বা ৫ মইল অতি স্থগম উত্তরাই দিয়া বিতন্ত। নদী গর্ভে অবরোহণ করিতে হয়। পরে উহার দক্ষিণ তট দিয়া ক্রমাগত যাইয়া কোহালা আড্ডাতে উপনীত হইতে হয়।

কোহালা ুখতি ক্ষুদ্র পল্লী। ইহাও ইংরাজ রাজ্যের সীমা-স্তর্গত। ইহার সম্মুখ দিয়া বিতস্তা নদী প্রবাহিত হইয়া ইংরাজ ও কাশ্মীর রাজ্যকে পৃথক্ করিয়াছে।

কোহালা হইতে ছুই পথ বাহির হইয়াছে। প্রথম প্রাচীন, ৰিতীয় নূতন। উহাদিলৈর তালিকা এইরূপ।

| | | ঞাচীন পথ | 1 | মূতন পথ। | | |
|---------------|-----|----------|-----------|------------|------------|-----------|
| मन्न । | | ••• | ৬ মাইল | চত্ৰকলা* | * [| ১১ माईल |
| ময়রা | ••• | ••• | b∥° " | র ড়ে | ••• | ۰۰۰ ۶۶ ۰٫ |
| চিক্ষড় | | | ۶۱۱° ۰۰ | ত্রিণালী | 4 | 52 130 |
| र डो | ••• | • • • | ۶۰ " | घतो | | 50 , ,, |
| | | | ७२ गाइन । | घतो इडी | ••• | 32 ,, |
| | | | · · · · | | | ৫৭ माइल |

পূর্ণেক্ত তালিকা দৃষ্টে প্রতীতি হইবে প্রাচীন পথ অনতিদীর্ঘ। কিন্তু উহা অতিশয় তুর্গম। মরীপথের এই অংশ এবং চকোতী হইতে উড়ী কেবল কন্ট্যাধ্য ও বন্ধুর চড়াই ও উত্তরাই বিশিক্ট বলিয়া তুর্গম পদে বাচ্য হইতে পারে। স্থতরাং উহা পরিত্যাগ করিয়া নৃতন পথে গমন করা দর্বে-তোভাবে প্রোয়ক্তর। বর্ত্তমান পথ অতি স্থগম। উহাতে চড়াই ও উত্রাই নাই বলিলেই হয়। মধ্যে মধ্যে যাহা আছে,

তাহাও অতি দীর্ঘ ও অসরল নহে। সমুদয় আজ্ঞায় বিশ্রাম ¹ভবন উত্তম।

় । হত্তী হইতে ঢকোতী—১৫ মাইল।

- ে এই পথ তরঙ্গাকারে বিতন্তা নদীর রাম তট দিয়া গিয়াছে। স্থানে স্থানে ইহা নদীগর্ভের সহিত মিলিত হইয়াছে এবং কোনো কোনো স্থানে উহা হইতে উদ্ধি গমন করিয়াছে। এই পথে অনেক ক্ষুদ্র ও পাঁচটা রহৎ নিঝ রিণা অতিক্রম করিতে হয়। শেযোক্তের উপরিভাগে সেতু আছে এবং তথাকার সমীপবর্ত্তী পথ অত্যান্ত স্থানাপেক্ষা কিয়ৎ পরিমাণে বন্ধুর ও সরলোক্ষ, নচেৎ এই অংশও সাধারণতঃ সরল ও স্থাম।
- চকোতী অতি কুদ্র পল্লী। এথানকার বিশ্রাম-গৃহ নিন্দ-নীয় নহে।

৮। চকোতী হইতে উড়ী—১৬ মাইল।

মরী পথের এই অংশ সর্ব্বাপেক্ষা দার্ঘ, তুর্গম ও কফপ্রদ।
প্রথম দশ মাইলের মধ্যে দ্যুনাধিক আ**ট**টা চড়াই ও উতরাই
অতিক্রম করিতে হয়। উড়া হইতে তুই মাইল দূরে এক বৃহৎ
নদী অভিক্রম পূর্ববিক যে চড়াই দ্বারা বিশ্রামভবনে ক্রপনীস্ত হইতে হয়, উহা যেমনি দীর্ঘ, তেমনি অসরল ও কফদায়ক।

.উড়ী আড্ডার সমীপবতী হইয়া. এই পথ পূর্ববর্ণিত পুঞ্চ পথের সহিত মিলিত হইয়াছে। স্থতরাং ইহার অবশিক্তাংশ বর্ণনা করা দ্বিকক্তি মাত্র।

পঞ্চন। আবোটাবাদ পথ।

যথন কাশীর রাজ্য পাঠানশাদনকর্ত্তাদিগের অধীন ছিল, তথন তাঁহারা এই পথ দিয়া গতায়াত করিতেন। ইহা মরি পথের ন্যায় অতি দীর্ঘ। কিন্তু বন্হাল পথের ন্যায় অতি দীর্ঘ। ইহার সমুদয় অংশই স্থপ্রশস্ত এবং ইহা সাধারণতঃ সরল ও সমতল ভূমির উপর দিয়াই গিয়াছে। স্ততরাং সর্বত্তি নির্ভয়ে অখারোহণ পূর্বক যাইতে পারা যায়। ইহাতে যে চড়াই ও উত্তরাই আছে, তাহা অধিক সংখ্যক ও অতি বন্ধুর নহে। চতুর্থ আছ্যা অর্থাৎ মোজাফেরাবাদ হইতে বারমূলা পর্যন্তি কেবল বিতন্তানদীর দক্ষিণ তট দিয়া গমন করিতে হয়। ইহার সর্বত্তি বিশেষতঃ উপরোক্ত আছ্যা কয়্টীতে এচও মার্চ্ছতিতাপে দগ্ধ হইতে হয় এবং ইহাতে হঠির শোভা অপরাপর পথের ন্যায় মনোমেইন নহে। ইহা কোনো সময়ে নীহারপাত জন্য অগম্য হয় না।

-> । व्यादा है। दान हहेट मानटमत्।-- > 3110 महेल ।

এই অংশ অতিশয় স্থাম। পথ প্রশন্ত, সরল এবং ক্ষেত্রের উপর দিয়া গিয়াছে। মানসেরা রুহং পদ্ধী এবং এক রুহৎ নিঝ রিণীর বাম তটে স্থিত। তথাকার বিশ্রামভ্বনও উত্তম।

২। মানসেরা হইতে ঘরী—১৯ মাইল। এ পথও অতি স্থাম। প্রথমার্দ্ধ পূর্ব্বোক্ত পথের সদৃশ এবং অপরার্দ্ধ পার্ববিত্য দেশ দিয়া গিয়াছে বটে, কিন্তু সরল ও প্রশস্ত, স্থতরাং কোনো প্রকারেই কন্টদায়ক নহে। ঘরী রহং পল্ল এবং এক বৃহং নিঝ রিণীর বাম তটে স্থিত। এখানকার বিশ্রামভবনও উত্তম।

৩। ঘরী হইতে মোজাফেরাবাদ-- ৯ মাইল।

এই অংশ গুর্গন। প্রথমে এক মাইল পথ তাতি স্থগম। পরে গুব্বল্লী নামক পাহাড় আরোহণ করিতে হয়। ইহা ঘরী হইতে ন্যুনাধিক তিন মাইল দূরবর্ত্তী। চড়ারের প্রথমার্দ্ধ তাতিশয় বন্ধুর এবং কফাগমা। কিন্তু অপরার্দ্ধ অপেক্ষাকৃত অনেক সরল ও স্থগম। উত্রাই প্রায় তিন মাইল দীর্ঘ, কিন্তু গুর্গম নয়। প্রথমে এক নিঝারিণীর পার্দ্ধ দিয়া, পরে উহার তলদেশ দিয়া গম্ন করিতে হর। এই নিঝারিণী কৃষ্ণগঙ্গা। কিনেণ্ গঙ্গা) নদার সহিত মিলিত হইয়াছে। এই নদী ন্যুন্দ্ধিক একশত হন্ত প্রস্থ এবং অতি ভয়ানক বেগে গমনশীল। ইহার উপরে এক রজ্জুর সেতু এবং পার হইবার জন্ম এক নৌকাও আছে। কিন্তু স্থান নদী সাম্যুর্ভি ধারণ করে, তখন ব্যতীত নৌকা চালাইবার যো নাই। ইহার বামতটে পাঠানদিগের নির্দ্ধিত এক পুর্গ আছে।

উক্ত দেতু হইতে মোজাফেরাবান প্রায় হুই মাইল দূর-বর্তী। ইহা বিশিক্ত জনপদ এবং পর্বতের গাতে স্থিত। ইহার কিয়দ ুরে ৮৭ক কি বিশ্রামভবন। এন্থলে স্থান করিবার জন্ম একটা উত্তম ঘাট আছে। কিন্তু নদীজল অতিশঃ শিতল।

8। • মোজাকেরাবাদ হইতে হতীয়ান—> ৭ মাইল। এই পথ যেমনি দীঘ ্তেমনি কফীপ্রদা তিহার প্রথমার্ড্র কতিপয় আত হুৰ্গম ও বন্ধুর চড়াই ও উতরাই আছে, কিন্তু।
অপরার্দ্ধ অশেক্ষাকৃত অনেক উত্রম। মোজাফেরাবাদ হইতে
প্রায় এক মাইল দূরে কৃষ্ণাঙ্গা বিতন্তার সহিত সংযুক্ত হইয়াছে এবং এস্থান হইতে বারমূলা পর্যান্ত শেষোক্ত নদীরদ্বিশ্বট দিয়া ক্রমাগত গমন করিতে হয়।

হতীয়ান অতি ক্ষুদ্র পল্লী এবং পর্ব্বতের তলদেশে হিত। এখানকার বিশ্রামভবন পূর্ব্বোক্ত আড্ডার সদৃশ।

৫। হতীয়ান হইতে কণ্ডা-->১ মাইল।

এই অংশ নিতান্ত তুর্গম নহে। যদিও ইহাতে অনেক চড়াইও উতরাই আছে, তংসমদয় অসরল ও অধিক কন্টদারক নহে। কেবল হতীয়ান হইতে ল্যানাধিক তিন মাইল আদিয়া এক তুর্গম উতরাই দিয়া এক নির্বাধিণীতে নামিতে হয় এবং শেষাংশে আরো চূই বা তিন্দী কন্টপ্রদ উররাই আছে। শেষাংশি আইতে যাইতে দেখা য়য়য়, য়ে, বিশুন্তা নদীর অপর তট দিয়া মরিপথ গিয়াছে এবং এই চূই পথ নদীর উভয় তট দিয়া পরস্পার সমরেখানুসারে বারমূলা পর্যান্ত গ্রমন করিয়াছে।

ক্টা অতি ক্ষুদ্র পল্লী। এখানকার বিশ্রামভবন উত্তম।
৬। কণ্ডা হইতে কথাই—১২ মাইল।

এই অংশ পূর্বোক্ত অংশের নায়ে উভ্নশ্মাক্রান্ত। ইহাতে তিন চারিটী অতি বন্ধুর ও চূর্গম স্থান আছে। বিশেষতঃ কণ্ডা হইতে চারি ও আট মাইল দুরবর্গী স্থানদ্বয় সর্বাপেকা। হর্গম। এই পথে কয়েকটী পার্ববিত্য নদীও অতিক্রেম করিতে ' হয়। উহাদের উপরে সেতু আছে। কথাই অতি ক্ষুদ্র পল্লী এবং অতি বিস্তৃত অধিত্যকার মধ্য ভাগে স্থিত। ইহার সমীপে এক মৃত্তিকা নির্দ্মিত তুর্গ আছে। এথানকার বিশ্রামগৃহ পূর্ণেবাক্ত স্থানের তুল্য।

१। कथाई इइटि माइ (पता-) २ माईल।

এই অংশও পূর্ব্ব পথ বয়ের শদৃশ। চারি মাইল দূরে এক অত্যুংকৃষ্ট জল-প্রপাত আছে।

কথাই পর্ত্তীর ন্যায় সংহ্দেরা অতি ক্ষুদ্র এবং বিস্তৃত অধিত্যকার মধা দেশে স্থিত। এথানকার বিশ্রাম ভবনও উত্তম।

भाग नाइ एमता इहेट जिल्लान-28 माहेल ।

এই পথ অভি স্থান। প্রথমার্দ্ধে তিন বা চারিটী চড়াই উ উত্তরাই আছে। কিন্তু উহা অতি দামান্য এবং অবনুর। অপুরাদ্ধ দাধারণতঃ সমতল ভূমি।

•গিংগল্ অতি ক্ষুদ্র পল্লী। এস্থান হইতে স্প্তির শোভা অতি রমণীয়। এখানকার বিশ্রামভবন উত্তম।

৯। গিংগল হইতে বারমুলা-১৮ মাইল।

এই অংশ অতি দীল বটে, কিন্তু অতিশয় সুগম। প্রথম
১৩ মাইল বিতন্তা নদীর দক্ষিণ তটন্থ সমতল ভূমির- উপর
দিয়া যাইতে হয়। পরে বাম ভাগে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া কতিপয়
ক্ষুদ্র পর্কাত প্রোণ আরোহণ পূর্বাক অন্ত, অনতিদীঘ ও
সংকীণ শিখর দেশে উঠিতে হয়। এস্থান হইতে কাশ্মীর
প্রদেশ নয়ন পথে পতিত হইয়া থাকে। অনন্তর সমতল
ভূমিতে অবতীর্ণ হইয়া পূন্ববার নদীর দক্ষিণ তট দিয়া গ্মন
করত বারম্লাতে উপনীত হওয়া যায়।

১•। বারমুলা ছইতে শ্রীনগর—১• মাইল। এই অংশের বিবরণ পূর্বের প্রকটন করা গিয়াছে। তৃতীয় অর্থাৎ ভিম্বর ও পুঞ্চ পথের শেষ ভাগে দেখুন।

তৃতীয় পরিচ্ছেদ।

ीनगत **এ**वং ভन्निक देव ही स्थाना नि ।

প্রথম অংশ

জ্ঞীনপর। বিভরানদী। নগরের আনজ্জর। শক্রাচার্য্যের টিকা। দুর্গবাহরিপর্বত।

পুরাকালিক শাসনকর্ত্তাদিগের অভিলাষান্সারে অথবা সাময়িক প্রয়োজনানুরোধে কাশ্মীরের রাজধানী সতত এক স্থান হইতে স্থানান্তরে পরিবর্ত্তিত হইয়া আসিয়াছে। পাণ্ড্রন একদা ঝ্রাজধানী ছিল। ইং ৬৩০ খৃন্টাব্দে কান্তকুজাধিপতি অভিমন্যু ইহা অগ্নিসাৎ করিলে নরপতি অবন্তীবর্মা এক নূতন রাজধানী স্থাপন করেন। ইহা তাঁহার নামানুসারে অবন্তীপুর নামে খ্যাত হয় এবং বহুকালাবধি ইহাই রাজপাট হইয়া আসিতেছিল। পরে ইহা পরিত্যক্ত হইয়া মটন অর্থাৎ মার্ত্তও এবং সোপুর নামক জনপদ দ্বয় একাদিক্রমে সমুদ্রয় উপত্যকার উপর নিয়ম ও শাসন প্রচারণ করিতেছিল। কিস্ক বর্ত্তমান কালে শ্রীনগর কাশ্মীরের রাজধানী। অনেকে এই
নগরকে কাশ্মীরও কহিয়া থাকে।

়ে ন্যুনাধিক পঞ্চদশ শত বংসর অতীত হইল, রাজা প্রবর্গনেন এই নগর সংস্থাপন করেন। পূর্বের ইহার নাম সূর্য্যনগর ছিল এবং বোধ হয়, জীনগর শব্দ উহারই অপভ্রংশ হইবে। শ্রীনগরের অক্ষাংশ ৩৪°-৪′-৩০″ ল্যাটিচিউড এবং ৭৪°-৫০′-৫৪″ লংগিচিউড। ইহা কাশ্মীর উপত্যকার মধ্যভাগে স্থিত এবং বিতস্তানদার উভয় তটে ছই মাইল বিস্তৃত। ইং ১৮৭৩ খুন্টাব্দে গণনা করিয়া দেখাযায়, ইহার লোকসংখ্যা ১,৩২,০০০ এক লক্ষ বিত্রিশ সহস্র। তন্মধ্যে হিন্দু কেবল ৪০,০০০ চল্লিশ সহস্র, অবশিষ্ট মুসলমান।

বিতস্তানদা শ্রানগরের মধ্য দিয়া মন্দ মন্দ বেগে প্রবাহিত হইতেছে। উহা প্রস্থে ন্যুনাধিক ১৭৬ হস্ত। ইহার জল অতি, স্বাত্র, স্বচ্ছ এবং স্বাস্থ্যকর। ইহা সন্থংসর সমগভীর থাকে না। কিন্তু সচরাচর ১২ হস্তের অধিক গভার নহে। একে তো সহরটী নদীবারা বিভাগে বিভক্ত, তাহাতে আবার মিরা কদল (কদল অর্থাং সেতু) হাবা কদল, ফতে কদল,জানা কদল, আলী কদল, নয়া কদল এবং সাফা কদল নামে কার্চ্চনির্মিত সপ্ত সেতু বারা উভয় তট সংযুক্ত, এবং কোনো কোনো সেতুর উপরিভাগে আপণ-শ্রেণী দেখিতে অতি স্থন্দা। নদীর উভয় পার্ষে অনেকানেক স্থবিস্তৃত থাল স্থদীর্ঘ বাহুর আয়ে নিঃস্ত হইয়া খোনো কোনোটী হ্রদের সহিত মিলিত এবং কোনো কোনোটী বা নগর অতিক্রম করিয়া পুনরায় নদীর সহিত সংযুক্ত হইয়াছে।

এখানে নৌকাযান দারা গতায়াত হইয়া থাকে। নদী ও প্রণালী সমুদয়ের উপরিভাগে সেতু আছে বটে, কিন্তু কার্য্য-সৌকর্য্যার্থ দরিদ্রলোকেরাও নৌকা দ্বারা গমনাগমন করে! নদীর স্রোত নাই বলিলেই হয় এবং কুম্ভীর প্রভৃতি কোনো প্রকাব হিংস্র জলজন্তুরও ভয় নাই। একারণ, নৌকাভ্রমণ অতি প্রীতিপ্রফুল্লকর এবং সম্যক্ প্রকারেই আপদশৃশ্য। দূর-বর্ত্তী রম্য স্থানাদির কথা দূরে থাকুক, জ্রীনগরের সন্মিকটবর্ত্তী স্থান সমূহে যে কোনে। সময়ে নোকারোহণ পূর্বক ভ্রমণ করিবে, তথনই শরীর ও মন প্রফুল হইতে থাকে। গভিণী তরুণীর খ্যায় তরণী মন্থর গতিতে গমন করিতেছে —মন্দ মন্দ দক্ষিণানিল বহিতেছে—উভয়পার্শ্বে সফেদা নামক বৃক্ষশ্রেণী স্থাশিকিত সৈত্যদলের তায়ে সমদূরে সরলভাবে দণ্ডায়মান রহি-য়াছে—স্তাব্য বিহুগগণ রুক্ষণাথায় বসিয়া স্মধুর গান করি-তেছে—তটস্থ উপবনে স্থার আধার পুপ্রাক্সশি বিক্ষিত হুইয়া প্রমন্ত মধুকরকে আলিঙ্গন দান করিতেছে, ইত্যাকার নৈদর্গিক শোভা বিলোকন করিলে যে অভূতপূর্দি খানন্দ উপলব্ধ হয়, তাহা যে সৌভাগ্যবান্ পুরুষ উপভোগ করিয়াছেন, তিনিই হৃদয়কুৰ করিতে পারেন। প্রহ্লুত, যিনি এথানে স্থীর রমণী য়তা দর্শনে মানবজীবন দার্থক করিতে আইদেন, অথবা স্বাস্থ্য-কর জলবায়ু সেবনে রুগ্রশরীর স্তস্থ করিতে চাহেন, ভাঁহার পক্ষে নৌকাবাদ চিকিৎদা তত্তানুদারে যেমন পরামর্শদিদ্ধ, সাদা বুদ্ধির মতে তেমনি প্রীতিকর। 'অপর ইহা বহুব্যয়সাধ্য নহে। প্রত্যেক নাবিকের মাসিক বেতন তিন ট্রাকা এবং . নৌকাভাড়া এক টাকা মাত্র। স্থতরাং চারিজন নাবিক এবং

ছুই খানা নোকা (এক থানা ডুঙ্গা এবং এক থানা শিকারী) নিযুক্ত করিলে পরম স্থথে জলে বাস করা যায় এবং ইচ্ছামতে ইতস্ততঃ ভ্রমণ পূর্বকি অভীষ্ট সিদ্ধ হইতে পারে।

ে এখানকার বাটী সকল কান্তনিশ্মিত। কেবল মহারাজা, দেওয়ান এবং কতিপয় ধনাচ্য ব্যক্তিদিগের স্তদৃশ্য অট্টালিকা আছে। নদীতটে রম্য রাজবাটী; মনোহর অট্টালিকা; দ্বিতল, ত্রিতল বা চারিতল দারুময় আলয় এরপ ভাবে নির্মিত, যে, বোধ হয়, যেন উহারা নদীগর্ভ হইতে মস্তকোত্তলন করিতেছে। ইহা দেখিতে অতি রমণীয় বটে, কিন্তু দামরিক জলোচ্ছাদে একবারে সর্বনাশ উপস্থিত হয়—তথন গৃহ সকল বৃক্ষপত্রস্থ জলবিন্দুর *আ*য় ভূমিসাৎ হইতে থাকে। ১৮৬৯ খ্রী**ন্টান্দের** জুঁন মাসে যথন কার্দার গমন করি, তখন এইরপে হৃদয়-বিদা-রক ভুর্দ্ধর ব্যাপার ঘটিয়াছিল। অন্যুন চকিশ ঘণ্টা চিপ্টি পিনী রুষ্টি হওয়াতে শৈলশিখরত তুষার রাশি দ্রবীভূত হইয়া নদীর জল একবারে এত উচ্ছৃদিত করিল, যে, ত্রিংশং বংস-রের মধ্যে সেরপে আর ঘটে নাই। নদীর উভয় তট ভাঙ্গিতে লাগিল—তটহ গৃহ দকল মড়্মড় শব্বে ভূতলে পতিত হ'ইতে লাগিল – দেখিতে দেখিতে চারিদিক এরপ প্লাবিত হইয়া উঠিল, যে ভূমির চিহ্নাত্রও রহিল না বলিলেই হয়। সকলেই স্ব স্ব ভবন পরিত্যাগ পূর্ব্বক কেহ কেহ বা শঙ্করাচার্য্যের টিব্বা নামক উচ্চ স্থানে এবং অধিকাংশ লোক নৌকায় আশ্রয় গ্রহণ করিল্—চারি দিকে হাহাকার রব উঠিল এবং বোধ হইল, - যেন প্রলয়কাল উপস্থিত। শ্রীনগরের অনতিদূরে একটা হ্রদ আছে। উহার জল বৃদ্ধি হইলে নগর এককালে প্লাবিত ও

উচ্ছিন্ন হইয়া যাইবার সম্ভাবনা। এ কারণ উভয়ের মধ্যে একটী ,বাঁধ আছে। ঐ প্রলয় জলস্রোত ঐ বাঁবকেও অতিক্রম ু পূর্ববিক নগর মধ্যে প্রবেশ করিবার উদ্যোগ করিয়াছিল। কিন্তু প্রজাহিতবৎসর সহদয় নরেশ্বর তৎকালে ঐ স্থানে স্বয়ং উণ-স্থিত থাকিয়া উহাকে রক্ষা না করিলে 🕮 নগরের চিহ্নমাত্রও থাকিত না। যখন তিনি এই ভয়াবহ সংবাদ ভাবণ করিলেন, তথন তাঁহার শরীর অস্ত হ ছিল। কিন্তু অ।পন শরীর রক্ষার দিকে দৃক্পাতও না করিয়া চিকিৎসকদিগের পরামর্শ অবহে-লন পূর্ব্বক পুত্রসম প্রজাগণের প্রাণ রক্ষার্থ বাঁধে উপস্থিত **হই**য়া স্বহস্তে মুদ্রিকাখনন প**্রন্ত করিতেও উদ্যত হইলেন**! তথন সকলেই অপেনপেন প্রাণ রক্ষার্থ ব্যস্ত ছিল ৷ কিন্তু মহা-রাজার এই অনুপম প্রজাবাংসল্য দেখিয়া সকলেই তথান <mark>উপনীত হইল এবং অনতিবিলম্বেই বাঁধকে আপদশূল ভাবে</mark> উচ্চ করিয়া বাঁধিয়া ফেলিল। ইহাতেই≉নগর রকা পা্য়। তথাপি এই জলোচ্ছ্যাস বিস্তর অনিফ উৎপাদন করে এবং চারি দিবস সমভাবে থাকিয়া অপস্ত হয়। ইহার কিয়দিবস পরে আরো ছুইবার উচ্ছ্বাস হইয়াছিল। কিন্তু অগ্রজ ভাই অগ্রেই **সমুদয় শস্তকেত্র,** লোকের ঘর দ্বার প্রভৃতি জলসাং করিয়া **গিয়াছিলেন—**কনীয়ানদিগের আগমন প্রতীক্ষায় কিছুই প্রায় রাথিয়া যান নাই; স্নতরাং ইহার। আর কি করিবেন ? কেরল দর্শন দিয়াই অন্তর্জান করেন।

গত বৎসরেও এইরূপ জলোচ্ছ্বাদ হইয়া গিয়াছে এবং মধ্যে মধ্যে প্রায় এই ভয়ঙ্কর ব্যাপার ঘটিয়া থাকে।

্শ্রীনগরে উত্তীর্ণ হইয়া নোকারোহণ পূর্ব্বক এক প্রাস্ত

হইতে অপর প্রান্ত পর্যান্ত গমন করিলে ইহার সমুদয় সোদর্য্য অবলোকন করা যায়। সহরের অভ্যন্তরে স্থলপথে দ্রুইব্য রিষয় কিছুই নাই এবং উহা এত মলিন, যে নাসিকারদ্ধু বন্ধ না করিয়া পাদবিক্ষেপ করা যায় না। কাজেই আমরা জলপথেরই পক্ষপাতী। অতএব বিতন্তা নদীর গতি অনুসরণ পূর্বক একাদিক্রমে বিশেষ বিশেষ সমুদয় স্থলের বর্ণনা করা যাইতেছে।

নগরের প্রবেশ পথে দক্ষিণ দিগে যে সমুদায় বাংলা অর্থাৎ বিশ্রাম ভবন আছে, মলারাজা উহা ইংরাজ পর্যাটক দিগের জ্মাই নির্মাণ করিয়া দিয়াচেন। ইহা তি-জোণীতে বিভক্ত। প্রথমপ্রেণী বিবাহিত পুক্ষর দিগের নিসিও নিখিত এবং মুনসি-বাস নামক উপবনে ফিত। দিতীয় শ্রেণী অবিবাহিত দিগের নিমিত এবং হরি মিংজ-কা-বাগ, গুরুষুখ মিংছ-কা-বাগ ও তার। সিংহ-কা-বাগ নামক স্থান:দিতে প্রতিষ্ঠিত। ইহাদের মধ্যস্থলে যে উংকৃষ্ট ভবন আছে, উহাকে " রেসিডেন্সি " কছে। প্রতি বংসর বিনি ইংরাজ গবর্ণসেও দ্বারা "অফি-সর্ অন্ স্পেশিয়েল তিউটা ' অভিধের হ**ই**রা মনোনীত হয়েন তিনিই এই স্থলে বাস করিয়া থাকেন। ইহার ঠিক দক্ষিণ পাৰ্শে কভিপয় মহীকৃত্ব সমন্বিত একটা ক্ষুদ্ৰ দ্বীপ আছে। এখান হইতে প্রথম সেতু ন্যুনাধিক ৫০০ হস্ত দূর-বন্ত্রী এবং এই অংশের জল এত অগভীর, যে আধিন মাসের প্রথমেই দক্ষিণ পার্থ হইতে অপস্ত হইয়া চড়া বাহির হয়। গীতকালে ন্দাটী বাম দিকে এক সংকীর্ণ প্রণালীর আকারে ৰহিতে থাকে।

কিয়দ্রে যাইয়া স্থবিস্তৃত ময়দানের উপর ও নদীর বাম তটে একটা রমণীয় হর্ম্য দেখিতে পাওয়া যায়। উহাকে বারাদরী কহে। তিন বংসর হইল, মহারাজা ইরা প্রস্তৃত্ করিয়াছেন এবং মধ্যে মধ্যে সমাগত ইংরাজ পর্যাটক দিগকে নিমন্ত্রণ পূর্বক এন্থলে নৃত্য ও ভোজ দারা ভতিথি-সংকার করিয়া থাকেন। পঞ্জাবের লেফ্টেন্ডান্ট গবর্ণর বা অপর কোনো উচ্চ পদারত সম্রান্ত ইংরাজ অথবা অপর কোনো জাতীয় মান্ত লোক আসিলে এখানে তাঁহাদের বাস নিয়োজিত হইয়া থাকে।

এ স্থান হইতে কয়েকপাদ গমন করিলেই বাম তটে মহা-রাজার দাতব্য চিকিৎসালয়। সম্মুখে যেসেতু দেখিতে পাওয়া যায়, ইহাকে মিরা কদল কহে। এই সেহু হইতে প্রাক্ত হইয়া সাফা কদল অৰ্থাৎ শেষ সেতু পৰ্য্যন্ত বিতন্ত। নদী নগ-রের মধ্য দিয়। গমন করিয়ছে। পুর্বকালে এই অংশের উভয় তট প্রস্তর রক্ষিত ছিল। স্তরাং উহা দেখিতে যেমন স্থন্দর, তেমনি তীরসমাশ্রিত লোকের নির্ভয়ে বাস্যোগ্য ছিল। কিন্তু এক্ষণে স্থানে স্থানে উহার ভগ্নীবশেষ মাত্র আছে এবং কোনো কোনো স্থলে ভট এমনি শিথিল হইয়া গিয়াছে, যে স্পর্শমাত্রেই ভাঙ্গিয়া যায় এবং জলোচ্ছ্যাদে ও তরঙ্গাঘাতে দিন দিন নদীগর্ভে লীন হইতেছে। পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, লড়ী সমূহের দার নদার দিকে স্থিত বলিয়া সকলেরই পৃথক পৃথক ঘাট আছে। এই ঘাটকে ইয়ারবল কহে। মধ্যে মধ্যে কয়েকটী অত্যুৎকৃষ্ট পাষাণ নির্মিত ইয়ারবল দেখিতে পাওয়া যায়। এত্তির প্রায় প্রত্যেক ঘাটে মুদলমানদিগের কাষ্ঠ নির্দ্মিত স্নান গৃহ, বস্ত্র ধৌত করিবার জন্য উত্থল সদৃশ প্রস্তরের গর্ভ, স্ত্রীলোকদিগের অপরূপ রূপ মাধুরী, উহা-দিগের বিবসনা হইয়া স্নান, কোমল করে মুদগর ধারণ পূর্বক সাবান দিয়া বস্ত্র ধৌত করণ ও মুসল দার। উত্থলে ধান্য সংস্করণ, উহাদের জঘন্য কলহপ্রিয়তা প্রভৃতি অনেক লোকিক আচার ব্যবহার নয়নপথে পতিত হইয়া থাকে।

মিরা কদল অতিক্রম পূর্ববিক বাম তটে যে কয়েকটা স্থানর
লড়ী দৃষ্টিগোচর হয়, উহা দেওয়ান ও উজীর দিগের বাস
গৃহ। ইহাদিগের সংলয় যে সর্ব্বাপেক্ষা উৎকৃষ্ট প্রাসাদ
আছে, উহা সের-গড়ী অর্থাৎ রাজবাটী। ইহাতে আরোহণ
করিবার নিমিত্ত আদৌ কয়েকটা অত্যুত্তম কৃষ্টবর্ণ প্রস্তরের
শোপান আছে। পরে এক দীর্ঘ কষ্ঠেয়য় অধিরোহিণী দ্বারা
উঠিয়া রাজবাটীতে প্রবেশ করিতে হয়। এখানকার রাজবাটী
জল্পুর স্থাপেকা অনেকাংশে নিকৃষ্ট। কিন্তু ইহা নদীগর্ভে স্থিত,
প্রস্তর নিশ্মিত ও কোণ বিশিক্ট বলিয়া অতি রমণীয় দেখায়।

রাজবাটীর পার্দ্ধৈক দেশে ও নদীংটে গদাধর দেবের উৎ-কৃষ্ট মন্দির আছে। ইহার উপরিভাগ নির্মাল স্বর্ণে মণ্ডিত।

ইহার পাশ্ব দিয়া এক খাল প্রবাহিত হইতেছে। ইহাকে কুট কোল কহে। উহার উপরিভাগস্থ সেতুর নাম টেকী কদল। এই প্রণালী নগরের পশ্চিম বিভাগ পরিক্রম পূর্বক নয়া কদল অর্থাং ষষ্ঠ সেতুর নীচে গিয়া বিভস্তার সহিত পুন-মিলিত হইয়াছে।

দের গড়ীর সমাথে অর্থাৎ নদীর দক্ষিণ তীরে যে আর একটী খাল পূর্বেদিকে চলিয়া গিয়াছে, উহাকে চুঁট্কোল কহে। ইহা প্রায় ৬০ হস্ত প্রস্থ এবং ইহার জল অধিক গভীর নহে বটে, কিন্তু কোনো কালেই শুষ্ক হয় না। ইহা ডল্-অর্থাৎ নাগরিক হ'দ যাইবার পথ। ইহার প্রবেশ পথে মহারাজার বিচিত্র তরণী সম্দ্য অবভিত্তি করে।

এই প্রণালীর বামভাগে অর্থাং বিতস্তা নদীর দক্ষিণ তটে বসন্ত বাগ। ইহা রাজবাটীর বিপরীত ভাগে স্থিত এবং যেমন উহাতে আরোহণ করিবার কতিপয় কৃষ্ণপাযাণের সোপান আছে, এখানেও তদ্রপ থাকাতে অতি স্তন্ত্র দেখায়। ইহার উপরিভাগে কৃষ্ণবর্ণ প্রস্তারের এক ীচ্চাসন আছে। এন্সলে প্রতি বংসর মহারাজা কার্ত্তিক মাদীয় শুক্রপক্ষের প্রতিপদ তিথিতে গদাধর দেবকে আনৱন পূর্ব্বক গো গবন্ধন পূজা ও অন্নকৃট উৎসব সমাপন করেন ৷ এই উৎসব উপলক্ষে মহা-রাছা বিস্তর অর্থ বায় পূর্পক প্রভাদিগকে অন্নদান ক্রিয়া থাকেন। কাশ্টারী হিন্দু ও মসলমানদিগের সন্ত্র প্রস্তুত ইইবার : জন্য স্বৰু স্বৰুত্ত স্থান নিৰ্দিষ্ট আছে। এই স্থানে রাজবংশী-য়দিগের, ভোগ্রা জাতির এবং -প্রধান প্রধান কর্মচারীদি গরও রন্ধন হইয়া থাকে। অপরাকে মহারাজা সমদায় প্রজাদিগের পাক ভ্রাবধারণ করিয়া আমিয়া ডোগ্রা, অমাত্য ও রাজপুত্র-দিগকে লইয়া এন্তলে ভোজন করিয়া থাকেন I

বসন্ত বাগের সংলগ্ন হো এক লড়ী আছে, উহা ছোট আদালত বাটী। ইহাকে পার আদালত কহে। এই দক্ষিণ তটে কিয়দনুর অগ্রবর্তী হইয়া কয়েকটী উত্তম মন্দির দেখা যায়।

ে প্রে হাবা কদল বিতীয় সেতু। ইহার উপরিভাগে স্তৃস্থ

আপণশ্রেণী ছিল। ইং ১৮৭০ খৃফীকে অগ্নি লাগিয়া ততাবত দিগ্ধ হইয়া গিয়াছে।

ি কিয়দ রে বামভাগে প্রধান রাজপুত্রের অতুচ্চে ও উৎক্ষ বাস মন্দির দেখিতে পাওয়া যায়। অনন্তর ফতে কদল তৃতীয় সেতু।

এম্বান হইতে কয়েক পাদ অগ্রসর হইলে দক্ষিণ তটে সাহ হম্দানের জেয়ারৎ অর্থাৎ মদজিদ। ইহা কাশীরের অতি প্রাচীন ও অত্যুংকৃন্ট মদ্ভিদের মধ্যে একটা। কিম্ব-দতী আছে, পূর্ণের এই ভ্লে হিন্দুরাজাদিণের শাসন কালে কালী দেবী স্থাপিতা ছিলেন। পরে মুসলমানদিরে রাজত্ব ও প্রভূত্বের প্রান্ত্রিক তাহারা তাহাকে নীচে প্রোথিত করিয়া এই মদজিদ নিশ্মাণ করে। দৈই খবদি ইহার নিম্নতল হাইতৈ এই অভিপ্রায়ে এক শব্দ আদিয়া থাকে, যে "যদি কেহ হিন্দু গ্লাকিস, তবে আমাকে উদ্ধার কর্''। মহারাজা গোলাপ শিংক, নাঁকি ইহা শ্রাণ করিয়া তাঁহাকে উদ্ধার করিবার কল্পনায় ছিলেন। কিন্তু মদজিদ খনন করিলে রাজবিপ্লব ঘটিবার সম্ভাবনা। একারণ তিনি ঐ মান্স ত্যাগ করেন; স্থতরাং অদ্যাবধি দেবীর পরিত্রাণ হয় নাই! এই প্রবাদ সূত্য মিথ্যা যাহাই হউক, ইহা অত্যন্ত আশ্চর্য্যের বিষয়, যে মদজিনৈর বহিদেশস্থ নিম্ন প্রাচীতর (ফনীর দিকে) একটী দেবীমূর্ত্তি খোদিত আছে। প্রত্যুহ সহস্র সহস্র হিন্দুরা সিন্দুর ও কুঙ্গুম দিয়া তাঁহার পূজা করিয়া থাকে।

শাহ হম্দানের বিপরীত ভাগে নদীর বামতটে আর একটী

•উত্তম মসজিদ আছে। উহার নাম নয়া মসজিদ বা পত্তর মসজিদ। বিখ্যাত বেগম সুরজেহান ইহা আপিত করেন।

কিয়দ্রে জানা কদল — চতুর্থ সেতু। ইহার উপরিভাগে কতিপয় বিপণি আছে। দক্ষিণ তটে যে একটা উত্তম ভয়াব-শেষ দৃষ্টিগোচর হয় উহাকে বাদশাহ কহে। ইহা বিথ্যাত জানালব উদ্দীনের গোর। ইনি ১৯২০ খৃন্টাব্দে কান্মীরের অধিপতি হইয়া অত্যন্ত প্রতাপ ও গৌরব সহকারে তিপপার বংসর রাজয় করেন। ইনি, শিল্পবিদ্যা ও সাহিত্য প্রভৃতি অনেক বিষয়ের উন্ধতি সাধন করিয়াছিলেন। কথিত আছে, ইনিই প্রথমে তুর্কিস্থান হইতে তন্তুবায় আনাইয়া কাশ্মীরে শাল প্রস্তুত করান এবং প্রনিদ্ধ কলমদানি কর্মা ও কাচ প্রস্তুত করিবার প্রথা প্রভৃতি শিক্ষা দেন। প্রত্যুত, অদ্যাবধি কাশ্মীরীয়া মাত্য ও ভক্তিসহকারে ইহার নামোজারণ করিয়া থাকে এবং ইহার নামানুসারে পূর্বেলিক সেতুকে জানা কদল কর্ছে।

বাদশাহ ঘাট হইতে কয়েকপাদ স্বলুপথে গমন করিলে একটা উৎকৃষ্ট মসজিদ দেখিতে পাওয়া যায়। ইহাকে ফুন্মা মসজিদ বা প্রধান মসজিদ কহে। সাহ্জেহান বাদশাহ ইহা স্থাপিত করেন।

জনাকদল অতিক্রম করিয়া দক্ষিণ তটে একটা অতি স্থন্দর নূতন বাজার দেখিতে পাওয়া যায়। ইহা বর্ত্তমান শাসন কর্ত্তা প্রস্তুত করিয়াছেন। এ কারণ, ইহাকে মহারাজ গঞ্জ কহে।

কিয়দূরে আলী কদল — পঞ্ম সেতু। সেতু অতিক্রম করিয়া যে একটা অতি প্রাচান মদজীদ দেখা যায়, উহাকে বুল্বুল্লঙ্কর কহে। লোকে কহিয়া থাকে, যে, কাশ্যার প্রদেশে এই মদ্জিদ গর্কাদে নির্মিত হয় এবং বুল্বুল্ সাহ নামক জনৈক ফকীর মহম্মদীয় ধর্ম উপত্যকামধ্যে প্রথম প্রচার করেন এবং এই মসজিদে তাঁহার অস্থি রক্ষিত আছে। হইা এক্ষণে ধ্বংশ হইয়া যাইতেছে এবং ইহার উপরিভাগে বহুৎ রহুৎ রক্ষ উৎপন্ন হইয়াছে।

শনন্তর নয়া কদল—ষষ্ঠ সেতু। ইহা পার হইয়া কিয়দ্র গমন করিলে দক্ষিণ তটে পণ্ডিত রাজকাকের উত্তম লড়ী দেখিতে পাওয়া যায়। ইনি অতি সম্ভ্রান্ত ও ধনশালী ছিলেন। ইহার বিপরীত ভাগে অর্থাৎ নদীর বাম তটে যে প্রণালী আছে, উহা কুট্কোল। উহা সেরগড়ী হইতে বাহির হইয়া এই স্থলে নদীর সহিত মিলিত হইয়াছে।

কিয়দ্বে যাইয়া দক্ষিণ তটে লচ্মন্জু-কা-ইয়ারবল নামে এক ঘাট। এই ঘাটে উঠিয়া কয়েক পদ গমন করিলেই ইদ্গা নামক অতি রমণীয় স্থান দেখিতে পাওয়া যায়। ইহা দৈর্ঘ্যে এক মাইল এবং প্রস্থে এক মাইলের চতুর্থাংশ। ইহার চতুপোর্ষে রহৎ রহং র্ফ আছে এবং ইহার পূর্কাদিক দিয়া মার প্রণালী প্রবাহিত হইতেছে। ইহার উত্তর প্রান্তে এক অত্যুত্তম কাষ্ঠ-নির্মিত মসজিদ। উহার নাম আলী মসজিদ।

পরে সাফা কদল—সপ্তম সেতু। ইহাই জ্রীনগরের শেষ
সীমা। সেতু পার হইয়া বামতটে সাহ নেইমাতুলার মন্তিদ।
ইহার এক প্রস্তরাঙ্কিত উৎকীর্ণ পাঠে জানিতে পারা যায়, যে,
ছুইশত বংসরের কিঞ্চিদ্ধিক হইল, সেফ খাঁ এই সেতু নির্মাণ
করেন। একারণ, ইহাকে সাফা কদল কহিয়া থাকে।

শঞ্চরাচার্য্যের টিবরা।

কাশ্মীরে বহুসংখ্যক পোরাণিক কীর্ত্তিস্ত আছে। ভিগ্নি সাহেব ইহা অশীতি সংখ্যক নির্ণয় করিয়াছেন। কোন্ কার্লে

বে তৎসমুদায় নির্মিত হইয়াছিল, তাহা নিশ্চর করা হৃকঠিন ៖ কিন্তু প্রাণ্ডুপুত্তেরা যথন এ দেশে আইদেন, তথন যে তাঁহারা ইহার অধিকাংশ নির্মাণ করিয়া যান, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। স্থবিখ্যাত প্রাচীন কীত্তিস্তন্তের মধ্যে "শঙ্করাচার্য্যের টিব্বা " (টিব্বা অর্থাৎ পাহাড়) একটা প্রধান। মুসলমানেরা ইহাকে "তক্ত-হি-সলিমান" অর্থাং সলোমনের সিংহাসন কহিয়া থাকে। উহারা কহে, যে, এই অনুচ্চ শৈলশিখরে সলোমনের সিংহাসন অধিষ্ঠিত ছিল। প্রবাদ আছে, পুরা-কালে এক সময় কাশ্মীর প্রদেশ জলে প্লাবিত হইলে কয়েক জন এথানে পলায়ন করিয়া রক্ষা পায়। পূর্ব্বে উল্লেখ করা গিয়াছে, কোনো কোনো ভূতত্ত্বতো প্রতিপন্ন করিয়াছেন, যে, কাশ্মীর মনুষ্যের আদিন নিবাস ছিল। স্তরাং বোধ হীয়, এই জনপ্রবাদ ঐ বাক্যের সপক্ষতা করিতেছে। সে যাহা-হউক, ভারতবর্ষের অলস্কার স্বরূপ স্থপত্তিতী শঙ্করাচার্য্য অংপন ভারতবর্ষ হ'ইতে দূরীভূত করিয়া দেন এবং ক্রমে ক্রমে সমু-দয় খণ্ড জয় করিয়া পরিশেষে এই স্থলে আগমন পূর্ব্বক এই টিকাতে বাস করেন। একারণ, ইহা তাঁহার নামানুসারে খ্যাতাপন্ন হইয়াছে। এখানকার লোকে তাঁহার অসামান্য বিদ্যা, বৃদ্ধি এবং ঐশিক ক্ষমতা সম্বন্ধে অনেক প্রকার অলো-কিক উপত্যাস কল্পনা করিয়া থাকে। উল্লিখিত টিকা এীনগ-বের সমতল ভূমি হইতে ১০৩৮ ফিট উচ্চ এবং রাজবাটী হইতে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ দূরবর্তী। ইহা এমত স্থলে স্থিত, যে সকল দিক হইতে উহা সম্যক প্রকারে দৃষ্টি গোচর হয়।

এজন্য কাশ্মীরীরা শঙ্করাচার্য্যের লোকাতীত গুণানূবাদ সম্বন্ধে কহিয়া থাকে, যে, যেখান হইতে এই টিব্বা দেখা যায়, তথায় স্প্রিকা দংশনের ভয় নাই।

ইহাতে উঠিবার হুইটা পথ আছে। কিন্তু-পশ্চিমদিগেরটা অপেকারত উত্তম। মহারাজা গোলাপ সিংহ পরলোক গমন করিবার কিছু দিবস পূর্বের ইহা, প্রস্তুত করিয়া দেন। সোপান-শ্রেণী এই পর্বতের প্রস্তরেই নির্মিত, স্থবিস্তৃত এবং অতি উচ্চ। সর্বশেষে প্রায় চহারিংশ হস্ত পরিমিত পথ অতি ভয়ানক। উহা কাটিয়া সোপান হইবার উপায় নাই। স্থতরাং এমন হুর্গম, যে, আরোহণ বা অবরোহণ কালে হুই হাত দিয়া ধরিয়া ধরিয়া অতি সাবধানে হামাগুড়ি ভাবে পাদ বিক্ষেপ করিতে হয়। শিথর দেশে উপনীত হইতে আমাদিগের ৪৫ মিনিটু লাগিয়াছিল।

•এই শৈলশিখরে একটা অত্যুৎকৃষ্ট প্রস্তর-নির্দ্ধিত মন্দির আছে। ইহা খৃষ্টান্দের ছইশত বংসর পূর্বের্ব অশোক রাজার পুত্র জলোকা কর্তৃক নির্দ্ধিত হইয়াছিল। প্রথমে দ্বাদশ সোপান অতিক্রম করিয়া একটা ক্ষুদ্র খিলানের মধ্যে প্রবেশ করিতে হয়। ইহা প্রস্তে ২২ ইঞ্চ এবং উচ্চতায় ৬॥• কিট। ছই পার্শে ছর্ভেদ্য পাষাণ-প্রাচার এবং সম্মুখে একটা কাষ্ঠের দ্বার থাকাতে ইহা রমণীয় গৃহ রূপে প্রতীয়মান হয়। মন্দিরে প্রবেশ করিবার নিমিত্ত ইহার অভ্যন্তরে স্লচিক্রণ প্রস্তরনির্দ্ধিত ১৮টা সোপান আছে। এক একটা আট ফিট দীর্ঘ, এক ফুট ওচ্চ এবং এক ফুট প্রশস্ত। ইহার অধিকাংশ কেবল মাত্র এক এক খানি প্রস্তর। মন্দিরের অভ্যন্তরে দেড় ফুট উচ্চ এবং

আড়াই ফিট পরিধিবিশিষ্ট এক শিবলিঙ্গ স্থাপিত এবং তাঁহার গাত্রে একটা দর্প খোদিত আছে। মহারাজার আদেশাকুদারে প্রত্যহ ইহার পূজা হইয়া থাকে। বাম পার্মস্থ ক্তম্ভদ্বরের একটাতে ছই উৎকীরণ পারস্থভাষায় খোদিত আছে। একের তাৎপর্য্য এই, যে, দম্বৎ ৫৪ দালে হাজিহস্তি নামক স্থাপনার এই লিঙ্গ প্রস্তুত করেন। অপরটাতে লিখিত " যিনি এই লিঙ্গ স্থাপিত করেন, তিনি মূজার পুত্র কোয়াজা রুকম, দংবং—।" ইহার অবশিষ্টাংশ নিম্নে প্রোধিত, স্থতরাং পাঠ করা স্থকটিন। মন্দিরের চতুপ্পার্শে নয় ফিট প্রশস্ত বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তরের রক আছে। এবং তদ্বারা উহার শোভা বিগুণ ইইয়াছে।

এই গিরিস্থলে পূর্ব্বাক্ত মন্দির ব্যতীত আরো কয়েকটা প্রস্তরালয়ের ভয়াংশ দেখা যায়। এই মন্দিরের নির্মাণ-কৌশল বিষয় অনুধাবন করিয়া দেখিলে বিয়য়সাগরে ময় হইতে হয় এবং নিশ্চয়ই বুঝা যায়, য়য়, এককালে ভীরতবর্ষে নিয়বিদ্যান্ত্বীলনের একশেষ হইয়া গিয়ছে। কারণ, য়ে সমুদয় প্রস্তারে ইহা নির্মিত, তাহার একখানিও শৈলাধারের নহে—সমস্তই বহু দূর হইতে আনীত হইয়াছে। এক এক খণ্ড (য়য়ন সোপান ওরকের) এত রহৎ, য়ে, অনুমান হয়, পাঁচ শত লোকেও নাড়িতে পারে না। তাৎকালিক লোকদিগের পদার্থবিদ্যা প্রভৃতিতে বিলক্ষণ ব্যুৎপত্তি না থাকিলে এত উচ্চ শিথর দেশে এমন মনোহর নির্মাণ কিরপে সম্ভবে ? প্রত্যুত, ইহা পৌরাণিক জনগণের অসাধারণ বুদ্ধি এবং বিচিত্র নির্মাণ কৌশলের স্পষ্ট সাক্ষ্য প্রদান করিতেছে।

ে এমান হইছে সমুদয় কাশীরপ্রদেশ দৃষ্টিগোচর হয়। সৃষ্টির

রমণীয়তা এককালে নয়ন পথে পতিত হইয়া অতুল আনন্দ উৎপাদন পূর্বক গিরিশিরোখান-কন্ট দ্বিগুণ প্রতিশোধ করে। দৌধশিখর.ভৃণাচ্ছাদিত এবং বৃক্ষগণ নবপল্লবিত বলিয়া নগ-র্টী একথানি হরিবর্ণের গালিচা বলিয়া বোধ হুয়। বিতস্তা নদী বক্রভাবে গমন করিতেছে (যদ, ষ্টে এখানকার শালের দৌড়দার কল্পা প্রথম আবিষ্কৃত হইয়া থাকিবে)—উত্তর 'পশ্চিমভাগে হরিপর্বতোপরি অভেদ্য তুর্গ রহিয়াছে—উত্তর দিকে ডল অর্থাৎ নাগরিক হ্রদ—তাহার মধ্যে মধ্যে বিচিত্র বিচিত্র দ্বীপপুঞ্জ ও ভাসমানক্ষেত্র—পার্মে পার্মে মনোরম ক্রীড়া উপবন শ্রেণী—দেখিতে অতি চিত্তবিমে'হিতকর। এই স্থলে দণ্ডায়মান হইয়া কাশ্মীরের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত স্ত্ৰার লক্ষ্য হইয়া থাকে। স্ত্রাং কি নিক্টস্থ, কি দূরস্থ, সকল রমণীয় স্থান একাদি ক্রমে নয়নগোচর হওয়াতে বিমলানন্দ উৎপুর হয়। যাঁহারা এখানে ভ্রমণোদেশে আসিবেন, তাঁহা-দিগের উচিত, যে. সর্কাদৌ এই শঙ্করার্য্যের টিব্বা এবং নিল্ল লিখিত হরিপর্বত (তুর্গ) আরে'হ**ণ** করিয়া কাশ্মীর প্রদেশের রমণীয়তা ও দর্শনীয় স্থানের পরস্পার দূরতা অনুভব করেন।

ছরিপর্বত বা হুর্গ।

হরি পর্বত একটা অসংশ্লিষ্ট ক্ষুদ্র পর্বত। ইহা নগরের উত্তর প্রান্তে স্থিত এবং উদ্ধি প্রায় ২৫০ ফিট। ১৫৯০
খৃঃ অব্দে দিল্লীর অধিপতি আকবার বাদসাহা ইহার চারি দিক
অভেদ্য প্রস্তর প্রাকার দারা বেস্তিত করেন। উহা দৈর্ঘ্যে প্রায়
. দেড়ক্রোশ, উদ্ধে ১৮হন্ত, এন্থে ৮ হন্ত এবং তাহাতে ন্যুনাধিক
এক এক শত হন্ত অন্তরালে এক এক প্রহ্রী-স্থান আছে।

ইহার তিনটী প্রবেশ দার; দক্ষিণ পূর্বভাগে কালী দরো-য়াজা, পশ্চিমে বাচী দরোয়াজা এবং উত্তর-পশ্চিমে সঙ্গিণ দরোয়াজা।

এই পর্বতের শিথরপ্রদেশে প্রস্তর নির্দ্মিত তুর্গ সংস্থা-পিত আছে। ইহাতে প্রবেশ কালে এখনকার শাসনকর্তার আজ্ঞাপত্র আবশ্যক। ইহাতে উঠিবার তুইটা পথ আছে। উত্তরদিকেরটা প্রশস্ত ও স্থগম এবং দক্ষিণেরটা অতিশয় বন্ধুর ও তুর্গম। দূর হইতে তুর্গ তুর্ভেদ্য এবং অতি স্থন্দর দেখায়। কিন্তু অভ্যন্তরে প্রবেশ করিলে হতাশ হইতে হয়। তথায় करायको यथमामाच कृषीत, ठूरेंगी कन्या कृष छलाभाय अवश মহাদেবের লিঙ্গ ও কালীমূর্ত্তি সমন্বিত একটা দেবালয় ভিন্ন আর কিছুই নাই। প্রবেশ্বারে এক কামান এবং প্রত্যেক রক্ষ-ণীয় স্থলে তিন তিন ক্ষুদ্র ও ছাই হুই রুহং কামান স্থাপিত আছে। তংসমূদয়ের নির্মাণ কৌশল অতীব প্রশংসনীয় ৮ এত-দ্বাতীত কয়েকজন স্থানিজত দৈত্য প্রহরী রূপে নিযুক্ত আছে। যে অভেদ্য শৈলপ্রাকার কাশ্মীরকে শক্রহস্ত হইতে রক্ষা করিতেছে, তাহাতে মনুষ্যের ফীণ বল তিলাদ্ধিমাত্র আবশুক নংখ্য এই কারণেই এথানকার নরেশ্বর তুর্গ স্থরক্ষিত করিতে উপেক্ষা করিয়া থাকেন।

শঙ্করাচার্য্যের টিববার তায় এখান হইতেও কাশ্মীরের শোভা স্পাফ লক্ষ্য হয়। প্রত্রাং পর্য্যটকেরা যেন ছুর্গ দর্শন-চছলে এই অনুপম আনন্দ উপভোগ করেন।

দ্বিতীয় অংশ

फल कारीय नागाविक द्वम।

পাঠক চল, এখন একবার নাগরিক হ্রদের র্মণীয়তা দর্শন
করিয়া আদি। ইহার সমুদ্র দর্শনীয় স্থান তন্ন তন্ন করিয়া
সন্দর্শনপূর্বক সম্যক প্রকারে পরিতোষ লাভ করা এক আধ
দিনের কাজ নহে। কোনো মনোহর ক্রীড়া উপবনে কিয়দিবস বাস করত ইতস্ততঃ পর্যুটন করিলে তৃপ্তিপূর্বক ক্ষমিরুত্তির সম্ভাবনা বটে। পাঠক, না হয়তো আর এক কাজ কর;
উপ্যুগ্রিরি এক পক্ষ গতারাত করত সমুদ্র স্থানে পরিচিত
হও। পরে কোনো পৌর্নমানী শরংশশীর স্থশীতল স্থবিমল
করিণে প্রিয়তম স্ক্রদের মহিত কোনো উপবনের প্রস্তরাসনে
আসীন হইয়া হৃদয় দ্বার উদ্যাটন পূর্বক প্রকৃতির শোভা
বিলোকন কর এবং প্রেমাভিসিক্ত চিত্তে স্প্রিকর্তার মহিমা ও
গুণানুবাদ কীর্ত্তন দ্বারা মানবজীবন সার্থক কর।

সের গড়ী অর্থাং রাজবাটীর সম্মুখে চুঁ টকোল নাম্মী প্রণালী পূর্ববিহিনী হইয়া বিতস্তা নদীর সহিত এই ব্রদকে সংলগ্ন করি-তেছে। প্রণালীর প্রবেশ দারে দেখিতে পাইবে, মহারাজার পালিত হংস ও রাজহংসকুল নির্ভয়ে কেলি করিয়া বেড়াইতেছে এবং নানাবিধ মনোহর রাজ-তরণী ভাসমান রহিন্যাছে। অনুমান ৪০০ ফিট যাইয়া একটা সেহু দেখিতে পাইবে। উহার নাম গাওকদল। সেহু পার হইয়া বাম পার্থে.

স্থাতিপ বৰ্জ্জিত একটা স্থান্ত প্ৰতিবন। এই উপবনে প্ৰণালীতটে যে কাষ্ঠ নিৰ্দ্মিত দিতল লড়ী (বাটী) দেখিতেছ, উহাতে লেখক কিয়দ্দিবস বাস করিয়াছিল। দক্ষিণ পার্থে বারুদ খানা। কিয়দ্দ্র গমন করিলে বাম ভাগে মনোহর চেনার বাগ। ইহাতে শিবির স্থাপনপূর্বক বাস অতি প্রীতিদায়ক। কিন্তু নদীর জলোচ্ছ্বাসে প্লাবিত হইবার সম্পূর্ণ সম্ভাবনা।

অনতিদূরে দ্রোগজন্ অর্থাৎ হ্রদের দার। সেরগড়ী হইতে ইহা অৰ্দ্ধক্ৰোশ দূৱে স্থিত এবং নৌকা দারা এখানে আদিতে ৩৬ মিনিট লাগে! হ্রদের ছার এরূপ কৌশলে নির্শ্বিত, যে, यथकारल नमीत जल निम्न थारक, जश्कारल कवाठे छम्यां छैंज, এবং যথন জল কিয়দ্র উদ্ধে উত্থিত হয়, তথন উহা অপিনা **হইতেই** রুদ্ধ হইরা যায়। স্কুতরাং নদীর জলোচ্ছ্যাসে, হুদের মধ্য ও পার্যস্থ আম নগর ও ভূমি প্লার্বিত হইবার ভয় নাই। দ্বারের উপরিভাগে সেতু আছে এবং তথা হইতে একটা স্বদৃঢ় বাঁধ (যে বাঁধের বিষয় পূর্বের উল্লেখ করা গিয়াছে) নির্গত হইয়া নগর মধ্যে প্রবেশ করিয়াছে। পাঠান নরপতিরা এই দেওু ও বাঁথ-প্রস্তুত করিয়াছিলেন। কোন্জাতীয় শাসন-কর্তাদিগের রাজহু কালে যে দার নির্দ্মিত হয়, তং সম্বন্ধে কেই একবাক্য নহৈ। স্থতরাং নিশ্চয় ক্রা স্থকঠিন। পরস্ত ইহা যে অতি প্রাচীন, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। দ্বারদেশ মংস্থ ধরিবার প্রিয়স্থান এবং ইহার জল ১০ হইতে,৩০ হস্ত পর্য্যস্ত গভীর।

হুদ দৈর্ঘ্যে প্রায় তিন ক্রোশ এবং প্রস্থে দেড় ক্রোশ।. ইহার গভীরতা সকল স্থানে সমান নহে, কিস্তু গড়ে ছয় ইত্তের অধিক হইবে না। ইহার জল অতিশয় স্বচ্ছ ও স্বাস্থ্যকর। নিম্নদেশ ও পার্শ স্থ অসংখ্য অসংখ্য উৎ দ হইতে ইহার
জল উৎপন্ন বা নিঃস্ত হইয়া থাকে। এতদ্বাতীত উত্তর
পশ্চিম ভাগস্থ অত্যন্নত গিরিমালা হইতেও অনেক বারিধারা
নির্গত হইয়া ইহাতে পতিত হইতেছে। ইহাতে অনেক জলজলতা, পানীফল, কমলিনী এবং কুমুদিনী প্রভৃতি আছে।
এখানকার অনেকে থাল পরিত্যাগ পূর্বক স্থলভ ও স্থবিস্তৃত্ত
পদ্মপত্রে আহার করিয়া থাকে। ইহাতে মৎস্থ প্রচুর। মধ্যে
মধ্যে দ্বীপ, ততুপরি লোকালয় এবং চতুঃপাশ্বে বাসবের
নন্দন কানন সদৃশ মনোহর ক্রীড়া উপবন থাকাতে হুদটী
দেখিতে অতি রমণীয়।

পঠিক, হ্রদে প্রবেশ করিয়া অভ্যুক্ত জলজলতার মধ্য দিয়া অনেক মার্গচিহ্ন দেখিতে পাইতেছ। কোন্টীকে অবলম্বন করিবে ভাবিয়া স্থির করিতে পারিতেছ না। আইস, আমার সহিত আইস। এই যে বামপার্শ স্থ নালামার নাল্লী প্রণালী উত্তরবাহিনী হইয়া ইহার সহিত আঞ্চার হদকে সংযুক্ত করিতেছে, চল, ইহাই অবলম্বন করিয়া দর্শনীয় স্থান সমুদ্য একাদিক্রমে শৃখ্বলা পূর্বক দর্শন করি।

দ্রোগ্জন্ ইইতে ১৫ মিনিট আসিয়া বাম ভাগে যে একটী ক্ষুদ্র পল্লী দেখিতে পাইতেছ, উহার নাম বুদমর্গ। উহার সম্মুখে যে বড় বড় বিংশতি খানি প্রস্তর পড়িয়া রহিন্যাছে, উহাতে শাল খোত হয়। এন্থানের জলের এমনি গুণ, যে, উহাতে শাল খোত করিলে যেরপ কোমল ও চিক্কণ

ছইবে, উহার এক হস্ত পরিমিত্র দূরে ধৌত করিলে তজ্ঞপ উৎকৃষ্ট না হইয়া বরং অপকৃষ্ট হইয়া যাইবে।

কিয়দ্রে জালিয়ার নামক গ্রাম। এছলে করেকটা পুরাতন ঘাট এবং হর্ম্যের ভগ্নাংশ ব্যতীত আর কিছুই ক্রউব্য নাই।

এন্থান অভিক্রম করিয়া স্মুথে যে প্রস্তর নির্মিত সেডু দেখিতেছ, ইহার নাম নেউইদিয়ার। ইহাতে তিনটী থিলান আছে এবং মধ্যস্থলের তুই পাশ্বে পারস্ত ভাষার যাহা লিখিত ছিল, তাহা স্পাঠ্য লক্ষ্য হইতেছে না।

অদূরে সতু নামক বাঁধ। ইহা প্রাগুক্ত সেতুর দকিণদিক হইতে আরম্ভ হইয়া হ দের অপর পার্ম্থ নিষাৎবাগ নামা তপোবনের সমীপবর্তী হওতঃ হদকে বিখণ্ডে বিভক্ত করি-তেছে। ইহা দৈর্ঘ্যে তুই ক্রোশ এবং প্রুম্থে গড়ে আট-হস্ত। ইহার এই দীর্ঘ দেহের মধ্যে মধ্যে সেতু আছে—সমষ্টির সংখ্যা নয়টী। ছুইটা প্রস্তর এবং সাতটী কার্চ নির্শ্বিত। অতিশয় প্রাচীনত বশতঃ এবং জীর্ণ সংস্কারভাবে ইহার স্থানে খানে খণ্ডিত হইয়াছে। পরস্ত কিঞ্চিৎ কন্ট স্বীকার পূর্বকৈ ইহার এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্য্যন্ত পর্যান্তন করিলে (যাহাতে ন্যুনাধিক ১া০ ঘণ্টা লাগে) যে অনুপ্র আনন্দ উপলব্ধ হয়, তাহাতে অমুরোধ করা যাইতে পারে, যে, পাঠক সাবকাশমতে তাহা উপভোগ করিতে কদাচ বিশ্বত হইও না। কিন্তু আপাততঃ 'এছল পরিত্যাগ রুরিয়া অগ্রসর হও। সমাধে কত কত চিত্ত-বিমোহিড-কর ঐশিক 'ব্যাপার দেখিয়া পুলকিত ও চমৎকৃত হইবে।

अब्दे रमथ यांत्रजा कमल पर्न व्यादन कतिलाम। किव्रक्तियम ু পূর্বে পদ্মপত্র সমুদয় জলে শয়িত ছিল। এক্ষণে জলের অ-ধোগমন ও নীহারপাতের হ্রাসতা নিবন্ধন পত্রগুলি গাত্রোত্থান করিয়াছে। বোধ হইতেছে যেন নিম্ন দেশস্থ স্পকোমল ভোগ-বিলাসী পানীফলকে আতপ তাপ হইতে রক্ষা করিবার জন্মই প্রকৃতি দেবী ছত্রধারণ করিয়াছেন। কমলিনী .বিকসিতা হই-য়াছে। ইহা যেরূপ বিপুল-শরীরা, স্থবাসিতা ও মনোহারিণী, তেমন বোধ হয়, আর কুত্রাপি নাই। জলসীমা হইতে ছুই হস্ত উর্দ্ধে মৃণালাদনে গর্বিতা রাজ্যেশ্বরীর ন্যায় অধি-ষ্ঠিত। হইয়া নির্বিবাদে রাজত্ব করিতেছে। কিন্তু নির্বিবাদেই বা কিরূপে বলি • তাহা হইলে প্রনভ্রে মৃত্রু মৃত্রু দোত্রল্যমানা হাইবারই বা কারণ কি ? কল্পনা অনুমান করেন, পাছে কেহ ইহাকে এথানকার মহিলাগণের অনুপম বদন-মণ্ডলের সহিত তুলনা করতঃ ইহার গর্ব্ব থর্ব্ব করে, হুদ্ধ এই ভয়েই কাঁপি-তেছে!

পাঠক, কিঞ্চিৎ অগ্রসর হও। সন্মুথে ঐ যে কর্মথানি ক্ষেত্র দেখিতেছ, উহা কি বোধ হয় ? উহাতে মহোল্লাসে ক্ষকগণ কৃষিকর্ম করিতেছে; কাঁকুড়, শসা তরমুচ, বেগুণ প্রভৃতি আহার্য্য দ্বব্য অতিহ্নন্দর জন্মিয়া রহিয়াছে; বিক্রয়ার্থ মহিলাগণ ফল সঞ্চয় করিতেছে; কোনো কোনো ক্ষেত্রের উপর পর্ণকৃটীর রহিয়াছে, ঠিক যেন আমাদিগেরই দেশের শসাংক্ষেত্র। কিন্তু এত অগাধ জলে ক্ষেত্র কিরপে আইল ? চল, আরো কিছু সমীপবর্তী হইয়া ইহার তত্ত্ব অনুধারন করিয়া দেখা যাউক। স্পান্ট প্রতীয়্মান হইতেছে, ইহা ছিন্ত্র

মূল ভাবে অর্থাৎ নিম্নদেশস্থ মৃত্তিকার সহিত অসংলগ্ন অবশায় জলের উপর ভাসিতেছে। কেননা, ঐ যে উহা কৃষকদিগের পদভরে কম্পিত হইতেছে। ইহার একাংশ জলে নিমগ্ন
করিবার জন্য ন্যামরা এত প্রযন্ত্র করিলাম, কিন্তু কিছুতেই
কৃতকার্য্য হইতে পারিলাম না। ইহাই সেই চিরপ্রুত কাশ্মীরের ভাসমান ক্রেত্র। মেলিকোর ভাসমান উপবন পৃথিবীর
সপ্ত অভূতকাণ্ডের মধ্যে পরিগণিত—ইহাও কি সেই শ্রেণীতে
গণ্য হইতে পারে না ?

কাশ্মীরীরা নিম্নলিখিত রূপে ভাসমান ক্ষেত্র নির্মাণ করিয়া থাকে। হ দে অনেক জলজলতা আছে। যে স্থানের জল গভীর নহে, তথাকার লতা সকল জলের নীচে প্রায় দেড় হস্ত পরি-মাণ রাখিয়া কাটিয়া দেয়। জলের গতি মন্দু বলিয়া লতাগুলি ছিন্নমূল হুইলেও কোনো স্থানে যাইতে না পারিয়া এক স্থলেই পরস্পারে সংলগ্ন রহে। কুষকেরা ততুপরি ক্রমে ক্রমেণ ক্রুদ্র লতা ও মৃত্তিকা জমাইতে থাকে। চারি বা পাঁচ স্তর করিতে করিতে উহা বিলক্ষণ দৃঢ় এবং কৃষিকর্মোপযোগী হইয়া উঠে। **এই রূপেই** ভাসমান ক্ষেত্র প্রস্তুত হয়। পাছে জলে ভাসিয়া যায়, অথবা হ্রদের হাস বুদ্ধি অনুসারে কোনো অনিষ্ট ঘটে, এইজন্য কয়েকটা লম্বা মোটা কাষ্ঠ ইহার স্থানে স্থানে দিয়া মূত্তিকাতে প্রোথিত করিয়া রাথে। পাঠক, শুনিয়া থাকিবে " কাশ্মীরে জমি চুরি হইয়া থাকে "—ইহা তাই। কোনো ক্ষেত্র অপেক্ষাকৃত উর্বরা বা ফল্যতী হইলে ছুফ লোকে স্থবিধা পাইলেই অপহরণ করিয়া আপন ক্ষেত্রের সহিত ' 'এমন অলক্ষিত রূপে সংলগ্ন করিয়া দেয়, যে, অপহরণ কার্য্য

ধৃত করা ছুকর। মধ্যে মধ্যে এইরপে রহস্য জনক অনেক অভিযোগ রাজঘারে উপস্থিত হয়। এমন কি, ক্ষেত্র ক্ষুদ্র হুইলে কখনো কখনো আকর্ষিত হইয়া হৃদ ও প্রাণালী অতি-ক্রাম পূর্বক উহা বিচারালয়েও আনীত হইয়া থাকে। ভাসমান ক্ষেত্র কেবল মাত্র এই হ্রদে আছে, অপর কোনো জলাশয়ে নাই।

কিয়দূরে হজরৎবল নামে একটা গ্রাম। ইহা হ দের ঠিক পশ্চিম দিকে। এন্থলে মুদলমানদিগের একটা বুহুৎ মদজীদ আছে। উহার অভ্যন্তর স্থবিস্ত্ত, অভ্যুক্ত, নানাবর্ণের বস্ত্রা-চ্ছাদিত এবং ঝাড় লাওন দ্বারা শোভিত। এক প্রান্তে একটা প্রকোষ্ঠ। উহাতে কাচের আচ্ছাদন বিশিষ্ট ক্ষুদ্র রজত বাক্সে এক গাছি কেশ. আছে। মুদলমানেরা কহিয়া থাকে. ইহা মহম্মদের শাশ্রুলাম। প্রতিবংসর এম্বলে চারিটী মেলা হইয়া থাকে। তন্মধ্যে প্রাবণমাদে সর্বাপেক্ষা মহত্তর মহোৎসব হয়। পাঠক মনে কর, আ'জ সেই মেলার দিন উপস্থিত। স্থতরাং চল, একবার অবতরণ পূর্ববক উহার কৌতুক দর্শন করা यांडेक। कि हिन्तू, कि भूमलभान, कि खी, कि शूक्रम, कि वालक, कि तृष्त, कि धनी, कि निर्मन, এত লোকের সমাগম হইয়াছে, যে, সহর ও চতুষ্পার্শবর্তী গ্রাম সকল শূন্য-প্রায় হইয়া গিয়াছে। ঐ দৈখ, আপণপ্রেণীতে কত প্রকার মনোহর দ্রব্য বিক্রয় হই-তেছে। ক্রেতা ও বিক্রেত দিগের কলকলরবে এত উচ্চরব হইতৈছে, যে আমাদিগের পরস্পরের বাক্য প্রবণগোচর হই-তেছে না। ঐ দেখ, স্থানে স্থানে প্রকাণ্ড উফীষধারী মৌলবীরা উচ্চ কাষ্ঠাসনে উপবেশন করতঃ দোতুল্যমান হইয়া কোরণি 365

পাঠ করিতেছে—কেহ কেহ বা দণ্ডায়মান ছইয়া ভ্রোতৃবর্গকে স্বধর্ম্মের সনাতনত্ব ও মৃক্তিদাতৃত্ব মাহাত্ম্য প্রতিপন্ন করি-Coce। ममজीनां जाखरत প্রবেশ করিয়া দেখ লোলচর্ম, বিগলিতদন্ত, শুভকেশ, শুভ্ৰবাস, স্লচিত্ৰ উফীমধারী এক অশীতিপর বৃদ্ধ ভক্তি সহকারে সকম্পাহস্তে পূর্বেকাক্ত মহম্ম-দের শাক্রালোম উদ্ধাদেশে ধারণ করতঃ দর্শকদিগকে দেখাই-তেছে এবং অর্দ্রুট স্বরে মহম্মদের গুণগান করিতেছে। मर्गकिनिरागत सर्था व्यानारक चिक्तितरम एव रहेशा गम्शम चारि আপাদমস্তক বাহু বিস্তার পূর্বক প্রণিপাত করিতেছে—চারি-দিক " আল্ল। আল্লা " রবে প্রতিধ্বনিত হইতেছে। এদিকে দিবা অবসান প্রায়। পাঠক, চল, একবার হ দে নৌকাদৌড়ের রঙ্গ দেখা যাউক। উৎসব উপলক্ষে অন্যূন পাঁচশত তঁরণী একত হইয়াছে। উহার মধ্যে যে সমুদ্য বাহকদিগকে মল্ল-বেশে ও রণ সজ্জায় সঙ্জিত দেখিতেছ, তাহাদিগেরই মৌকা-দৌড় হইবে। সম্বাধ হুদের জলধু ধৃ করিতেছে। তথায় মধ্য-স্থলে বিশ হস্ত পরিসর স্থান রাখিয়া দর্শকদিগের তরণীমালা हुई व्यक्तिक्त (व्यनी इहेत। यशुष्टल त्नीकां प्लोक इहेरड লাগিল। প্রবন বেগে নৌকা সকল দৌড়িতেছে, চাপ্পার * আঘাতে হুদ কম্পিতা হইতেছে, জয়ীদিগের জ্য়ধ্বনিতে চারি-দিক প্রতিধানিত হইয়া ভিঠিতেছে, দেখিতে শুনিতে অতি আনন্দজনক। দেখিতে দেখিতে দিঙ্মগুল তমদাচ্ছন্ন হইল। বিহগকুল নীড়ে প্রত্যাগমন কালে কলরব করিতেছে—'বোধ হইতেছে, তাহারা যেন সন্ত্যা আগত দেখিয়া মানবগণকেও

^{*} নৌকার দীঝিকে এখালে, চাপুপ[†] কহিলা খাকে।

স্ত্রনতা ভাঙ্গিয়া স্ব স্থ ভবনে গমন করিতে বলিতেছে। স্তত্ত্রব পাঠক, চল, আমরাও আপনাপন আশ্রমে বিশ্রাম করিতে যাই। অদ্য জীড়া উপবনের একটীও দেখা হইল না। স্থবি-ধামতে কল্য তাহা হইবে।

নিসীম বাগ] (পারস্য ভাষায় নসীম শব্দের অর্থ মন্দ মন্দ বায়ু) দ্রোগ্জন হইতে ১০ ঘণ্টা নৌকাপথে আসিলে হজ-রংবলের অনতিদূরে নসীম বাগ। ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় এক কোশের চতুর্থাংশ এবং প্রস্থে এক ক্রোশের অইমাংশ। ইহা আকবর বাদসাহ নির্মাণ করেন এবং ভগ্নাংশ দেখিয়া বোধ হয়, ইহা আদৌ প্রস্তর প্রাকার দ্রারা বেস্টিত ছিল। অধুনা ইহাতে কেবল মাত্র অন্যুন পাঁচশত অতি রহৎ ও পুরাতন চেনীর রক্ষ আছে। এক একটা এত সুলায়তন, যে, পাঁচ জন লোকে হস্ত প্রসারণ পূর্বক পরিবেইটন করিতে পারে না। বৃক্ষপ্রোণী শৃন্থালা পূর্বক দণ্ডায়মান হইয়া স্থলীতল ছায়া দান করিতেছে বলিয়া স্থানটা অতি রমণীয়।

চা'রচেনার অর্থাৎ চারিটা চেনার সম্বলিত দ্বীপ। ইহাকে রূপা লং অর্থাৎ রজতদ্বীপত্ত কহিয়া থাকে। ইহা নদীম বাগের সম্মুখে এবং হ্রদের উত্তর প্রান্তের মধ্যস্থলে স্থিত। পরি-মাণে এই দ্বীপ ৯২ চতুরত্র হস্ত এবং জল হইতে প্রায় দুই হস্ত উচ্চ। নির্মাণ কালে ইহার চারিকোণে চারিটা চেনার রক্ষ ছিল। এইজন্ম ইহার নাম চা'রচেনার হইয়াছে। কিন্তু অধুনা কেবল দুইটীমাত্র বিদ্যমান আছে। ইহার মধ্য হলে তিন হস্ত উচ্চ ৩৬ হস্ত দীঘ এবং ৩০ হস্ত প্রশস্ত প্রস্তর-নির্মিত আ্বান রহিয়াছে। তত্বপরি ১০ হস্ত উচ্চ এবং ১৭ চতুরত্র হস্ত আর্ম-

তন বিশিক্ষার একটা কুন্ত প্রস্তরাসন দৃষ্ট হয়। তৃত্পরি উপ-বেশম পূর্বক দর্শন করিলে হু দের কি রমণীয়ত। 🖟 চারিদিকে জলরাশি ধৃধু করিতেছে—ছয় হাত জলের নীচে মৎস্থাণ জীড়া করিয়া বেড়াইতেছে—জলজলতা জল হইতে নিজ্ঞান্ত হইবার জন্য যেন প্রয়াদ পাইতেছে, স্পষ্ট লক্ষ্য হয় — নীল-বর্ণ আকাশ পূবিত্র হ্রদগর্ভে প্রতিফলিত—তটম্থ রুক্ষ, উপ-বন, পর্বত সমূহ মূলদেশ উদ্ধে সংস্থাপন পূর্বক নতশিরে প্রতিবিশ্বিত —সমাগত তরণীর চাপ্প্যোতে সমুদ্য ছিন্ন ভিন্ন হইয়া আর এক প্রকার নৃতন আকারে পরিণত-সন্মুথে ক্ষেত্র সমুদয় জলের উপর ভাসমান—দক্ষিণ পার্শ্বে হজরৎবল ও নদীমবাগ শোভায়মান-পশ্চাং ও বামভাগে শালামার, নিষাৎ ও চশমাসাহী প্রভৃতি মনোহর ক্রীড়া উপবনের বিয়-দংশমাত্র প্রত্যক্ষীভূত – পাছে তৎসমূদ্য় ঝটিকারূপ অনিবার্য্য নৈসর্গিক দত্ত্য দারা উচ্ছেদদশা প্রাপ্ত হয়, একারণ করুণাময় ঈশ্বর উহাদিগের পশ্চান্তাগে অভেদ্য ও অনুলংঘনীয় শৈল-প্রাকার নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন, এ সব দেখিলে অভূতপূর্ব আনন্দের উদয় হয়।

পূর্বতন ভ্রমণকারীরা বর্ণনা করিয়াছেন, যে, এই চা'রচেনারের মধ্যদেশস্থ আসনোপরি একটা প্রস্তারের মন্দির এবং তাহার চতুপ্পার্শ্বে পুপ্পবাটিকা ছিল। কিন্তু অধুনা তাহার নিদর্শন মাত্রও নাই। মহারাজা রণজিং সিংহের অধিকার কালে দেওয়ান কুপারাম * নামক এক জন শাসনকর্ত্তা, এই জ্রীড়ান্বীপ নির্মাণ করেন।

^{্ +} কৃপারাম অতিশয় ইজিয়-ভোগ-বিলাসী ছিলেন। তিনি যে সমুদ্য তর্-ণীতে বিহার করিতে যাইতেন, তাহার অধিকাংশ তরুণ-বয়ক্ষা প্রমা সৃদ্য

[রঘুনাথপুর] ব্রদের উত্তর প্রান্তে এই ক্ষুদ্র পল্লী। ইহাতে একটা উৎস আছে। উহার জল অতিশয় স্বাত্ন ও শীতল। এখানে মহারাজার চাউল, ময়দা প্রভৃতির জলয়ন্ত্র আছে। এবং এখানে বাবু নীলাম্বর মুখোপাধ্যায় মহাশয় জলয়ন্ত্র ছারা রেসম প্রস্তুত করিবার কারখানা নৃতন প্রতিষ্ঠিত করিয়া আপন অসীম বৃদ্ধির পরিচয় দিয়াছেন ও রেসমের প্রচুর উন্ধৃতি সাধন করিয়াছেন।•

[শালামার বাগ] (শালা—গৃহ এবং মার—কন্দর্প)
প্রভাত ইহা যেরূপ মনোহর, তাহাতে ইহার এই নাম প্রকৃতই
হইরাছে। ইহা সর্কোৎকৃষ্ট ক্রীড়া উপবন এবং জাহাঙ্গীর
বাদসাহ দ্বারা নির্মিত। ইহা হ্রদের উত্তর-পূর্বে-কোণে স্থিত
এখং ২৪ হস্ত প্রশৃত্ত ও প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ দীর্ঘ এক কৃত্রিম
প্রণালী দ্বারা সংযুক্ত। এই প্রণালীর উত্য় পার্ষে বৃহৎ বৃহৎ
বৃক্ষছায়াময় ও দ্ববিদল-শোভিত স্থবিস্তৃত বর্ম আছে। ভুদ ও
প্রণালীর সঙ্গম-স্থানে ভগ্নাংশ দেখিয়া বোধ হয়, পূর্বকালে
প্রস্তর নির্মিত মনোহর দ্বার ছিল।

শালামার দৈর্ঘ্যে ১১৮০ হস্ত এবং প্রস্থে নিম্ন দেশে ৪১৪

মহিলাব দের স্থকোমল হলে বাহিত হইত। আবার কোমো কোনোটাতে মাঝিরা
ত্ব প্রণয়িণী সমন্তিব্যাহারে উপবেশন পূর্বক বাহিত। তিনি নাবিকদিগকে প্রণর সন্থলিত নূতন প্রকারের চাপুপা আঘাত করিতে শিখাইয়া–
ছিলেন। একারণ অন্যাপি তৎসমূদ্য ও কুপারামী চাপুপা" নামে খ্যাত
আছে। সেই সমুদায়, বিশেষ ঃ চাপুপা পরিত্যাগ পূর্বক কেবলমাত্র পদায়াতে
নৌকা চালন, ভোগবিলামী প্রণরী জনগণের অতি প্রিয়। বেহেতু তন্ধারা
আরোহীদিগের শরীরে রোমাঞ্চ প্রভৃতি সাত্তিকভাবের লক্ষণ আবিত্ত ভ্রমুঃ
খাকে।

ও উপরিভাগে ৫৩৪ হস্ত। ইহার চারিদিকে ইস্টক ও প্রস্তর নির্মিত ছয় হস্ত উচ্চ প্রাচীর আছে। ইহা চারিতল। সকল তলই প্রায় সম-আয়তন।

এই উপবন এবং পশ্চাল্লিখিত কয়েকটা যেরপে প্রণালীতে প্রশীত এবং কৃত্রিম উইস ও জল-প্রপাতার্দি থাকাতে যেরপে প্রীতিকর তাহা বিনা দৃষ্টিতে বোধগম্য হওয়া স্থকটিন। কেননা আমাদিগের দেশে এমন কোনো পদার্থই নাই, যাহার সহিত ইহাদিগের ভুলনা হইতে পারে। বোধ করি, বাগান যে আবার ত্রিতল, চারিতল, দশতল হয়, ইহাই অনেকের কল্পনা পথে আইসে না। ইহা বিতল কি ত্রিতল কোটার তায় এক তলের উপরি অপর তল সংস্থাপিত, এরপে ভাবে নহে। মনে কর, কোনো অহুক্তে অসরল পরিতের নিদ্রদেশ প্রথম তল, তত্বপরি স্তবক বিতীয় তল, তত্বপরি হৃতীয় তল, এই ভাবেই উপবন সমূহের তল কথিত হইতে পারে। যিনি কখনো কোনো পর্বতের গাত্রে স্তর বিশিষ্ট শস্তক্ষেত্রর শ্রেণীপরম্পরা দেখিয়াছেন, তিনি ইহাদিগের নির্মাণ কোশল কথিছেং হৃদয়ক্ষম করিতে পারিবেন।

পূর্ব্বাক্ত উদ্যানের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যন্ত,
ঠিক মধ্যদেশ দিয়া, ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র জলাশয় প্রেণী আছে; এবং
এক হস্ত গভীর ও ১৮ হইতে ২৮ হস্ত পর্যান্ত প্রশস্ত প্রণালী
দ্বারা একের সহিত অপরটী সংমিলিত। এই সমুদয় জলাশয়
ও প্রণালী স্তৃচিক্রণ কৃষ্ণবর্ণ প্রস্তারে দির্মিত এবং বৃহৎ বৃহৎ
অতি স্থানর কৃত্রিম উৎস (ফোয়ারা) পরিপুরিত। সমুদ্য়ে
১৬৭ ফোয়ারা আছে। ইহার অধিকাংশই উপরিতন অর্থাৎ

চতুর্থ তলে স্থিত। উদ্যানের পশ্চান্তাগত্ব গিরিদেশ হইতে জলধারা নিংহত হইয়া উপরিতন তলে প্রবেশ করিতেছে। তথাকার কোয়ারা সমুদয়কে বিবিধ প্রকার ক্রীড়াশালী করিয়া চিত্ত বিমোহিতকর প্রপাত দ্বারা ঐ জলধারা নিম্নতলে পতিত হইতেছে। এইরূপে একাদিক্রমে সমুদয় তল পরিভ্রমণ পূর্বক উদ্যান পরিত্যাগ করিয়া বহির্দেশন্থ প্রণালীতে পতিত এবং পরিশেষে হ্রদে মিলিত হইয়া যাইতেছে।

উপরিতন তল দর্বাপেক্ষা উচ্চ, মনোহর এবং প্রাচীর দ্বারা বৈষ্ঠিত। ইহাতে বিচিত্র প্রস্তর-নির্দ্ধিত বিলাস-ভবন আছে। এখানকার জলাশয় এমন প্রণালীতে নির্দ্ধিত, যে, দণ্ডায়মান হইলে কোনো হলে কটি, কোনো হলে বক্ষঃ ও কোনো হলে বা গ্রীবাদেশ জলে নিমন্ন থাকে। স্থতরাং পাঠক, বুঝিয়া লও, ইন্দ্রিয়খ্যাসক্ত বাদশাহগণ এহলে অপরূপ রূপলাবণ্যবতী শত শত কামিনীগণকে উলঙ্গিনী করিয়া কিরপে নির্লভ্জ আমোদ সহকারে জলবিহার করিতেন। সমুদয় ফোয়ারা ক্রীড়া করিতেছে—তাহাদের প্রত্যেকের মুখ হইতে ভিন্ন ভিন্ন প্রকার জলধারা নিঃস্থত হইতেছে—কতক ধারা ঠিক সরলভাবে উথিত—কতক বা অতি স্থনের বক্রভাবে পতিত। আবার কোনো কোনো ফোয়ারার মুখ অপ্রশস্ত করিয়া দেওয়াতে নিম্নলিথিত পারস্থ কবিতার যাথার্থ্য প্রতিপন্ন করিতেছে;—

্ হিশ্বতে সাহেব্দিল । দর্ভদ্দতী তদ্নেত।
আবে কলর। যে তদী মাাল্বালা মে কুন্দু।।
অর্থিৎ মহাকুভব লোকের সদাশয় সমুদ্য় বিপারকালে

আয়মাণ না হইয়া অধিকতর উন্নত হইয়া থাকে। যেমন কোয়ারার মুখ যত অপ্রশস্ত করিয়া দিবে, ততই জলের ভেজ উর্জামী হইবে।

আবার উর্জোখিত জলধারা সমুদ্যের উপরে সূর্য্যরশ্মি প্রতিবিশ্বিত হওয়াতে সহস্র সহস্র ইন্দ্রধনু উৎপন্ন হই-তেছে—নিক্ষিপ্ত জলকণা কতক বা উৎকৃষ্ট নীলবর্ণে, কতক বা উচ্ছল পীতবর্ণে, কতক বা অপর কোনো মনোহর বর্ণে শোভা ধারণ করিয়া পতিত হইতেছে—উলাত বাষ্পরাশি তরল অলক মেঘ বা কুজ্ঝটিকার ন্যায় চারিদিক আরত করি-তেছে—এক তল হইতে অপর তলে জল গম্ভীর শব্দে পড়ি-তেছে—দেখিতে যে কি মনোহর, তাহা প্রকাশ করিবার भक्त नारे। कथिত আছে, এकना भातनीय तजनीर्यारभ দাহ আলম বাদদাহ এইউপবনে বিহার করিতেছিলেন; এমত সময় সহসা দেখিতে পাইলেন, কোঠনী বৃক্ষশাখায় একটা উষ্দ্রল পদার্থ চন্দ্রকিরণে প্রতিবিশ্বিত হইয়া মনোহর কিরণজাল বিস্তার! করিতেছে। তদর্শনে প্রীতিপ্রফুল্ল মনে অনুসন্ধানের পর অবগত হইলেন, যে. উহা সোণার ঝগ্ঝগা মাত্র, কোনো পতাকাচ্যত হইয়া রক্ষশাখায় সংলগ্ন রহিয়াছে। মনে মনে আন্দোলন করিলেন, যখন এক বিন্দু ঝগ্ঝগাতে এত বিচিত্র শোভা উৎপাদন করিয়াছে, তখন উপবনস্থ সমুদর বুক্ষ স্বর্ণে মণ্ডিত হইলে অনির্বাচনীয় 'শোভা ধারণ করিবে। বাদশাহ-দিগের যে চিন্তা, সেই কাজ। প্রধান সচিবকে আদেশ করি-লেন, যে আগামী পোর্ণমাসী রজনীতে এই উপ্রনের সমুদয় ুবক সুবর্ণপাতে মণ্ডিত হয়। সচিব এই আজ্ঞা কার্য্যে পরিণত

করিল.। প্রত্তে, অতুল ঐশ্বর্যালী ভোগবিলাসী বাদশাহগণ ঈদৃশ নন্দন্বন সদৃশ উপবনে ইন্দ্রিয়স্থবের একশেষ করিয়া গিয়াছেন।

[নিষাংবাগ] পারস্ত ভাষায় নিষাৎ শব্দের অর্থ আনন্দ। এই উপবন শালামার উদ্যানের অদূরে স্থিত এবং উহারি স্থায় স্থরম্য ক্রীড়াকুঞ্জ। ইহাও জনৈক মোগলদম্রী দ্বারা প্রণীত। ইহা হ্রদের পূর্ববভাগের মধ্যদেশে স্থিত। চতুষ্পার্শ্বে গগনস্পর্শী ইহা দূর হইতে স্পঝীক্ষরে দৃষ্টিগোচর হয় এবং দেখিতে অতি স্থন্দর। ইহা ন্যুনাধিক সহস্র হস্ত দীর্ঘ, ৭২০ হস্ত প্রশস্ত এবং ইফক ও প্রস্তরনির্দ্মিত অত্যুক্ত প্রাচীরে বেষ্ট্রিত। ইহা দশ তল। উণরিতন তিন তল অপেফাকৃত উচ্চতর। শালামারের ন্যায় ইহার, ও মধ্যদেশ দিয়া জলাশয় শ্রেণী আছে এবং ৮ইঞ্চ গভীর ও ৮ হস্ত প্রশস্ত প্রণালী দারা পরস্পারে মিলিত। জলাশয় সমূহ ও প্রণালীটী স্থচিক্কণ প্রস্তরনির্ম্মিত এবং সমুদয়ে ১৬৪টা কোয়ারা আছে। যে জলধারা শালামার উদ্যানে প্রবেশ করিয়া তথাকার ফোয়ারা সমুদয়কে জল প্রদান করিয়া থাকে, উহারি এক প্রবাহ এম্থলে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া তদ্রূপ প্রণালীতেই সমুদয় ফোয়ারাকে ক্রীড়াসক্ত করে। কিন্তু এখানকার প্রপাতগুলি ৮ হস্ত হইতে ১২ হক্ত পর্য্যন্ত উচ্চ, ঈষৎ ঢালু এবং খোদিত নানাবিধ প্রতিমূর্ত্তিতে শোভনীয়। স্নতরাং এক-তল হইতে অপর চলে জলপতনকালে অনির্কাচনীয় শোভা উৎপন্ন হয়.এবং এমন গভীর শব্দ হইতে থাকে, যে, কর্ণ বধির করিয়া ফেলে।

ইহাতে ছুইটা মনোহর বিলাসভবন আছে। একটা নিম্নতলে, অপরটা সর্কোচ্চতলে স্থিত। ইহাদিগের নির্মাণ-কোশল প্রশংসনীয় এবং ইহাদিগের মধ্যদেশস্থ ও চতুম্পার্যস্থ ফোয়ারাশ্রেণী অতীব মনোহর।

[সোণা লং অর্থাৎ স্থবর্ণ বীপ] ইহা হুদের দক্ষিণ ভাগের
মধ্যস্থলে এবং নিষাৎবাগ হইতে ২০ মিনিটের নৌকা পথে
স্থিত। জনৈক মোগলসমাট রূপা লঙের সহিত সমকক্ষ করিবার জন্ম এই দ্বীপ নির্দাণ করেন। ইহা দৈর্ঘ্যে ৮০ হন্ত,
প্রস্থে ৭২ হন্ত এবং জলের উপরিভাগ হইতে প্রায় তুই হন্ত
উচ্চ। ইহার চতুঃপার্য দূর্ব্বাদলরঞ্জিত এবং অতি সরলভাবে
জলের সহিত মিলিত। ইহাতে যে সমুদ্য ইফক ও প্রস্তরালয় ছিল, (যাহা পূর্ব্বকালে কারাগার স্বরূপে ব্যবহৃত হইতে)
এক্ষণে তাহাদিগের ভগ্নাবশেষ মাত্র দেখিতে পাওয়া যায়।

চিশমাসাহী । (চশমা—উংস) হ্ছের দক্ষিণপূর্ব্ব তট হইতে অর্দ্ধ ক্রোশ দূরবর্ত্তী এক অত্যুক্ত পর্বতের পার্থদেশে একটা মনোহর ক্ষুদ্র উপবন আছে। তথায় একটা অতি স্থানর চশমা অর্থাং উৎস থাকাতে উহার নাম চশমাসাহী হইয়াছে। উন্যানের দৈর্ঘ্য ২২৬ হস্ত, প্রস্থ ৮৪ হস্ত এবং চারি দিকে প্রায় ৪ হস্ত উক্ত প্রাচীর আছে। শালামার ও নিষাংবাগ যে প্রণালীতে প্রণীত, ইহা ও ত্তরুপ। ইহা ত্রিতল। উদ্যানের দক্ষিণ প্রাস্থে উক্ত উৎস স্থিত। উহার জল অতিশয় স্বচ্ছ ও স্বাত্র এবং এমন শীতল, যে "জলের উঠেছে দাঁত, কার সাধ্য দেয় হাত ?" জৈয়ে বা আষাঢ় মাসেও, পান করা ক্ষের। ইহার জল উপবনস্থ সমুদ্য ফোয়ারাতে গমন পূর্ব্বক

ৈ হুদে পতিত হইতেছে। এ ফলে ছুইটী লড়ী অর্থাৎ কাষ্ঠনির্ব্বিত ি দ্বিতল বিলাসভ্বন আছে।

পিরী-মহল] হুদের দিনিণ দিগস্থ অত্যুক্ত পর্বতের গাত্রে ইহা স্থিত এবং তট হইতে প্রায় অর্ধকোশ দূরবর্তী। ইহাতে উঠিতে ২০ মিনিট লাগে। নামটা প্রবণ করিলেই সহসা বোধ হয়, ইহা কোনো বিচিত্র রম্য স্থান হইবে! পুর্বের হয় তো তাহাই ছিল। কিন্তু ছুঃখের বিষয় অধুনা ইহার সোভাগ্য-সূর্য্য অন্তমিত হইয়াছে—এখন কেবল ভগ্নংশ পড়িয়া রহিয়াছে। ইহা ত্রিতল। প্রত্যেক তলে এক এক স্থানির প্রবারীর এবং বারাণ্ডার কিয়দংশ ব্যতীত আর কিছুই নাই। জেহাসীর বাদশাহ স্বীয় গুরু আখুন মোল্লা সাহের পরামর্শে ইহাকে বিদ্যালয়ের জন্য নির্মাণ করেন।

পরীমহলের উপরিভাগ হইতে হুদটী দেখিতে অতি
হুদরে। অত এব পাঠক চল, একবার ইহার সর্কোপরি প্রাদাদে
আরোহণ পূর্বক উহার রমণীয়তা বিলোকন করা যাউক। ঐ
দেখ, চারিদিকে অগাধ জলরাশি ধু ধু করিতেছে, নধ্যে মধ্যে
ক্ষেত্র, দ্বীপ, কমলবন জলের উপর ভাসিতেছে; তটদেশে
স্থানে স্থানে লোকালয় রহিয়াছে; গমনশীল তরণী (ব্যবধান
জন্ম) কখনো লক্ষ্য ও কখনো অদৃশ্য হওয়াতে বোধ হইতেছে, যেন গঙ্গা নদীতে শশক ভাসিতেছে; অতি দূরে
হ্রদপুলিনে নসীম, শালামার, নিষাং প্রভৃতি উদ্যান সমূহ
মস্তক্ষেত করিয়া সেন হ্রদের গভীরতা একতান-নয়নে
নিরীক্ষণ করিতেছে, ইত্যাকার নানাবিধ চিত্তাকর্ষণীয় পদার্থ
দৃষ্টিগোচর হয়।

থীড়] পরী মহলের বাম ভাগে হুদতটে এই পল্লী। এস্থান হইতে পরীমহলে উঠিবার এক স্থাম চড়াই আছে।

্সেখ সফীবাগ] এই উপবন উক্ত পল্লীর নিকটবর্তী! ইহা বাদশাহদিগের দ্বারা প্রণীত নয় বলিয়া অতি সামান্য। ইহার তুই প্রান্তে জনৈক পণ্ডিতের তুইটী ইফকনির্দ্মিত অট্টা-লিকা আছে।

চা'র-চেনার] পূর্ব্বোক্ত স্থান হইতে বাম ভাগে কিয়দ ুরে অগ্রসর হইয়া কতিপর ক্ষুদ্র ভাসমান ক্ষেত্র অতিক্রম পূর্ব্বক এই স্থানে উপনীত হইতে হয়। ইহা স্থপ্রশস্ত ক্ষেত্রবক্ষে স্থিত এবং কোনো ক্রীড়া উপবন নহে। ন্যুনাধিক ৩০ চতুরক্র হস্ত পরিমিত ভূমির চারি কোণে চারিটী রহৎ চেনার রক্ষ আছে। একারণ, ইহাকে চা'র-চেনার কহে। এস্থানটী অতি রমণীয় এবং ইহাতে শিবির সংস্থাপন পূর্ব্বিক বাস্প্রতি উপাদেয় ও প্রীতিকর।

এস্থান পরিত্যাগ পূর্বকি বাম ভাগে কিঞ্চিদূর যাইলে দেই দ্রোগ্জন্ অর্থাৎ হৃদ দ্বারে উপনীত হইতে হয়।

চতুর্থ পরিচেছদ

অদুত নৈদর্গিক ব্যাপার।

শীরক্তবানী। জটগঙ্গা। চলৎশক্তি বিশিষ্ট দীপ। ত্রিসক্ষ্যা: রুজ্ঞসদ্যা বা প্রস্তৃসন্যা। কাঁস'রে কুঠু অর্থাৎ প্রস্তৃতক্ষণ গৃহ। দশক্রোশ দূরবর্তী চশমাদ্ধের প্রস্তৃর সংযোগ। প্রস্তরের কলদান।

কাশ্মীরে কতিপয় সংখ্যক অদ্ভুত নৈদর্গিক ব্যাপার আছে। উহা এমত অলোকিক, যে, দর্শন করিলে মুগ্ধ এবং হতফ্লান হইতে হয়। অনাদি অনস্ত বিশ্বপাতা ধরণীতলে কত স্থানে যে কত'বিচিত্র ভৌতিক কাণ্ড স্ঞ্জন করিয়াছেন. তাহার ইয়ত্তা নাই। কিস্তু এক হলে অনেকের সমবেত দর্শন অতিশয় বিস্ময়কর। অধিকন্ত আশ্চর্য্যের বিষয় এই, যে, অদ্যাপি উহাদিগের (ছুই একটীর ব্যতীত) প্রকৃত কারণ স্থিরীকৃত হয় নাই এবং কোনোকালে যে মনুষ্যের ক্ষীণবৃদ্ধি এ বিষয়ে কৃতকাৰ্য্য হইবে, এমত আশা তো এখন করা যায় না। অনেক স্থলে উষ্ণ প্রস্রবণ বা গন্ধকের আকর, অথবা অপর কিছু, কারণ স্বরূপে নিরূপিত হইয়াছে —কোনো স্থলে বা স্বার্থপর প্রতারণাজীবী পুরুষদিগের প্রবঞ্চনা প্রকা-শিত হইয়াছে, কিন্তু এখানকার নৈসর্গিক ব্যাপার সমূহ এরূপ স্বভাবাপন্ন, যে, যিনি স্বীয় মার্জিত বুদ্ধিবলে যত কিছু কারণ নির্দেশ করিতে প্রয়াদ করিয়াছেন, তাহার একটীও প্রয়োগ-

শীল হয় নাই এবং কোনো কালে যে হইবে, এমনও বোধ হয় না। এ কারণ এখানকার লোকে এতৎসমুদয়কে ঐশিক বলিয়া স্বীকার করে এবং এই কারণেই তন্মধ্যে কয়েকটা হিন্দুদিগের তীর্থস্থান বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছে। এস্থলে পাঠক সাধারণের গোচরার্থ প্রকাশ করা উচিত, যে, আমি ইহার, অনেক গুলি মেকুষ দর্শন করিয়াছি এবং সাবকাশ বিরহে বা অপর কোনো প্রতিবন্ধকতা বশতঃ যে কয়েকটা দেখিতে বঞ্চিত আছি, (সম্পূর্ণ মানস, স্থবিধামতে অবশিষ্টগুলি দেখিয়া চফুকর্ণের বিবাদ ভঞ্জন করিব এবং তজ্জনিত অনুপম বিশায়-রদে মগ্ন হইব) তৎসমুদয়ের প্রকৃত বিবরণ (যাহা এম্বলে প্রকটিত হইতেছে) স্বিদ্ধান ও কুসংস্কার বর্জ্জিত বান্ধব মহোদয়গণের মুখেই তাবণ করিয়াছি। তাঁহারা আপনাপন **চক্ষেই সেম্ব দর্শন করিয়াছেন এবং তাঁহাদিগের বাক্যে বিশ্বাস** না করিলে প্রত্যবায় আছে। তাঁহাদিক্সের দেখা ও আমার নিজের দেখা, প্রায় একই কথা। কুসংস্কারাপন্ন অজ্ঞ লোকে এতংসমুনয় সম্বন্ধে যে কত অলোকিক কাল্পনিক আখ্যায়িকা প্রকাশ করিয়া থাকে, তাহার দীমা নাই। আমি তৎসমুদয় উপেক্ষা পূর্ব্বক প্রত্যেকের প্রকৃত বিবরণ বিব্রত করিতেছি।

প্রথম, ক্ষীরভবানা] ইহা উত্তরভাগস্থ সায়ের মোয়াজপাইঁ (নিম্ন দেশস্থ) পরগণায় স্থিত এবং জ্রীনগর হইতে
সেস্থান ন্যুনাধিক তিন ঘণ্টার নোকাপথ। জ্রীনগর অতিক্রম
করিয়া বিতন্তা নদী পরিত্যাগ পূর্ববিক দক্ষিণ পার্যস্থ প্রণালী
দ্বারা গমন করা আবশ্যক। তদনন্তর নল, হোগলা প্রভৃতি
জলজলতা পূর্ণ কতিপয় জলপথ উল্লজ্যন পূর্ববিক একটী কুদ্র

দ্বীপে উপনীত হইতে হয়। উহ'তে কয়েকখানি সামান্ত েলোকালয় আছে। উপকৃল দল্লিকটে প্রবেশ দ্বারে একটা ক্ষুদ্র কুও। উহা আমুমানিক দশ চতুরত্র হস্ত পরিমিত এবং তিন হস্ত গভীর। মধ্যস্থলে ইফক নিশ্মিত ক্ষুদ্র উচ্চাদনে ধ্বজ-পতাকা সংস্থাপিত। ইহাই ক্ষীরভবানী দেবী। ইহা হিন্দু-দিগের প্রধান তীর্থ। যাত্রীগণ ক্ষীর অর্থাৎ খায়সান্ন প্রস্তুত করিয়া ইহাতে নিক্ষেপ পূর্বক নৈবীর উপাসনা করিয়া থাকে, একারণ ইহার নাম ক্ষীরভবানী হইয়াছে। এখানকার আশ্চর্য্য বিষয় এই, যে, কুণ্ডের জলের বর্ণ নিয়ত পরিবর্ত্তিত হইয়। থাকে। কোনো কোনো সময়ে অহোরাত্রি মধ্যে সবুজ, গোলাপী, রক্তিমা প্রভৃতি নানাবিধ বর্ণ একাদিক্রমে দৃষ্ট হয়। আকার কোনে। কোনো সময়ে বা একবর্ণই উপযুর্গেরি বহু দিবস ব্যাপিয়া থাকে। লোকে কহিয়া থাকে, যে, যথন দেবী কুপিতা বা অপ্রসন্ধাবস্থায় দীর্ঘকালব্যাপী শোণিতাক্ত মূর্তি ধারণ করেন, তখন রাজ্যমধ্যে কোনো দৈব ছুর্ঘটনা উপস্থিত হইয়া প্রজাবর্গের সমূহ বিপদ উৎপাদন করে। নিক্ষিপ্ত পায়সান্ন এবং তদাধার মুগ্ময় পাত্তে নিল্নদেশ পূর্ণ হইয়া গেলে মধ্যে মধ্যে কুণ্ডের পক্ষোদ্ধারও করা হয়। কিন্তু তাহাতে ইহার স্বভাবের কোনো বৈলক্ষণ্যই জন্মে না।

অনেকে এই অদুত ব্যাপারের তথ্যানুসন্ধানে প্রবৃত্ত হইয়াছিলেন, কিন্তু কেহই কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই। কুণ্ডের মৃত্তিকার এমন কি গুণ, যে, ক্ষণে ক্ষণে জলের বর্ণকে পরিবর্ত্তিত করিয়া ফেলে! জড়পদার্থ সমুদায়ের গুণাগুণ ভৌতিক নিয়মাধীন। উহা সেই নিদ্দি ফি নিয়মের সীমা তিলা-.

র্দ্ধমাত্রও উল্লঙ্ঘন করিতে পারে না। নীল, পীত, লোহিতাদি বর্ণ সমূহ সকল স্থানে ও সকল সময়েই আপনাপন স্বাভাবিক শুণ প্রকাশ করিয়া থাকে এবং পরস্পরে মিশ্রিত হইলে: এক নৃতন বর্ণ উৎপন্ন করে। স্থতরাং যদি জলের বর্ণ কোনো নির্দ্ধিষ্ট নিয়মে পরিবর্ত্তিত, অথবা তাহাতে বিশেষ বিশেষ সময়েই বিশেষ বিশেষ বর্ণ লক্ষিত হইত, তাহা ছইলে স্বীকার করা যাইত, যে, এই কুণ্ডে নানাবিধ বর্ণোৎপাদক দ্রব্য সংস্থাপিত আছে। কিন্তু তাহা তো নয়-সময় ও নিয়-মের কিছুমাত্র স্থিরতা নাই—একাধারে ভিন্ন ভিন্ন সময়ে ভিন্ন ভিন্ন বর্ণ একাদিক্রমে প্রত্যক্ষ হইবার কারণ কি? এবং কেনই বা এক এক বর্ণ অপরকে অতিক্রান্ত করিয়া দীর্ঘ-কাল ব্যাপিয়া থাকে ? নিম্নদেশ পঙ্কে পরিপূর্ণ হইয়া গ্লেলে তো ইহার স্বভাবের কোনো ইতর বিশেষ লক্ষ্য হয় না, ইহা-রই বা কারণ কি ? এ সমুদয়ের সিদ্ধান্ত 🚁রা অতি তুরুহ। অপর, এই কুণ্ডের নিকটে এমন কোনো পর্বত বা রুক্ষাদি উচ্চ পদার্থ নাই, যাহার প্রতিবিম্বাদি দ্বারা ইহার জলের বর্ণের প্রতি ভ্রম জন্মিবার সম্ভাবনা। অনেকে মনে করিয়া থাকেন, যে, ইহাতে দক্ষিণাজীবী পুরোহিতদিগের প্রবঞ্চন। আছে। কিন্তু অদ্যাবধি তাহা ধৃত হয় নাই এবং একথা সম্পূর্ণ অসম্ভব বলিয়াই প্রতীত হয়। ঐন্দ্রজালিক নটীস্বরূপা প্রকৃতি দেবী ধরারূপ নাট্যশালায় ত্য কত সম্মোহিনী মূর্ত্তি ধারণ করিয়া আমাদের দৃষ্টিভ্রম জন্মাইতেছেন, তাহার ইয়তা ও সম্পূর্ণরূপ কারণ নির্দেশ করা মন্ত্রির সামাত্র বৃদ্ধির কত -म्। धः इहेर्द ।

[দ্বিতীয়, জটগঙ্গা] শ্রীনগরের দক্ষিণ ভাগে ভেঁস্থ নামক প্রগণায় বনহামা নাম্নী এক গ্রাম আছে। ইহা স্থল পথে ন্যুনাধিক পাঁচ ক্রোশ ; নৌকার পথ নাই। এস্থলে আনুমানিক ৫০ হস্ত ঊদ্ধ এক উচ্চ ভূমি আছে। উহা ঈষং ঢালু ও অস-রল। নানাবিধ তরু, লতা ও গুলমাচ্ছাদ্তি এবং বিহস্তম কুলের স্থাব্য কণ্ঠস্বরে কুজিত হওয়াতে স্থানটী অতিরম্ণীয়। ঁইহার অধোভাগে ২০ হস্ত.প্রশস্ত একটা নালা আছে। উহা সম্বৎসর কালই শুষ্ক থাকে। কিন্তু প্রতি বৎসর ভাদ্র মাসের শুক্লপক্ষ অফমী তিথিতে প্রাগুক্ত উচ্চ ভূমির নানা স্থান হইতে জলবিন্দু নিঃস্ত হইয়া এই নালায় পতিত হয় এবং ইহাকে পরিপূর্ণ করিয়া দেয়! লোকে এই অবসরে মহা সমারোহ পূর্ব্বক তথায় উপনীত হইয়া স্নানাদি করিয়া থাকে। ইহাকেই জটগঙ্গা কহে। * আহা! কি আশ্চর্য্য! যে স্থান সম্বংসর শুষ্ক, তথায় কোথা হইতে কেবল মাত্র এক নির্দ্দিষ্ট দিবদেই যে বারিধারা দৃষ্টিগোচর হইয়া থাকে, ইহার তম্ব কে নির্ণয় করিয়া দিবে ?

[তৃতীয়, চলৎশক্তি-বিশিষ্ট দ্বীপ] পূর্ব্বোক্ত পরগণার সান্নিধ্য মাচিহামা নামক পরগণায় একটা রহৎ জলাশয় আছে। লোকে উহাকে 'হাকের সর' কহিয়া থাকে। এই জলাশয়ে দ্বীপাকার কতিপয় রহুৎ রহং ভূমিখণ্ড আছে। তৎসমুদ্য় এরূপ দৃঢ় ও বিস্তৃত, বে, তহুপরি রহৎ রহৎ রক্ষাদি

জিমিয়া রহিয়াছে এবং গো বৎদাদি তথায় তৃণ ভক্ষণ পূর্বাক বিচরণ করে। আশ্চর্য্যের বিষয়, যখন প্রবল বায়ু বহিতে থাকে, তথন এই সমুদয় ভূখণ্ড স্থান-ভ্ৰফ্ট হইয়া ইতন্ততঃ পরিচালিত হয়। তথন উহারা স্ব স্ব উপরি ভাগস্থ ঐ রুক্ষাদি উদ্ভিদ ঐ আশ্রিত পশ্বাবলী ও তদ্রক্ষকগণকে বহন পূর্ব্বক ভারবাহী তরণীর তায় মন্দ মন্দ গতিতে গমন করে, দেখিলে যেমন বিস্মার্ণবৈ মগ্ন হইতে হয়, হর্ষে শরীর তেমনি লোমাঞ্চিত হইতে থাকে। ইহারা নিম্ন দেশস্থ মৃত্তিকা হইতে অসংলগ্ন, এজন্মই প্রবল বাত্যাঘাতে চালিত হয়। নাগরিক হ্রদের বর্ণনায় উল্লেখ করা গিয়াছে, যে, তথাকার ভাসমান ক্ষেত্র আবশ্যক মতে মনুষ্যকর্তৃক ইতস্ততঃ আকর্ষিত ও নীত হইয়া থাকে। কিন্তু এরূপ বৃহৎ বৃহৎ বৃক্ষাদি ও মনুষ্য প্লশু পক্ষী-সমন্বিত বিস্তৃত ভূখণ্ড বাত্যাঘাতে স্থানান্তরিত হই-তেছে, এ দৃশ্য যেকি পরমান্তুত, তাহা বিজ্ঞ স্কাঠক ধ্যান করিয়া দেখুন। শুনিয়াছি, হুকেশ মণ্ডিত নামক স্থানে কোনো হ্রদে এই রূপ চলৎশক্তি-বিশিষ্ট দ্বীপ আছে। লোকে তৎসম্বন্ধে যে সমুদয় অন্তুত অলীক কল্পনা করিয়া থাকে, তাহা শুনিলে হাস্থ সম্বরণ করা যায় না। কিন্তু তদিষয়ের সমালোচনা এম্বলে অভিপ্রেত নহে।

[চতুর্থ, ত্রিসন্ধ্যা] দক্ষিণ ভাগস্থ ব্রিং নামক পরগণায় একটা সমকোণ চশমা অর্থাৎ কুণ্ড আছে। উহাকে লোকে সাধারণতঃ স্থন্দবেরারি কহিয়া থাকে। এখানকার আশ্চর্য্য এই, যে, বৈশাথ মাসের মধ্য হইতে জ্যৈতের মাঝামাঝি সময় প্রান্ত প্রত্যেক দিবাভাগে ঐ কুণ্ডের সপ্তস্থান হইতে জল বিন্দু-তিনবার নিঃস্ত হইয়া কুগু পূর্ণ করে এবং প্রত্যেক বারে কিয়দ্ভ্যাত্র থাকিয়া অবস্ত হইয়া যায়। এইরূপে বারত্ত্ব আবিস্থৃতি ও তিরোহিত হয় বলিয়া হিন্দুরা ইহাকে ত্রিসন্ধ্যা কহে এবং তীর্থস্থান বলিয়া গণনা করে।

[পঞ্ম, রুদ্র সন্ধ্যা বা পবন সন্ধ্যা] পুর্বেবাক্ত পরগণার দক্ষিণ পূর্ব্ব ভাগে সাহাবাদ নামক পরগণায় একটা ক্ষুদ্র চশমা ঁ অর্থাৎ কুণ্ড আছে। অত্যন্ত আশ্চর্য্যের বিষয়, এই কুণ্ড সর্ব্বদা শুক থাকে। কিন্তু মধ্যে মধ্যে অকস্মাৎ জল আদিয়া কিয়দ্দ ও মাত্র থাকিয়া অপস্ত হইয়া যায়। কখনো বা উপযুর্পরি কয়েক মাদ পর্যান্ত এইরূপই চলিতে থাকে। আবার কথনো বা কতিপয় অহোরাত্রি এই ভাবে থাকিয়া একবারে শুফ হইয়া যায়। আবার কিছুকাল পরে স্বকীয় স্বভাবানুযারিক কার্য্য ,করিতে থাকে। একবার জল উদ্গত হইলে ক্ষণকাল অবস্থিতির পর এরূপে অন্তর্হিত হয়, যে, বিন্দুমাত্রও অবশিষ্ট থাকে না। পরক্ষণেই আবার প্রকাশিত, আবার লুকায়িত হয় ! গণনা করিয়া দেখা হইয়াছে, যে, এই রূপে একাদশ বার আবির্ভাব ও তিরোভাব হইয়া থাকে। এ কারণ ইহাকে রুদ্র সন্ধ্যা কহে। কেহ কেহ ইহাকে প্রবন সন্ধ্যাও বলিয়া থাকে। ইহা যে হিন্দুদিগের একটা তীর্থ স্থান, তাহা বলা বাহুল্য মাত্র। ত্রিসন্ধ্যার ভায় এস্থলে কোথা হইতে জঁল আদিয়া এইরূপ অত্যাশ্চর্য্য জোয়ার ভাঁটা খেলিয়া থাকে, ইহা স্থিরীকৃত করিতে অনেক স্থমার্জ্জিত বৈজ্ঞানিক মস্তিফ ঘূর্ণিত হইয়া গিয়াছে! প্রত্যুত, এ সকল যেরূপ স্বভাবাপন্ন, তাহাতে উহাদিপের প্রকৃত গৃঢ় কারণ নির্দেশ করা দূরে থাকুক, অনু- সন্ধানার্থ অনুমিতি বৃত্তি তত্ত্বপথে গমন করিতেও এককালে দিশাহারা হইয়া পড়ে!

[ষষ্ঠ, কাঁদ'রে কুঠ অর্থাৎ প্রস্তর ভক্ষণ গৃহ] প্রাগুক্ত সাহাবাদ প্রগণায় এক বৃহ্ৎ গিরিগুহা আছে। ইহার নাম মণ্ডা। নামটী যেমন মধুর, এখানকার নৈসর্গিক ব্যাপারও তেমনি প্রীতিকর। পাঠক! শ্রুতিমধুর মনোহর মণ্ডা নাম শ্রবণ পূর্ব্বক অভ্যন্তরে প্রবেশ কর, স্থশীতল সরস উপাদেয় ভোজ্য বস্তুতে উদর পূরণপূর্ব্বক তৃপ্তি লাভ হইবে। কিম্বদন্তা আছে, যে, ইহাতে প্রবেশ পূর্বক ইহার অভ্যন্তরস্থ পদার্থ ভক্ষণ করিলে ঠিক বরফের ন্যায় শীতল স্বাত্ন অনুভূত হয়। কিন্তু কি আশ্চর্য্যের বিষয়! উহা ভক্ষণ করিতে করিতে বহির্দেশে আসিলে আর সে শীতল বরফ থাকে না—এরূপ দৃঢ় প্রস্ত-রাকারে পরিণত হইয়া যায়, যে, আর তাহাতে কাহার সাধ্য দস্তস্ফুট করে ? ছঃখের বিষয়, উপরিভাগ্ধহইতে এক রুহৎ প্রেস্তর খণ্ড পতিত হইয়া অধুনা তাহার প্রবেশ দ্বার সম্পূর্ণ-**এ**কপে রুদ্ধ হইয়া গিয়াছে। স্থতরাং তন্মধ্যে আর প্রবিষ্ট ত্রেরা যায় না, কিন্তু অদ্ধভুক্ত হিমশিলা দারদেশের ইতন্ততঃ ম্পড়িয়া রহিয়াছে, দেখিতে পাওয়া যায়। অনুমান হয়, এই গুহাভ্যস্তর অতি গভীর, নিবিড়ান্ধকার ও যৎপরোনাস্তি শীতল। আগস্তুক ব্যক্তি প্রবেশ মাত্রেই হয় তো শিথিলাঙ্গ ও চৈতন্যশূভা প্রায় হইত। স্নতরাং ভক্ষণ কালে গহরে হ মৃত্তিকার প্রকৃত স্বাদ অনুভব করিতে পারিত না। অথবা সূর্য্যাতপ ও বায়ু বর্জ্জিত গুহাভ্যস্তরশ্ব পদার্থ সমুদয় নীহারা-কারে পরিণত হইবে আশ্চর্য্য কি ? পরে ভুক্ত দ্রব্য বহির্দেশে

আনীত হইলে বায়ু সংস্রবে দৃঢ় হইয়া যায়। যদিও ইহার কারণ এইরপে অনুমিত হইতে পারে এবং ইহাই প্রাকৃত বলিয়া বোধ হয়, তথাপি এই ব্যাপারটী কতদূর অভুত তাহা পাঠকগণ অনুভব করন।

[সপ্তম, দশক্তোশ দূরবর্তী চশমাদ্বয়ের থরস্পার সংযোগ] দক্ষিণ বিভাগস্থ দেবসর নামক প্রগণায় বাস্থকিনাগ নামে এক [•]চশমা অর্থাৎ কুণ্ড আছে । বসন্তকালের আগমন হইতে শস্ত পরিপক হইবার সময় পর্য্যন্ত এই চশমা জলে পরিপূর্ণ থাকে। এই সময় অতিবাহিত হইয়া গেলে আর ইহাতে বিন্দুমাত্রও জল থাকে না। ঐ জল ইহা হইতে অপস্ত হইয়া পীর-পঞ্জাল পর্বতশ্রেণীর অপর পার্শ্বস্থ গোলাবগড় নামক চশমা পূর্ণ করে। তথায় ছ্য়মাস অবস্থিতির পর তাহাকে পরিত্যাগ করিয়া পুনরায় এম্বলে আসিয়া আবিভূতি হয়। এইরূপে এক এক চশমাতে ধানাসিক ক্রীড়া করিতে থাকে। এই **চশমান্বয়ের পরস্পার দূরতা ন্যুনাধিক দশক্রোশ হইবে।** এবং উভয়ের মধ্যে অভেদ্য পীর ভূধর ও কত কত স্রোতস্বতী, কানন, লোকালয় প্রভৃতি ব্যবধান রহিয়াছে। স্থতরাং ইহা-দিগের পরস্পার সংযোগ যে কতদূর আশ্চর্য্য তাহা বলিবার শব্দ নাই। অপর, যদিও এই সংযোগ কল্পিত বলিয়া মনে করা যায়, তথাপি উহারা যে পর্য্যান্মক্রমে এবং নিয়মিত রূপে ছয়মাদ শুক ও ছয়মাদ পূর্ণ থাকে, তাহারই বা কারণ কি ? বোধ হয়, এ প্রশ্নের উন্তর কেবল এই মাত্র বলাই সঙ্গত, . যে, যে অনস্ক জ্ঞান অচিন্তী-শক্তি পূর্ণ-পুরুষ অনুপম কৌশল-পূর্ণ এই অথিল ব্রহ্মাণ্ড স্তজন করিয়াছেন, , যাঁহার নির্দ্মিত একটী রেণু হইতে অসংখ্য গ্রন্থ উপগ্রন্থ পর্যন্ত সকলই পর-মাদ্রুত, তিনিই বলিতে পারেন, পৃথিবীর কোন্ স্থানে কিরূপ অদ্বুত ব্যাপার কি প্রয়োজনে সংযোজন করিয়া রাথিয়াছেন!

[অইম, প্রস্তরের জলদান] উত্তরপূর্ব্ব ভাগস্থ লার পরগণায় একখণ্ড বৃহৎ প্রস্তর আছে । উহার নাম হলদর ।
উহার দন্ধিকটে গমন পূর্বক "হলদর জল দেও" বলিয়া
কয়েকবার উচ্চৈঃস্বরে জল ভিক্ষা করিলেই হলদর স্বীয় স্থানীতল গাত্র হইতে বিন্দু বিন্দু পরিমাণে জলদান করিয়া থাকে ।
এই ব্যাপারটী যে কতদূর অদুত, তাহা সকলে সহজেই হলদরঙ্গন করিতে পারেন—আমার বলিয়া দেওয়া বাহুল্য!

পঞ্চম পরিচেছদ।

কাশ্মীরের পূর্ব্ধবিভাগ।

প্রথম অংশ।

দৌড়দার কদ্জার উৎপত্তি। রাম সুনসি বাগ। পাও তন। পাম্পুর—কেশ-রের জন্মখান। ফুক নাগ ও কালীশ নাগ। অবস্তীপুর। সমা ধং। বিজ্ বেহাড়া। ধানুবল। অন্তনাগবা ইস্লামবাদি। মার্তিও বামটন। বায়ন। দুমজু গুহা।

যে সমুদয় দ্রফীব্য স্থানের নাম দ্বারা এই অধ্যায়ের শিরো-দেশ অঙ্কিত করা গেল, ঐ সকল দেখিতে গেলে খানবল পর্য্যস্ত নৌকাপথে এবং অবশিষ্ট ভাগ (যাহা অধিকত্তর রম- . শীয়) স্থলপথেই গমন করিতে হয়। শীনগর পরিত্যাগ পূর্বক মুনসিবাগ (যথায় ইংরাজদিগের নিমিত্ত বিরামভবন নির্মিত আছে) অতিক্রম করিয়া
উজান যাইতে হইলে আদৌ কতিপয় বাঁক দৃষ্ট হয়। কোনো
উচ্চ স্থান হইতে দেখিলে উহা যেন দৌড়দার কল্পা, এমন স্পাষ্ট
প্রতীতি জম্মে এবং উহা দেখিয়াই যে ছৌড়দার কল্পার স্থি
হইয়াছে তাহাও মনে লাগে। এস্থানে বিতস্তানদী এমন বক্রগতিতে গমন করিয়াছে এবং পূর্ববর্ণিত শল্পরাচার্য্যের টিব্বার
স্থিতি-ভাব এরূপ আশ্চর্য্য, যে, কয়েক ক্রোশ পর্যান্ত যতই
অগ্রসর হই এবং যেস্থান হইতেই দেখি, টিব্বাটী অমনি দেই
দিগেই যেন সম্মুখে দণ্ডায়মান রহিয়াছে!

[রামমুনসিবাগ] কিয়দ্র গমন করিলেই এই উপবন। ইহাতে সেউ, নাসপাতি, তুঁত, আঙ্গুর প্রভৃতি স্থাত ফলের বহুসংখ্যক রক্ষ আছে। স্তরাং স্থানটী অতি রমণীয় এবং এখানে শিবির স্থাপন পূর্বকি বাস অতি প্রীতিকর।

পিণ্ড্তন বাধ হয়, "পুরাতন আদি স্থান " শব্দের অপত্রংশ। ইহা একদা কাশ্মীরের রাজধানী ছিল। কাশ্মীরের পুরারত্ত পাঠে অবগত হওয়া যায়, যে, স্থপ্রসিদ্ধ নৃপতি চক্র-গুপ্তের পোত্র অশোক (যিনি খৃন্টাব্দের ২৬৩ পূর্ব হইতে ২২৬ বংসর পর্যান্ত রাজত্ব করেন) এই স্থানে একটী অত্যুৎকৃষ্ট মন্দির স্থাপন করেন। এবং ইহাতে বুদ্ধের এক দন্ত রক্ষিত ছিল। অনন্তর ৬৩০ খৃন্টাব্দে কাণ্যকুজাধিপতি অভিনম্যু অগ্নি সংযোগে এই জনপদ একবারে উচ্ছিন্ন করিয়াছেন। অদ্যাপি অনুকানেক দেবালয় ও হর্ম্যের ভগ্নাংশ চারিদিকে নিক্ষিপ্ত রহিয়াছে এবং অনুমান ৮০ চতুর্ত্র হন্ত পরিষিত্ত

কুণ্ডের মধ্যে প্রস্তরনির্দ্ধিত একটা অত্যুত্তম ও অতি প্রাচান দেবালয়ও দেখিতে পাওয়া যায়। বোধ হয়, ইহা কুণ্ডের মধ্যে স্থিত বলিয়া হুতাশনের দর্ব-ভোগ্য প্রভাব হইতে নিস্তার পাইয়া থাকিবে।

ি পাম্পুর—কেশরের (জাফরান) জন্মস্থান] ইহা নদীর দক্ষিণতটে স্থিত। প্রীনগর হইতে ইহা স্থলপথে চারি ক্রোশ। কিন্তু নদীর গতি অতিশয় বক্র এবং উজান আসিতে হয় বলিয়া নৌকা দ্বারা ছয় বা সাত ঘণ্টা লাগে। এক সহস্র বংসরাধিক হইল, পদ্ম নামে জনৈক নরপতি এই নগর স্থাপন করেন। পূর্বের ইহার নাম পদ্মপুর (পদম্পুর) ছিল। আধুনিক পাম্পুর উক্ত নামের অপভংশ এবং উহার পূর্বেতন গোরবের ধংগোবশেষ মাত্র। এই স্থানে কেশরের হিচিত্র ক্ষেত্র আছে। কার্ত্তিক মাসে উহার পূর্প্তা প্রস্কৃতিত্ ইইলে অনুপম শোভা উৎপন্ন হইয়া থাকে। ক্রেশর অর্থাৎ জাফ্রাণের ক্ষেত্র-সংস্করণ, বীজ-বপন, পুষ্পা উদ্গামন এবং জাফ্রাণ আহরণ অতীব বিস্থাকর ব্যাপার। স্বতন্ত্র অধ্যায়ে তাহার স্বিশেষ বর্ণনা করা যাইবে।

ফুক্নাগ ও কালীশনাগ] পাম্পুরের উত্তর-পূর্ব্ব ভাগে স্থলপথে ন্যুনাধিক দেড়জোশ দূরে এক ক্ষুদ্র পল্লী আছে। তথায় তিনটী ধাতু-মিশ্রিত এবং একটা পরিকার জলময় উৎস দৃষ্ট হয়। প্রথমোক্ত তিনটীকে ফুক্নাগ কহে। উহাদিগের জল গন্ধক-বিশিষ্ট। গন্ধ ঘারা দূর হইতেই উহাদিগের স্থিতি অনুভব করিতে পারা যাম। উক্ত পূল্লীর দক্ষিণ ভাগত পাহাড়ের তলদেশের তিন স্থান হইতে জল নিঃস্ত

হইয়া. এক ক্ষুদ্র প্রণালীতে পতিত হইতেছে। প্রণালী প্রস্তর নির্মিত, এক ফুট গভীর ও এক ফুট প্রশস্ত। উহাতে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র মৎস্থ আছে। এই প্রণালী দিয়া জল নির্গত হইয়া অনুমান ষষ্ঠি হস্ত দূরবর্তী মহম্মদ শার কাষ্ঠ্যনির্মিত প্রাচীন জেয়ারতের মধ্য দিয়া গমন করতঃ প্রবাহ্তি হইতেছে।

ঐ পরিদ্ধার জলের উৎসটীকে কালীশ নাগ কহে। ইহা

ফুকনাগ হইতে অল্পদূরবর্তী এবং পূর্বেক্তি পাহাড়ের পশ্চিম

দিক হইতে নির্গত। ইহার জল একটা কুণ্ডে পতিত হইতেছে। কুণ্ডটী এক ফুট গভীর, সমকোণ ও এক এক দিকে

বিংশতি হস্ত পরিমিত। ইহার চতুঃপার্ধ প্রস্তর নির্মিত।

ইহাতেও প্ররূপ সংস্ত আছে। ইহা হইতে জল নিঃস্ত

হইয়া পূর্বেক্তি জেয়ারতের পশ্চিম ভিত্তির নিম্ন ভাগ দিয়া
গমন কুরতঃ ফুক্নাগের সহিত মিলিত হইয়াছে এবং দক্ষিণবাহী হইয়া অন্ত দিগে চলিয়া গিয়াছে।

ফুক্নাগের জলে লোহ ওগন্ধকের অধিক পরিমাণ আছে।
এ কারণ উহা অতিশয় স্বাস্থ্যকর ও ভৈষজ্য-গুণ-বিশিষ্ট।
যে সমুদয় বিখ্যাত ডাক্তার ইহার জল পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন, তাঁহারা কহেন, যে, ইহার জল পান ও ইহাতে স্নান
করিলে বহুকালব্যাপী বাতরোগ, কুষ্ঠ, কণ্ডূ ও বিবর্ণতা প্রস্তৃতি
ছক্ব্যাধি, শারীরিক দৌর্বল্য, রক্তাতিসার ও আমাশয়াদি
উদর পীড়া এবং প্লীহারোগ প্রস্তৃতি উৎকট উৎকট ব্যাধি
উপ্শম হইয়া থাকে।

[অবস্তীপুর] ইহা দক্ষিণ তটে স্থিত। শ্রীনগর হইতে ত্বলপথে ১৭ মাইল ; নৌকাপথে গেলে ১৫ পঞ্চশ ঘটা লাগে। নরপতি অবন্তী বর্দ্মা ইহা স্থাপন করেন বলিয়া ইহার নাম অবন্তীপুর হইয়াছে। ইহাও এককালে কাশ্মীরের রাজ-ধানী ছিল। ভগাংশ সমূহ দেখিয়া স্পাই প্রতীতি হয়, যে, ইহা প্রাচীর দারা পরিবেষ্টিত এবং অতি উৎকৃষ্ট জনপদ ছিল। কিন্তু বর্ত্তমান সমযে কতিপয় মন্দিরাদির অবশিষ্টাংশ ব্যতীত আর কিছুই নয়নগোচর হয় না।

[সমা থং] কিয়দ্র অগ্রসর হইয়া বামতটে এক উচ্চ গিরি দেখিতে পাওয়া যায়। উহার শিখর দেশে একটা অতি প্রাচীন মন্দির আছে। উহাকেই সমা থং কহে। লোকে কহিয়া থাকে, যে, যথন কাশ্মীর প্রদেশ জলে মগ্র ছিল, তথন মহাত্মা কশ্যপ এই স্থানে যোগাসনে বসিয়া সহস্র সহস্র বৎসর অতিবাহিত করেন।

[বিজ্বেহাড়া] বোধ হয়, ইহা "বিদ্যাবিহার" শব্দের অপল্রংশ হইবে। এই প্রাচীন জনপদ অক্ট্রীপুর হইতে চারি জোশ দূরবর্ত্তী। কিন্তু নৌকা করিয়া যাইতে হইলে ন্যুনাধিক দশ ঘন্টা লাগে। এম্বানে একটী কাষ্ঠনির্মিত সেতু আছে। খৃষ্টাব্দের ২৫০ বংসর পূর্বের অশোক রাজা এই ম্বলে একটী উৎকৃষ্ট মন্দির নির্মাণ করিয়াছিলেন। কিন্তু মুসলমানদিগের শাসনকালে সিকন্দর নামা জনৈক শাসনকর্তা উহা ধ্বংস করিয়া উহার প্রস্তরাদিতে মসজীদ প্রস্তুত করেন। মহারাজা গোলাপ দিংহ উক্ত মসজিদ নফ্ট করতঃ অপর এক মন্দির নির্মাণ পূর্ব্বক ধর্মের বিজাতীয় প্রতিশোধ লইয়াছেন। নগর অতিক্রম করিয়াই এক অত্যুক্তন ক্রীড়া উপবনের চিহ্ন নগ্যুনগোচর হয়। ভ্যাংশ দেখিয়া স্পষ্ট বুঝা যায়, ইহা

দদীর উভয় তট পর্যান্ত বিস্তৃত এবং প্রস্তর-নির্মিত সেতু দারা সংযুক্ত ছিল।

বিজ্বেহাড়া পরিত্যাগকরিয়া যতই পুরোবর্তী হওয়া যায়, ততই বিতস্তানদী প্রস্থে ও গভীরতায় ব্রাস হইয়া আসিয়াছে। কিয়দ্বে (খান্বলের ছই এক মাইল্ থাকিতে) লিদর নদী ছই স্বিস্তৃত শাখা বিস্তার দারা উহার সহিত মিলিত হইয়াছে।

[খান্বল] ইহা বিতস্তানদীর দক্ষিণতটে স্থিত এবং অতি স্কুদ্র পল্লী। বিজ্বেহাড়া হইতে ইহা প্রায় ৪ মাইল। কিন্তু জলপথে প্রায় ৩ ঘণ্টা লাগে। এস্থলেও একটা কান্ঠনির্মিত সেতু আছে। ইহা অতিক্রম করিয়া নদী অতি অগভীর বলিয়া নোঁকা আর যাইতে পারে না। একারণ, পর্য্যুটকদিগকে স্থলপথেই, গমন করিতে হয়। বন্হাল পথ দিয়া কাশ্মীরে আদিলে এই স্থানে নোকারোহণ পূর্বক শ্রীনগরে যাইতে হয়।

[অনন্তনাগ বা ইস্লামাবাদ] অতি প্রাচীন কালাবিধি হিন্দু রাজাদিগের শাদনসময়ে এই জনপদের নাম অনন্তনাগ ছিল। পরে মুদলমান অধিপতিরা ইহার নাম ইস্লামাবাদ রাখেন এবং এই নামে ইউরোপীয় দমাজে ও ভূগোল গ্রম্থোত হইয়াছে। ইহা থান্বল হইতে প্রায় এক মাইল দূর-বর্তী, অতি প্রাচীন জনপদ এবং বন্হাল পথের শেষ আডা। কয়েকটী অত্যুক্তম উৎস থাকাতে এই স্থানটী অতি রমণীয়। উহাদের মধ্যে অনস্ত-নাগই সর্কোংকৃষ্ট।

অনস্তন্য এক পাহাড়ের তলদেশ হইতে নিঃস্ত হইয়া এক কুণ্ডে পতিত হইতেছে। কুগুটী ৫৫ চহুরস্র ফিট পরি-

মিত এবং প্রায় তিন ফিট গভীর। ইহার চতুষ্পার্শ রুঞ্চরণ প্রস্তবে বাঁধানো। এই অগভীর জলে অসংখ্য অসংখ্য মৎস্থ নির্ভয়ে কেলি করিয়া বেড়াইতেছে, দর্শকদিগের প্রদত্ত ময়দা, চাউল, রুটি বা লুচি প্রভৃতি আহার করিবার নিমিত্ত এক স্থলে সহস্র সহস্র প্রকত্ত হইতেছে, এক অংশ লইয়া অনেক-গুলি পরস্পারে কলহ করিতেছে — দেখিতে অতি বিচিত্র। উহাদিগকে ধ্বত করিলে রাজঘারে দণ্ডিত হইতে হয় এবং কেই বা এমন পামর আছে, যে, এই স্থদৃশ্য ও লোচনানন্দদায়ক জীবদিগকে ধরিয়া আপন উদরপূর্ত্তির লালসা রাথে ? পঞ্চাশ কিট দীর্ঘ ও সার্দ্ধ সাত ফিট প্রশস্ত এক প্রণালী দারা উক্ত কুণ্ড হইতে জল নিৰ্গত হইয়া দ্বিতীয় কুণ্ডে পড়িতেছে। এই জলাশয়ও প্রথমোক্তের ভায় অতি মনোহর, বরং উহা অপেকা কিঞ্চিং বৃহং। ইহাতেও অনেক মংস্থ স্নাছে। অনন্তর আর একটা প্রণালী দারা ইহার জল নির্গত হুইয়া ৭ ফিট উচ্চ ও ৭ ফিট প্রশন্ত অতি স্থন্দর প্রপাত পৃষ্ঠে সংলগ্ন ভাবে অতি প্রথর বেগে উপবনের বহির্দেশে পতিত হইতেছে। এই প্রপাতের উপরিভাগে উত্তম বিশ্রাম-ভবন আছে।

অনন্তনাগের পূর্বভাগে কতিপয় পাদ দূরে আর একটা উত্তম উৎস দেখা যায়। উহা গিরিতল হইতে নিঃস্ত হইয়া এক কুণ্ডে পতিত হইতেছে। ইহার জল অতিশয় স্বাহ্ন ও স্বাস্থ্যকর এবং প্রণালী দ্বারা ইস্লামাবাদের অনেক স্থানে নীত হয়। এই কুণ্ডে আরো তুইটা উৎস আর্সিয়া সংমিলিত হইয়াছে। উহার মধ্যে একটার জল মূলদেশে বিস্বাকারে যেন ফোয়ারা হইতে নির্গত হইতেছে এবং অতিশয় নির্মান ও স্বাচু। অপ-রটীর জল ঈ্ষৎ গন্ধকময় এবং পূর্ববর্ণিত ফুকনাগের জলের ন্থায় ভৈষ্জ্যগুণ-বিশিষ্ট।

ি মার্তিও বা মটন] অনস্তনাগের উত্তরে পাঁচ মাইল দূরে ইহা দিতে। ইহা হিন্দুদিগের অতি প্রিসিদ্ধ তীর্থ। আমা-দিগের দেশে যেমন গয়াধামে স্বর্গগত পিতৃলোকের প্রাদ্ধ ও পিওদানাদি করে, এথানেও কাশ্মীরীরা এবং আগস্তুক হিন্দুমাত্রেই তত্রপ করিয়া থাকে। এথানকার জীর্গ-দেবায়তন অতি বিচিত্র ও বিশ্বয়কর। কোন্ কালে যে ইহা নির্মিত হয়, তাহা নিশ্চয় করা স্থকঠিন। কিস্তু বোধহয়, ইহা পাণ্ডবদিগের একটা অক্ষয় কীর্ত্তি এবং এই কারণেই কাশ্মীরীরা ইহাকে পাতৃলভূী কহে। ভিমি সাহেব এতৎসম্বন্ধে লিখিয়াছেন, যে, এই প্রাচীন দেবালয় কেবলই যে কাশ্মীর প্রদেশের উৎসাদনের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ এমত নহে, পৃথিবীর সর্ব্বত্ত পান্তয় পূর্ব্বকালীন স্থপতি বিদ্যার অত্যুৎকৃষ্ট চিহ্ন দেখিতে পান্তয় যায়, ইহা তত্তাবতের অগ্রগণ্য। এস্থান হইতে কাশ্মীরের শোভা কি রমণীয় দেখায়!

[বায়ন] মার্ত্ত হইতে দেড় মাইল দূরে এই ক্ষুদ্র পল্লী। এস্থলে একটা উংকৃষ্ট উৎস আছে। ইহাও হিন্দু-দিগের এক প্রধান তীর্থ। উৎসদী অনন্তনাগ অপেক্ষা অনেক বৃহৎ এবং গিরিতল হইতে নির্গত হইয়া উহার ন্যায় একাদি-ক্রমে. অনেকগুলি কুল ও প্রণালী বাহিয়া প্রবাহিত হওতঃ বহির্দ্দেশস্থ মনোহর চেনার উপবনের মধ্য দিয়া ১৫ ফিট নীচে এক জলাশয়ে পতিত হইতেছে। অনন্তনাগের সদৃশ এখান-কার জলাশয়নিচয়ে স্থদশ্য মৎস্থ আছে।

[ভূমজু গুহা] ইহাও হিন্দুদিগের প্রদিদ্ধ তীর্থ এবং প্রেবাক্ত পল্লীর অনতিদূরে হিত। এহলে কতিপয় ক্ষুদ্র কুদ্র এবং চুইটা অতি দীর্ঘ ও অদুত গিরিকন্সর আছে। কুদ্র ক্ষুদ্র গুলি দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীতি হয়, উহা পুরাকালিক যোগীদিগের আবাদস্থল ছিল। অপর তুইটী এমন বিচিত্র, যে, উহা হয় নিসর্গোৎপন্ন নয় মহাবলাক্রান্ত দ্বিতীয় পাণ্ডব ভীমদেন অথবা তৎসদৃশ কোনো মহাপুরুষ কর্তৃক রচিত। প্রথম গুফা এমন দীর্ঘ ও নিবিড় অন্ধকারাচ্ছন্ন, যে, দীপালোক ব্যতীত ইহাতে প্রবেশ করা যায় না। একারণ নিকটবর্ত্তী পল্লী হইতে প্রকাণ্ড মণাল সংগ্রহ করা আবশুর্ক। ইহাকে কালদেবের গুফা কহে। প্রথমে কয়েকটা অসরল সোপান শ্রেণী দ্বারা ৪০ ফিট উর্দ্ধে আরোহী করতঃ প্রবেশ ঘারে উপনীত হইতে হয়। ইহা উর্দ্ধে ৬॥০ ফিট এবং প্রস্থে ৩॥॰ ফিট। কন্দরাভ্যন্তর ন্যুনাধিক দেড়শত হস্তের পর এমন সংকীর্ণ, যে, আর অগ্রসর হওয়া যায় না। স্বতরাং ইহার প্রকৃত দৈর্ঘ্য নির্ণয় করা নিতাস্তই অসম্ভব। অনেকে কহিয়া থাকে, যে, ইহার অন্ত নাই। ইহাতে বিস্তর বাহুড় বাস করে। স্থানে স্থানে ছাদ হইতে জলবিন্দু নিপতিত হইয়া স্থন্দর হান্দর বিবর নির্মিত হইয়াছে। প্রবেশ দ্বার হইতে কিয়দ্ব গমন করিয়া বামভাগে এক সংকীর্ণ পথ পাওয়া যায় এবং এস্থান হইতে অনুমান ৪০ হস্ত দূরে এক ক্ষুদ্র গোল **धार्कार्थ** मृष्ठे इय़। करत्रक वश्मत हहेन, ডाक्टांत हेना

সাহেব ইহাতে মমুষ্যককাল দেখিয়াছিলেন। প্রত্যুত, এই কন্দর এবং পশ্চালিখিত গ্রহাটী এমনি বিচিত্র, যে, ইহা-দিগকে চতুর্থ পরিচেছদ অর্থাৎ অদ্ভূত নৈসর্গিক ব্যাপার অধ্যা- মের অন্তর্গত করা যাইতে পারিত।

এই গুহার সমিকটে আর একটা রমণীয় গুফা আছে।
অনুমান এক শত ফিট উর্দ্ধে আরোহণ পূর্বক উহাতে প্রবেশ
করিতে হয়। প্রবেশদার ১০ ফিট উচ্চ, ১০ ফিট প্রশস্ত এবং
অপূর্বব থিলানবিশিষ্ট। কন্দরটা ন্যুনাধিক ৪৮ ফিট দীর্ঘ, ২৭
ফিট প্রশস্ত এবং ১৩ ফিট উচ্চ। ইহা অভি পরিপাটা। ইহার
মধ্যভাগে একটা প্রস্তরনির্দ্ধিত উৎকৃষ্ট দেবালর আছে। এই
কন্দরের অনতিদূরেই এক জেয়ারৎ অর্থাৎ মসজিদ এবং
একুটা গোর দৃষ্ট হয়। এয়ান হইতেও স্প্তির শোভা অতি
রমণীয়।

দ্বিতীয় অংশোক্ত এই গুহা বিলোকনানন্তর অনন্তনাগে প্রত্যাগমন পূর্বকে নিম্নলিখিত স্থান সমুদয় দর্শন করা উচিত।

পঞ্চম পরিচ্ছেদ।

দ্বিভীয় অংশ।

আহিবল । কুকুডনাগ। বৈরনাগ। কোঁশানাগ। হ্ীাল বাহরবল।

[আচ্ছাবল] ইহা অত্যুংকৃষ্ট চশমা অর্থাৎ উংস। ইহা অনন্তনাগের পূর্বভাগে ছয় মাইল দূরবর্তী। এই উংস একটী অত্যুত্তম প্রাচীন ক্রীড়াউপবনের উপরিতন প্রান্তে স্থিত। উদ্যানে অনেক স্থসাত্র ফলের রক্ষ্ক, রহৎ চেনার মহীরুহ এবং কতিপয় জীর্ণ হর্ম্য আছে। জেহাঙ্গীর বাদশাহ ইহা নির্মাণ করেন এবং প্রাণাপেক্ষা প্রিয়তমা পরমা স্থন্দরী নূরমহল (নূর জেহান) বেগমকে লইয়া ইহাতে সর্ব্বনা বিলাসম্থ অনুভব করিতেন। উৎসের জল অতিশয় শীতল এবং অনেক ছিদ্র ছারা নির্গত হইয়া যাইতেছে। একটা ছিদ্র অতি রহং। উহা হইতে যে জলপ্রবাহ নিঃস্ত হইতেছে, তাহার আয়তন এক ফুট এবং প্রবাহ দেড় ফিট উদ্ধে উঠিতেছে, স্তরাং দেখিতে অতি স্থন্দর। শালামার প্রভৃতি উপবনের আয় ইহার জল কতিপয় প্রণালী, জলাশয় ও প্রপাত ছারা প্রবাহিত হইয়া বহিদ্দেশে পতিত হইতেছে।

বাদশাহদিগের অধিকার কালে এই ক্রীড়া উপবন যে কিরূপ পরিপাটী ও মনোহর ছিল, তাহা পাঠকগণ অনায়াদে হদয়সম করিতে পারেন। ১৬৬৪ খৃষ্টাব্দে বার্ণিয়ার সাহেব এতদর্শনে এই রূপ বর্ণনা করিয়াছেন—" আচ্ছাবল মোগল সম্রাটদিগের উপনগরীয় মনোহর বাসস্থান। একটা উৎস জন্ম স্থানটী আরো রমণীয়। উহার জল উপবনস্থ প্রাসাদের চারিদিকে প্রবাহিত হইয়া শত শত ধারাতে বহির্গমন করিতেছে। উহা সমতলভূমি হইতে এত প্রবলবেগে এবং সহস্র সহস্র ধারাতে উদ্ধোখিত হইতেছে, যে, উহা উৎস অপেকা নদী নামেই বাচ্য হইতে পারে। উহার জল অতি প্রশংসনীয় এবং এমন শীতল; যে, উহাতে হাত রাখা যায় না। উপবন গ্রাম্য প্রকৃতির সমুদ্য় শোভাবিশিক্ট। বক্রপ্থানালা; সেউ, বাদাম প্রভৃতি স্থস্যাত্ন ফলের বৃক্ষণ্ণেণী; নানা প্রকৃতির ফোরা; মৎস্মপূর্ণ জলাশয় এবং সর্ব্বাপেকা স্থলর

অত্যুক্ত জলপ্রপাত থাকাতে স্থানটী অতি চিত্তবিমোহিতকর।
অতি উর্দ্ধ স্থান হইতে প্রপাতের জল প ড়তেছে বিশেষতঃ
রাত্রিকালে যথন উহার উপরিস্থ প্রাকারের উপর দীপমালা প্রজ্বালিত হয়, তথন উহার দৃশ্য নিতান্তই মনোমুগ্ধকর। আমি এই
স্থান ত্যাগ করিয়া অদূরবর্ত্তী অপর এক মন্দোহর উপবন দেখিতে
গেলাম। উহা আচ্ছাবলের ন্যায় প্রীতিকর ও মনোমোহন।
ভিহার জলাশয় সমূহের মধ্যে একটীতে রহৎ রহৎ মৎস্থ আছে।
উহাদিগকে ডাকিলে অথবা রুটী নিক্ষেপ করিলে উহারা জলের
উপর আসিয়া দেখা দেয়। তখন দেখিতে পাওয়া যায়, বড়
বড় মৎস্থের নাসিকাতে স্থর্ণের মাকড়ি ঝুলিতেছে এবং উহাতে
পারসীক উৎকীরণ আছে। জেহাঙ্গীর বাদশাহের প্রাণেশ্বরী
দূরমহল উহাদিগকে এই অলক্ষার পরাইয়া দিয়াছিলেন। "
কিন্তু ত্বঃথের বিষয়, উহা এক্ষণে অদৃশ্য হইয়াছে।

্রুকুড় নাগ] আচ্ছাবলের দক্ষিণ পূর্ব ভাগে আট মাইল দূরে এই নাগ অর্থাৎ উৎস আছে। ইহা একটা উৎস নহে—কতিপয় অবিরল উৎসের সমাবেশ মাত্র। গিরি-তলের ছয় স্বতন্ত্র স্থান হইতে জল নিঃস্থত হইয়া কয়েক পাদ দূরে একত্র মিলিত হইয়াছে এবং ন্যুনাধিক ১২ ফিট প্রশস্ত প্রণালীর আকারে পরিণত হইয়া প্রবাহিত হইতেছে। এই জল অতিশয় স্বচ্ছ ও শীতল।

[বৈরনাগ] ইহা কুক্ ড়নাগ' হইতে ৭॥০ মাইল দূরে স্থিত এবং বন্হালপথের একটা আড্ডা। এস্থান হইতে অনস্ত-নাগে যাইবার যে স্থাম পথ আছে, তাহার সবিশেষ বিবরণ পূর্বের প্রকাশ করা গিয়াছে। বৈরনাগ অতি রমণীয়, উৎকৃষ্ট ও সর্বাপেক্ষা প্রসিদ্ধ উৎস।
ইহাকে উৎস না বলিয়া প্রকৃত জলাশয় নামেই বাচ্য করা
যাইতে পারে। কারণ, এই জলাশয়রূপী উৎসের জলাধার
অফ্টকোণ-বিশিষ্ট, প্রায় ১১০ ফিট প্রশস্ত এবং ৫০ফিট গভীর।
উহার চতুম্পার্শ্বে ৬ ফিট প্রশস্ত পথ এবং প্রস্তর্রনির্দ্মিত উচ্চ
ও প্রশস্ত প্রাচীর। চিহ্ন দেখিয়া বোধ হয়, পূর্বকালে প্রাচীরের উপরিভাগে অট্টালিকাদিও নির্দ্মিত ছিল। ইহার
গাত্রে জলাশয়ের দিকে ১৪টা খিলান আছে। মধ্যভাগস্থ
খিলানে এক খণ্ড পাষাণোপরি নিম্নলিখিত গদ্য ও পদ্য
(পারসীক ভাষায়) লিখিত আছে;—

शमर ।

পাদশায়ে হফ্ৎ কিস্বর, সেয়েন শায়ে, আদালত গুন্তর, আবুল মুজাফ্ ফর, সুরউদ্দীন, জেহাঙ্গীর পাদশা, ইব্নে, আক্বর পাদশাহে গাজী, বিতারিখ সন ১৫ জলুস দরেঁ সর্চশ্মে ফয়েজ আইন নজুলে ইজ্লাল ফরমুদন্। তা ই ইমারৎ বহকুমে আঁ হজরৎ স্বতে এৎনাম ইয়াফ্ৎ।

र:स र

আ'জ জেহাকীর শাহে আক্বর শা।

द বিনা সর কশীদ বর আক লাক্।

বানীরে আকল ইয়াক ৎ ভারিধস্।

কসর আবাদ চশমে বৈরনাগ।

नन ১०२०।

স্বধর্মরক্ষক আকবর বাদশাহের পুত্র জেহাঙ্গীর বাদশাহ, যিনি সপ্ত সাত্রাজ্যের সম্রাট, অধীশরের অধীশ্বর, ভারপথাব- লম্বী, জয়ের পিতা অর্থাৎ সর্বত্ত জয়শীল এবং ধর্ম্মের জ্যোতিঃ
স্বরূপ, তিনি পঞ্চদশ বৎসর শাসনকালে এই পরমোপকারী
এবং স্বচ্ছ উৎসতটে শিবির সংস্থাপন পূর্ব্বক অবস্থিতি
করেন। তাঁহার আদেশক্রমে এই প্রাসাদ নির্মিত হয়।

भमग्रं । ---

আকিবর শাহের পুত্র জেহাঙ্গীর শা হইতে এই হর্ম্য সম্ভকোতোলন করিয়া গগণ স্পর্শ করিয়াছে। শেষ চরণ অর্থাৎ "কসর্ আবাদ্ চশমে বৈরনাগ" শব্দ চতুষ্টয়ের সাংকেতিক গণনা হইতে বৃদ্ধিমান ব্যক্তি ইহার নির্মাণকাল বৃঝিয়া লইবেন।

প্রাপ্তক্ত শব্দ চতুষ্টয়ের গণনা ১০২৪ এবং পদ্যাংশের নীচে'দন ১০২৯ অক্কিত আছে। স্থতরাং স্পাই প্রতীতি হই-তেছে, বে, দন ১০২৪ দালে জেহাঙ্গির বাদশাহের আদেশক্রমে এই জ্লাশয় ও হর্ম্যাদির নির্মাণ আরম্ভ হয়। দন ১০২৯ দালে উহা সম্পূর্ণ হইয়া গেলে উক্ত উৎকীরণ যথা স্থলে স্থাপিত হইয়া থাকিবে।

জলাশয়ে ক্ষুদ্র ও রহৎ অসংখ্য মৎস্য আছে। উহাদিগের বধ নিষিদ্ধ। উহারা নির্ভয়ে ক্রীড়া করিয়া ইতস্ততঃ
বিচরণ করিতেছে—আহার্য্য বস্তু নিক্ষেপ মাত্রেই সহস্র সহস্র
এক স্থলে পিণ্ডাকারে সংগৃহীত—একটী অপরের উপর শয়িত
—উহাদিগের কল্কল্ শব্দে ও 'পুচ্ছাঘাতে মনোহর ধ্বনি
নিনাদিত — আহার লইয়া পরস্পরে বিবাদমন্ত—দেখিতে অতি
আশ্চর্যা—পরম রমণীয়। জলাশয়স্থ জল নীল মিশ্রিত
গভীর সবজ। কিস্তু যৎকালে প্রবাহ দারা বহিদ্দেশি নিঃস্ত

হয় এবং ব্যবহারার্থ উত্তোলন করা যায়, তথন এমনি স্বচহ ও স্বাভাবিক বর্ণ বিশিক্ত দেখায়, যে, উত্তয় অবস্থার বৈলক্ষণ্য দর্শনে অবাক হইতে হয় এবং একই উৎসের জল নয় বলিয়া ভ্রম জন্মে। অপর, উহা এমনি শীতল, যে, দারুণ নিদাঘ কালে স্পার্শ করিলে অঙ্ক ভূরেশ হইয়া পড়ে।

এগার ফিট প্রশস্ত ও ন্যুনাধিক তিন ফিট গভীর পাষাণনির্দ্দিত এক প্রণালী দ্বারা জল নিয়ত অনর্গলভাবে ও প্রবল বেগে বহির্ভাগে নিঃস্ত হইতেছে, তথাপি জলাশয়ের জল কিছুমাত্র হ্রাস হয় না। বর্ত্তমান নরপতি এই প্রণালীর উপরিভাগে ভ্রমণকারীদিগের নিমিত্ত এক অভ্যুত্তম বারাদরি অর্থাৎ কাষ্ঠ-নির্দ্দিত অট্টালিকা নির্দ্দাণ করিয়া দিয়াছেন। এই প্রবাহ জলাশয় পরিত্যাগ করিয়াই দ্বিভাগে বিভক্ত হইয়াছে। প্রথমটী মৃত্তিকার ভিতর দিয়া কিয়দ্র যাইয়া ছুই স্থলে কোয়ারার ত্যায় স্ফীত হইতেছে। আরো কিঞ্চিৎ অ্রাসর হইয়া অপর প্রবাহের সহিত মিলিত হওতঃ ক্ষুদ্রে নদীর আকারে প্রবাহিত হইয়া বিতস্তা নদীর আয়তন রন্ধি করিতেছে। অনেকে অনুভব করেন, যে, বৈরনাগ হইতেই বিতস্তা নদী উৎপন্ন হইয়াছে। কিন্তু একথা ভ্রমদূলক!

উক্ত প্রণালীর বহির্দারের বামভাগস্থ প্রাচীরে এক পাষাণ খণ্ডে নিম্নলিখিত স্থললিত, রসপূর্ণ ও অর্থগর্ভ পারস্থ-কবিতা খোদিত আছে, যথা;—

> হাইদর বহুকুমে শাহে জাহান বাদশারে দহর। শুকুরে খোদা কি সাক্ত চে কিঁ আব্সর্জোরে॥ ইঁজোরে দাদা অন্ত ব জোরে বেহিন্ত আব্। জিঁ আব্দর্ ইয়াক্তা কাশ্যীর আব্ক।

. ভারিধ জোরে আব্ রুগ্যক্তা সরোসে গ্যায়েব্। আজ্ চশমে বেহিন্ত বেক আম্দা অন্ত জোরে।

व्यमार्थ ।

হাইদর ঈশ্বরামুগৃহীত ও দার্ব্বভৌম শাহেজান দত্রাটের
অমুমত্যমুদারে এই প্রণালী নির্মাণ করিলেন। এই প্রবাহ
স্বর্গীয় জলধারাকে বিশুদ্ধ করিতেছে এবং এতদ্বারা কাশ্মীরের
গৌরব বৃদ্ধি হইয়াছে।

স্থারলোকবাসীরা কহিতেছেন, "চশ্মে বেহিস্ত" হইতে "জোয়ে" উৎপন্ন হইয়াছে—(শেষ চরণ দেখ)। অর্থাৎ "চশ্মে বেহিস্ত" (স্বর্গীয় প্রস্রবণ) হইতে এই "জোয়ে" (প্রবাহ) উৎপন্ন হইয়াছে। এই চরণের অপর অর্থ এই, যে, "চশ্মে বেহিস্ত" শব্দের গণনা হইতে "জোয়ে" শব্দের সংখ্যা অন্তর করিলে এই প্রবাহের নির্দ্মাণ দিন অবধারিত হইতেছে। অর্থাৎ "চশ্মে বেহিস্ত" শব্দের সাঙ্কেতিক গণনা বা চিহ্ন ১০৬৩ এবং "জোয়ে" শব্দের চিহ্ন ১৯। বাদ দিয়া ১০৪৪ হইল। স্থতরাং সন ১০৪৪ সালে এই প্রবাহ নির্দ্মিত হয়।

প্রত্যত, বৈরনাগ অতি রমণীয় স্থান। বাদশাহদিগের শাসনকালে ইহা আরো উৎকৃষ্ট ছিল। চিহ্ন নিচয় দেখিয়া স্পাষ্ট হৃদয়ঙ্গম হয়, এন্থলে অনেক হর্ম্যাদি এবং প্রবাহে ফোয়ারা মালা শোভা বিস্তার করিত। কথিত আছে, জেহাঙ্গীর স্থাটের প্রিয়ত্মা রাজ্ঞী নূরমহল বা নূরজেহান তংসমুদ্য় আপন অভিকৃতি অনুসারে বিন্যাস করেন। এই-স্থানটী সমুদ্য় দিল্লীশ্বর অপেকা জেহাঙ্গির বাদশাহের অধিকৃত্যান্ত্রী সমুদ্য় দিল্লীশ্বর অপেকা জেহাঙ্গির বাদশাহের অধিকৃত্যান্ত্রী সমুদ্য় দিল্লীশ্বর অপেকা জেহাঙ্গির বাদশাহের অধিকৃত্যান্ত্রী সমুদ্য় দিল্লীশ্বর অপেকা জেহাঙ্গির বাদশাহের অধিকৃত্যান্ত্র

তর প্রিয় বিলাসন্থান ছিল। একদা কাশ্মীর গমন কালে পথি
মধ্যে বরমগোলা নামক আডাতে তাঁহার সাংঘাতিক পীড়া
হয়। মৃত্যু সমিকট জানিয়া যাহাতে জীবদ্দশায় আপন প্রিয়
বিলাসভবন বৈরনাগে যাইতে পারেন, সহচরগণকে তিম্বিধান
করিতে আজ্ঞা দিলেন। পুনশ্চ বলিলেন, যদি কৃতান্ত একান্তই সে সাধ প্রাইতে না দেয়, তবে যেন সেই প্রিয়তম
স্থানেই আমার মৃত দেহ সমাধিস্থ হয়। কিন্তু বেগম নূর
জোহান তাঁহার মৃত শরীর লাহোরের সমিকটন্থ সাদেরা নামক
স্থানে লইয়া গিয়া গোর দেন এবং তথায় আপন বৈধব্য
জীবন অতিবাহিত করেন।

িকোশানাগ এবং হরীবল বা হরবল । কোঁশানাগ অতি স্থানর পার্বত্য হ্রদ। ইহা পীর পঞ্জাল পর্বতের শিখর দেশে স্থিত এবং সমুদ্র তল হইতে ১৩০০ ফিট উচ্চ। ইহা দৈর্ঘ্যে আর্দ্ধ মাইল এবং প্রম্থে উহার আর্দ্ধাপেক্ষা ক্রিঞ্চিদ্ধিক। ইহার জল পশ্চিম প্রান্তম্থ পর্বত বিদীর্ণ করিয়া মন্দ মন্দ বেগে নির্গত হইতেছে। কিন্তু কিয়দ্ধুরে বৃহৎ বৃহৎ শিলা খণ্ডে প্রতিঘাত্ হইয়া অতি ভয়ঙ্কর মূর্ত্তি ধারণ করিয়াছে এবং প্রবল বেগে ও ভয়ানক গর্জন সহকারে গভীর তলদেশে পঞ্তিতেছে। তজ্জন্ম কয়েকটা বিচিত্র ও মনোহর প্রপাত উৎপন্ন হইয়াছে। ইহাদের মধ্যে হরবল সর্ব্যোৎকৃষ্ট। বিশেষতঃ বসন্তথ্যত্ব আগমনে যথন দ্রবীভূত তুযার ইহার অবয়ব বৃদ্ধি করে, তথন ইহার সেন্দির্যের ইয়ন্তা থাকে না। খাঁহারা কথনো ঝবলপুরের সন্ধিকটন্থ নর্মাণা নদার স্থবিগ্যাত পতন (যাহাকে ধুমাধার ও মার্কেল রক্ কহিয়া থাকে) দেখিয়া-

ছেন, তাঁহারা এই স্থলের রমণীয়তা বিশিষ্টরূপে হৃদয়স্থ করিতে পারিবেন। এই কোঁশানাগ হইতে যে জলধারা নিপ-তিত হয়, উহা নিম্নভাগে যতই প্রবাহিত হইয়া যায়, ততই অপরাপর উৎদের জলবারা পৃষ্টদেহ হইয়া, নদীর আকারে পরিণত এবং অবশেষে বিতস্তা নদীর সহিত সংমিলিত হইয়াছে।

পঞ্চম পরিচেছদ।

তৃতীয় অংশ !

অমরুনাথ তীর্ধ:

অমরনাথ হিন্দুদিগের অতি প্রসিদ্ধ ও প্রধান তীর্থ।
কাশ্মীরের পূর্বপ্রান্তে চিরনীহারমণ্ডলন্থ বিজন প্রদেশের গুহাভারে মহাদেবের স্বয়স্তু তুষারলিঙ্গ আছে। প্রতি বংসর কেবল মাত্র ভাত্রমাদের রাখীপোর্ণমাদী দিবসে ইহার দর্শন হইয়া থাকে। এই স্থান যেরূপ তুষারমণ্ডিত, নিভ্ত, উদ্ভিদ ও জীবশূল্য, স্থতরাং ভীষণ, তাহাতে অপর কোনো দিবসে এন্থলে একাকী গমন করিতে গৃহস্থ ব্যক্তিদিগের সাহস ও সাধ্য হয় না। একারণ, উক্ত দিবসে সক্ষ্ম সহস্র যাত্রী সমবেত হয়য় দর্শন করিয়া থাকে। কিস্তু কোনো কোনো নির্ভীক উদাসীন এন্থলে উপর্যাপরি ছই তিনমাদ বা ততোধিক দীর্ঘ-কাল ব্যাপিয়াও তথায় অবস্থান করে। হিন্দুস্থানের সম্বেয় অংশ হইতে দর্শনাভিলায়ী লোক সমাগত হয় এবং প্রতি

বংসর স্ত্রী ও পুরুষে দ্বিসহস্রাধিক যাত্রী হইয়া থাকে। রাখীপূর্ণিমার পঞ্চদশ দিবদ পূর্বের সকলকে সংগ্রহ করিবার
নিমিন্ত কাশ্মীরাধিপতির "ঝাণ্ডী" বা "ছটী" অর্থাৎ পতাক।
শ্রীনগরের সন্মিকটবর্তী রামবাগ নামক উপবনে উজ্ঞীন হয়
এবং আট দিবদ থাকিন্তে শ্রীনগর হইতে যাত্রা করে। সন্ম্যাসী
প্রস্তৃতি ভুংখী যাত্রীদিগকে মহারাজা পাথেয় বয়য় দিয়া
থাকেন।

অনস্ত-নাগে পতাকা পৌছিলে যাত্রীদিগের যে যেথানে থাকে. সকলে আসিয়া একত্র হয় এবং পথে আহার্য্য ও ব্যব-হার্য্য দ্রব্য কিছুই পাওয়া যায় না বলিয়া এখান হইতে সক-লেই স্ব প্রয়োজনীয় সামগ্রী সংগ্রহ করিয়া লয়। উজ্ঞীয়মান পতাকা সর্ব্বাগ্রে নীত হইতে থাকে এবং যাত্রী-গণ উহার অনুসরা করে। অনস্ত-নাগ হইতে অমরনাথ ২৮ ক্রোশ-পাঁচ আড়া। পথ যেরপে তুর্মন ও কুচছ সাধ্য, তাহা বলিবার শব্দ নাই। ইহা যেমন কঠিন, তেমনি সমূহ বিপজ্জনক ৷ কারণ, কোনো কোনো স্থান এমন ভয়ক্বর, যে, তথায় পদুশব্দ বা বাক্যোচ্চারণ মাত্রেই পর্বতে শিখরাগ্রন্থিত পতনোমুথ হিমশিলা ও শিলাথও সকল স্থানচ্যুত হইয়া শব্দ-কারীদিগের মস্তকোপরি পতিত হইয়া উহাদিগকে একবারে প্রোথিত করিয়া ফেলে। রুষ্টির তো কথাই নাই। আবার মধ্যে মধ্যে ভয়ানক নীহারপাতও হইয়া থাকে। এই সমুদয় কারণ বশতঃ প্রতি বংসর অনেক যাত্রী মৃত্যুগ্রাসে পতিত এবং অনেকেই পথ হইতে প্রত্যাগমূন করিতে বারিত হয়। . অষয়নাধের এক জোশ থাকিতে পঞ্চর্ণী নামে একটা নির্মবিণী পার হওয়া আবশ্যক। ইহার পাঁচটী শাখা। এই
কারণেই ইহাকে পঞ্চর্ণী কহে! যাত্রীগণ ইহার জলে
প্র'ন পূর্যকে বসন ভূষণাদি পরিত্যাগ করে। অনন্তর সকলে
ভূজ্জপত্রের কোশীন ধারণ পূর্যক (কেহ কেই উলঙ্গাবস্থায়)
মহাদেবের জয়ধ্বনি করিতে করিতে গুহার পুরোবভী হয়।

কন্দরটী অতি রহং। প্রবেশ-দার ৫০ ফিট প্রশন্ত। 'ইহাতে প্রবেশ করিয়া প্রথমে ন্যুনাধিক ৭৫ ফিট সরল পথ; পরে দক্ষিণভাগে ঈষৎ প্রত্যার্ত্ত হইয়া প্রায় ২৫ ফিট যাইতে হয়। উহা ১০ হইতে ৫০ ফিট পর্যান্ত উচ্চ। গুহাভান্তর অতি-শয় শীতল এবং ছাদ হইতে সর্বত্র অনবরত জলবিন্দু নিপ-তিত হইতেছে। এই স্থলে মহাদেবের স্ফটিকদদৃশ হিমানীর লিক্স আছে। ইহা যে কাহারো দারা স্থাপিত নহে, তাহা वना वाक्रना । (य मभूमय भहाञ्चाता अहे ऋतन मीर्घ कान वाः করিয়াছেন, তাঁহাদের অনেকের মুখে শুনিয়াছি, যে, প্রত্যেক পৌর্ণমাদ তে এই লিঙ্গ পূর্ণাবয়ব হইয়া থাকেন। পরে প্রতিপদ হইতে এক এক কলা করিয়া হ্রাস হইয়া অমাবস্থাতে সম্পূর্ণ অদৃশ্য হইয়া যান। আবার শুক্র প্রতিপদ হইতে এক এক কলা করিয়া বৃদ্ধি পাইয়া পূর্ণিমা দিবদে পুনরায় সেই বোলকলায় পূর্ণ হা প্রাপ্ত হন। এইরূপে শশধরের হ্রাদ বৃদ্ধি অনুসারে শশিভূষণেরও হ্রাস র্দ্ধি হয়। এই লিঙ্গ ব্যতীত একটা পাষাণ নির্দ্মিত শঙ্কর বাহন'(রুষ) আছে, এবং কতিপয় দেব দেবীর ভগ্ন প্রতিমূর্ত্তিও ইতস্ততঃ দেখিতে পাওয়া যায়।

অর্বাচীনেরা কহিয়া থাকে, যে, অমরনাথের ঐ লিঙ্গরূপ তো দেখাই যায়, তদ্মতীত কপোতরূপ ধারণ করিয়াও অমরনাথ দর্শন দিয়া থাকেন। কিন্তু ইহা অলীক। পাণ্ডা (পুরোহিত) গণ পূর্ব্ব হইতে কতিপয় কপোত রস্তাব্বত করিয়া লইয়া যায়। পরে গুহার সমীপবর্ত্তী হইয়া উহাদিগকে উড়াইয়া দেয়। যাত্রীগণ মহাদেবকে দর্শন ও পূজা করিয়া দেই দিবসেই প্রত্যাব্বত্ত হয়। এন্থলে কেহ রাজি যাপন করে না। একদা মহারাজা গোলাপ সিংহ রাজিবাস করিয়া-ছিলেন। কিন্দন্তী আছে, য়ে, মহেশ্বর সর্পাকারে তাঁহাকে দর্শন দিয়াছিলেন। প্রত্যাগমন কালে যাত্রীরা অপর পথ অবলম্বন করে এবং তৃতীয় আড়া বন্ধনবাড়ী নামক স্থানে আসিয়া পূর্ব্ব পথের সহিত মিলিত হয়।

ষষ্ঠ পরিচেছদ।

কাশ্মীরের পশ্চিমবিভার্গী। প্রথম অংশ।

ছুরগন্ধানদী। কাঁসিকাঠ। ছাউনি। কীর ভবানী। নির্কান চেনার। মানসবল। উসর হুদে। সোপুর! বারসুকা।

শিরোদেশে যে সমুদয় স্থানের নামোল্লেখ হইল, ততাবৎ নৌকারোহণ পূর্বকই অবলোকিত হইয়া থাকে। সন ১২৭৬ সালে (ইং ১৮৬৯) জনৈক স্থছদ সমভিব্যাহারে এই সমুদয় মনোহর স্থান দর্শন করিয়া আমার প্রিয় অসুজকে যাহা লিথিয়াছিলাম, তৎসন্ধিবেশ দ্বারাই অভীফ সিদ্ধ হইতে পারিবে—স্বতন্ত্র লিপির আবশ্যকতা কি? অত্ত্রব তাহাই. করিতেছি।

হ৭শে আঘাঢ় শনিবার। কাশ্মীরের পাশ্চাত্য বিভাগ ভ্রমণ করিবার মানসে আহার ও ব্যবহারোপযোগী সামগ্রী সম্ভার আহরণ পূর্বক একজন প্রিয় মিত্রকে সমভিব্যাহারে লইয়া সন্ধ্যার প্রাকালে নৌকারোহণে শ্রীনগর হইতে যাত্রা করিলাম। শেষ সেতু সাফা কদল অতিক্রম করিয়া দেখিলাম, তুধ গঙ্গা নদী বাম দিকে প্রবাহিত হইতেছে। তুধগঙ্গা নামটী পাঠ করিয়াই মনে করিতে পার, ইহা জলের পরিবর্ত্তে তুধের আধার বলিয়া বুঝি ইহার নাম তুধগঙ্গা হইয়াছে। পুরাণে বর্ণিত আছে, ইহার জল তুগ্ধই ছিল। ইহার সত্যাসত্যতা বিষয়ে কোনো কথা বলিতে ইচ্ছা করি না। প্রভাত, বর্তমানকালে ইহার জল যেরূপ নির্মাল ও পুষ্টিকর, তাহাতে ইহাকে তুগ্ধ শব্দে বাচ্য করা নিতান্ত অসঙ্গত নয়। এই নদী ভ্রনগর পরিক্রমণ করিয়া প্রবাহিত হইতেছে।

কিয়দ্র অগ্রসর হইয়া দেখিতে পাইলাম, বামতটে ফাঁসি কাঠ দণ্ডায়মান রহিয়াছে। দর্শন মাত্রেই মনে কি ভীষণ ভাবের আবির্ভাব হয়! হায়! ইহা দারা কত নর নারীর অমূল্য জীবনরত্ব হরণ করিয়া লওয়া হইয়াছে! হয়তো কত নির্দোষী অভাগা ব্যক্তি অবস্থাগত প্রমাণের দোষে দোষী রূপে সাব্যস্ত হইয়া অথবা তুর্দাস্ত শাসনকর্ত্তাদিগের ইচ্ছাকুসারে নিরপরাধেই এই দণ্ডে এক দণ্ডের মধ্যেই প্রাণদণ্ডে পড়িয়াছে! প্র্কিকালে ইহাতে প্রায় প্রত্যহই ছুই একটী লোক ঝুলিত। কিন্তু অধুনা করুণহৃদ্য রাজার গুণে ফাঁসি উঠিয়া গিয়াছে বলিলেই হয়।

কিঞ্চিৎ দূরে ছাউনি। ইহা অতি রমণীয় স্থান। ইহার

চতুঃপাশ্বে সফেদা বৃক্ষরাজি গগণ স্পর্শ করিবার জন্ম মন্তকো-ভোলন করিতেছে এবং মধ্য ভাগে পর্য্যটকদিগের নিমিত্ত এক উত্তম লড়ী (কাষ্ঠ নির্শ্মিত বাটী) আছে।

এই স্থানে বিভাবরী সমাগতা হইল। প্রকৃতি দেবী মন্ত্রের কৃত অসংখ্যা পাপ ও প্রভাকরের ধরতাপ আর সহিতে না পারিয়া লজ্জায় যেন তিমির রূপ অবগুঠন ধারণ করিলেন। ক্রমে ক্রমে অগ্ধকার হৃদ্ধি হইতে লাগিল। আর কিছুই দৃষ্টিগোচর হয় না এবং তরণীও আর চলে না। অগত্যা এই স্থানেই রাত্রি অভিবাহিত করিতে হইল।

২৮শে আষাত, রবিবার। রথযাত্রা। প্রভ্যুষেই নৌকা ছাড়িয়াছিলাম এবং সপ্তম ঘটিকা কালে স্থবিথ্যাত ক্ষীরভবানী নামক ভীর্থ স্থানে উপনীত হইলাম। এখানে যথাবিধি স্নান, পূজা, প্রদক্ষিণ এবং আহারাদি করিয়া বেলা ছুই প্রহর সময়ে যাত্রা করিলাম। এই অন্তুত কুণ্ডের বিবরণ ইতিপূর্কে তোমাকে লিখিয়াছি; (পাঠক! চতুর্থ পরিচেছদ দেখুন) স্তরাং তৎসমুদয় আর এস্থলে পুনর্ব্যক্ত করিবার আবশ্যকতা নাই। কেবলমাত্র ইহাই বলিলে যথেষ্ট হইবে, যে যথন আময়া উপস্থিত হইলাম, তথন কুণ্ডের জল সবুজ ছিল। বেলা দশম ঘটকাকালে দেখি, উহা গোলাপী বর্ণে পরিবর্ত্তিত হইয়া গিয়াছে।

যাইতে যাইতে নদী গর্ভে একটা ক্ষুদ্র দ্বীপ দেখিতে পাই-লাম। উহার উপরিভাগ প্রস্তর নির্মিত। উহাতে একটা চেনার মহীরুহ আছে। একারণ, উহাকে নির্জ্জন চেনার শব্দে ৰাচ্য করা যাইতে পারে। লোকে কহিয়া থাকে ইহা কম্মিন্- কালে বাড়ে না। ১৮৬৫ খৃফীবের ১৫ই আগকী তারিথে ডাক্তার ইন্স সাহেব পরিমাণ করিয়া দেখেন, ইহার আয়তন প্রায় ১১ কিট। আমরা দেখিলাম, ইহার মূলদেশের আয়তন সেই "প্রায় ১১ ফিটই" আছে। কিন্তু ক্ষদেশ প্রায় ১৩ ফিট। ইন্স সাহেব যদি ইহার মূলের পরিমাণ করিয়া থাকেন, তাহা হইলে বিগত চারি বৎসরের মধ্যে কিছুই রৃদ্ধি প্রাপ্ত হয় নাই বলিতে হইবে। আর যদি তিনি ক্ষম মাণিয়া থাকেন, তবে ইহা অবশ্যই বাডিয়াছে।

ইহা হিন্দুদিগের তীর্থস্থান। রৃক্ষতলে একটা শিবলিক্ষ স্থাপিত। কথিত আছে, অতি পুরাকালে এই স্থলে অনেক পতিব্রতা স্থ্রা সহয়ত। হয়েন এবং অনেকে মোক্ষ পদ লাভার্থ আত্মহত্যা দ্বারা প্রাণত্যাগ করেন। এস্থানটা অতি ক্ষুদ্র বটে, কিন্তু অতি রম্ণীয় । কেননা, এইখানে সিন্ধু নদী বিতন্তার সহিত সংমিলিত এবং পশ্চিম দিকে কুরুখাল প্রবাহিত, স্থতরাং চতুর্ব্বাহিনী হইয়াছে। একারণ, এখানকার লোকে ইহাকে প্রয়াগ কহে। চতুর্ব্বাহিনীর ঠিক মধ্যস্থলে অট্টালিকাদির কিছু ভগ্নাংশ আছে। অতএব এক সময়ে যে ইহাতে একটা পরম রমণীয় হর্ম্য ছিল, তাহার কোনো সন্দেহই নাই।

যাইতে যাইতে উভয় তটে অনেক প্রাম দেখিতে পাইলাম। কোনো কোনো স্থানে নৌকা লাগাইয়া ভ্রমণ করিতে
লাগিলাম। স্থাতল চেনারের কুঞ্জবন রহিয়াছে; স্থমিষ্ট পবন
মন্দ মন্দ বহিতেছে; স্থমাত্র ফল পরিপক হইতে আরম্ভ হইয়াছে; যেদিকে নয়নপাত করি, কেবল দূর্বাদলপূর্ণ হরিদ্বি ক্ষেত্র—এমন স্থান নাই, যেখানে স্থকোমল শ্রামল তুণ

দৃষ্ট হয় না — প্রকৃতি যেন নিজ হস্তে সমস্ত কাশ্মীরে দুর্বার কেয়ারি করিয়া বা গালিচ। পাতিয়া রাখিয়াছেন—মধ্যে মধ্যে নদী ও খাল দ্বারা বিভক্ত হওয়াতে ক্ষেত্রগুলি দ্বিগুণ শোভাময়হইয়াছে—ইত্যাদি সোন্দর্য্য দেখিতে দেখিতে কাশ্মীরকে স্বর্গ না বলিয়া নিরস্ত থাকা যায় না ! অপর কোনো কোনো স্থানের জল এমনি স্বাস্থ্যকর এবং পাচক, যে. আমাদিগের আহার উত্তরোত্তর বিলক্ষণই বাজিতে লাগিল—শরীর ও মন বিগুণ স্বচ্ছন্দ ও দবল বোধ হইতে লাগিল। প্রভ্যুত, এমন রমণীয় স্থান আর কুত্রাপি নাই!

কিয়ৎক্ষণ পরে আমরা মানসবল হ্রদে উপনীত হইলাম। ইহা এরূপ রম্য, যে, বোধ হয়, ইহাই শাস্ত্রোক্ত ত্রকার দেই মানসদরোবর—ভ্রফিললে তাহারই অপভংশে মানস-বল নাম হইয়াছে। ইহা এখানকাব দকল হুদাপেকা স্থলর ও গভীর। ইহা দৈর্ঘ্যে দেড় ক্লোশ ও প্রস্থে অর্দ্ধ কোশ। এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্তে যাইতে হঁইলে ঠিক এক ঘণ্টা লাগে। কোনো কোনো স্থল এত গভীর, যে, তথায় যাইতে হুৎকম্প উপস্থিত হয়। কৌতুকাবিষ্ট হইয়া আমরা দকল স্থান পরিভ্রমণ করিলাম। অতি গভীর জলই অতি রমণীয়। তথায় জলজলতা নাই এবং এমনি স্বচ্ছ. যে, দশ হাতের নীচের পদার্থও স্পার্ফ লক্ষিত হয়—তত নিলে মৎস্থাণ ক্রীড়া করিয়া বেড়াইতেছে, স্পান্টই দেখিতে পাইনাম। এখানকার ইতিরত্তে ইহা অতলম্পর্শ বলিয়া বর্ণিত আছে। কিন্তু কেহ কেহ পরিমাণ করিয়া দেখিয়াছেন, ইহা প্রায় ত্রিশ হস্ত গভীর। কথিত আছে, এক তর্পমী ইহার

গভীরতা নির্ণয় করিবার জন্ম বহুকালাবিধ এক পরিমাপক
শ্ব প্রত্ত করেন। কিন্তু পরিশেষে ইহার তলস্পর্শ করিতে
না পারিয়া হতাশ হইয়া মনোল্লয়ে ইহাতেই লক্ষ প্রদান
পূর্বিক প্রাণত্যাগ করেন। ইহার জল অতিশ্রে স্বান্থু, নির্মাল
ও লয়ু; অত্যন্ত গভীর বলিয়া প্রামবর্গ দেয়ায়। ইহার অভ্যন্তরম্থ উম্প হইতে জল নির্গত হইতেছে। নথন সলিল হাস
ইয়া য়ায়, তখন তটম্ম বহুসংখ্যক উৎম স্পৃষ্ট হয়—কোনো কোনোটা হইতে বা ক্ষুদ্র ক্লুদ্র বালুকাকণা
নিঃস্ত হইয়া থাকে। যেখানে জল গভীর নহে, তথায় জলজলতা—বিশেষতঃ শ্বেত ও রক্তিমা বর্ণের প্রথবন আছে।
অত্যন্ত্র দিবসের মধ্যেই ইহা বিক্ষিত হইয়া ব্রুদের শোভা
বিশ্রুণ বৃদ্ধি করিবে।

প্রেশ্বার ইইতে ব্রুটা দেখিতে অনুপ্র মনোহর।
বামপার্শে কঙ্করবিশিক্ট উপত্যকা; উহার অধোভাগে এবং
ব্রুলতটে মানসবল প্রায়; কিয়দ্রে বাদশাহবাগেরভগ্নাংশ (ইহা
ক্রেহাঙ্গীর বাদশাহ স্থায় প্রিয়তমা ভার্যা নূরমহলের জন্মই
নির্মাণ করেন) দক্ষিণপার্শে পর্বত্রেণী — ইহার অত্যুচ্চ শৃঙ্গের
নাম আথুং এবং ইহা ৬২৯০ ফিট উচ্চ; কিঞ্চিদ্ধের এবং এই
পর্কতি সালার নিম্ন দেশে কুণ্ডবল নামক প্রাম, এতানে
স্থিকিটন্থ পর্বত হইতে চুর্ণ প্রস্তুত হইতেছে; সম্মুথে অত্যুমৃত পর্বত প্রেণী, তাহা হইতে একটা স্থন্দর জল প্রপাত সপ্ত
ধারায় পড়িতেছে; উহার সঙ্গম স্থানের প্রায় পাঁচ হস্ত দূরে
একটা প্রাত্রন মন্দির জলের উপরিভাগে দণ্ডায়্মান রহিয়াছে।
হন্দলিল শ্যামল, মধ্যেজ্ব পরিষ্ণার এবং ধারে ধারে লৃতা

ও কমলবন রহিয়াছে; তটস্থ পর্বত এবং গ্রামাদির প্রতিবিশ্ব সরলভাবে পতিত হইয়াছিল, আমাদিগের গমনের শব্দে যেন ক্রমান্বয়ে নানা থণ্ডে থণ্ডিত, পরস্পারে মিলিত এবং বিচিত্র নৃতন আকারে পরিণত হইল।

হ্রদের ঈশান কোণে এক মুদলমান ফকিরের আশ্রম আছে। তাঁহার জন্মস্থান বোখারা। তিনি কাশ্মীরের সমুদায় স্থান তন্ন তন্ন করিয়া অবশেষে এই স্থানটী মনোনীত করিয়াছেন এবং এথানে ২৭ বংসর বাস করিতেছেন। ফলতঃ এই স্থানই তপোবনের উপযুক্ত স্থান। তিনি স্বহস্তে পর্বত কাটিয়া ভূমি সমতল করিয়া এই আশ্রম প্রস্তুত করিয়াছেন। চারিদিকে স্থাত্ব ফলের র্ক্ষ—এত নিবিড় যে, সূর্য্যরিশ্ম প্রবেশ করিতে পারে না; পর্বত শিখরস্থ নিঝঁর বক্রগতি ভাবে ঝর ঝরশকে পতিত হইতেছে; সন্মুখে ব্রদ; পশ্চাদ্রাগে অভেদ্য পর্বত-শ্রেণী; স্থতরাং স্থানটী অনিক্রিনীয় রূপে শ্বেমণীয় ও গুণীতল। এমন সকল স্থানই পূর্ববক্ষার তপস্বীদিগের আশ্রম ছিল— তাঁহার লোকালয় পরিত্যাগ পূর্ব্বক এমন স্থানেই ঈশ্বরের আরাধনায় দিন্যামিনী পর্ম স্থাথে যাপন করিতেন। প্রত্যুত, বোধ হইল, ফকিরজী অতি মনোস্থাে আছেন। অপর, অদ্য চারি দিবদ হইল, মৃত্তিকা এবং তৃণাদি দারা পূর্ব্বোক্ত নির্বারের গতিরোধ হইয়া গিয়াছিল বলিয়া তিনি যেমন পরি-কার করিতেছিলেন, অমনি একটা কঠিন পদার্থ হস্তে ঠেকিল। কৌতুকাবিষ্ট হইয়া খনন করিয়া দেখেন, যে, উহা একখানি প্রস্তর নির্দ্মিত, স্থাদীর্ঘ ও অতি স্থানর আসন (চৌকি)। রক্ষ-তলে এই আদনোপরি ছাগচর্ম বিছাইয়া বদিয়া আছেন,

আমরা গিয়া দেখিলাম। গমন মাত্রেই তিনি আমাদিগকে ্যথোটিত সমাদর পূর্বক ফল মূলাদি দারা অতিথিসংকার করিলেন এবং রক্ষতলে বসিতে আসন দিলেন! কির্ৎক্ষণ মিফালাপের পর তিনি আপন শিষ্যকে আহ্বান পূর্ব্বক আমা-দিগকে তাঁহার তপোবন এবং স্বহস্ত রচিত স্তড়ঙ্গ দেখাইতে আদেশ করিলেন। আমরা তাঁহার তপোবনের রম্পীয়তা • দর্শনে প্রীত এবং স্তৃত্স দেখিয়া অবাক্ হইলাম। এই স্তৃত্স তিনি স্বহস্তে পর্ব্বত কাটিয়া প্রস্তুত করিতেছেন। ১৮৬৫ খৃকীব্দের দেপ্টেম্বর মাদে ভাক্তার ইন্স সাহেব পরিমাণ করিয়া দেখেন, ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় ৩০ হস্ত। কিন্তু অদ্য (১২ই জুলাই ১৮৬৯) আমরা দেখিলাম, ইহা ঠিক ৩৮ হস্ত পর্য্যন্ত হইরাছে। ফকির বলিলেন, তিনি যত কাল জীবিত থাকিবেন, ততকালই ইহা খন্ন করিবেন। স্নতরাং কত লম্বা হইয়া যে ইহা শেষ হইবে, বলা যায় না। প্রবেশ রার প্রায় তিন হস্ত উক্ত। অভ্যন্তর চারি হইতে দার্দ্ধ চারি হস্ত উচ্চ এবং প্রস্থে প্রায় তিন হস্ত। স্বতরাং তন্মধ্যে খনায়াদে মস্তকোতোলন পূর্ববিক ইতস্ততঃ ভ্রমণ করা যায়। ইহার অভ্যন্তর যে কি পর্য্যন্ত শীতল, তাহা অনুভব করিয়া লও-প্রবেশ করিবা-মাত্রেই এমন শীত বোধ হইল, যে, অধিকক্ষণ থাকিতে পারিলাম না। রোজার সময় ফকির সাহেব এই স্থলে বাস করেন।

আমরা সমুদয় দেখিয়া তাঁহার নিকট প্রত্যাগত হইলাম এবং এক তক্তমূলে উপবেশনপূর্ব্বক তাঁহার সহিত বাক্যালাপ এবং ঈশ্বরবিষয়ক কথোপকথন করিতে লাগিলাম। প্রত্যুত্ত. প্রতীতি হইল, তিনি ঈশ্বরপ্রেমে মগ্ন হইয়া অতি স্থানে কালা-তিপাত করিতেছেন। যে কোনো দর্শক এখানে আইদেন (কি ইংরাজ, কি এদেশীয়) সকলেই এই স্থান দর্শন পূর্বকে প্রীত হয়েন এবং ফরিরকে কিছু কিছু পুরস্কার দিয়া থাকেন।

হ্রদের পূর্বভাগস্থ অভ্যন্ত পর্বতিশ্রেণী হইতে (ফকিরের আশ্রেমের পার্থে) একটা জলপ্রপাত সপ্তধারায় পতিত হই-তেছে। উহা যেস্থলে হদের সহিত মিলিত হইয়াছে, আমরা তথায় যাইয়া উহার সৌন্দর্য্য নিরীক্ষণ করিতে লাগিলাম এবং পর্বতের যে দেশ হইতে পত্ন হইতেছে, দেশুল কিরূপ এবং কোথা হইতেই বা অনর্গল বারিধারা আদিতেছে জানিতে অতাত উৎসক হইলাম। উদ্ধৃদিকে নয়ন নিমীলন করিয়। দেখি, পর্লতে উঠিবার কোনো পথ নাই এবং এরপ সরল উচ্চ, যেন এক মহাকায় দানব দণ্ডায়নান হইয়া সানুবকে উঠিতে নিষেধ করিতেছে! কিন্তু মুমিরা অত্যন্ত কোতু-হলাক্রান্ত এবং আবেশচিত্ত হইয়াছিলাম। স্নতরাং কৃতনিশ্চয় হইলাম, যেন তেন প্রকারেণ পাহাড়ের শিথরদেশে আরো-হণ করিতেই হইবে। উহার গাত্রে ফুদ্র ফুদ্র রুক্ষলতা আছে; ঈশ্বরের নামোস্তারণ পূর্বক,তাহাই অবলম্বন করিয়া অতি কন্টে, কিন্তু নিরাপদে উপরে উচিলাম। উপনীত হইবা-মাত্রেই আশাতীত পরিতোষ লাভ করিলাম। দেখিলাম, তথায় একটা কুদ্র স্রোভস্বতা (প্রস্থে প্রায় পাঁচ হস্ত) প্রবাহিত হইতেছে এবং উহারই এক দেশ হুইতে পূর্বোক্ত জলধারা পতিত হইতেছে। স্থানটী অতি রমণীয়। স্রোভদতীর দক্ষিণপাথে আর একটা অত্যুক্ত পর্বতশ্রেণী

এবং বামপাশ্বে কেবলমাত একহন্ত পরিনিত বাঁধ। এই বাঁধের উপরেই আমরা দণ্ডায়মান হইলাম। বাঁধ থাকা-েতেই নিক্রিণীর জলরাশি এককালে হুদে নিপতিত হইতে এস্থান হইতে হুদটী পরম স্থান্দর দেখায়। নিঝারিণীর উৎপত্তি স্থান দেখিবার নিমিত্ত আমরা আরে৷ কোতুহলাক্রাস্ত হইলাম। কিন্তু কি প্রকারেই বা তথায় যাই ? পথ নাই— কেবলমাত্র উক্ত বাঁধ। যাইতে হইলে ঐ বাঁধ দিয়াই যাইতে হইবে। কিন্তু যদি দৈবাৎ পদস্থলন হয়, ভাহা হইলে হয় তটিনীর জনগর্ভে নিমগ্র হইতে হইবে, নয় ২৫০ হস্ত উদ্ধি হইতে গড়াইতে গড়াইতে আসিয়া ব্ৰুদে পড়িয়া তদহওই প্রাণ হারাইতে হইবে। অথচ চিত্তাবেগ সম্বরণ করাও হ্রন্ধর। ত্রতএব পুনরায় ঈশ্বর ভরদা করিয়া ঐ ভুর্গন বাঁধ দিয়া যাইতে লাগিলাম। প্রায় অর্নজোশ গিয়া দেখি, ইহার দীমা নাই এবং যেরূপ ভাবে প্রবাহিত হইতেছে. তাহাতে বোধ হইল, ইহার উৎপত্তিস্থান অতি দূরে হইবে। সন্নিকটে কোনো মনুষ্য নাই, যে, তাহাকে কিছু জিজ্ঞাসা করি। ইতস্ততঃ দৃষ্টি নিক্ষেপ করিতে করিতে দেখিতে পাই-লাম, নিম্নদেশে অতি দূরে একটা লোকালয়ে কয়েকজন মনুষ্য রহিয়াছে। একে তো দূর, তাহাতে আবার ভাহারা কাশ্মীরী। কিন্তু ইঙ্গিত দারা জিঞাসা করাতে বুঝিতে পারি-লাম, এই ভ্রোতস্বতীর উৎপত্তি স্থান তিন ক্রোশ দূরে। এ দিকে দিবাকরের করজাল হুদ হইতে রক্ষোপরি, রক্ষোপরি হইতে পর্বতশিখর আবোহণ করিল, স্তর্তাং আর অধিক

দূর না যাইয়া অবতরণ করাই শ্রেয়ক্ষর বিবেচনা করিলাম। যদিচ আমরা মনোভিলায পূর্ণ করিতে পারিলাম না, তথাপি মেই সেই প্রদেশের রমণীয়তা দর্শনে অত্যন্ত প্রীত হইলাম। তথা কার অ্মিফ এবং স্বাস্থ্যকর বায়ুর কথা কি কহিব-তথা হইতে প্রত্যাগমন করিতে ইচ্ছা হয় না। এক স্থানে দেখি, তিনটী বত্য ছাগ চরিতেছে, তাহাদের অঙ্গসোষ্ঠব এমন মনোহর, বিশেষতঃ তাহাদের শৃঙ্গ এমন স্থন্দর, যে, দূর হইতে হরিণ বলিয়া ভ্রম জিনায়াছিল। পদশব্দে তাহারা একবার মাত্র সচকিতনয়নে আমাদিগের প্রতি খরদৃষ্টি নিক্ষেপ করিল এবং এমন ঋজুসভাব যে, কোনো আশঙ্কা না করিয়া নির্ভয়ে পুনরায় তৃণ ভক্ষণ করিতে লাগিল। অপর স্থানে দেখি, বন্তু আঙ্গুর অপর্যাপ্ত পরিমাণে জন্মিয়া রহিয়াচে। দে সমুদ্য এত বড়, যে, লোকালয়ে তদ্রপ দেখা যায় না। প্রত্যুত, এই দব স্থান নিতান্তই রমণীয়, বিতান্তই নির্মাণ ও নিতান্তই পবিত্র উচ্চভাবের উত্তেজক।

এছলে বাস করিবার কোনো গৃহাদি নাই। স্নতরাং এই
পর্বতিশ্রেণীর এক প্রান্তে হুদতটে শিবির স্থাপন করিয়া
থাকিতে হয়। তথায় চেনারের য়ে একটী কুঞ্জ আছে, তাহার
রমণীয়তা প্রকাশ করিবার শব্দ নাই। শিরোদেশে পূর্ব্বোক্ত
স্রোত্রতী প্রবাহিত এবং এক স্থানে উহার জলধারা বক্ত
হওয়াতে ঝর ঝর শব্দে পতিত হইতেছে—পদতলে
নিসর্গোৎপন্ন হরিন্বর্ণ গালিচা। সন্ধ্যাগমে আমরা তহুপরি
শ্যা প্রস্তুত করিয়া শয়ন করিলাম এবং মানস করিলাম
এইরূপেই বিভাবেরী যাপন করিব। কিস্তু শুনিলাম, নিশীথ

সময়ে ভল্লুক প্রভৃতি হিংস্র জন্ত তথায় জল পান করিতে আইসে। একারণ, সেম্থান পরিত্যাগ পূর্বক নৌকায় শয়ন করিতে বাধিত হইলাম।

মানসবলের জলবায়ু অতি স্বাস্থ্যকর, জ্রীনগরের নিকট-বর্ত্তী কোনো স্থান ওতদ্রূপ নহে। ভাদ্র মাসে নগর কথঞিৎ উত্তপ্ত হইলে ভ্রমণকারীরা এই স্থলে কির্দিন্দ বাস করিয়া পাকেন।

২৯শে আষাঢ়, সোমবার। ক্রমে ক্রমে উষা দেবী পূর্ব্বদিকে দেখা দিলেন। পক্ষারা প্রভাত সমীরণ স্পর্শ করিয়া বাসা হইতে বাহির হইল। আমরাও মানসবল হইতে যাত্রা করিলাম। কিয়-দ্যুর গমন করিয়া বেলা অফ্টম ঘটিকাকালে এক উপবনে নোকা লাগাইয়া স্নানভোজনাদি হইল। কিয়ৎকাল বিশ্রাম এবং ইতস্ততঃ পদত্রজে ভ্রমণের পর পুনরায় নৌকা ছাড়িয়া দিলাম। যতই যাইতে লাগিলাম, ততই মনে নব নব প্রীতির উদয় হইতে লাগিল। চারিদিকে অপার জলরাশি ধূ ধূ করিতেছে— চতুষ্পাম্থে পর্বতভোগী—দেখিয়া বোধহয়, পাছে এথানকার স্বাস্থ্যকর জলবায়ু অপর প্রদেশকে *গৌরবান্বিত করে, এই ঈর্ষায় যেন ইহাকে অতি সাবধানে রক্ষা করিতেছে— মধ্যে মধ্যে শ্রামল দূর্ব্বাদলপূর্ণ ক্ষেত্র—স্থানে স্থানে লোকা-লয় – কোনো কোনো স্থানে শৃত শত পালিত অশ্বপাল চরিতেছে—কোনো কোনোটা ৰা জলমধ্যে নিমগ্ন হইয়া গাভীর স্থায় জলজ লতা খাইতেছে—একটা অপরের গাও চাৰ্টিতেছৈ —্মাতা বৎসকে বাৎসল্য ভাবে ছগ্ধ পান করাই-তেছে—যদি একটা দৌড়িতে আরম্ভ করিল; তাহা হইলে ভেড়ার পালের ন্যায় সকলেই তাহার পশ্চাৎ ধাবিত হইল—
কোনো কোনো লোকালয়ে পাহাড়া কুকুর রহিয়াছে, উহাদিগের গাত্রলোম দীর্ঘ, চিক্কণ এবং কোঁকড়া কোঁকড়া। পুছ

ব্র্ণায়িত এবং লোমশ, গঠন অতি ভয়ঙ্কর এবং দেখিতে অতি
স্থান্দর, কিন্তু কোনো কার্য্যকর নহে; ইহারাও এখানকার
লোকদিগের ন্যায় ভীক্ত।

কিয়ংক্ষণ পরে আমরা উলর হ্রদে উপনীত হইলাম। এই হৃদ এথানকার সকল হ্রদাপেকা বৃহৎ। বিতস্তা নদী ইহার মধ্য দিয়া প্রবাহিত। ইহা শ্রীনগর হইতে ১০ ঘণীর জলপথে স্থিত। ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় ৬ ক্রোশ এবং প্রস্থে প্রায় 🗷 ক্রোশ। ইহা ১৬ ফিট পর্যান্ত গভীর। ইহার জল অতিশয় স্বচ্ছ, কিন্তু গভীর শ্রামবর্ণ দেখার। ইহারও জল অভ্যন্তরস্থ উৎস হইতে নিঃস্ত হইতেছে—(কোনো কোনো স্থানের বিশ্ব দেখিয়া ইহার অভ্যন্তরস্থ কোনো কোনো উৎস স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়) এবং পার্শ্বর্তী পর্ব্যতমালা হইতে নির্বার্গ এবং কুদ্র কুদ্র স্রোত্যতী আদিয়া ইহাতে পতিত হইতেছে। ইহার তলা পঙ্কিল। অংগভীর জলে অনেক জলজলতা, পাণি-ফল এবং কমলবন আছে। পূর্বব এবং দক্ষিণপার্শ্বে অত্যুচ্চ পর্বতশ্রেণী। ইহার চারিতটে অনেক কুদ্র ক্ষুদ্র পল্লী। তথা-কার লোকে ইহার মংস্থা, পাণিফল ও পদ্মমধু আহরণ এবং পক্ষী শিকার দারা জীবিকা নির্ববাহ করে এবং মহারাজাকে অনেক করদান করিয়া থাকে। হৃদটী অতি রুহৎ বলিয়া মৃত্ পবনবেগেই প্রবল ঝটিকা উৎপন্ন হয়। তাহাতে আবার এদেশীয় নৌকা বাত্যাকালের বড় উপাযোগী নহে। 'একারণ,

নাবিকুগণ ইহার মধ্যদেশ দিয়া নৌকা চালনা করিতে সহজে স্বীকৃত হয় না। বিশেষ অপরাহে পার হওয়া কাহার সাধ্য ? স্থামরা বেলা তুইটার সময় তথায় উপনীত হইলাম। তৎকালে মৃত্রু মৃত্রু দমীরণ-বেগে উহা এরপে ভয়ন্কর মূর্ত্তি ধারণ করিল, যে, দেখিয়াই আর্খাদের হুংকম্প উপস্থিত হইল। কিন্তু ঈশ্বরাস্থ্যহে অতি সম্বরেই শাস্ত হইয়া গেল, হুতরাং আমরা িনিরাপদেই অপর পারে উত্তীর্ণ হইলাম। পৌছিবামাত্রে**ই** এমন ঝটিকা আসিল, যে, সে সময়ে হ্রদের উপরে থাকিলে পরিণাম অতি শোকাবহ হইত-তরঙ্গকুল যেন গগণ স্পর্শ করিবার নিমিত্ত উন্নত হইতে এবং হদ গভীর গর্জন করিতে লাগিল। সোভাগ্যক্রমে তখন ততুপরি কোনো নৌকাদি ছিল•না। কেবল একথানিমাত্র ক্ষুদ্র প্রমোদ লাহাজ *-- यादा ইতিপুর্নের্ব স্থমন্দ মারুতহিলোলে ইতস্ততঃ বিচরণ করিতেছিল --এক্ষণে ওতপ্লোত হইতে লাগিল এবং ভয় হইল. পাছে হ্রদ-গর্ভে নিমগ্ন হয়। কিন্তু ঈধর-কুপায় কোনো বিপদ ঘটল না।

দিনমণি পশ্চিমপ্রান্তম্থ পর্বতের অন্তরালে ঢলিয়া পড়ি-লেন। মহাসুভব ব্যক্তি আসন্ধকালে মহতেরই আশ্রয় গ্রহণ করিয়া থাকেন বলিয়া যেন দিবাকর হ্রদ পরিত্যাগ করিয়া গিরিচ্ড়াবলম্বী হইলেন। আমরা এক মনোহর তটে নোকা সংলগ্ন করিলাম।

^{*} এখানে ডভরেন নামে একজন ফরানিস সাহেব শালের সওদাগর আছেন।
তিনি সম্প্রতি এই জাহাজ ও প্রত করিয়াছেন। এখানকার লোকে কথলো
কাহাজ দেখে নাই। স্নতরাং ভালারা ইহার গঠন এবং গতি দেখিয়া ইহাকে.
আলোধিক পদার্থ জ্ঞান করে।

৩০শে আষাঢ়, মঙ্গলবার। রাত্রি প্রভাত হইলে লঙ্কা দ্বীপ দর্শনে চলিলাম । আমরা সুরুখাল দিয়া হুদে প্রবেশ করিয়াছি-लाम, नरह विज्ञा नमी मिया आमिर्ट इट्रेस हैश हिक मिकन ভাগে থাকে। সার্দ্ধ চারি শত বৎসর হইল, মুসলমানাধিপতি জানালুব উদ্দীন ইহা নিৰ্মাণ করেন। ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় ২০০এবং প্রায়ে প্রায় ১৫০ হস্ত হইবে। বুহং বুহৎ পাদপ, বিশেষতঃ তুঁত মহীরুহ ইহার সর্বত এমন নিবিড়ভাবে জনিয়াছে, বে, বনে সূর্য্যালোক প্রবেশ করিতে পারে না। ফলভারাবনত আঙ্গুরলত! উহাদিগকে আলিঙ্গন করিয়া উঠিয়াছে। এই দ্বীপের সর্ব্বত্রই প্রাচীন হর্ম্য ও স্তম্ভ প্রভৃতির ভগাবশেষ এবং কোনো কোনো স্থলে বা চিহ্নমাত্র আছে। ইহাতে বোধ হয়, উহাদের উন্নতাবস্থায় এবং যতদিন পর্য্যন্ত জীর্ণসংস্কার হস্টত. ততদিন এই স্থান অতি রমণীয় ছিল। দক্ষিণ দিকে কৃতিপয় পাষাণনির্ম্মিত সোপানশ্রেণী এবং ইহার শার্ম্ব দেশে জলের উপরিভাগে একটা রহৎ শিবলিঙ্গ স্থাপিত অহেছ। দ্বীপ নির্দ্মিত হইলে পর কোনো হিন্দু রাজা ইহা স্থাপন করিয়া থাকিবেন, তাহার কোনো সন্দেহ নাই।

অপরাক্তে আমরা শকর উদ্দীন পাহাড় দেখিতে গেলাম।
ইহা লক্ষান্বীপের বিপরীত ভাগে মর্থাৎ হুদের পশ্চিমতটে
স্থিত। ইহা প্রায় ৭০০ ফিট উচ্চ এবং ইহাতে উঠিবার ছুইটী
পথ আছে। ইহাতে উঠিতে আমাদের ন্যুনাধিক অর্দ্ধ ঘণ্টা
লাগিল। পথ নিতান্ত স্থগমনহে—স্থানে স্থানে অসরল ও তুর্গম।
মধ্যে মধ্যে বিশুদ্ধ শেতবর্ণের কোয়াটজ পাষাণসমন্থিত ঈষৎ
সবুজ বর্ণের বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর্থণ্ড আছে। শৈলশিথ্নে, বাবা

শকর উদ্দীন নামক জানৈক বিখ্যাত ফকিরের জেয়ারৎ অর্থাৎ মসজিদ আছে। ইহা অতি প্রাচীন, সংস্করণাভাবে ধ্বংস প্রাপ্ত 'হইতেছে।` এস্থান হইতে কাশ্মীরের পাশ্চাত্যবিভাগ অতি. রমণীয় দেখায়। পদতলে উলর হ্রদ বিতস্তা মদ্লীকে বক্ষে ধারণ করিয়াছে বলিয়াই থৈন গর্বিতা হইয়া সগর্বের ফুলিয়া ফুলিয়া উঠিতেছে—পাশে পাশে মৃত্ন মৃত্নু সমীরণহিল্লোল, সেই সঙ্গে হ্রদগর্ভে আকাশও দোগুল্যমান হইতেছে, সুর্যদেব যেন খণ্ড খণ্ড হইয়া গিয়াছেন—<u>হ</u>দতটে গ্রামসমূহ শোভা পাইতেছে। পূর্বিদিকে লক্ষাদ্বীপ—ইহার অদূরে আথং পর্বতের পদতলে স্তৃত্য মানসবল রোপ্যপদক্ষদৃশ ঝক্ষক্ করিতেছে। দক্ষিণ দিকে সোপুর এবং বারমূল। স্পাফীক্ষরে দৃষ্ট হইতেছে — অভি দূরে উন্নত অচল-শ্রেণী যেন একতান-নয়নে গুলমর্গ প্রভৃতি, মনোহুর হানের রমণীয়ত। দর্শন করিতেছে। বিতস্তা নদী পূর্ব্ব দিক হইতে হুদে প্রবেশ করিয়া ইহাতে লীন হই-য়াছে, কিঞ্চিদূরে পুনঃপ্রকটিত হইয়া দক্ষিণপশ্চিমবাহিনী ভাবে বারমূলার তট ধোত করতঃ উপত্যকা পরিত্যাণ পূর্ব্বক চলিয়া গিয়াছে। এই সমুদয় সোন্দর্য্য দেখিতে দেখিতে দিবা অবসান হইল। ,আর এস্থলে থাকা উচিত নয় বুঝিয়া আমরা অবরোহণ করিলাম।

্রদের দক্ষিণপশ্চিমতটে সোপুর নামে এক জনপদ আছে। তথায় রাত্রিযাপন করিবার মানদে নৌকা লাগাইলাম।

৩১ শৈ আষাঢ়, বুধবার। প্রভাত হইলে পাদচারণে ইতস্ততঃ পরিভ্রমণ করিয়া জনস্থানে প্রবেশ করিলাম। দেখিলাম, অতি পুরাকালে ইহা রহৎ জনপদ ছিল। ইহাও একদা কাশ্মীরের albr.

রাজধানী অভিধেয় গোরব ভোগ করিয়াছে; কিন্তু আধুনিক সময়ে একথানি গগুগ্রাম মাত্র। ইহার প্রকৃত নাম স্থরাপুর। প্রাচীনকালে ইহার নাম কামুরা বা কাম্পুর ছিল। পরে, সহস্রবর্ষাধিক হইল, অবস্তীবর্মা নরপতির মন্ত্রী স্তর ইহার পুনঃনির্মাণ এবং উৎকর্ষরাধন করেন বলিয়া ইহার নাম স্থরা-পুর হইয়াছিল। বর্তুমান সোপুর ঐ শব্দের অপভ্রংশ মাত্র।

এই উগনগর বিতন্তা নদীর উভয়তটে স্থিত এবং অর্ধ্ব পাষাণ ও অর্ধ্ব কাষ্ঠ-নির্মিত সেতু দ্বারা পরস্পর সংযুক্ত। এম্বলে পর্যাটকদিগের জন্ম হুইতটে হুইটী উত্তম ভবন আছে। নদীর দক্ষিণতীরে প্রাগুক্ত সেতুর অপর প্রান্তে প্রস্তরনির্মিত যৎসামান্য প্রাচীন হুর্গ। ইহা এক্ষণে মহারাজার থানা অর্থাৎ পুলিষ রূপে ব্যবহৃত হুইতেছে। কিয়দ্রে একটী উত্তম দেবালার। ইহার বহির্ভাগে একটী অতি রহং শিবলিক আছে। তাহার বিপরীত ভাগে অর্থাৎ নদীর বামক্রে একটী স্বর্ণচূড় মদজিদ থাকাতে বোধ হয়, যেন হিন্দু ও মুদলমান ধর্ম প্রতিক্ষতা দেখাইতেছে।

এখান্কার জলবায়ু অতিশয় স্বাস্থ্যকর। এজন্য অনেক ইংরাজ কিয়দ্দিবদের জন্য এস্থলে আদিয়া বাস করিয়া থাকেন। মংস্থাশিকার তাঁহাদের প্রধান বিলাস।

সন্ধ্যাগমে শুনিলাম, বার্মুলা নামক জনপদে ইংরাজেরা গুপ্তধনাগারের এক স্থান খনন করিতেছেন। উহা এখান হইতে সার্দ্ধ তিন ঘণ্টার নৌকাপথ। এই জনপ্রবাদের তথ্য জানিবার নিমিত্ত এবং স্বচক্ষে সমুদয় দেখিবার জন্ম আমুরা অত্যস্ত কৌতুহলাক্রান্ত হইলাম। কিস্তু এদিকে রজনী সমাগতা। ভাস্কর অস্তাচলচ্ড়াবলম্বী হইল দেখিয়াই তক্ষররূপ তামসী
অমনি ধারে ধারে আসিয়া দেখা দিল—আমাদের কোভূহলের
সঙ্গে সঙ্গে অস্ককার বাড়িতে লাগিল। অগত্যা এই স্থলে
রাত্রিযাপন করিতে হইল।

>লা আবণ, রুইম্পতিবার। প্রত্যুষেই নৌকা ছাড়িলাম। দেড় ব[্]টা নোকাচালনা করিয়া এক সঙ্গমে উপস্থিত হইলাম। এম্বলে পোড়ানদী বিতস্তার সহিত মিলিত হইয়াছে। সংযোগ স্থলের দক্ষিণতটে দব্গাও নামক পল্লী। এখানে মহারাজার কাষ্ঠের কারথানা আছে। এস্থান অতিক্রম পূর্ব্ব কিয়দ্বরে যাইয়া এক পরম স্থন্দর উপবন দেখিতে পাইলাম এবং নৌকা লাগাইয়া স্নান ভোজনাদি করিলাম। আহারাস্তে ষ্মাষরা স্থকোমল হরিৎ দূর্ব্বাদলের উপর শয্যা প্রস্তুত করিয়। শয়ন করিয়া আছি, এমন সময় চারিদিক বোর তমসাচ্ছন হইল। আকাশমার্গে নিবিড় মেঘ; তম্মধ্যে সৌদামিনী প্রকা-শিতা এবং বজ্র নিনাদিত হইতে লাগিল। প্রবল ঝটিকা সম্বলিত রৃষ্টি আসিল—রৃক্ষ হইতে ফল সমুদয় পতিত **হই**য়া মুক্তিকা আচ্ছাদন করিল। আমরা নৌকায় আশ্রয় লইলাম। কিয়দণ্ড পরেই সমুদয় অপগত এবং দিনমণি দিগুণ প্রতাপে প্রকাশিত হইল বটে, কিন্তু নদীর তরঙ্গ পর্বতাকারে উঠিতে লাগিল। এদিকে বেলা ছুইটা। স্তরাং আর বিলম্ব করিতে না পারিয়া আমরা তটস্থ হইয়া তটের নিকট দিয়া যাইতে লাগিলাম। তথন স্প্তিব শোভা কি রমণীয়! প্রকৃতি যেন নব পরিচ্ছদ ধারণ করিল—পর্বতেশ্রেণী ধৌত তুষাররাশিতে ঠিক বেন হ্পকেণনিভ হইয়াছে—তহুপরি সূর্য্রশ্মি প্রতিবিন্থিত



হওয়াতে নানাবর্ণ দেখা দিতেছে; দূর্বাদলোপরি জলকণা
দূর্য্য-কিরণে মুক্তাকলাপবং প্রতীয়মান হইতেছে; পর্বতের
গাত্রে কোনো স্থানে মেঘের ছায়া পতিত হওয়াতে কৃষ্ণবর্ণ
হইয়াছে; কোনো স্থানে মেঘ দণ্ডায়মান রহিয়াছে; কোনো
কোনো স্থানে বা পবনহিল্লোলে ক্রীড়াসক্ত শিশুর স্থায় ইতস্ততঃ খেলা করিয়া বেড়াইতুছে—দেখিতে নিতান্তই
উল্লাসকর।

বেলা অপরাহ্ন চতুর্থ ঘটিকাকালে আমরা বারমূলায় উপ নীত হইলাম। উপস্থিত হইবামাত্রেই দীর্ঘতিলক ও পিরান-ধারী দক্ষিণাজীবী পাণ্ডাগণ মহাজনী থাতার ভায় রুহৎ রুহৎ পুস্তক কক্ষে করিয়া আমাদিগকে ঘেরিল। সকলেই একে একে কল্যাণসূচক শ্লোক উচ্চৈঃস্বরে পাঠ পূর্ব্বক আমাদিগের হস্তে আশীর্কাদী পুষ্প দিতে লাগিল—আমার যজমান হইতে হইবে, আমি এথানকার মাত্ত, গণ্য ও বিদ্ধিমু পুরেষ্কাহিত, আমি শৈশ-বাবস্থা হইতেই বাঙ্গালীদিগের পুরোহিত হইয়া আসিতেছি, প্রভৃতি স্তোভবাক্যে ব্যতিব্যস্ত করিয়া তুলিল। কেই কেই আপন কক্ষস্থিত পুস্তক উদ্যাটিত করিয়া কহিতে লাগিল— ''দেখিয়ে, সাড্ডে কেতাবমে দেখিয়ে, আগে জিতনে বাবুলোগ আয়ে সান, সব্ সাডেড যজমান হুয়ে সান, ইত্থে সব্দা নাম। লিথ্থা হায়'' এই বলিয়া পূৰ্বাগত বাঙ্গালীদিগের নাম, ধাম, ও পিতৃপুরুষদিগের নাম অনর্গল পড়িতে লাগিল। তাহা-দিগের অশুদ্ধ উচ্চারণ এবং বিকৃতভঙ্গিতে পাঠ শুনিয়া আমর্ হাস্ত সম্বরণ করিয়া থাকিতে পারিলাম না। অবশেষে উহা-দের মধ্যে পরস্পারে ঘোর বাধিতগু। চলিতে লাগিল।

শিরংপীড়ক গোলযোগ হইতে শীত্র পরিত্রাণ পাইবার জন্ম আমরা এক জনের পুস্তকে নামধামাদি লিখিয়া দিলাম এবং সকলকে আখাস ও মিউবাক্যে বিদায় করিলাম।

- মহারাজা পর্য্যুটকদিগের জন্য একখানি, বাংলা প্রস্তুত করিয়া দিয়াছেন। আমরা ইহাই অধিকার করিলাম এবং আর এক দণ্ড বিলম্ব না করিয়া সেই জনপ্রবাদের সন্ত্যাসত্য জানি-বার নিমিত্ত উৎস্তুক হইলাম। অনুসন্ধানের পর জানিলাম, যে, বহুকালাবিধি প্রবাদ আছে, চীন স্য্রাটেরা পরাজিত হইয়া এদেশ পরিত্যাগ করিলে এই বারমুলার সন্নিকটবর্তী কোনো স্থানে অনেক বহুমূল্য রক্লাদি নিহিত করিয়া যান। কিস্তু কেহই স্থান নির্দেশ করিতে পারে নাই। পরে ডাক্লার বেলু নামক এক জন মান্য ইংরাজ কোনো সূত্রে ইহা নিরূপণ করাতে ইংরাজগবর্ণমেন্ট ও মহারাজার সম্মতিক্রমে ইহা খাত হইতেছে।

ক স্থান দর্শন করিবার নিমিত্ত আমরা আরো কৌতুকাবিই হইলাম এবং একজন পথপ্রদর্শক সমভিব্যাহারে লইয়া তথায় যাইতে যাইতে একটা অতি রহৎ শিবলিঙ্গ দর্শন করিলাম। উহা এরপ রহৎ যে দেখিলে আশ্চর্য্য হইতে হয়। পরিমাণ করিয়া দেখিলাম, উহা উর্দ্ধে ছয় এবং আয়তনে নার্দ্ধ দাশ হস্ত। শিরোদেশে পুষ্প এবং জলদান করিবার জন্য একখানি মৈ লাগানো আছে। লোকে প্রত্যহই পূজা করিয়া থাকে। ভগ্নাংশ দেখিয়া বোধ হইল, এতত্বপযোগী মন্দিরও নির্দিত ছিল। আশ্চর্যের বিষয়, ইহা একখানি মাত্র প্রস্তর। একে তো এত উচ্চ, তাহাতে আবার সরল ভাবে দণ্ডায়্যান

রাথিবার জন্ম মৃত্তিকাভ্যন্তরে অবশ্যই ছুই বা তিন হস্ত শোথিত আছে। এই শিবলিঙ্গ পাণ্ডবদিগের দ্বারা স্থাপিত।

এই শিব লক্ষ্য করিয়াই পূর্বেবাক্ত ধন স্থান স্থিরীকৃত হয়। শিবের ন্যুনাধিক ৫০০ হস্ত দূরে সেই স্থান। দূর হইতে দেখি-লাম, কয়েকজন মনুষ্য একটা ক্ষুদ্র পাহাভ খনন করিতেছে। নিকটে গিয়া দেখি, ইছা একটা কৃত্রিম পাহাড়। এত পুরাতন, যে, বৃহৎ বৃহৎ বৃক্ষ জন্মিয়া উহার উপরিভাগ হিংস্র জন্তুদিগের আবাস ভূমি হইয়াছে – নিমর্গোৎপন্ন পর্বত শ্রেণীর একাংশ বলিয়াই ভ্রম হয়। নিশ্মাণকালে ইহার চহুঃপার্খ প্রস্তর প্রাকার ছারা যে স্করক্ষিত ছিল, তাহা ভগ্নাংশ দেখিয়া স্পষ্ট অনুভব করা যায়। আমরা গিয়া দেখিলাম, প্রায় অর্দ্ধেক খনন করা হইয়াছে। ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র প্রস্তরের গাঁথনি। (প্রস্তর গুলি আকারে আমাদিগের দেশীয় প্রাচীন কালের ইউক সদৃশ) গাঁথনি এরপ দৃঢ়, যে, অতি কষ্টেই থাত হইদ্ধেছে। নির্মাণ এবং রক্ষণাবেক্ষণ কৌশল দেখিয়া প্রতীতি হয়, ইহার অভ্যন্তরে অবশ্যই। কছু না কিছু আছে—হয় অসীম ধন সম্পতি, নয় কোনো স্ত্রাটের মৃতদেহ। ফলে ব্যাপারটী সাতিশয় কৌতু-কাবহুই বটে। অত্যল্প দিবদের মধ্যেই যাহা হয় একটা টের পাওয়া যাইবে। প্রত্যুত, কাশ্মীরের অনেক স্থানে বহু-মূল্য রত্নাদি নিহিত আছে, তাহার কোনো সন্দেহ নাই। অপর, ইহার চারিদিক হিমালয় পর্বতে বেষ্টিত। হৃতরাং এস্থানে স্বর্ণ, রজতাদি ধাতুর আকর নিশ্চয়ই থাকিতে পারে। কিন্তু ছুঃথের বিষয়, অদ্যাপি উহার একটীও আবিষ্কৃত হয় নাই।

• এম্বলে বিতন্তা নদী সকল স্থানাপেকা প্রশন্ত—অন্যুন
তিন শত হস্ত হইবে। স্থতরাং ইহার সেতৃও সর্বাপেকা
বৃহং। নদার দক্ষিণ তটে এক অত্যুক্ত পর্বতের তলে বারমুলা জনপদ। ইহাতে ন্যাধিক ২৫০ ঘর বসতি আছে।
ইহার প্রকৃত নাম বরাহমুলা। কারণ, প্রবাদ আছে, এখানে
বরাহ অবতার হইয়াছিল। এখানকার এক পর্বতের গাতে
বরাহের খুব চিহ্ন অন্ধিত আছে। এতদ্তির এখানে সীতাকুণ্ড, রাম কুণ্ড, সূর্যা কুণ্ড, প্রভৃতি অনেক কুণ্ড ও অনেক
তীর্থ। আমরা এক দিবস অবস্থিতি পূর্বক এই সমুদ্য
তীর্থাদি দর্শন করিলাম।

বিতন্ত। নদা বারমূল। অতিক্রম করিয়াই শৈলশ্রেণীর শ্বাধ্য গিয়া অতি সংকীর্ণ হইয়াছে এবং প্রায় দুই ক্রোশ এই সকীর্ণ ভাবে গমন করতঃ উপত্যকা পরিত্যাগ পূর্বক চলিয়া গিয়াছে। এন্থলে ইহার মূর্ত্তি অতি প্রচণ্ড ও ভয়াবহ— দূর হইতে ইহার গর্জ্জন মূহ্মূর্হ্ছ কামান শব্দের আয় প্রভত্ত হয় এবং সন্নিকট হইলে কর্ণ বিধির হইয়া যায়। স্থতরাং আর নৌকা যাইতে পারে না। বিশেষতঃ কোনো বিশেষ কার্যানুরোধে শ্রীনগরে প্রত্যাগমন করিবার প্রয়োজন ছিল। কাজেই প্রত্যাগত হইলাম। এবার কোনো স্থানে অবন্থিতি না করিয়াই দ্বিতীয় দিবদে শ্রীনগরে উপনীত হইলাম।

यष्ठं शतिर्द्धाः।

দ্বিতীয় অংশ। '

মাল মৰ্গ: কিল্পন: লোলাৰ

शुम्बर्भ।

কাশীরের অধিকাংশ পর্বত-শিথরই সমস্থা ও শুবিস্তৃত।

এই সমূদ্য অধিত্যকাকে মর্গ্ অর্থাং ক্ষেত্র কহে। গ্রীস্মাগমে
অর্থাৎ প্রাবণ ও ভাদ্র মাসে নানাবিধ মনোহর বর্ণের প্রাপ্তা
বিকশিত হইয়া মর্গ নিচয়ের অপরূপ শোভা উৎপাদন করে।
অতএব পর্যাটকেরা যেন শেই বিশুদ্ধ স্থা সম্ভোগে বিমুখ
না হয়েন।

সমুদয় মর্গ্ অপেকা গুল্মর্গ্ অতি উৎকৃষ্ট ও প্রসিদ্ধ। ইহা জীনগরের পশ্চিমদিকে স্থিত। ইহাতে যাইবার অনেক পথ আছে। কতিপয় স্থলপথ, কিন্তু অধিকাংশই স্থল ও জল, মিশ্র পথ। ডাক্তার ইন্স সাহেবের কাশ্মীর ভ্রমণ সম্বন্ধীয় পুস্তকে এবং মন্টগোমারি সাহেবের কাশ্মীর মানচিত্রে ইহাদের সবিশেষ বিবরণ বর্ণিত ও অঙ্কিত আছে। অতএব তৎসমুদয় এস্থলে উল্লেখ করা বাহুল্য মাত্র।

গুল্মর্গ শ্রীনগরের সমতল হইতে প্রায় ৩০০০ তিন সহস্র ফিট উর্দ্ধে স্থিত। ইহা দৈর্ঘ্যে তিন মাইল এবং প্রস্থে সকল

স্থানে সমান নহে। পরস্ত কুতাপি এক মাইলের অধিক হুইবে না। ইহার চতুঃপার্শ্বেই শৈলভোগী। ইহার মধ্য দিয়া এক নিঝ রিণী প্রবাহিতা হইয়া মর্ পরিত্যাগ কালে অপর কতিপয় স্রোতস্বতীৰ সহিত মিলন পূর্বক অতি গভীর শব্দে সহস্র সহস্র হস্ত নীচে গিয়া পড়িতেছে। যে নিদর্গোপন্ন পুষ্পের জন্ম এই স্থান এত প্রদিন্ধ, তাহার ্থা কি বলিব! মর্গের এক প্রান্ত হইতে অপর প্রান্ত পর্যন্ত সমূদয় স্থানে এবং পার্শ্বর্ত্তী গিরি-শ্রেণীর অধিকাংশ স্থলেই পুষ্প বিক-শিত হইয়া রহিয়াছে। যতদূর পর্যান্ত দৃষ্টি চলিতে পারে, ততদূর পর্যান্ত পুষ্প ভিন্ন আর কিছুই দৃষ্টিগোচর হয় না! জগতে যত় প্রকার বর্ণ আছে, ততপ্রকার রঙ্গেরই পুষ্পা— কোনো কোনো স্থানে কেবলই লাল, কোথায় কেবলই সবুজ - ইত্যাদি এক এক স্থানে এক এক বর্ণের পুস্প। আবার কোনো কোনো স্থানে প্রকৃতি দেবী স্থনিপুণ উপবন রক্ষ-কের ন্যায় বিচিত্র বিচিত্র কেয়ারি করিয়া রাথিয়াছেন— দেখিলে অবাক্ হইতে হয়! এই জ সুই এই স্থানের নাম গুল্মর্গ অর্থাৎ (গুল্-পুষ্প এবং মর্গ্-ক্ষেত্র) পুষ্পক্ষেত্র হই-য়াছে। যে বর্বর ঈশবের অস্তিত্ব বিষয়ে সন্দেহ করে এবং যে খোর বিষয়ী পুরুষ বিষয়মদে মত হইয়া একবারও বিশ্বপাতার অচিন্ত্যশক্তি ও নিরুপম সৃষ্টি-কৌশল চিন্তা না করিয়া থাকে, তাহারা এই স্থলে আত্তক—আসিয়া দেখুক, স্ষ্ট্রিক্র্তা স্বীয় স্ষ্ট্রিতে প্রতিনিয়ত নির্মিতরূপে কি বিচিত্র থেলাই খেলিতেছেন

এখানে স্ক্রিট অতিশয় রৃষ্টি হইয়া গাকে। যাঁহার

আসাম প্রদেশস্থ চিরাপুঞ্জির রৃষ্টিপাত দেখিয়াছেন, তাঁহারা ইহা উপলন্ধি করিতে পারিবেন। তথাপি এখানকার জলবায়ু অতিশয় স্বাস্থ্যকর। একারণ ভাদ্রমাদে শ্রীনগরের বায়ু কথঞ্ছিত দ্বিত হইলে অনেক পর্যাটক এখানে কিয়ন্দিবদ বাদ করিয়া থাকেন। এখানে কোনো বিশ্রামভবন নাই। ভ্রমণকারীরা আপনাপন শিবির সংস্থাপন পূর্মক বাদ করেন। ইহার দল্লিকটে অনেক গুজ্জর অর্থাৎ গোপালক এবং চোপান্ বা পহাল্ অর্থাৎ মেষপালক বাদ করে। স্বতরাং তৃন্ধ, দিধি, নবনীত ও মাংদ অপ্র্যাপ্ত পরিমাণে পাওয়া যায়। নচেং অপরাপর আহার্য ও ব্যবহার্য দামগ্রী নিম্নভাগত্ব অতি দূরবর্তী পল্লী হইতেই আনাইতে হয়।

কিল্লন।

ইহাও একটা অতি রমণীয় মর্। ইহা গুল্মর্ হইতে তিন মাইল দ্রে স্থিত এবং সহত্র ফিটের বি বিধিক উচ্চ। এই মর্গুল্মর্গ্ অপেকা রহৎ এবং ছন্য়ে বহু সংখ্যক উত্তম উংস ধারণ করে বটে, কিন্তু পুষ্পদৌন্দর্য্য বিষয়ে প্রথমের স্থায় রমণীয় নহে এবং এহলে অপেকাকৃত অধিকতর রৃষ্টি-পাত হইয়া থাকে। পরস্তু, এখানে আর একটা অতীব আশ্চর্য্য নৈস্থিক শোভা আছে। ইহার চতুঃপার্য তুষার মণ্ডিত পীরপঞ্জাল দ্বারা প্রিবেস্টিত। পর্বতের স্থানে স্থানে রহদাকার নীহারের রাশি "মেসিয়ার" অর্থাৎ চিরনীহারের বাহুস্বরূপ লক্ষ্মান আছে। উহা অতিশয় দৃঢ় এবং আধার স্থানের আকারামুসারে উহার ভিন্ন ভাক্ষ আছে, উহা স্থদ্য প্রার্থা যায়। দ্কিণ-পশ্চিম কোণে যে বাহু আছে, উহা স্থদ্য

ও প্রকৃত ছাতের স্থায় বিস্তৃত এবং উহার নাঁচে কতিপয়
কুদ্র কুদ্র নিঝারিণা প্রবাহিতা। দেখিয়া বোধ হয়, ঐ সব
ঝরণার জল হিমানী-পতনে জন্মিয়া থাকে বলিয়া ঐ গ্লেদিয়ার
চক্রাতপ শ্বরূপ উহাদিগকে রক্ষা করিতেছে!

लामाव।.

লোলাব একটা অত্যুত্তম প্রগণা। ইহা উত্তর-পশ্চিম 'প্রান্ত ভাগে স্থিত। ইহা দৈর্ঘ্যে প্রায় ১৫ মাইল এবং প্রস্থে কোনো কোনো স্থানে অতি সংকীর্ণ ও কোনো কোনো স্থানে প্রায় তিন মাইল পর্য্যন্তও প্রসারিত। ইহার চারি দিকেই অতুমত গিরিশ্রেণী আছে। ইহার মধ্যদেশ দিয়া এক বৃহৎ নদী প্রবাহিতা হইতেছে এবং ইহার ভূমি অতিশয় উর্বরা। এই শহলে তুঁত, বাদাম, আক্রোট এবং চেনার প্রভৃতি পাদপ সমূহের. বহু বহু রম্য কুঞ্জ। এই পরগণায় যে ন্যুনাধিক ত্রিশটী পল্লী আছে, তত্তাবং এই সমুদায় কুঞ্জের মধ্যেই স্থিত। এখানকার জলবায়ু যেমন শীতল ও স্বাস্থ্যকর, স্প্রির শোভাও তেমনি বিচিত্র। স্থতরাং পর্য্যটকেরা যেন এই উপত্যকায় কিয়দিবস অবস্থিতি পূর্বক ইহার রমণীয়তা উপ-ভোগ করেন। অপর গিকারীদিগের ইহা অতি প্রিয় স্থান। যেহেতু, স্থবাহ্র ফল পরিপক হইলে ভল্লুকেরা তল্লোভে পালে পালে দেখা দিয়া থাকে। তজ্জ্জ্জ্ অনেকে ইহাকে ''ঋক্ষবন'' নামেও অভিহিত করিয়া থাকেন।

সপ্তম পরিচ্ছেদ।

কাশ্মীরের উত্তর বিভাগ।

লার পরগণ। সিন্দু উপত্যকা। জীন দেবায়তন। নাগবলু। গভাবলু। সোনামগু। অন্ত এতিমূর্তি।

কাশ্মীর উপত্যকার মধ্যে কতিপয় ক্ষুদু ক্ষুদু অতি স্থন্দর

উপ-উপত্যকা আছে। পূর্ব্ববর্ণিত লোলাব পরগণার স্থায় শ্রীনগরের উত্তর পূর্ব্ব ভাগে লার নামে একটা অত্যুৎরুষ্ট পরগণা। ইহার উত্তর প্রান্তে যে একটী রমণীয় ও স্থদীর্ঘ উপত্যকা আছে, তাহার মধ্যদেশ দিয়া দিন্দ্ নদী প্রবাহিত হইতেছে বুলিয়া উহাকে সিন্দ্ উপত্যক কৈছে। ইহা শ্লীনগর হইতে দপ্ত ক্রোশ দূরে স্থিত এবং দ্রাদ, লদাখ্ও ইয়া-র্কন্দ প্রভৃতি স্থানে যাইবার পথ উহারই মধ্য দিয়া গিয়াছে। এই উপত্যকায় স্বভাবের শোভা অতি স্থন্দর ও বহু বিচিত্র। ইহার উভয় পার্শে অভ্রভেদী পর্বতভোগী দণ্ডায়-মান—উহাদের শিরোদেশ তুষার মণ্ডিত—গাত্রে চীড় ও ভূর্জ্জপত্রের অরণ্য এবং পদতলে স্থসান্থ ফলের উপবন। এখানকার ভূমি অতিশয় উর্বার। সর্বত্ত যেরূপ মনোহর তৃণ জিমায়াছে, দেখিলে অবাক্ হইতে হয়—বোধ হয়, যেন প্রকৃতি দেবী দূর্ববাদলের গাতিচা বিছাইয়া রাখিয়াছেন।. এতদ্বিন অয়ত্মসম্ভূত আঙ্গুর, পিচ, আক্রোট, দেউ, নাসপাতি

প্রস্থৃতি রদাল ফলের রক্ষ অপর্যাপ্ত পরিমাণে চারি দিকে জন্মিরাছে। নদীর উভয় তটে মধ্যে মধ্যে ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র অনেক গ্রাম আছে। উহাদের চতুঃপাশ্বে কর্ষিত ভূমি শস্ত-পূর্ণ ইইয়া শোভা পাইতেছে। এখানে মৃগয়াও অতি স্থলভ। কাশ্মীরের সমুদয় স্থানাপেক্ষা এখানকার জল বায়ু উৎকৃষ্ট। একারণ, সস্তাস্ত ও ধনী কাশ্মীরীরা এবং পর্যাটকমাত্রেই এখানে কিয়দ্দিবস বিশেষতঃ শ্রাবণ ও ভাদ্র মাস অতিবাহিত করিয়া থাকেন।

এই উপত্যকার উত্তর-পশ্চিম প্রাস্থ্যে এবং শ্রীনগর হইতে ১৬ ক্রোশ দূরে কতিপয় অত্যুক্তম জীর্গ দেবালয় আছে। এতংসমুদয় অতিশয় প্রাচীন; উহাদের ভগাংশ ও নিশ্মাণ কৌশল দেখিয়া স্পষ্ট প্রতীয়মান হয়, ইহারা বহু পূর্বে মিশ্মিত হইয়াছিল। এক স্থলে প্রস্তর নির্মিত প্রাকারের মধ্যে, মন্দির চতুষ্টয়ের জীর্ণি আছে। উহাদের প্লাত্রে এবং ছাতে রহৎ রহৎ রক্ষরাজ জন্মিয়া রহিয়াছে। প্রাচীর পরিবেজিত প্রাক্ষণভূমি ঈষৎ জলময় বা আর্দ্র, স্থতরাং এমত কোমল যে, বোধ হয়, ইহা কোনো কালে ক্ষুদ্র ভ্রদগর্ভ ছিল।

কিয়দ্রে এক অতি প্রাচীন দেবালয়ের সন্নিকটে একটা পবিত্র উৎস আছে। ইহাকে নাগবল কহে। ইহা এক অত্যুক্ত পর্ববৈতর তল হইতে নিঃস্থত হইতেছে। ইহার জল সাতিশয় শীতল ও বিশুদ্ধ এবং উৎস হইতে নির্গত হইয়া ন্যুনাধিক ৪০ হস্ত দীর্ঘ ও ২৫ হস্ত প্রশস্ত এক পাষাণনির্দ্মিত কুণ্ডে গিয়া পড়িতেছে। এই উৎসের চারিদিকে কিয়দ্র পর্যান্ত বহু বহু ঘাসের পাছকা বিক্ষিপ্ত রহিয়াছে। যে সমুদর যাত্রী সম্মুথবর্তী গঙ্গাবল নামক তীর্থ দর্শন করিতে যায়, তাহারাই এই স্থলে উক্ত উপান্ত পরিত্যাগ করিয়া থাকে।

গঙ্গাবল্ অত্যুৎকৃষ্ট পার্বভাঁ হ্রদ। ইহা হরম্থ পর্বিত্রের সৈ ১৬,৯০০ ফিট উচ্চ শিথরদেশে স্থিত। ইহাতে উঠিবার যে পথ আছে, তাহা অতি তুর্গম ও কফ্ট দাধ্য এবং এমন দীর্ঘ, যে, কেবলমাত্র উঠিতে ও নামিতেই এক দিবস অতিবাহিত হয়। এই হ্রদ দৈর্ঘ্যে দেড় মাইল এবং প্রস্থে ৫০০ হস্ত হইবে। ইহাও বিতন্তা নদীর উৎপত্তি স্থান বলিয়া পরিগণিত এবং হিন্দুদিণের স্থপ্রদিদ্ধ প্রধান তীর্থ। হিন্দুদ্যানবাদী হিন্দুদিণের পক্ষে যেমন গঙ্গা, কাশ্মীর পণ্ডিতদিগের পক্ষে তেমনি এই গঙ্গাবল্। এস্থলে প্রতিবংসর ভাদ্র মাসে মহা সমারোহ হয় এবং এই উপলক্ষে সহস্র সহস্র যাত্রী সমাগত হইয়া থাকে।

দিন্দু উপত্যকার উত্তর-পূর্ব্ব প্রান্তে এবং শ্রীনগর হুইতে পাঁচ আজা দূরে দোণামর্গ্ অর্থাৎ স্বর্ণময় ক্ষেত্র। ইহা গুল্মর্গের আয় উৎকৃষ্ট। অপিচ, অনেকে গুলমর্গাপেক্ষা এই স্থানকে অধিক মনোনীত করিয়া থাকেন এবং কহেন, যে, এই স্থান জলবায় ও স্প্রির শোভা সম্বন্ধে কাশ্মীর প্রদেশের সমুদ্য় স্থানাপেকা উৎকৃষ্ট ও প্রীতিকর। এম্বলে মহারাজা সম্প্রতি পর্যাটকদিগের জন্য কয়েকখানি বাদগৃহ প্রস্তুত্ত করিয়া দিয়াছেন।

সোণামর্গের পূর্ববিদিকে ন্যুনাধিক পাঁচ ক্রোশ দূরে এক অধিত্যকার উপর ভূর্জ্জপত্রের অরণ্য দেখিতে পাওয়া যায়। এক মহীরুহের তলদেশে ছুই অতীব আশ্চর্য্য প্রতিমূর্ত্তি

আছে –এক । দৃঢ়কায় নর এবং অপরটী কোমলাঙ্গী রমণী। ছুইটীই পালাণ নির্মিত। ররদেহ বামভাগে হেলিয়া মৃত্তিকার ·উপরে বাম হস্ত সংলগ্ন পূর্দ্বিক উপবিষ্ট রহিয়াছে। উহার . . দক্ষিণ দিকে কয়েক পদ পশ্চাতে অবলা, যেন ভয়ভীতা রূপে অবস্থিতি করিতেছে। ইহাদের সমক্ষে পাষাণ নির্দ্মিত মহানস (উনান) এবং কতিপয় ভাগু রহিয়াছে। আশ্চর্য্যের বিষয় এই, যে, দূর হইতে উহাদিগকে যেন দজীব বলিয়া বোধ হয়, উহাদিগের সমীপবর্তী হইলেও সে ভ্রম সহজে দূর হয় না — উহারা যেন "কোমল ও স্বথম্পর্ণ রক্ত মাংসে গঠিত বলিয়া বোধ হয়, কঠিন প্রস্তর বলিয়া প্রতীয়মান হয় না।" উহাদের নির্মাণ কৌশল এমনি বিচিত্র, যে শ্রীরের যুক্ষ সূক্ষ শিরা, লোমকূপ, অস্থি, নরাকৃতির বাম পঞ্জর এবং উভয়ের অঙ্গুলী এমন স্পান্ত ও স্দার রূপে বিশস্ত হইয়াছে, যে, মনুষ্য হস্ত রচিত বলিয়া আশু বিশ্বাদ হয় না। ইহারা যে কোন্ কালে ভাস্কৃত এবং ইহাদি কেই বা এম্বলে কি অভিপ্রায়ে স্থাপিত করিয়াছে, তাহার কিছুই मठिक व्यवधातन कतिएक शांता यात्र ना। ইशांपत मगीत्श কোনো জীর্ণ দেবায়তন বা হর্ম্মাদির চিহ্ন মাত্রও নাই। পরস্তু, ইহারা যে অতি প্রাচীনকাল হইতে এখানে অবস্থিত, তাহার কোনো সন্দেহমাত্রই নাই। ইহারা অনাচ্ছাদিত, স্কুতরাং ইহাদের উপরে যে কত রৃষ্টি ও কত নীহারপাত হইয়া গিয়াছে, তাহার ইয়তা হয় না। কিন্তু কিছুতেই ইহা-দের স্থব্দর অবয়বকে কিছু মাত্র বিকৃত করিতে পারে নাই।

অফ্টম পরিচ্ছেদ।

শাল প্রভৃতি ঊর্ণাবস্ত্র

অনেকে কহিয়া থাকেন, যে, ১৫৮৮ খৃষ্টাব্দে কাশ্মীর মোগল স্ত্রাজ্যের অন্তর্গত হইলে পর বাদশাহেরা ইয়ার্কন্দ প্রভৃতি উত্তর ভাগস্থ জনপদ হইতে তস্তুবায়াদি আনাইয়া এথানে শাল প্রস্তুত করিবার শিল্প কৌশল প্রথম প্রচার করেন। আবার কেহ কেহ কহেন, যে, মোগল স্ত্রাটদিগের অধিকার কালের ১৬৫ বংসর পূর্কেব অর্থাৎ ১৪২৩ খৃষ্টাব্দে জানালব উদ্দীন নামে একজন অতি প্রতাপান্বিত অধিণতি ছিলেন। তিনি শিল্পবিদ্যা, ও সাহিত্য প্রভৃতি অনেক বিষয়ের উন্নতি সাধন করেন। তিনিই সর্বাদো তুরক্লীস্থান হইতে তন্তু-বায় প্রভৃত্তিনাইয়া আপন প্রজাদিগকে শাল প্রস্তুত করিবার কৌশল শিক্ষা দেন। প্রত্যুত, যে কোনে সময়ে শাল প্রথম প্রস্তুত হউক না কেন, মোগল সম্রাটদিগের শাসনকালে ইহার যেরূপ উৎকর্ষ সাধিত হইয়াছিল, এমত আর কোনো সময়ে হয় নাই এবং বোধ হয়, আর কোনো সময়ে হইবেও না। তংকালে ১৬০০০ তস্ত চলিত এবং প্রায় সমুদয় কাশীরী এই কর্মে নিযুক্ত থাকিয়া ভরণপোষণ নির্ববাহ করিত। কিস্তু একণে কেবল ২০০০ তস্তু মাত্র আছে এবং শালবাফ * ও

^{*} শালের তক্তবায়দিগকে শালবান্ধ কহে এবং তাহাদিগের অধীন কর্ম-চারীদিগকে শাকুরেত কহিয়; গ†কে:

শাকুরেৎদিগের সংখ্যা ন্যুনাধিক বিংশতি সহস্র হইবে। সক-লেই অবগত আছেন, পূর্ব্বে যেরূপ শামীরী শাল প্রস্তুত হইত, - এক্ষণে আর সে প্রকার শাল বা আলোয়ান চক্ষে দেখা যায় ন। ইহার কারণ কি ? কারণ আর কিছুই নহে, কেবল এই, যে, অমৃতদরের প্রতিযোগিতা দিন দিন রৃদ্ধি ও ক্রেতাদিগের রুচি ও উংসাহের হ্রাস। অমৃতসর প্রভৃতি স্থানে, যে সকল শাল প্রস্তুত হইয়া থাকে, যদিও তাহা কাশ্মীরী শালের তুলনায় সর্কাংশে নিকৃষ্ট, তথাপি তাহাদের মূল্য স্বল্প বলিয়া সকলই তত্তাবংকেই মনোনীত করিয়া থাকেন। অপর, ইউরোপের সমুদয় স্থানাপেক্ষা ফরাশীশ দেশে কাশ্মীরী শাল অধিক বিক্রয় হইয়া আদিতেছিল। উহাদের প্রত্যেকের মূল্য অধিক নহে এবং প্রায় সমুদয়ই স্কোয়ের অর্থাৎ সমচতুকোণ এবং কেবল ইউরোপীয়দেরই ব্যবহার্য্য। তথাপি প্রতি বৎসর বিস্তর টাকার রপ্তানি হইত বলিয়া শালবাফি কর্ম্মের যথেষ্ঠ উৎসাহ ছিল। কিন্তু তুঃখের বিষয়, ফরাশীশ যুদ্ধের প্রারম্ভাবধি সেই প্রয়ো-জন হ্রাস হওয়াতে শালের বাজারও একবারে নতমুখ হই-য়াছে। মহারাজা ইহার উন্নতি সাধন জন্য নিজ কোষের হানি করিয়াও ইহার কর অনেক কমাইয়াছেন। অপর, কেবল তিনিই মধ্যে মধ্যে অধিক মূল্যের শাল প্রস্তুত করিবার আজ্ঞা দিয়া থাকেন। ডিউক অব এডিন্বরা এতদেশে আগমন করিলে তিনি তাঁহাকে উপঢৌকন দিবার জন্ম যে শাল প্রস্তুত করেন, তাহাতে তাঁহার ২৫০০০ চিলকি মুদ্রা অর্থাৎ ১৫ ৬২৫ টাকা ব্যয় হয়। ফলতঃ ক্রেভাভাবেই একণে অধিক মূল্যের শাল প্রস্তত হয় না। কিয়দিন হইল কোনো

ইংরাজ সংবাদপত্তে লিখিয়াছিলেন, যে, মহারাজকর্তৃক অধিক কর গৃহীত হয় বলিয়াই শালের ব্যবসায় দ্রাস হইয়াছে। এ কথা কথাই নহে—ইহা নিতান্ত অমূলক ও প্লানিমূলক অপবাদ বই আর কিছুই নহে। আমরা আবার বলিতেছি, মহারাজানিজের ক্ষতি স্বীকার করিয়াও ইহার উনতি পক্ষে নিতান্ত সচেন্ট আছেন এবং শুদ্ধ ক্রেতার অভাবই অবনতির একমাত্র কারণ। হায়! যোণার ভারত ক্রমে নির্ধন হইয়া পড়িল—বহুমূল্য শাল আর ব্যবহার করিবে কে? হায়! এক্ষণে সচরাচর যে জামেয়ার বা রুমাল দেখিতে পাওয়া যায়, উহার মূল্য ৫০০ হইতে ৩০০০ পর্যন্ত এবং শা পচন্দী জোড়া ২০০০ হইতে ৫০০০ পর্যন্ত বই নয়। আলোয়ানের গজও সাধারণতঃ ১২ দ্বাদশ মুদ্রার অধিক নহে।

অনেকে মনে করিতে পারেন, কাশ্মীরী ছাগলের লোমেই
শাল হয়। প্রভাত তাহা নহে। এখানকার ছাগলের লোমে
কেবল লুই প্রভৃতি সামান্ত উর্ণা-বস্ত্রমাত্র প্রস্তুত হইয়া থাকে।
যে লোমে শাল হয়, উহা উত্তর ভাগস্থ লদাখ, তিকাত, ইয়ার-কন্দ প্রভৃতি স্থান হইতেই আইদে। তত্রত্য শাল-ছাগ আকারে
রহৎ নহে এবং উহার সমুদ্য গাত্রলোংমেও পশ্মিনা* হয় না।
যে পশম অর্থাৎ লোম ঠিক চর্মের উপরিভাগে থাকে এবং
যাহা অতি সৃক্ষা, কেবল তাহা হইতেই পশ্মিনা উৎপন্ন
হয়। দেশভেদে ও জলবায়ুর তারতম্যানুমারে পশ্মিনা-

^{*} শাল, জোড়া, জামেয়ার, রুমাল, গলাবক্ক, আলোয়ান প্রভৃতি যে সমুদ্র ক্লম দ্বঃ পশ্ম হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে, তাহাদিগের সাধারণ নাম পশ্-্ নিনা! লুই প্রভৃতি সামান্য ও ভূল উর্থ-বক্ক ইহার অন্তর্গত নর্হে।

ছাগের পশমের ইতর বিশেষ হইয়া থাকে। কারণ, যে সমুদয় তিব্বতীয় বা অপর স্থানীয় ছাগ এখানকার উপত্যকায় বা পর্বতে প্রতিপালিত, তাহাদের পশম তত উৎকৃষ্ট নহে। ঐ পশম দ্বিপ্রকার —প্রথম শ্বেত। দ্বিতীয় শ্বেতমিন্তিত ধুদর বর্ণ। শ্বেত শশম অধিক আদরণীয় এবং মূল্যবান্। শেযোক্ত বর্ণকে থোদ্রঙ্গি অর্থাৎ নিজ রঙ্গবিশিষ্ট কহে। এই পশমে যে পশ্নিনা প্রস্তুত হয়, তাহাতে লপর কোনো রঙ প্রয়োগ করে না এবং তাহার নিজের রঙ্গও কোনোকালে অপনীত হয় না।

পশম কর্ত্তন দৃঢ়কায় পুরুষদিগের কঠিন হস্তের কর্মানহে। একারণ ইহা কোমলাঙ্গীদিগের কোমল করেই কর্ত্তিত হইয়া থাকে। আবার আশ্চর্য্যের বিষয় এই, য়ে, বালিকাদি-গের কুন্তুমময়য়য়ুকুমার করে ইহা যেরূপ উৎকৃষ্ট হয়, বয়য়্থা-কামিনীগণের অপেকাকৃত কঠিনতর হস্তে সেরূপ হইতে পারেনা। তজ্জন্য বালিকারাই অধিক পশম কাটিয়া থাকে।

যৎকালে ছাগ বা মেষের গাত্রোপরি পশম বিরাজ করে, সেই সময়েই অর্থাৎ কাটিবার পূর্ব্বেই পশম ব্যবসায়ীরা উহার প্রকালন ও পরিন্ধরণ প্রভৃতি সমুদয় কায়্য
সমাধা করিয়া লয়। কার্ত্তিক মাসে অর্থাৎ শীত ঋতুর প্রাকালে
উহাকে পশ্চাল্লিথিত রীত্যসুসারে ধৌত করিয়া কাটিয়া থাকে।
যেমন আমাদিগের দেশে বর্ষার বারিধারা সংস্পর্শে তৃণ
প্রভৃতি উদ্ভিদ দ্বিগুণ সজীব হইয়া উঠে, তদ্রপ হিমানীর
আগমনে লোমহীন না ছাগ ও মেষের গাত্রে অতি নিবিড় ও
ফ্রন্ব পশম উদ্গত হয়।

পশম পরিশুদ্ধ করিবার রীতি এইরপ। প্রথমে মেরকে জলে নিমজ্জিত করিয়া লয়। পরে এক ব্যক্তি বাম হস্ত দ্বারা উহার পশ্চান্তাগস্থ এবং দক্ষিণ হস্ত দ্বারা উহার সন্মুখস্থ পাদ্দির ধারণ করে। অপর একজন বিপরীত ভাগ হইতে দ্বিমুষ্টি সমন্বিত অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি এক অস্ত্র লোমের উপর পুনঃ পুনঃ তাড়না করিতে থাকে। এতদ্বারা সংহত লোম বিচ্ছিম এবং সমুদয় অতি পরিষ্কৃত ও উজ্জ্বল হয়। পরে, ছোট বড় লোম ছেদিত হইলে মেষ একবারে নয় হইয়া যায়। ইহাকেই ইংরাজীতে (Shearing the sheep) কহে।

শালবাফী কর্ম্মে আদর্শ-উদ্ভাবক ব্যক্তিই সর্ব্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। তাহাকে নকাশ কহে। এ প্রকার লোক অতি অল্পই আছে। ক্রেতাদিগের অভিরুচ্যমুসারে নৃতন নৃতন আদর্শ উদ্ভাবন করাই নকাশের কর্ম। আদর্শ কাগজে অঙ্কিত করে। পরে যথাস্থলে উপযোগী বর্ণ সন্নিবেশ করিয়া লব্ধ। এইরূপে আদর্শ প্রস্তুত ও তাহা ক্রেতার মনোনীত হইলে গণকের কার্য্য আরম্ভ হয়। ইহা অতি কন্টদাধ্য। কারণ, গণককে প্রত্যেক রঙ্গের ্কত তম্ভ আবশ্যক. কোন্ বর্ণের তম্ভর পরে অপর কোন্ বর্ণের কত তস্তু চাহি, সমুদয় ঠিক করিয়া গণিয়া দিতে হইবে। গণক ইহা ধার্য্য করিয়া আদর্শানুসারে তস্তবায়-দিগের উপদেশার্থে ক্ষুদ্র কার্চ্নখণ্ডে বা কাগজে এইরূপ লিখিয়া দেয়---> শ্বেত, ৩ লাল, ১ হরিন্দা, ২ ঈষৎ নীল, ২ গভীরনীল, ৩ সবুজ ইত্যাদি। অনস্তর শালবাফেরা কর্ম্মে প্রবৃত্ত হইলে এক ব্যক্তি গুরুমহাশয়ের সন্দার পড়ুয়ার ভায় উক্ত আলেখ্য উচ্চিঃস্বরে পাঠ করিতে থাকে এবং উহারা অনম্র্যনে শ্রাবণ

কর্তঃ তাহার উপদেশ মতে নানাবিধ রঙের তন্ত প্রয়োগ করিয়া যায়।

বস্ত্র বুনিবার যন্ত্র হইতে পশ্মিনার তস্ত্র ভিন্ন নহে। তস্ত্র বারা যে শাল প্রস্তুত হয়, তাহাকে "কানি" বা "কানিকার" কহে। কানি কর্ম টুকুরা টুকুরা অংশ রূপে প্রস্তুত করে। পরে সমুদয় একর য়ুড়য়া দিলেই এক ফর্দ শাল হইয়া যায়। এইরপে জামেয়ায়, রুমাল, পাল্লা ও হাঁসিয়া প্রভৃতি প্রস্তুত হইয়া থাকে। কিন্তু আলোয়ানের কেবল মাত্র পার্যদেশের (কিনারার) কানিকর্ম, জিঞ্জির (ছোট পাল্লা) অথবা গলাবন্ধ প্রস্তুত করিতে হইলে অগত্যা একবারেই বুনিতে হয়। অপর, বুনিবার সময় সোজা দিক নীচে এবং উন্টা দিক উপরিভাগে রাথিয়া বুনিয়া থাকে অর্থাৎ কার্পেট বুনিবার রীত্রির ঠিক বিপরীত।

ছুঁচের কর্মকে "আম্লি" বা "আম্লিকার" কহে। ইহার
নক্সা অর্থাৎ আদর্শ প্রস্তুত হইলে প্রথমে উহা ছিদ্র করিয়া
লয়। পরে উহা আলোয়ানের উপর রাথিয়া কালী বা চূর্ণের
গুঁড়া সম্বলিত পুঁটলি দিয়া ঘদিয়া দাগ করে। পরে কলম
দিয়া সেই সমৃদয় চিহ্ন স্পাই অঙ্কিত করিয়া লয়। পঞ্জাবে
এরূপ না করিয়া একবারে ছাপ দিয়া থাকে। সূচিকর্ম আরম্ভ
করিবার পূর্বের নানাবিধ রক্ষ যথোচিত স্থানে সম্বিবেশ পূর্বেক
গৃহীতা বা ক্রেতার ইচ্ছানুরূপ এক টুকুরা নমুনা প্রস্তুত করে।
এই আদর্শ মনোনাত হইলে উক্ত চিহ্নিত আলোয়ানের
উপর কর্ম আরম্ভ হয়।

শালবাফদিগের কারু কর্মের ইয়তা নাই। উহাদিগকে

বেরপ আদর্শ দেখাইবে, উহারা ঠিক তাহাই প্রস্তুত করিতে পারে। কোনো কোনো শালের ছুই দিক সমান বুনিয়া খাকে। অর্থাৎ উহার বিপরীত ভাগ বা উল্টা দিক থাকে না —যে দিক দেখ, সেই দিগই সোজা। আবার কোনো কোনো শালের এক দিকে মথমল এবং অপর দিকে কিংখাব বুনিতেও দেখা গিয়াছে।

আলোয়ান মর্দন করাকে ' মলিদা " অর্থাৎ মর্দ্দিত কহে।

এরপ করিলে আলোয়ানের অবয়ব হ্রাস হয় বটে, কিন্তু এতদারা উহা কোমল, স্থানর এবং ঔদ্ধান্য বিশিষ্ট হয়। পরিচ্ছদ
প্রস্তুত করিতে হইলে আলোয়ানকে অল্প বা অধিক মলিদা
করা নিতান্ত প্রয়োজনীয়।

পূর্বের নাগরিক ব্রদের বর্ণনা উপলক্ষে লেখা গিয়াছে, থে, উহার পার্ট্রেকদেশে পশ্ মিনা থোত করিবার কতিপয় প্রস্তর আছে। পৃথিবীর অপর কোনে। স্থলে এক্ষনকার ন্যায় শাল প্রস্তুত না হইবার প্রধান কারণ এই জল এবং অপর কারণ এখানকার নির্মাল বায়ু। পূর্বের পূর্বের হিন্দু এবং মুসলমান শাসনকর্তাদিগের দৌরাত্ম্যে অনেক শালবাফ এখান হইতে পলাস্মন করিয়া অমৃতসরে গিয়া বাস করিতেছে। তাহারা পূর্বের যে সমুদয় উপকরণ পদার্থ দারা এখানে শাল প্রস্তুত করিত, তথায় সেই সেই উপকরণ এবং সেই সব হস্ত সেরপ শাল কোনো মতেই প্রস্তুত করিতে পারে না। অপর, অনেক শালবাফ গ্রীম্ম শ্বতে এখানে এবং শীতাগমে তথায় গমন পূর্বেক জীবিকা নির্বাহত্ত করিয়া থাকে। কিন্তু দেশভেদে তাহাদিপরত হস্তেছিপর দ্রেরের বিলক্ষণ গুণবৈষম্য ঘটে। স্বতরাং

সকলেই মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করিবেন, যে, কেবল জলবায়ু মাত্রই

এরপে প্রভেদ হইবার কারশ। আবার, এই জলের এমনি গুণ,

যে, উহাতে পশ্মিনা প্রকালিত হইলে যেমন কোমল ও

উজ্জ্বল হইবে, উহা। কিয়দ রে ধোত করিলে তেমন উৎকৃষ্ট

না হইয়া বরং অপ্কৃষ্টই হইয়া দাঁড়াইবে।

লদাথ ও তিবৰত প্রস্থৃতি স্থান হইতে এক প্রকার পশ্মিনা (আলোয়ান) আদিয়া থাকে। উহা অল্ল মূল্যে পাওয়া
যায়। কিন্তু কাশ্মীরী পশ্মিনার আয় উহা কোমল, স্থানার ও
স্থায়ী নহে। অপর, উহাতে রৃষ্টি জল লাগিলেই তুর্গন্ধ হইয়া
থাকে।

মেঘলান ও ছাগের স্থল লোমে এক প্রকার উর্ণা বন্ধ প্রস্তুত হয়। উহাকে পটু, কহে। ইহা পশ্মিনা অপেকা নিকৃষ্ট বটে, কিন্তু স্থলর এবং স্থায়ী পশ্মিনার আয় ইহার বর্ণ বিবিধ;—এক শ্বেত এবং অপর খোদ্রঙ্গি। শ্বেত পটু, আবার সর্জ, লাল, প্রভৃতি নানাবিধ রঙ্গে রঞ্জিত করিয়া বিক্রয় করে। উংকৃষ্ট শ্বেত পটু, কে দূর হইতে আলোয়ানের আয় প্রতীয়মান হয় এবং উত্তম রংবিশিষ্ট হইলে পটু, বলিয়া সহজে বুঝা যায় না। এতদ্বারা কাশ্মীরী প্রভৃতি সকলেই পরিচ্ছদ প্রস্তুত করিয়া থাকে। প্রত্যেক থান ৮॥ হইতে ৮০ গজ দীর্ঘ এবং এক হস্ত প্রশন্ত। ইহার মূল্য ৪ হইতে ৪০ টাকা পর্যান্ত। এক এক থানে এক পেণ্টুলন, এক কোট এবং এক ওয়েষ্টকোট অথবা এক পেণ্টুলন এবং এক চাপকান প্রস্তুত হইতে পারে। একারণ, কি ইংরাজ, কি বাঙ্গালী, যাঁহারা কাশ্মীরে ভ্রমণ করিতে আইনেন, ভাঁহারাই

ইহার,পরিচছদ করিয়া থাকেন। সূত্র ও উর্ণ মিপ্রিত করিয়া আর এক প্রকার পটু, হয়। উহা সর্বাংশে পূর্ব্বোক্ত পটুর সদৃশ এবং তদপেকা কোমল। ইহা পোষাকের পক্ষে অতি-শয় উপযোগী।

আলোয়ান ও পটুর ন্থায় পুই বস্ত্রও তক্ত দারা বুনিয়া থাকে। ইহার মূল্য তিন টাকা হইতে বারো টাকা পর্যান্ত। কাশ্মীরীরা তুই তিন বংসর ধরিয়া নূতন পুই ব্যবহার করে। পরে উহাকে মলিদা করিয়া আপনাপন আলখাল্লা প্রস্তুত করিয়া থাকে। এতদ্বারা উহাদের মিতব্যয়িতার পরিচয়ও পাওয়া যাইতেছে।

পৃথিবীর স্থানে স্থানে যেরপ তুর্জয় শীত, ঈশ্বর তাহার
নিবারণোপযোগী উপকরণও সৃষ্টি করিয়া দিয়াছেন এবং মর্প্র
আপন বৃদ্ধি বলে তৎসমৃদয় সংকলন পূর্বক উপযোগী শীত বস্ত্র
প্রস্তুত করিয়া লইতেছে। এখানে ফের্মপ ভয়য়য় শীত,
তাহাতে "পোস্তিন" ব্যতীত উহা কোনোমতেই নিবারণ
হইবার নহে। কোনো কোনো জীবের সলোম চর্ম্মে ইহা
প্রস্তুত হইয়া থাকে। ইহা আকারে ইংরাজী কোটের সদৃশ;
অবিকাংশের আন্তিন অর্ধ্ধ; এবং উপরিভাগে অবস্থানুসারে
আলোয়ান, কিংথাব বা ছিট যোগ করে। পোস্তিন নানাবিধ।
প্রথম, নীলজু। ইহা এক প্রবার ক্ষুদ্র জলচর পক্ষী। ইহার
পক্ষ নানা বর্ণের চিত্রে বিচিত্র, স্কতরাং দেখিতে অতি স্থন্দর।
কাশ্মীরীরা ইহার মাংস ভক্ষণ করে। কেবল ইহার শির
এবং গ্রীবার চর্ম্মেই পোস্তিন হইয়া থাকে। স্ক্ররাং শত
শত, নিরপরাধী ক্ষুদ্র প্রাণীর প্রাণ বধ না করিলে আর একটী

পোন্তিন প্রস্তুত হয় না। একারণ, ইহা ছুম্পাপ্য এবং মহার্ঘ। এপ্রকার এক একটা পোন্তিনের মূল্য ২০০ হইতে ৫০০ মুদ্রা পর্যান্ত হইয়া থাকে।

দ্বিতীয়, সোমুর। ইহা এক প্রকার স্থনর লোম বিশিষ্ট প্রাণীর চর্ম। ইহাও মতি স্থদ্শা ও স্থকোমল। ইহা ইয়র্কন্দ প্রভৃতি স্থান হইতে আইদে। ইহার মূল্য ৫০ হইতে ১৫০ মুদ্রা পর্যান্ত।

তৃতীয়, কল্তন্। ইহার অপর নাম উদ্রু বা উদঙ্। ইহাকে আমাদের দেশে উদ্বিরাল কহে।

চতুর্থ, উৎগোগ্র। ইহা ইন্দুর জাতীয় অথবা বাবু অক্ষয়কুমার দত্ত মহাশয়ের স্থাসিদ্ধ চারুপাঠ বর্ণিত বিবর নামা
জীবশোণীর অন্তর্গত বলিয়া বোধ হয়। ইহার পোস্তিন
দীর্ঘকাল স্থায়ী নহে—ইহার লোম ছুই তিন বৎসরের
মধ্যেই শিথিল হুইয়া যায় এবং ছুর্গদ্ধ হুইয়া উঠে।

পঞ্চম পেরু। ইহা মেষশাবক। ইহার পোস্তিন সর্বনি-পেক্ষা স্থানী এবং স্বল্প মূল্যেই অর্থাৎ ৫ হইতে ১৫ মুদ্রায় পাওয়া যায়।

নবন পরিচ্ছেদ।

কেশর বা জাফ্রান্।

কাশীর প্রদেশে যে জাফ্রান্ উৎপন্ন হইয়া থাকে, তাহা পৃথিবীর সমুদয় স্থানাপেকা উৎকৃষ্ট। একারণ, জাফ্রাণের অপর নাম "কাশ্মীরজ" এবং "কাশ্মীর-জন্ম।" ইহা উপত্যকার সর্বত্র জন্মে না। কেবল মাত্র পূর্বভাগস্থ পাম্পুর নামক সানের নদীত্টস্ত কিয়দংশে জিয়য়া থাকে। পুর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, শ্রীনগর হইতে পাম্পুর স্থলপথে চারি জোশ। কিন্তু বিতস্তার গতি অতি বক্র এবং উজ্ঞান আদিতে হয় বলিয়া নেকায় গেলে ছয় সাত ঘণ্টা লাগে।

পাম্পুরের যেস্থানে জাফ্রান্ জন্মিয়া থাকে, উহা স্থবি-স্তুত ও উচ্চ। ইহার এক পার্ম্ব দিয়া বিতস্তা নদী প্রবাহিত হইতেছে এবং অপর দিকে গিরিমালা দণ্ডায়মান আছে। এস্থানের মৃত্তিকা ঈষৎ পীতবর্ণ এবং কক্ষরের ভায়ে কঠিন।

জাফ্রাণের ক্ষেত্র সংস্করণ, বীজবপন, পুস্পোদামন, জাফ্রাণাহরণ জাফ্রান্ ভৃণ প্রভৃতি সমুদয়ই অতি বিচিত্র। হুতরাং একাদিক্রমে ইহাদের সবিশেষ বর্ণনা করা যাইতেছে।

প্রথম, ক্ষেত্র সংস্করণ। আমাদের দেশের পটল বুনিবার ক্ষেত্রের ভায় ইহা প্রস্তুত করে; কিন্তু উহার সৃদৃশ কেবল. দীর্ঘ আলি ও দীর্ঘ প্রণালী বিশিষ্ট নহে। ইহা ৫ বা ৬ ফিট পরিমাণের সমচতুকোণ কুদ্র কুদ্র থণ্ডে পূর্ণ। শীখ্র জল অপতত হইবার জাল প্রত্যেক খণ্ডের মধ্যদেশ ঈষং উচ্চ ও
চতুংপার্ম ঈষং ঢালু এবং পরম্পরের মধ্যে ন্যুনাধিক দেড়
পাদ পরিমিত প্রণালী আছে। প্রতি বংসর সর ঐ ভূ-খণ্ডের
উপরিভাগ অল্প পরিমাণে খুদির। দিতে হ্যা—নচেং হল
ঢালনা, সার দান বা অল্ল কোনো প্রকার সংক্রণই করিতে
হয় না। পরে প্রকাশ করা ঘাইবে, যে, বীজ বপনেরও প্রয়োজন নাই। স্নতরাং একবার কেয়ারি সমুদ্র প্রস্তুত হইলে
অল্প বা বিনা পরিশ্রম ও ব্যয়ে অনেক বংসর পর্যান্ত জাক্রান্ উৎপন্ন হইয়া থাকে।

দিতীয়, বীজ বপন। ইহার বীজ দেখিতে রস্থানের মত। এই ধীজ বপন করিতে হয় না—প্রথম রোপিত বীজ আধুনিক কাল পর্যন্ত চলিয়া আদিতেছে। দর্বাদো যে কোন্ পুরুষ ইহা রোপণ করেন, তাহা কোনো ইতির্ভগাঠে অবগত হওয়া যায় না। মুদলমান ক্ষাণেরা এত দল্পে আপনাদের প্যাগম্বরের গুণগান সহকৃত অনেক কল্পনা জল্পনা করিয়া থাকে। প্রত্যুত, ইহা যে ঈশ্বরের বিশেষ কৃপা ও মহিমার নিদর্শন, তাহার সন্দেহ নাই। অতি প্রাচীনকাল হইতে ঈশ্বর যে প্রথম বীজ সংলগ্ন করিয়া দিয়াছেন, অদ্যাবিদি তাহা হইতেই জাফ্রান্ উৎপন্ন হইয়া আদিতেছে। এক এক বীজের উৎপাদিকা শক্তি দশ হইতে পঞ্চদশ বংদরে পর্যন্ত অবিকৃত্ থাকে। পরে উহা অকর্মণা হইয়া গেলে উহার স্থানে আর একটী আপনা হইতেই জন্মে।

তৃতীয়, পুষ্পোদামন। বীজ হইতে যে অঙ্কুর উদাত হয়,

উহার অগ্রভাগে পুল্প বিক্সিত হইয়া থাকে এবং প্রত্যেক অন্ধুরে কেবল এক একটা পুল্পমাত্র উলাত হয়। কিন্তু এক এক বীজ হইতে চারিটার অধিক অন্ধুর হয় না। স্কুরাং পুল্পও চারিটার অতিরেক দেখা যায় না। অন্ধুর সমুদ্য ভূমি হইতে ন্যুনাধিক ৫ বা ৬ ইঞ্ব উন্নত হইয়া থাকে। এই সঙ্গে মূলদেশ হইতে যে তৃণ জন্মে, উহাও পুল্প প্রফুটিত হইবার কালে উক্ত পরিমাণে উন্নত হয়। পুল্প ষট্দল বিশিষ্ট এবং ইহার বর্ণ ঈষৎ নীল। প্রত্যেক পুল্পে ছয়টা করিয়া কেশর হয়। ইহাকেই কেশর বা জাফ্রান্ কহে। এতন্মধ্যে তিন্টা খোর রক্তিমা বর্ণ এবং ইহাই আস্লি অর্থাৎ প্রকৃত জাফ্রান্। অপর তিন্টা কেশর বাসন্তী অর্থাৎ পীত বর্ণ। ইহাকে নক্লী অর্থাৎ কৃত্রিম জাফ্রান্ কহে। ইহা প্রকৃত কেশর অপেক্ষা কিঞ্চিৎ স্থুল ও ক্ষুদ্র।

প্রকৃত রসাল কেশর চর্বন করিলে আস্ত মণ্ডল রমণীয় গদ্ধে পূর্ণ হইয়া যায় এবং বোধ হয়, যেন তামুল চর্বন করিতেছি।কোনো কোনো কাশ্মীরী কবি তিন রক্তিমা কেশ-রকে ত্রন্ধা, বিষ্ণু ও মহেশ্বর এবং তিন পীত কেশরকে তাঁহা-দের ভার্যা। এবং ষট্দলকে ছয় জনের সিংহাসন রূপে বর্ণনা করিয়াছেন। এই বর্ণনা অসঙ্গত নহে!

পুষ্প প্রফ টিত হইলেই চয়ন করে। একবার সংগৃহীত হইলে তৃতীয় বা চতুর্থ দিবদে পুনর্বার উলাত ও বিক-দিত হইয়া থাকে। এইরূপ প্রত্যেক অঙ্কুর হইতে একাদি ক্রমে চারি বা পাঁচবার পুষ্প প্রফ টিত হইয়া তিন সপ্তাহের মধ্যেই পুষ্পোলামন শেষ হইয়া যায়। কার্ত্তিক মাদের প্রারম্ভেই পুষ্প বিক্ষিত হইতে থাকে।
তথন ক্ষেত্রের শোভা অতি বিচিত্র। বিশেষতঃ সূর্য্যোদয়ের
প্রাকালে যথন উহাদের উপর িশির বিন্দু পতিত হয়—
থথন দিবাকরের প্রথর কর দারা উহাদের কমনীয় কান্তি
মান হয় নাই—যথন ক্ষাণদিগের নৃশংস হস্তে কেহ র্ভচুত্ত
হয় নাই—তথন দেখিতে যে কি রমণীয়, তাহা প্রকাশ করিবার শব্দ নাই! তুই ক্রোশ স্থান পর্যন্ত গে দিকে নয়নপাত কর, কেবলই মনোহর পুষ্প প্রস্ফুটিত হইয়া রহিয়াছে;
উহা ভূমির উপর হইতে অধিক উন্নত নহে, কেবল পাঁচ
ইঞ্মাত্র উচ্চ—লঘু তৃণও লক্ষিত হইতেছে না—দেখিলে
বোধ হয়, যেন নীল বর্ণের ভূমিচম্পক (ভূই চাঁপা) ফুটিয়া
রহিয়াছে। প্রত্যুত, জাফ্রাণের পুষ্পা কাশ্মীরের নৈস্গিক
সৌন্দর্য্যের মধ্যে একটা অত্যুৎকৃষ্ট।

চতুর্থ, জাফ্রাণাহরণ। পুষ্প ফুটলেই রুষাণেরা উত্তোলন করিতে আরম্ভ করে। পরে হস্ত দিয়া ঝাড়িলেই পুষ্পাদল স্বতন্ত্র হইয়া যায়। কিন্তু লাল ও পীত কেশর একত্র থাকে। ব্যবসায়ীরা ইহাদিগকে পৃথক করে না। বরং কেহ কেহ পীত কেশর রক্তিমা বর্ণে বা রক্তিম কেশরের জলে রঞ্জিত করিয়া উভয়কেই প্রকৃত জাফ্রাণাকারে কিক্রয় করিয়া থাকে। সে যাহা হউক, ইহাদিগকে স্বতন্ত্র করিতে হইলে জলপূর্ণ পাত্রে নিক্ষেপ করে। তখন লাল অর্থাৎ প্রকৃত কেশর আপুনা হইতেই তলদেশে নিমগ্র হয় এবং পীত অর্থাৎ ক্রত্রেম কেশর উপরিভাগে ভাসিতে থাকে। পরে ফাতপ তাপে উভয়কেই শুক্ষ করিয়া লয়।

পঞ্ম, জাফ্রান্ত্ণ। পুল্পোদামন শেষ হইয়া গেলে ত্ণ বাড়িতে থাকে। পূর্বেই উল্লেখ করা গিয়াছে, যে, যৎকালে পুল্প বিকসিত হয়, তখন ত্ণ অঙ্কুর অপেক্ষা উন্নত হয় না। কিন্তু পুল্প বিকসিত হইয়া গেলেই উহা বাড়িতে আরম্ভ করে। এই তৃণের এমত গুণ, যে, গাভীগণ ইহা ভক্ষণ করিয়া যে তৢয় দেয়, উহা হইতেও জাফ্রাণের স্থগন্ধ বাহির হইয়া থাকে এবং এই তুয়ে অতি উৎকৃষ্ট য়ত প্রস্তুত হয়। একারণ, পাম্পুরের তৢয় ও য়ত যেমন অত্যুত্তম ও স্থাহ্ন, কাশ্মীরের কুত্রাপি তদ্ধপ নহে। অপর, সেই হুরভি তৃণভোজী মেষের মাংস ও স্থমধুর। অধিক কি, জাফ্রান্কেত্রের স্মীপন্থ ভূমিতে যে সমুদ্য ফল মূলাদি উৎপন্ন হইয়া থাকে, তত্তাবং অপরাপর স্থানাপেক্ষা অধিকতর রসাল ও মিন্তা!

ষষ্ঠ, জাফ্রাণের ব্যবহার। কাশ্মীরী পণ্ডিত মাত্রেই
ইহার দীর্ঘ তিলক সেবন করেন। পলান্ধ, শ্লাংস ও অপরাপর
রন্ধনে—কি প্রধান, কি ইতর ব্যঞ্জন মাত্রেই জাফ্রান্ দিলে
যে তাহা স্থান্ধ ও স্থান্ন ইয়া থাকে, ভাহা আমি কি বলিব,
পাঠক মহাশ্যেরা তাহা বিলক্ষণ অবগত আছেন।

স্বৰ্গত মহাত্মা সার রাধাকান্ত দেব বাহাতুরকৃত স্থাসিদ্ধ শব্দকল্পজনে জাফ্রান্ সম্বন্ধে লিখিত আছে ;—

" कुकूमः (मना ज्या जिविधः । यथा

- ১। কাশ্মীরদেশজে ক্ষেত্রে কৃষ্কুমং যন্তবেদ্ধি তৎ।
 সূক্ষাকেশরমারক্তং পদ্মগদ্ধি তত্ত্বমং॥
- ২। বাহ্লীকদেশসংজাতং কুষ্কুমং পাণ্ডুরং ভবেৎ। কেতকীগন্ধযুক্তং তন্মধ্যমং সূক্ষাকেশরং॥

. ৩। কুকুমং পারদীকেয়ং মধুগদ্ধি তদীরিতং।

ক্ষমংপাণ্ডুরবর্ণং তদধমং স্থলকেশরং॥

षम् लगः।

য়য়ভয়ং। তিক্তমং। কটুয়ং। উষ্টেইং।
কাস, বাত, কফ, কণ্ঠরোগ, মূর্দ্রশূল, বিষদোষনাশিম্বং।
বোচনম্বং। তমুকান্তি করম্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।
বোচকম্বং। বিবর্ণতা কণ্ডুনাশিম্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ।
মিশ্বম্বং। শিরোক্রশ্বণ, জন্ম, বিমি ব্যঙ্গ দোষ ত্রমাপহম্বং।
বল্যম্বঞ্চ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।
স্থান্য নাশিম্বং। ইতি রম্বাবলী।

দশন পরিচ্ছেদ-পরিশিষ্ট।

পर्याहेकिमिर्गत প্রতি উপদেশ।

যদি কোনো পাঠক এই সামান্য পুস্তক পাঠে স্বর্গসম কাশ্মীর দর্শন করিবার জন্য উৎস্ককচেতা হয়েন, তাঁহার স্থবিধা ও সোকর্য্যার্থ ভুক্তভোগীর বহুদর্শন জনিত কতিপয় উপদেশ বাক্য এন্থলে অপ্রযুদ্ধ্য হইবে না। যদিও এই পুস্ত-কের স্থানে স্থানে বিশেষতঃ দ্বিতীয় পরিচ্ছেদে পথের বিবরণে কিয়ৎ পরিমাণে এরূপ উপদেশাদি আছে, তথাপি এক স্থানে কাজের কথা সমস্ত সন্নিবেশ করা আবশ্যকবোধে এই পরিশিষ্ট অধ্যায় লিখিতে প্রবৃত্ত হইলাম।

কলিকাতা হইতে লাহোর দিয়া কাশ্মীর যাইতে হইলে "জম্বু ও বন্হাল পথ" এবং "ভিম্বর পথ" উপাদেয়। যদি কোনো পর্য্যটক জম্বু দেখিবার মানদ করেন, তিনি তথায় মাসিয়া মহারাজার দাক্ষাং লাভ করিতে পারেন। বন্হাল পথে যাইতে হইলে মহারাজার বিশেষ আজ্ঞা আবশ্যক বটে, কিন্তু বাঙ্গালীদিগের প্রতি কোনো 'নিষেধ নাই। অপিতু যদিও সমুদ্য পথে ভ্রমণকারীদিগের কন্ট নিবারণ ও স্থথোংপাদনের জন্য মহারাজার কর্মচারীরা নিযুক্ত আছে, তথাপি দর্ব্বপ্রকার স্থেব নিমিত্ত মহারাজার বা প্রধান দ্চিবের পরোয়ানা সংগ্রহ

.সমগ্র পথের প্রত্যেক আড্ডাতেই উত্তম বাসগৃহ এবং মঞ্জী (চারপাই) পাওয়া যায়, তথাপি কাশ্মীর উপত্যকার 'স্বতি হথে ভ্রমণ করিবার জন্ম এক ক্ষুদ্র শিবির (Hill-tent অথবা sliouldari) এবং শিবির চারপাই (Camp-bed) সঙ্গে লওয়া উচিত। আবার, যদিও প্রত্যেক আডাতেই চাউল, আটা, স্বত, হ্রাম, ছাগ্ন প্রভৃতি আহারীয় দ্রব্য পাওয়া যায়, তথাপি রন্ধনোপযোগী চূর্ণ মদলা, মুগ প্রভৃতি দ্বিদল এবং কিছু আলু (পথে কোনো প্রকার তরকারি পাওয়া যায় না) সমভিব্যাহারে রাখা অত্যন্ত আবশ্যক। কিছু শীত বস্ত্র এবং রৃষ্টি হইতে পরিত্রাণার্থ (Water-proof-cloth) কোনোরপ বস্ত্রবিশেষ সঙ্গে লওয়াও নিতান্ত প্রয়োজনীয়। ভ্রমণকারীদিগের এটা স্মরণ রাখা কর্ত্তব্য, বে, পথ ছুর্গম ও পার্বিতে। স্করাঃ অপরিহার্যা নিতান্ত আবশ্যকীয় দ্রব্য সম্ভারু যতই অল্প লইতে পারেন অর্থাং ভার যতই লঘু হয়, তত্ই উত্তম।

প্রত্যেক আড়্ডাতেই ঝাপান ও ভারবাহী পাওয়া গিয়া থাকে; কিন্তু সাহাবাদ ও বন্হাল নামক স্থানন্বয়ের ঝাঁপান-বাহকেরা সর্বাপেকা দৃঢ় ও পার্বত্য পথের সম্যক্ উপ-যোগী। জন্মতে উত্তীর্ণ হইয়া কোনো উপায়ে ইহাদিগকে বন্দোবস্ত করিয়া লইতে পারিলে বড় ভাল হয়।

বাহকেরা সাধারণতঃ এক আড্ডার অধিক গমন করে না।
প্রত্যুক আড্ডাতে নূতন নূতন যান ও বাহক নিযুক্ত করিতে
হয়। একারণ, এক আড্ডাতে পোঁছিয়াই অগ্রবর্তী আড্ডার
বন্দোবস্ত জন্ম একজন চতুর ভূত্যকে অগ্রে প্রেরণ করুত্

আবশ্যক। তাহা হইলে পর্য্যটককে দেখানে গিয়া কোনো বিষয়ের নিশিত্তই প্রতীক্ষাজনিত ক্লেশ পাইতে হয় না।

পথে সর্ব্যান্ত গবর্ণমেন্টের মুদ্রা চলিয়া থাকে।
পাহাড়ীরা নোট কখনো চক্ষেও দেখে নাই, স্থতরাং কেহই
লয় না। * একারণ, কেবল নগদ টাকা মাত্র এবং কিছু
আতুলি, সিকি ও তুয়ানি সঙ্গে রাখা আবশ্যক।

মন্টগোমারি সাহেবের "কাশীর রুটম্যাপ" এবং "জন্মূ ও কাশ্মীর ম্যাপ" এই ছুইখানি মানচিত্র এবং কাশ্মীরের বিবরণ ও ভ্রমণ সন্ধনীয় ছুই একখানি পুস্তক সঙ্গে রাখা নিতান্ত আবশ্যক। একজন চতুর পথপ্রদর্শক সঙ্গে থাকিলে পুরোবর্তী পথের অবস্থা এবং জ্ঞাতব্য বিষয়াদির জ্ঞান সংগ্রহ পক্ষে অনেক উপকার হয়। স্থদক্ষ বাহক এবং উপত্যকার স্থচতুর নাবিকদিগের দ্বারা এ কার্য্য উত্তমরূপে সমাণা হইয়া থাকে।

কোনো আড়া হইতে প্রস্থান করিবার পূর্বেব অতি প্রভ্যুষে স্নান ও আহার করিয়া লওয়া উচিত। যদিও পথি মধ্যে মনোহর উৎস ও নিঝ রিণীর নির্ম্মল জলে প্রীতিকর স্নান হইতে পারে বটে, কিন্তু আহার প্রস্তুত করিবার অনুকূল স্থান নাই। এতদ্বাতীত "জলখাবার" নিমিত্ত কিছু বেদানা, বাদাম, পেস্তা, কিদ্মিদ্ অথবা রুটা, হালুয়া প্রভৃতি (প্রস্তুত্ করিয়া) প্রতিদিন সঙ্গে রাখা আবশ্যক।

ভ্রমণকারীরা অশ্ব বা ঝাঁপান, যে যান আরোহী হ<u>উ</u>ন, ছুর্গম পথে এবং কাষ্ঠ নির্মিত সেতুর উপর দিয়া যাইতে

^{*} কাশ্মীর উপত্যকায় সকলেই নোট সাদরে গ্রহণ করিয়া থাকে।

ছইলে যান হইতে অবরোহণ পূর্মক পদপ্রজে গমন করাই পরামর্শ; নচেৎ প্রাণনাশ হইবার সম্ভাবনা। যদি তাহাদের সমভিব্যাহারে কোমলাঙ্গিনীরা, থাকেন, তাহা হইলে
আপনাদের বাহকদিগকে তাঁহাদের ঝাঁপানে নিযুক্ত করিয়া
আপজ্জনক স্থান সমূহ অতি সাবধানে বাহিত করাই প্রেয়ঃ।
পাহাড়ে ঝাঁপান দারা উত্থান ক্রিতে হইলে পশ্চাদ্রাগে মুখ
কিরাইয়া উঠিতে এবং অবতরণ কালে সোজা হইয়া অর্থাৎ
সম্মুথের দিকে মুখ করিয়া নামিতে হয়। তাহা হইলে আরোহণ ও অবরোহণের বিশেষ কই হয় না।

শ্রীনগরের পর্যাটকদিগের জন্য মহারাজা অনেক উত্তন বাঙ্গালা নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন। কিন্তু ইংরাজদ্বারা সর্বদা পূর্ণ—একটিও প্রায় নৃথ্য পাওয়া যায় না। নগরাভ্যন্তরে অনেক বাটা ভাঙা পাওয়া যায়। কিন্তু নগর অতি মলিন, স্থতরাং বাদোপুযোগী নয়। নৌকা বাদই অতি প্রীতিকর। এতদ্বির শাবির স্থাপনোপযোগী অনেক উৎকৃষ্ট ভূমি আছে। স্থতরাং দঙ্গে একটা শিবির থাকিলে 'বেদের টোলের' মত বাদ করিয়া সমুদয় মনোহর স্থান অতি স্থথে ও স্বাধীনতায় দেখা যাইতে পারে।

কাশ্মীর রাজ্যে প্রথম উপস্থিত হইয়াই পর্যাটক রাজকীয় শাসন প্রণালী ও লোকদিগের আচার ব্যবহার আপনাদিগের সে সব হইতে বিষম দেখিয়া ব্যথিত-হৃদয় হইতে পারেন। কিন্তু তাঁহার এটা স্থারণ করা আবশ্যক, যে, তিনি যে প্রদেশে পদচারণা করিতেছেন, তথাকার লোক অপেক্ষা-কৃত জন্ত ও অস্ত্য এবং তথাকার শাসনকর্তা সম্পূর্ণ স্থানিন, শ প্রভূত প্রতাপশালী এবং কিয়দংশে স্বেচ্ছাচারী। স্থতরাং পর্যাটকের চরিত্র যেন কোনোরূপ দোষাবহ এবং প্রজাপীড়ক না হয়। যদিও এস্থলে ইন্দ্রিয়স্থথাভিলাষ চরিতার্থ করিবার অনেক অনুকূল পদার্থ আছে, কিন্তু ইন্দ্রিয়সংযম করাই মানুষের কাজ। অনেকে ইন্দ্রিয় দমনে অসমর্থ ছইয়া নানা পাপাচরণ বশতঃ অবশেষে অপমানিত ও কাশ্মীর রাজ্যের সীমা হইতে দূরীভূত হইয়াছেন!

ভ্রমণকারীদিগের উপদেশ ও শাসনার্থ পঞ্জাব গবর্ণমেণ্ট যে কয়েকটা নিয়ম প্রচলিত করিয়াছেন, তাহার কতিপয় প্রয়োজনীয় ধারার অভিপ্রায় এস্থলে অনুবাদ করিয়া দেওয়া আবশ্যক বোধ হইতেছে। যথা;—

১। কাশ্মীরে যাইবার কেবল * চারিটী প্রকাশ্য রাজ-পথমাত্র আছে। বন্হাল পথ দিয়া যাইতে ২ইলে 'কাশ্মীরা-ধিপতির আজ্ঞাপত্র বিনা কেহই যাইতৈ পারে না। দিমলা পাহাড় হইতে শৈলপ্রেণী দিয়া যে পথ আছে, তদ্ধারা যাইতে হইলে পঞ্জাব গবর্ণমেন্টের বিশেষ আজ্ঞা আবশ্যক।

৩। এক আজ্ঞা হইতে অপর আজ্ঞা পৌছিয়াই বাহক-দিগের মজুরি চুকাইয়া দিতে হ'ইবে। ভার-বাহকদিগের ভার ২৫ সের এবং ভারবাহী অশ্ব বা অশ্বতরীদিগের ভার ছুই মণের অধিক হইবে না।

৪। কোনো আজাতে উপস্থিত হইয়া তদ্দণ্ডেই ভারবাহী পাওয়া যায় না। দূরবর্তী গ্রাম হইতে বাহকদিগকে সংগ্রহ করিতে হয়। একারণ, প্রতীক্ষাজনিত ক্লেশ নিবারণ করিবার

এই পুস্তকের ছি গায় পরিক্ছেদ দেখা।

উদ্দেশে অগ্র হইতে পুরোবৃতী আড্ডাতে সংবাদ প্রেরণ করা আবশ্যক।*

় ৮ ম পথিমধ্যে থানাদার, কোতোয়াল প্রভৃতি মহারাজার কর্মচারী বা প্রজাদিগের উপর কেহ কোনো অত্যাচার করি-বেন না। উহারা যে বিষয়ের যে মূল্য প্রার্থনা করিবে, তদণ্ডে তাহা দিতে ইইবে। যদি কোনো কিছুতে মূল্য অধিক লয়, তাহা হইলে পর্যাটক শ্রীনগরস্থ আফিদর অন্ স্পেশি-মেল ডিউটী নামক কর্মচারীকে জানাইলা প্রতীকার প্রার্থনা করিবেন।

১১ এবং ১২। যদি কোনো স্থলে মহারাজার কর্মচারী, দিপাহী বা প্রজাদিগের দহিত পর্য্যটকদিগের কোনো বিবাদ বিদম্বাদু অথবা সানহানিকর ব্যাপার ঘটে, তাহা হইলে তাহারা কোনোমতেই আপন হস্তে আইন বা শাসন ভার লই-বেন না। তথাকার প্রধান কর্মচারীকে এ বিষয় জানাইবেন এবং শ্রীনগরস্থ উক্ত ইংরাজ আফিসরকে তৎক্ষণাৎ সংবাদ করিবেন। তাহা হইলেই প্রতীকার হইবে।

১৪। পর্যাটকেরা কাশ্মারে উপনীত হইয়া মনে রাখিবেন, যে, তাঁহারা এক স্বাধীন রাজার রাজ্যে আদিয়াছেন। স্থতরাং, কোনো স্থলে মহারাজা, তংপুত্র, তংকুটুম্ব অথবা তাঁহার কোনো প্রধান কর্মচারীদিগের সহিত সাক্ষাং হইলে তাঁহারা

[্]তিয়া কথা পূর্বেই বলা এয়াছে। বেলাবেলি কোনো আড ইনত গৌ-ছিয়া তথাকার কর্মচারীকে স বাদ করিলে সে সাধারণতঃ প্রদিন প্রাত্রেশনে সমুদ্য বন্দোবস্ত করিয়া দেয়। এক দিবসে ছই আড়িভা অর্থাৎ শীল্প শ্রী । গমন আৰশ্যক হইলে উপরোক্ত নিয়ন প্রতি দৃষ্টি রাধাণ্বিশেষ প্রয়োজনীয়।

তাঁহাদিগকে যথোচিত সম্মান প্রদর্শন করিবেন এবং সর্বাদা তথাকার নিয়ম ও ব্যবহারানুসারে চলিবেন।

১৫। কাশ্মীরের শাসনকর্তার অনুমতি ও অংজ্ঞাপত্র বিনা কেহই আপনাদিগের সমভিব্যাহারে কোনো কাশ্মীরীকে কাশ্মীর সীমার বাহিরে লইয়া যাইতে পারিবেন না।**

১৬। পর্যাটকেরা কাশ্মীর পরিত্যাগ করিবার পূর্ব্বে সম্-দয় লেনা দেনা অবশ্যই নিকাশ করিবেন এবং তাঁহাদিগের অনুচরবর্গ ধাণ পরিশোধ করে, তৎপ্রতি দৃষ্টি রাখিবেন।

১৮। শুনা গিয়াছে, কোনো কোনো ব্যবদায়ী কাশ্মীর গবর্ণমেন্টের মাশুল হইতে নিস্তার পাইবার জন্ম ভ্রমণকারী-দিগের দ্রব্যের সহিত গোপন ভাবে অনেক মাল মিশাইয়া দেয়। একারণ, জানানো যাইতেছে, যে, এ প্রকার অস্ব্যবহার ধরা পড়িলে কেজদারী আইন মতে উভয় প্রকের যথোচিত শাস্তি হইবে। শ

^{*} কাশ্মীরে যাইয়: অনাথানে কাশ্মীরা ভ্রানিযুক্ত করা যাইতে পারে !
তাহাদিগকেও কাশ্মীর রাজ্যের বাহিরে আনিতে হইলে আজ্ঞাগত্র নিতান্ত
আবশান । ভার ও পাল্কী বাহকদিগের পক্ষে এই ধারা এলোগাশীল নছে !
কারণ, তাহারা যে আপনা হইতেই শীল্প প্রেণ্ডান্দন করিবে, তল্পিয়ে কোনো
সন্দেহ নাই । একলে পাঠকদিগকে স্প্টাক্ষরে বলা উচিত, যে, কাশ্মীর হইতে
কোনো রমন্ত লইয়া আসা সম্পূর্ণ নিষিক্ষ । কলের বংসর হইল, একজন ইউ-রোগীয় এক রমনীকে প্রজন্ম বেশে লইয়া আদিহেছিলেন । প্রথমধ্যে ধ্রত :
ইইয়া তিনি অশেষ প্রকারে অপনানিত, প্রচারিত এবং ইংরাজ গ্রন্থেন্ট দার্রা
লাক্ষিত হই টাছিলেন এবং তিনি আর কোনো কালে উপত্যকায় প্রেবেশ করিতে
গারিবেন না, ইংরাজ গ্রন্থিন আর কোনো কালে উপত্যকায় প্রবেশ করিতে
গারিবেন না, ইংরাজ গ্রন্থিন আন আজ্ঞা প্রচার করিছা নিয়াছিল।
প্রত্যাং পর্যাইকেরা গেন আপনানের উচ্চ মাধা হেট না করেন এবং আপনাদের ।
প্রায়ে অন্ধনারাই কুটার না মানেন—এ বিষয়ে বিশেষ সতক গালিবেন।

কি শ্রিক ইব্র প্রত্যাগ্যন্ত কালে সকল প্রথ নির্কিট ছানে এক এক জন

·২০। যদি কেহ এই সমুদয় নিয়মের একটাও উল্লেখন করেন, তাহা হইলে আফিসর অন্স্পেশিয়েল ডিউটা পঞ্জাব গবর্ণমেন্টকে রিপোর্ট করিবেন।

২১। যদি কেহ অত্যুৎকট অসভ্যতাচরণ, অথবা কাশ্মীর রাজ্যের নিয়ম লজ্মন এবং তথাকার আচার ব্যবহারের বিপ-রীতাচরণ, অথবা অফ কোনো অকর্ম করেন, তাহা হইলে আফিসর অন্ স্পেশিয়েল ডিউটী তদ্দণ্ডেই কাশ্মীর রাজ্যের সীমা হইতে তাহাকে দূর করিয়া দিবেন।

সমাপ্ত।

করিয়া মহারাজার কর্মচারী পথিকদিগের জব্যাদির তন্ত্বানুসন্ধান করিয়া থাকে। যদি প্রকাশ পায়, যে, উহার মধ্যে বিনা নাখলে কান্ধ্যীরজাত কোনো জব্য (পশ্ মিনা, জাফু রান্ প্রভৃতি) নীত হইতেছে, তাহা হইলে পর্যাটকদিগকে অপমান্তি হইতে এবং অক্ষণা নাখল দিয়া ঘাইতে হয়। ইহার প্রতি সকলের দৃষ্টি রাখা নিত্তি জাবিশ্যক।